गुरुदेव रवीन्द्रनाथ कृत 'दि रेक' का रूपान्तर :

रूपान्तरकार : श्री राजेश्वर गुरु, एम० ए०

मिलन

प्रचारक:—

दीक्षितपुरा, जबलपुर।

मुद्रक और प्रकाशक:—

पं० श्रीकमलाकर पाठक,

अध्यक्ष : कर्मवीर प्रेस,

जबलपुर ।

प्रथम संस्करण—नवम्बर, १६४६

मूल्य—तीन रुपया

प्रधान वितरक:—

जवाहरगंज जबलपुर ।

हमारे अन्य प्रकाशनः

जीवन वृत्त:

१. डॉ० कोटनीस की अमर कहानी १)

काव्य:

२. बग़ावत के गीत (जोश मलीहाबादी) १।)

३. मुहब्बत के गीत (जिगर मुरादाबादी) १।)

४. राज़ के गीत (डा० इक़बाल) १।)

५. स्वर पाथेय (नर्मदाप्रसाद खरे) १॥)

ऐतिहासिक विवेचन:

६. १८५७: महाविद्रोह (अशोक मेहता) १।)

जीवन-दर्शन:

७. गौतम बुद्ध (सर्वपल्ली राधाकृष्णन) १।)

प्रकाशकीय

प्रस्तुत पुस्तक गुरुदेव रवीन्द्रनाथ की 'दि रेक' के अनेक अनुवादों में से एक है। यह अविकल अनुवाद नहीं है। कथा-सूत्र का अनुगमन करके इसे किंचित संक्षिप्त किया गया है। 'नौका डूबी' कहानी की भूमिका-जैसी है, 'मिलन' यथार्थ कहानी।

पुस्तक अनेकों में से एक होकर रहे, तभी इसकी सार्थकता है। भाषा की सरलता और अभिव्यक्ति का प्रभावक ढंग अख़्तियार करने का प्रयत्न किया गया है। गुरुदेव का विश्व-विश्रुत उपन्यास इस रूपान्तर के माध्यम से हिन्दी-हिन्दुस्तानी पाठकों को ग्राह्य हो पाया, तो हम अपना प्रयत्न सफल समझेंगे।

आवरण पृष्ठ के आकर्षण के लिये हम 'बाम्बे टॉकीज़' के आभारी हैं।

नौका डूबी

• १

रमेश कानून के इम्तिहान में पास हो जायेगा, इस बात में किसी को घड़ी भर के लिए भी संशय न था।

इम्तिहान के बाद रमेश को घर जाना चाहिए था; लेकिन वह अपनी ट्रंक बाँधने की कोई खास जल्दी में नहीं दिखा। उसके पिता ने उसे एकदम घर लौटने का आदेश लिख भेजा था। उसने जवाब दिया था कि इम्तिहान का नतीजा जाहिर होते ही वह घर पहुँचेगा।

अन्नदा बाबू का पुत्र जोगेन्द्र रमेश का सहपाठी था और रमेश उसके घर से लगे घर में रहता था। अन्नदा बाबू ब्राह्म समाजी थे और उनकी पुत्री हेमनलिनी ने अभी इंटर आर्ट्स का इम्तिहान दिया था। रमेश इनके घर अक्सर जाया करता था। चाय के वक्त रमेश बेनागा हाजिर रहता था, लेकिन उसे केवल चाय का आकर्षण नहीं था, क्योंकि दूसरे वक्त भी वह वहाँ मिल जाया करता था।

नहाने के बाद हेमनलिनी छत पर बाल सुखाती हुई टहलती थी और टहलते-टहलते पढ़ती जाती थी। रमेश भी किताब हाथ में लेकर अपनी छत की आखिरी सीढ़ी पर बैठकर अध्ययन में लीन रहता था। ऐसा स्थान सचमुच एकांत अध्ययन के लिए बड़ा उपयुक्त है, किन्तु थोड़ा विचार करने से जान पड़ेगा कि यहाँ भी व्याघात कम नहीं था।

अभी तक किसी पक्ष से शादी की बातचीत नहीं हुई थी। अन्नदा बाबू के ऐसा न करने का कारण था; उनका एक मित्र बैरिस्टरी पढ़ने विलायत गया था और इन वृद्ध महाशय की आँख में यही नौजवान संभावित दामाद के रूप में बसा था।

नौजवान अक्षय इम्तिहान पास करने में बहुत सफल न होता था, लेकिन चाय की तलब और विवाद जैसी दूसरी बेनुकसान आदतों में वह अपने अधिक विद्वान युवकों से पीछे नहीं था, सो वह भी हेमनलिनी की चाय की टेबल पर अक्सर हाजिर रहता था। एक ढलती दोपहर में चाय की टेबल पर एक सजीव विवाद चल रहा था। बहस अपनी पूरी गर्मी पर थी, कि नौकर रमेश के पिता की लिखावट में उसके नाम का एक पत्र लेकर आया। पत्र परख कर रमेश जल्दी जाने के लिए खड़ा हुआ। सबने विरोध किया और उसे समझाना पड़ा कि पिताजी अभी घर से आये हैं।

"रमेश बाबू के पिताजी से भीतर आने कहो," हेमनलिनी ने जोगेन्द्र से कहा, "हम उन्हें चाय पिलाना चाहेंगे।" "तकलीफ न कीजिये," रमेश बीच में ही बोल उठा, "मेरा उनसे एकदम मिलना बेहतर होगा।" अक्षय को आंतरिक खुशी हुई। वृद्ध महाशय को शायद यहाँ कुछ ग्रहण करने में एतराज हो, यह इशारा करने के लिए उसने कहा कि अन्नदा बाबू ब्राह्म समाजी हैं और रमेश के पिता कट्टर हिन्दू।

रमेश के पिता, ब्रजमोहन बाबू ने पुत्र को देखते ही कहा, "तुम्हें कल सुबह की गाड़ी से मेरे साथ चलना है।"

रमेश ने सिर खुजलाया। "क्या ऐसी खास जरूरत है?" उसने पूछा।

"कुछ खास तो नहीं।" ब्रजमोहन बाबू बोले। रमे उत्सुक निगाह से पिता की तरफ देखा। उसे अचरज था कि इस हालत में उन्हें जल्दी क्यों थी, लेकिन ब्रजमोहन ने पुत्र की उत्सुकता शान्त करना जरूरी नहीं समझा।

साँझ में जब पिता कलकत्ता के अपने मित्रों से मिलने चले गये तो रमेश उनके नाम पत्र लिखने बैठा, लेकिन आदरणीय पिता के परम्परागत संबोधन, 'श्रद्धास्पद चरण कमलों में' लिखने के बाद

कलम ने काम करने से इन्कार कर दिया। उसने बारबार अपने आप से कहा था कि वह हेमनलिनी के साथ एक अव्यक्त शपथवश आबद्ध है और इस मौन बन्धन की बात अपने पिता से और छिपाना गलत होगा। उसने अलग अलग शैलियों में अनेक मजमून तैयार किये, लेकिन अन्त में सबको फाड़ डाला।

ब्यालू के बाद ब्रजमोहन शांतिपूर्वक सोने चले गये। रमेश छत पर चढ़ गया, और पड़ोसी के मकान पर टकटकी लगाये कुछ खोजता हुआ बेचैनी से किसी रात की प्रेतात्मा के समान चहल-कदमी करता रहा। नौ बजे अक्षय ने प्रस्थान किया, साढ़े नौ बजे रास्ते वाला दरवाजा बन्द हो गया, दस बजे अन्नदा बाबू के बैठक-खाने की रोशनी बुझ गई, और साढ़े दस बजे सारा घर गहरी नींद में डूब गया।

रमेश को दूसरे दिन प्रात:काल कलकत्ता रवाना होना पड़ा। ब्रजमोहन बाबू ने उसे गाड़ी चुकाने का कोई मौका दिया।

२

घर पहुँचकर रमेश को मालूम हुआ कि उसके लिये वधू का चुनाव हो गया है और शादी का दिन तय हो गया है। अपनी जवानी में ब्रजमोहन के बुरे दिन आ गये थे और बादकी इनकी उन्नति में इनके बचपन के मित्र ईशान वकील का हाथ था। ईशान की असमय मृत्यु हो गई और तब पता चला कि वे कर्ज के सिवा कुछ नहीं छोड़ गये थे। उनकी विधवा और बेटी ने अकस्मात् अपने को कंगाल अवस्था में पाया। यही अब विवाह योग्य हो गई लड़की ब्रजमोहन ने रमेश के लिये चुनी थी। वर के कुछ हितचिन्तकों ने यह कहकर विरोध किया कि ऐसी खबर है कि लड़की देखने में भली नहीं है। ऐसी आलोचनाओं का ब्रजमोहन बाबू के पास एक ही उत्तर था। "मुझे यह बात समझ में नहीं आती," वे कह देते, "आप फूल को या तितली को रूप-रंग से परख सकते हैं, आदमी

को नहीं। अगर लड़की अपनी मा जैसी भली पत्नी बन सकती है, तो रमेश को भाग्यवान समझना चाहिये।"

अपनी होने वाली शादी के संबन्ध में ये बातें सुनकर रमेश का हृदय बैठा जाता था, और वह घूम फिर कर बचने की कोई तरकीब निकालने का प्रयत्न करता था, लेकिन कोई तरकीब संभव नहीं जान पड़ती थी। अंत में उसने साहस बटोर कर पिता से कहा, "पिताजी, मैं सचमुच इस लड़की से शादी नहीं कर सकता, मैंने अन्य के साथ शादी करने की कसम खाई है।

ब्रजमोहन—ऐसा नहीं कहना चाहिये। क्या बाकायदा फलदान हो गया है?

रमेश—नहीं, बिलकुल वह तो नहीं, लेकिन...

ब्रजमोहन—तुमने लड़की वालों से कुछ कहा है?

रमेश—बिलकुल कहा तो नहीं है, लेकिन......

ब्रजमोहन—नहीं कहा न? ठीक, जब तुमने अब तक कुछ नहीं कहा, तो आगे भी कुछ दिन चुप रह सकते हो।

थोड़ा ठहर कर रमेश ने अपना आखिरी तीर छोड़ा, "अगर मैं किसी और लड़की से शादी करूँगा, तो इसके प्रति अन्याय होगा।"
"लेकिन उससे भी बड़ा अन्याय होगा", ब्रजमोहन ने प्रत्युत्तर दिया, "अगर तुम मेरी चुनी हुई लड़की के साथ शादी करनेसे इन्कार करोगे।"

रमेश कुछ और नहीं कह सका। उसने सोचा, एक ही तरीका है; वह यह, कि किसी आकस्मिक दुर्घटना से शादी रुक जाय।

ज्योतिषियों के अनुसार उस एक मुहूर्त के बाद सालभर तक शादी का कोई मुहूर्त नहीं था, और रमेश को ख्याल हुआ कि वह दिन किसी तरह टल जाय, तो उसे एक साल की मुहलत मिल जायगी।

वधू दूर गाँव में रहती थी, जहाँ केवल नदी से जाना संभव था। छोटी छोटी खाड़ियों में से बड़े नालों को जोड़ने वाला करीब का रास्ता भी कोई तीन-चार दिन का था। ब्रजमोहन ने

दुर्घटना के लिए काफी समय रख छोड़ा और मुहूर्त के दिन के पूरे एक हफ्ते पहले बारात के साथ रवाना हो गये। हवा सारे रास्ते अनुकूल रही, और ये लोग सिमलघाट तीन दिन में पहुँच गये, जिससे शादी के लिये अभी तीन दिन और रह गये। वृद्ध महाशय का समय के पहिले आने का एक और कारण था: वधू की मा की हालत बुरी थी और इनकी बहुत दिनों से इच्छा थी कि वह अपना घर छोड़कर इनके गाँव आ जाय, जहां ये उसे आराम से रख सकें और इस प्रकार अपने ऊपर चढ़ा अपने बचपन के मित्र का कर्ज चुका सकें। अब तक रिश्तेदारी का बन्धन न था, इसलिये ऐसा प्रस्ताव लेकर जाना बड़ी नाजुक बात थी, लेकिन अब होने वाली शादी के कारण इन्होंने प्रस्ताव किया और उसने अपनी सहमति दे दी। मात्र इस बच्ची तक उसका कुटुम्ब सीमित था, इसलिये उसने यह सलाह मान ली कि अपने मातृहीन दामाद के लिये वह मा के रिक्त स्थान की पूर्ति करे। वह अपने निश्चय पर यह कह कर दृढ़ रही कि "कहने वाले, जो चाहें, कहें, लेकिन मेरी जगह अपनी पुत्री और उसके पति के साथ है।"

सो शादी के बाकी दिन ब्रजमोहन बाबू ने इस औरत के घरू सामान को नये घर में भेजने के प्रबन्ध में बिता दिये। इनकी इच्छा उसे लौटती बारात के साथ ले जाने की थी, इसलिये ये उसे मदद देने के लिये अपने साथ औरतों को ले आये थे।

शादी बाकायदा हुई, लेकिन रमेश ने पवित्र मंत्र सही-सही उच्चारित करने से इन्कार कर दिया, मंगल दर्शन के अवसर पर आँखें बन्द कर लीं, वह मुँह लटकाये बैठा रहा, और वधू के कक्ष में हँसी-मजाक के वक्त चुप बैठा रहा; सारी रात वधू की तरफ पीठ किये पड़ा रहा, और सुबह जल्दी से जल्दी कमरे से बाहर हो गया।

सब समारोह समाप्त होने पर बारात वापस चली। एक नाव में औरतें, दूसरी में वृद्ध जन, वर और नौजवान तीसरी में, शादी में

जिन्होंने बाजे बजाये थे, वे बाजेवाले चौथी नाव में बिठाले गये, जो भिन्न-भिन्न गीतों और संगीत की धुनों में वक्त मालूम नहीं होने देते थे।

दिन भर असह्य गरमी रही। आसमान निरभ्र था, लेकिन क्षितिज पर फीका धुँधलापन फैला हुआ था। किनारे के पेड़ों का का रंग विचित्र तरीके से उतरा हुआ था, और एक भी पत्ता नहीं हिल रहा था। मल्लाह पसीने में नहा गये थे। अभी सूरज क्षितिज पर ही था कि मल्लाहों ने ब्रजमोहन से कहा, "नावें अब किनारे लगाना पड़ेंगी, सरकार! आगे मीलों तक कोई जगह नहीं है, जहाँ हम लंगर डाल सकें।"

लेकिन ब्रजमोहन बाबू, जितनी जल्दी हो सके, यात्रा तय करना चाहते थे।

"हम यहाँ नहीं ठहर सकते," वे बोले, "आधी रात तक चाँद रहेगा; हम बालहाट जाकर नाव खोलेंगे। तुम्हें इनाम पूरा मिलेगा।"

आदेशानुसार मल्लाह खे चले। एक तरफ धूप में चमकता हुआ रेतीला किनारा था, दूसरी तरफ ऊँची टूटी-फूटी कगार। धुँधलेपनमें से चाँद प्रकट हुआ, लेकिन रोशनी वैसी धुँधली थी, जैसी शराब पिये आदमी की आँखों की हो। आसमान अभी भी निरभ्र था कि अचानक, बिना किसी चेतावनी के, तीखी आवाज की गरजन से नीरवता भंग हो गई। यात्रियों ने पीछे मुड़कर देखा तो डालियों, टहनियों, घास-तिनकों का स्तम्भ और धूल रेत के बादल, जैसे विशाल झाड़ू से झाड़े हुए, उन्हें छा लेने आ रहे थे।

भयातुर चीखें उठीं, 'सावधान, धीर धरो, दया करो, मदद करो।'

आगे क्या हुआ, कभी जाना नहीं जायेगा। बवंडर का झोंका था, जिसने नाव पर उतर कर हर चीज निर्मूल कर दी, हर चीज उलट दी।

और घड़ीभर में असहाय नौका-समूह अस्तित्व हीन हो गया।

मिलन

३

धुँधलापन साफ हुआ और तेज चाँदनी ने रेत के विशाल फैलाव का ऐसे चमकीले सफेद कपड़े से ढक लिया, जैसा विधवायें पहनती हैं। नदी पर न एक नाव थी, न एक तरंग ही, और ऐसी शांति, जैसी मृत्यु किसी तकलीफयाफ्ता को प्रदान करती है, धारा पर और किनारे पर फैली हुई थी।

रमेश की चेतना जब लौटी, उसने अपने को एक रेतीले द्वीप के किनारे पाया। कुछ वक्त गुजरने पर उसे सारी घटना याद आई: जैसे दर्द भरा सपना हो, और वह उठकर खड़ा हो गया। उसकी पहली चेष्टा अपने पिता और मित्रों के बारे में जानने की हुई। उसने चारों तरफ नजर गड़ाई, कहीं आदमी की कोई निशानी नहीं थी। वह अपनी व्यर्थ खोज में पानी के किनारे-किनारे निकला। गंगा की सहायक नदी पद्मा की दो धाराओं के बीच हिमश्वेत द्वीप बाँहों में भरे बच्चे के समान पड़ा था। रमेश ने द्वीप का एक हिस्सा तय कर लिया और दूसरों पर खोज के लिये निकला ही था कि उसे लाल कपड़े जैसी कोई चीज़ दिखी। उसने कदम बढ़ाया और देखा वधू के आरक्त वेश में एक नौजवान लड़की रेत पर मानों निर्जीव पड़ी है।

रमेश ने डूबते हुए लोगों को बचा लेने की शिक्षा पाई थी। बड़ी देर तक उसने लड़की की साँस लाने की चेष्टा की। अन्त में लड़की ने साँस ली और उसकी आँखें खुलीं।

रमेश अब तक बिलकुल थक गया था और कुछ देर तो उसमें लड़की से प्रश्न करने की शक्ति भी नहीं थी। जान पड़ता था कि वह भी पूरी चेतन नहीं हुई थी क्योंकि मुश्किल से आँख खोल पाती थी। रमेश ने जाँच करके जान लिया कि उसकी साँस बेरुकावट चल रही है। बड़ी देर तक वह पीला

चाँदनी में टकटकी लगाकर देखता रहा। उनकी पहली यथार्थ मुलाकात के लिये वह विचित्र वातावरण था: यह सुनसान जगह, जल और थल के बीच, मानों जीवन और मौत के बीच हो।

कौन कहता था कि सुशीला सुन्दरी नहीं है? सारे दृष्टि-पथ को चाँदनी ने भव्य झलक से भर दिया था, और सिर पर का मेहराबदार आसमान सीमा-हीन विशाल दीख पड़ता था, लेकिन प्रकृति की यह सारी महानता रमेश की आँखों में इस नन्हें सोते सौंदर्य के लिये पूर्व प्रष्ठिका मात्र थी।

वह बाकी सब भूल गया था। "मैं खुश हूँ," वह सोचने लगा, "कि शादी की जल्दीबाजी में मैंने इसका मुख नहीं देखा, नहीं तो जिस रूप में अभी देख रहा हूँ, उस रूप में देखने का कभी मौका न आता। इसे पुनर्जीवन देकर मैंने शादी के शास्त्रोक्त मन्त्रोच्चारण से अधिक प्रभावशाली ढंग से अपना बना लिया है। मन्त्रोच्चारण से मैं केवल लोगों की निगाह में इसे अपना बना पाता। लेकिन अब मैंने इसे दयालु विधि के उपहार के रूप में प्राप्त किया है।

लड़की मे चेतना पाई, और वह उठ बैठी। उसने अपने बिखरे वस्त्र ठीक किये और सिर पर घूँघट सरका लिया।

"नाव के और आदमियों का क्या हुआ, जानती हो?" रमेश ने पूछा।

उसने बिना कुछ कहे सिर हिला दिया। "अगर तुम अकेली रह सको तो मैं कुछ घड़ी के लिये जाकर पता लगाऊँ।" रमेश कहता गया। लड़की ने कोई जवाब नहीं दिया। लेकिन उसका सकुँचित शरीर शब्दों से अधिक स्पष्ट कह रहा था, 'मुझे यहाँ अकेला मत छोड़ो!'

रमेश ने उसका मौन आग्रह समझा। वह खड़ा हो गया, और उसने अपने चारों तरफ देखा! चमकती हुई रेतीली ऊसर पर जीवन का कोई

चिन्ह न था। उसने अपने दोस्तों का नाम ऊँची से ऊँची आवाज में पुकारा, लेकिन कोई उत्तर नहीं।

अपना प्रयत्न व्यर्थ देखकर रमेश फिर बैठ गया। लड़की ने अपने हाथों में मुँह छिपा लिया था, और आँसुओं को रोकने की कोशिश कर रही थी, लेकिन उसका वक्ष उठ गिर रहा था। रमेश को लगा कि धीरज के केवल शब्द व्यर्थ होंगे। वह उसके करीब बैठ गया और हल्के हल्के उसके झुके सिर और गर्दन को सहलाने लगा। वह अपने आँसुओं को न रोक सकी और उसका दुख अव्यक्त प्रकाशन की धारा में फूट पड़ा। रमेश की आखों से सहानुभूति के आंसू बह निकले।

जब तक उन्होंने अपने दिल भर रो लिया, चाद छिप चुका था। अँधेरे में भयावह ऊसर उदास सपने जैसा और रेत का सफेद विस्तार प्रेत जैसा जान पड़ता था। यहाँ वहाँ नदी तारों की धुँधली रोशनी में ऐसी चमकती थी जैसे किसी विशाल अजगर की केंचुली हो।

रमेश ने लड़की का कोमल नन्हा और डर से शीतल हाथ अपने हाथ में लिया, और हल्के से उसे अपनी ओर खींचा। उसने कोई विरोध नहीं किया। भय ने मानव साहचर्य के सिवा उसकी सारी वृत्तियाँ छीन ली थीं। अन्धकार में रमेश के गर्म वक्ष-स्थल पर उसने मनचाही पनाह पायी। लज्जा का वक्त नहीं था और वह उसके भुजबन्धनों के आलिंगन में आराम से लेट गई।

सुबह का तारा डूब गया; और नदी के मटमैले विस्तार के ऊपर पूरब का आसमान पहले पीला हुआ, फिर लाल। रमेश रेत पर गाढ़ी नींद से सो रहा था और उसके बाजू में उसकी भुजा का तकिया बनाकर नववधू गहरी नींद में डूबी हुई थी। दोनों की आँखों पर सुबह का सूरज पड़ा और दोनों नींद से चौंक पड़े। थोड़ी देर तक दोनों अपने चारों ओर अचरज भरे ताकते रहे, फिर अचानक उन्हें ख्याल आया कि वे भटक गये हैं। और उनका घर बड़ी दूर है।

● ४

बहुत देर न हुई होगी कि मछुओं की नावों की सफेद पालें नदी पर फैल गई। रमेश ने मछुओं में से एक को बुलाया और उसकी मदद से घर की यात्रा के लिये एक बड़ी खेने वाली नाव तय की। रवाना होने के पहले उसने पुलिस को अपने बदकिस्मत साथियों की खोज करने का आदेश दे दिया।

जब किश्ती गाँव के घाट पर पहुँची, तो रमेश को मालूम हुआ कि पुलिस ने उसके पिता, सास और अनेक रिस्तेदारों की लाशें प्राप्त कर ली हैं। कुछ मल्लाहों की जानें शायद बच जातीं, लेकिन बचे हुए लोगों को अप्राप्य समझकर उनकी खोज बन्द कर दी गई थी।

रमेश की वृद्धा आजी घर पर थी; उसने अपने नाती और अपनी वधू का स्वागत जोर से रोकर किया, और जिन घरों के लोग बारात में गये थे, उन घरों में रोना मच गया। शंख नहीं बजे, न परम्परागत स्वागत-शब्दों वधू का स्वागत हुआ। किसी ने उसका सत्कार नहीं किया; यथार्थ में लोगों ने उसकी सूरत से किनारा काटा।

रमेश ने दाह क्रियायें समाप्त होते ही यह स्थान छोड़ अपनी पत्नी के साथ कहीं चले जाने का निश्चय कर लिया था। लेकिन पिता के काम-काज को ठिकाने लगाये बिना वह हिल भी न सका। दुखी औरतों ने उससे तीर्थ यात्रा पर जाने की बात कही थी और इसके लिये भी इन्तजाम करने की जरूरत थी।

इस दुखपूर्ण काम-काज से छुट्टी मिलने के वक्त में वह प्रेम के दावे से बेपरवाह नही रहता था। इस नन्हीं स्त्री की तरफ वह अन्दाज भरे ढंग से खिंचा जा रहा था, और उसका पंडित मन इसके रूप का आकर्षण न टाल सका।

उसने कल्पना में इसे अपने भविष्य के सहचर के रूप में देखा। उसकी सपनीली आँखों के सामने इसके अनेक रूप तैरते थे, बालिका, वधू,

प्यारी गृहणी, अपने पुत्रों की सती मा। जिस प्रकार चित्रकार अपने हृदय-सिंहासन में अपनी कल्पना के अकलंक चित्र को स्थान देता है और कवि अकलंक कविता को और फिर अपनी समस्त भक्ति उस पर चढ़ा देता. वैसे ही रमेश ने मन ही मन इस बालिका को हृदय के आनन्द और घर में सुख-वैभव लानेवाली के रूप में ग्रहण कर लिया।

५

पिता का कामकाज करने और वृद्धाओं की तीर्थयात्रा का प्रबन्ध करने में रमेश को लगभग तीन माह लग गये। कुछ पड़ोसियों ने तरुण वधू पर डोरे डालना शुरू कर दिया था। समय के साथ धीरे-धीरे रमेश के साथ उसे बाँधनेवाली प्रेम की ढीली गाँठ दृढ़ हो गई।

इन तरुणों की आदत हो गई थी कि छत पर चटाई बिछाकर साँझ खुले आसमान के तले काटते थे। अब रमेश ने अपने को आजाद हो जाने दिया। वह लड़की को पीछे से झपट कर डराता, अपने हाथ उसकी आँखों पर हलके दबाता, और उसका सिर अपने वृक्ष पर खींचता। ब्यालू के पहले साँझ में जब वह सो जाती तो वह चौंकाकर उसे जगा देता और खुद उसकी झिड़की खाता। एक साँझ उसने खेल खेल में उसके उलझे बालों को झकझोरते हुए कहा, "सुशीला, तुम्हारा आज का बाल सँवारने का ढंग मुझे पसन्द नहीं है।

लड़की सँभली। "देखिये तो, आप मुझे सुशीला क्यों कहते जाते हैं ?" उसने पूछा। रमेश उसके इस प्रश्न का ठीक अर्थ न समझकर उसकी तरफ अचरज से देखने लगा। "नाम बदल देने से मेरा भाग्य थोड़े ही बदल जायगा।" वह कहती गई, "मैं बचपन से अभागिन रही हूँ और जीवनभर अभागिन रहूँगी।"

रमेश का हृदय व्यथा से सिहर उठा और उसके चेहरे का रंग फीका पड़ गया। उसके मन में यह ख्याल जम गया कि कहीं न कहीं भयंकर गलती

हो गई है। "तुम क्यों कहती हो, कि तुम जीवन भर अभागिन रही हो ?" उसने पूछा।

" मेरे पिता मेरे जन्म के पहले मर गये, और मैं छ:माह की भी न थी कि मा का भी देहान्त हो गया। अपने चाचा के घर मेरा वक्त बुरा कटा। तभी अचानक सुना कि कहीं से अवतीर्ण होकर आपने मुझ में रुचि ली। दो दिन बाद हमारी शादी हो गई। इसके बाद जो हुआ, वह आपको मालूम है।

रमेश असहाय अपनी तकिया पर गिर पड़ा। चांद उग आया था, लेकिन उसकी किरणों में चमक नहीं थी। उसे और प्रश्न करते भय लगा और उसने जो कुछ सुना था, उसे वह एक भरम कहकर भूल जाना चाहता था। नींद से जाग रहे जन की साँस के समान गरम दक्षिण पवन हौले-हौले हिल उठी, एक जागी हुई कोयल ने चांदनी में अपने एकरस स्वर भर दिये, करीब के घाट पर रुकी नावों में से मल्लाहों का गीत हवा में उठा। रमेश को अपने अस्तित्व से अनजान देखकर लड़की ने उसे हलके कुरेद दिया; "सो गये !" उसने पूछा।

"नहीं तो," रमेश ने कहा, लेकिन इसके आगे कुछ जवाब नहीं; और वह अलसा कर सो गई। रमेश सीधे बैठकर उसे निहारने लगा, लेकिन उसके मस्तक पर विधि के लिखे रहस्य का कोई निशान न था। इस सुन्दरता के आवरण में इतनी भयानक विधि गोपन रहना कैसे संभव था !

रमेश को अब पता चला कि लड़की उसकी परिणीता वधू नहीं है, और किसकी है, यह पता लगाना कुछ सरल बात नहीं है। एक दिन उसने चतुरता से पूछा, "शादी के समय पहली बार मुझे देखकर तुमने क्या सोचा था ?"

"मैंने आपको नहीं देखा," उसने जवाब दिया, "सारे वक्त मैंने निगाह ऊपर नहीं की।"

रमेश—तुमने मेरा नाम भी नहीं सुना ?

लड़की—मैंने केवल पहली बार आपके बारे में शादी के एक दिन पहले सुना था। मेरी चाची मुझे अपने से दूर करने की ऐसी जल्दी में थी कि कि उन्होंने आपका नाम भी मुझे कभी नहीं बताया।

रमेश—और हाँ, मुझे बताया गया था कि तुम लिख पढ़ लेती हो। देखूँ, तुम अपना नाम लिख सकती हो; और उसने उसे एक कागज का टुकड़ा और एक पेन्सिल दे दी।

"जैसे मैं अपना नाम भी नहीं लिख सकती," उसने हिकारत से कहा, "यह तो बड़ा आसान काम है," और बड़े अक्षरों में लिखा, श्रीमती कमला देवी।

रमेश—अब अपने चाचा का नाम लिखो।

कमला ने लिखा—श्रीयुक्त तारनी चरण चट्टोपाध्याय।

"क्या मैंने कोई गलती की?" उसने पूछा।

"नहीं," रमेश ने कहा, "अब जरा अपने गाँव का नाम लिख दो।"

उसने लिखा 'धोबापुर।'

इन उपायों से रमेश ने लड़की के पिछले जीवन की अनेक बातें धीरे-धीरे जान लीं, लेकिन इतना सब होने पर भी वह अपनी पूछताछ के उद्देश्य से अनजान था।

रमेश अब भविष्य के कार्यक्रम के बारे में सोचने बैठा। इसका पति बहुत संभव है, डूब गया है। अगर किसी तरह उसने इसके ससुरालवालों का पता लगा लिया और कमला को उनके पास भेजा, तो इसमें शक है कि वे लोग इसे ग्रहण करेंगे, और यह लड़की के हक में उचित न होगा कि उसे चाचा के घर भेज दिया जाय। समाज ने यदि जान लिया कि यह लड़की इतने दिन एक दूसरे व्यक्ति की पत्नी बनकर रही है, तो न जाने इसके साथ क्या सुलूक करे! यह कहाँ शरण पाये! अगर इसका पति जीता भी हो तो क्या वह इसे ग्रहण करने की इच्छा या साहस दिखायेगा! रमेश इसके साथ कुछ

भी करे, वह अज्ञात सागर में इसे छोड़ देने के समान होगा। वह इसे अपने घर में सिवा पत्नी के और किसी रूप में नहीं रख सकता था, और न इसे किसी अन्य व्यक्ति को ही सौंपा सकता था, लेकिन फिर भी ये दोनों एक साथ पति-पत्नी के रूप में नहीं रह सकते थे। प्रेम के रंगों से बनाई अपने भविष्य की जीवन सहचरी के रूप में इस लड़की की सुन्दर तसवीर रमेश को एकदम काली कर देना पड़ी।

अपने गाँव में लगातार रहना असह्य हो जाये, लेकिन कलकत्ते की असंख्य जनराशि में वह मात्र अज्ञात इकाई होगा। वहाँ शायद समस्या का कोई हल सोच सके, इसलिये वह कमला को कलकत्ता ले गया और वहाँ उसने अपने पिछले निवास से बहुत दूर मकान लिया।

कमला के लिये यहाँ का अनुभव बहुत उत्तेजक था। आने के दिन अपने मकान में सब ठीक-ठीक होते ही वह खिड़की पर जा बैठी। मानवता की अनन्त धारा का दृश्य उसकी उत्सुकता को ऐसा उभारने वाला था कि जिसको किसी प्रकार शांत नहीं किया जा सकता था। इनके यहाँ एक नौकरानी थी, जिसे कलकत्ते की सड़कों में कोई नवीनता नहीं थी, और वह इस लड़की की उत्सुकता को पागलपन समझती थी।

"वहाँ [illegible] के लिए ऐसा क्या रखा है? तुम्हें नहाना नही है? देर बहुत हो गई है।" बदमिजाजी से उसने कहा।

यह औरत दिन भर काम करने के लिए थी। शाम को घर चली जायेगी, क्योंकि रात में रहे, ऐसा नौकर मिलना बहुत मुश्किल था।

"मैं अब कमला के साथ नहीं सो सकता।" रमेश ने सोचा, "लेकिन अनजान जगह में बच्ची रात अकेले कैसे काट पायेगी?"

ब्यालू के बाद नौकरानी चली गई। रमेश ने कमला को उसके सोने की जगह दिखाई और बोला, "तुम अब जाओ, सोओ। मैं पढ़ना खतम करके बाद में आऊँगा।"

उसने एक किताब खोल ली और पढ़ने का बहाना कर लिया ! कमला थकी थी, और जल्दी सो गई।

पहली रात तो ऐसे कट गई। दूसरी रात भी रमेश ने कमला क अकेले सुलाने की तरकीब सोच ली। दिन बड़ा गर्म था। रमेश ने शयन-कक्ष के बाहर छज्जे पर दरी बिछा ली, और रात भर वहीं रहा। बहुत देर तक वह सोचता रहा, पंखा झलता रहा, लेकिन आधी रात होते होते सो गया।

सुबह दो-तीन बजे उसकी नींद तनिक खुली और उसे लगा कि वह अकेला नहीं है। अर्ध-निद्रित अवस्था में उसने लड़की को अपनी ओर खींचा और अलसाते हुये कहा, "सोने जाओ सुशीला, मुझे पंखा न करो।" अँधेरे के डर ने कमला को रमेश के भुजबन्धन में ला दिया और वह शांतिपूर्वक सो गई।

रमेश जल्दी जगा, और अचरज से चौंक उठा। कमला अभी भी सो रही थी और उसका दाहिना हाथ रमेश की गर्दन में लिपटा था। मोहक विश्वास के साथ उसने रमेश पर अपना अधिकार जताया था और उसके वक्ष से तकिये का काम ले रही थी। निद्रित बाला को निहारते हुये रमेश की आँखें आँसू से भर गयीं। आश्वस्त बालिका की भुजा का कोमल बन्धन वह सख्ती से कैसे छिन्न कर सकेगा ! उसे अब याद आया कि आधी रात में पंखा झलने के लिए वह उसके बाजू में चुपके से आ गई थी।

एक गहरी निश्वास के साथ उसने हल्के से अपने को उसके आलिंगन पाश से मुक्त किया और वह उठ खड़ा हुआ।

बड़े गम्भीर विचार के बाद उसने समस्या के हल-स्वरूप कमला को एक बालिका-हॉस्टल में भेजने का फैसला किया और इस बात की चर्चा लड़की से की।

"तुम कुछ अध्ययन करना चाहोगी, कमला।" उसने रमेश की तरफ ऐसे भाव से देखा, जिसने शब्दों से अधिक स्पष्ट कहा—"आपका क्या मतलब हो सकता है ?

रमेश ने अध्ययन से लाभ और उससे मिलने वाले आनन्द की लम्बी चर्चा की, लेकिन यह सब न कहने से भी काम चलता, क्योंकि कमला ने यही कहा: "अच्छी बात है, आप मुझे पढ़ाइये।"

"तुम्हें स्कूल जाना होगा," रमेश ने कहा।

"स्कूल !" उसे अचरज हुआ, "मुझ जैसी बड़ी लड़की को ?"

रमेश को कमला की इस भावना पर हँसी आई, "तुमसे बड़ी लड़कियाँ स्कूल जाती हैं।" उसने कहा।

कमला के पास कहने के लिए अधिक न था; और एक दिन वह रमेश के साथ स्कूल पहुँची।

जगह बड़ी थी और वहाँ कमला से छोटी-बड़ी लड़कियों की संख्या की सीमा न थी।

रमेश ने उसे हेडमिस्ट्रेस की देखरेख में सौंप दिया और लौटने ही वाला था कि कमला शायद उसके संग होने के लिये आगे बढ़ी।

"तुम कहाँ चली ?" उसने कहा, "तुम्हें तो यहीं रहना होगा।"

"आप यहाँ नहीं ठहर रहे हैं ?" उसने भर्राई आवाज में पूछा।

"नहीं ठहर सकता।" रमेश ने कहा।

"तब मैं भी नहीं ठहर सकती," कमला ने उसका हाथ पकड़ते कहा, "मुझे अपने साथ ले चलो।" "पागल न बनो कमला।" रमेश ने हाथ छुड़ाते हुये कहा।

झिड़की से कमला चुप हो गई। वह जैसे मंत्रमुग्ध सी खड़ी रही, और उसका चेहरा मुरझा कर संकुचित जान पड़ा। हृदय में पीड़ा लिये रमेश जल्दी लौटा, लेकिन जल्दी वह कितनी भी करे, उस नन्हें प्यारे, असहाय, चुप चेहरे का भाव वह नहीं भूल सका।

कलकत्ते की अलीपुर कचहरी में अब रमेश ने वकालत करने का विचार किया, लेकिन जैसे उसकी सम्पूर्ण शक्ति नष्ट हो गई थी। न निश्चित उद्देश्य के साथ काम करने की दृढ़ता उसमें थी, और न नये वकील की राह में आने वाली बाधाओं से लड़ने की ताकत। उसने हावड़ा पुल के पार या कालेज स्कूल के चारों ओर निरुद्देश्य घूमने की आदत डाली, और वह उत्तर-पश्चिम जाने का विचार कर ही रहा था कि उसे अन्नदा बाबू का पत्र मिला। वृद्ध महाशय ने लिखा था:

"मैंने गजट में देखा कि तुम पास हो गये हो, लेकिन यह बात स्वयं तुमसे न सुनने का दुख है। बहुत दिनों से न तुमने लिखा, न हम तुम्हारे बारे में सुन सके। तुम कैसे हो, और कलकत्ता कब आ रहे हो, यह लिखकर अपने वृद्ध मित्र की चिन्ता दूर करो।"

यहाँ यह बताना अप्रासंगिक न होगा कि विलायतवाला तरुण, जिस पर अन्नदा बाबू की आँख दामाद बनाने के लिये लगी थी, हिन्दुस्थान लौट आया था और अच्छे घर की एक लड़की से उसकी शादी है हो गई थी।

रमेश बड़े संशय में था कि इतना सब हो जाने के बाद क्या उसके लिये हेमनलिनी से पहले जैसी पहिचान जारी करना उचित है। जो भी हो, अभी थोड़े समय तक वह कमला के साथ अपने संबंध के बारे में किसी को भी कुछ नहीं बता सकता था, क्योंकि ऐसा करने से निर्दोष लड़की सामाजिक निरादर का पात्र बन जाती। फिर भी यदि उसे हेमनलिनी के साथ अपने पुराने ताल्लुक जारी करना है, तो यह सब बताना पड़ेगा।

लेकिन किसी भी हालत में बिना अशिष्ट हुये वह अन्नदा बाबू के पत्र का उत्तर देने में देर नहीं कर सकता था। सो उसने लिखा:

"क्षमा करें, आपसे न मिल सका; अपने बस के परे होने वाली घटनाओं के कारण मैं ऐसा नहीं कर पाया।"

लेकिन उसने उन्हें अपना पता नहीं बताया।

दूसरे दिन वकीलों की टोपी पहनकर उसने अदालत में पहली बार कदम रखे।

एक दिन कचहरी से लौटकर कुछ दूर पैदल चलने के बाद वह घोड़ा गाड़ी किराये से करने वाला ही था, कि किसी पहिचानी आवाज में उसने सुना, "पिताजी, रमेशबाबू,।"

"ठहरो ड्राइवर, ठहरो," एक मर्दानी आवाज ने कहा और गाड़ी रमेश के करीब आ गई। अन्नदा बाबू अपनी पुत्री के साथ अलीपुर जू की एक पार्टी से लौट रहे थे, इसीलिये इस अकस्मात् मुलाकात का मौका आ गया।

हेमनलिनी का मधुर भव्य मुख, इतनी अधिक परिचित वस्त्र और केशों के शृंगार की शैली, कलाई में सादी चूड़ियाँ और सोने के जड़ाऊ ब्रेस्लेट: गाड़ी में हेमनलिनी को देखते ही उसके वक्ष में भावना लहराने लगी और उसका कंठ रुद्ध हो गया।

"तो तुम हो, रमेश!" अचरज से अन्नदा बाबू ने कहा, "कैसी क़िस्मत! तुमसे सड़क पर इस तरह मुलाकात हो गई। तुमने तो हमें आजकल लिखना ही बन्द कर दिया है और लिखते ही हो, तो अपना पता नहीं देते। अभी कहाँ जा रहे हो? कुछ खास काम कर रहे हो?"

"नहीं अभी तो कचहरी से लौट रहा हूँ," रमेश ने कहा।

"तो चलो, हमारे साथ चा पीना।"

रमेश का हृदय भरा हुआ था, और उसमें संकोच की कोई गुंजाइश न थी। वह गाड़ी में बैठ गया और बड़े प्रयत्न से अपने संकोच को दबाकर उसने हेमनलिनी से उसकी कुशलता पूछी।

"तुम पास हो गये, यह बात तुमने हमें क्यों नहीं बताई?" उसने उत्तर देने के बजाय प्रश्न पूछा।

रमेश को कोई उत्तर नहीं सूझा, इसलिये उसने इतना ही कहा, "और तुम भी तो पास हो गई।"

हेमनलिनी हँस पड़ी। "हाँ, ठीक है। आप हमें एक दम नहीं भूल जाते, यही क्या कुछ कम है।"

"अभी कहाँ रह रहे हो?" अन्नदा बाबू ने पूछा।

"दरजीपुरा में," रमेश ने कहा।

"क्या, कोलूटोला वाला पुराना मकान तो अच्छा था।" वृद्ध महाशय ने कहा।

रमेश का उत्तर सुनने की गहरी उत्सुकता के साथ हेमनलिनी ने उसकी ओर देखा। रमेश ने उसकी निगाह परख ली और उसमें निहित धिक्कार की भावना वह पहिचान गया।

"हाँ, वहीं जाने का मैंने ते किया है," बिना समझे, बूझे वह कह गया। रमेश स्पष्ट जानता था कि हेमनालिनी उसका न्याय करने बैठी है और मकान बदलने के गम्भीर दोष का मन ही मन उसे अपराधी समझती है। इस विचार से रमेश को भयंकर पीड़ा हुई और उसे अपने बचाव का कोई रास्ता नहीं सूझा। लेकिन उस घड़ी सवाल करने वाला वकील चुप था और हेमनलिनी ने दिखाने के लिये अपनी निगाह बाहर सड़क पर जमा ली।

जब मौन असह्य हो गया, रमेश ने स्वयं सफाई दी। "मेरे एक रिश्तेदार हेदुआ में रहते हैं। उनसे ताल्लुक बनाये रखने के लिये मैंने दर्जीपारा में मकान लिया है।"

यह बात एकदम झूठ नहीं थी, लेकिन जवाब असंतोषजनक लगा। मानों! कोलूटोला हेदुआ के इतने पास न हो कि वह एक दूर के रिश्तेदार का समाचार कभी कभी जान सके

हेमनलिनी की टकटकी सड़क की तरफ रही और रमेश ने कोई नई बात कहने के लिये दिमाग पर बड़ा जोर दिया। उसने एक बार केवल यही पूछा, "जोगेन का क्य हाल है?"

जवाब अन्नदा बाबू ने दिया, "वह कानून के इम्तिहान में फेल हो गया, और हवा बदलने के लिये पश्चिम में गया है।"

जब गाड़ी गंतव्य स्थान पर पहुँची, तो परिचित कमरे और फर्नीचर ने रमेश को मंत्रमुग्ध कर लिया। उसने शान्ति और पछतावे की मिली-जुली निश्वास ली और बिना एक शब्द कहे बैठ गया।

"मेरा ख्याल है, काम-काज के कारण तुम्हें इतने दिन घर (रुकना पड़ा," अन्नदा बाबू ने अकस्मात् कहा।

"मेरे पिता की मृत्यु हो गई....." रमेश ने शुरु किया।

"ऐसा मत कहो। अरे, अरे। यह कैसे हो गया?"

"वे पद्मा में नाव से घर आ रहे थे, अचानक तूफान आ गया, नाव लौट गई और वे डूब गये।"

जैसे तेज हवा का झोंका अपने सामने के बादलों को उड़ा ले जाय और आसमान को साफ करदे, वैसे ही इस दुर्भाग्य की खबर से रमेश और हेमनलिनी के बीच की गलतफहमी दूर हो गई।

हेमनलिनी ने पश्चात्ताप के साथ सोचा: "मैंने रमेश को प्रति बड़ी गलती की। वे तो अपने पिता की मृत्यु के दुख और उसके साथ आने वाली चिन्ताओं के कारण पागल हो गये थे। उन्हें अभी भी वही दुख हो। हमने पूछा भी नहीं कि उन्हें क्या कोई पारिवारिक कष्ट है, या कोई खास काम और उन्हें दोषी ठहराने लगे।" और वह पितृहीन तरुण के प्रति बहुत सचेष्ट हो गई।

रमेश को भूख नहीं थी, और हेमनलिनी उसे जबर्दस्ती खिलाना चाहती थी।

"आप जरा भी चंगे नहीं हैं," उसने कहा, "आपको अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देना चाहिये।" फिर उसने अन्नदा बाबू से कहा, "पिताजी, रमेश बाबू को आज रात हमारे साथ भोजन करना होगा।"

"क्यों नहीं।" वृद्ध महाशय ने कहा।

इसी समय अक्षय आ उपस्थित हुआ। कुछ समय के लिये अन्नदा बाबू की चा की टेबल पर उसका कोई रकीब नहीं था, और रमेश की अप्रत्याशित उपस्थिति ने उसे पीड़ादायक आघात पहुँचाया। फिर भी उसने अपने को सँभाला और आनन्दपूर्ण अचरज से कहा।

"अरे, यह क्या? तुम यहाँ, रमेश बाबू। मैं कहता हूँ, जानते हो, इस बीच तुमने हम लोगों को एकदम भुला दिया।"

रमेश ने केवल जरा सा मुसका दिया, और अक्षय कहता गया, "जिस ढंग से तुम्हारे पिता तुम्हें पकड़ ले गये थे, उससे मुझे निश्चय हो गया था कि पिता जी तुम्हारी शादी कराये बिना नहीं मानेंगे। इस होनी से किसी प्रकार बच भी पाये?"

हेमनलिनी की रिसभरी चितवन ने अक्षय का मुँह बन्द कर दिया। "रमेश के पिता की मृत्यु हो गई है, अक्षय," अन्नदा बाबू ने कहा।

रमेश ने सिर झुकाकर चेहरे का पीलापन छिपाया।

अक्षय के चोट करने के इस तरीके पर क्षुब्ध होकर हेमनलिनी ने बीच बचाव किया, "मैंने अपना नया अलबम आपको नहीं दिखाया, रमेश बाबू।" उसने कहा, अलबम लाकर रमेश के सामने टेबल पर रख दिया, और उसके साथ चित्रों पर बात करने लगी। उसे धीमे स्वर में पूछने का मौका मिला, "मेरा ख्याल है, अपने नये मकान में आप अकेले ही रहते हैं, रमेश बाबू।"

"हाँ, रमेश ने जवाब दिया, "बिलकुल अकेला।"

तब आप जितनी जल्दी हो सके, बगलवाले पुराने घर में लौट आइये।"

"हाँ कुछ भी हो अगले सोमवार तक आ जाऊँगा।"

"देखिये, बी. ए. का दर्शन शास्त्र समझने के लिये मुझे जब कभी आपकी मदद की जरूरत होगी।" उसने चतुरता से कहा।

रमेश कल्पना करके प्रसन्न हो गया।

अपने पुराने निवास में लौटने में रमेश को अधिक वक्त नहीं लगा। उसके और हेमनलिनी के बीच की गलतफहमी जरा भी बाकी नहीं थी। घर के लड़के जैसा उसके साथ व्यहार होता था, परिवार के विनोद में उसका हिस्सा होता और उत्सव-त्योहार के अवसर पर वह कभी गैरहाजिर न रहता था।

निरन्तर लम्बे अध्ययन के कारण हेमनलिनी की हालत नाजुक हो गई थी और लोगों को शक होता था कि तेज झोंके में उसका नाजुक तन कहीं चटख न जाय। वह गंभीर और चुप हो गई थी और उसके दोस्तों को उससे बात करते डर लगता था कि कहीं वह नाराज न हो जाय।

लेकिन कुछ ही दिनों ने वे उसके रूप और व्यवहार में अचरजकारी परिवर्तन कर दिया। गालों की सिलाई की जगह हलकी सुर्खी ने ले ली और हर शब्द पर उसकी आँखें आनन्द से नाचती। एक वक्त था कि वह वेश के प्रति अधिक ध्यान देने को अभ्याशी क्या, अपराध समझती थी। इस विषय में उसे अपने ख्याल बदलने की क्यों जरूरत पड़ गई, यह जाना नहीं जायेगा, क्योंकि उसने विश्वास करके किसी को यह बात बताई नहीं।

यहाँ रमेश भी कुछ कम गंभीर और आत्मदर्शी न था। जिम्मेदारी के बोझ का असर उसके मन, शरीर दोनों पर हुआ था। ग्रह-नक्षत्र अपने अपने मार्ग में स्वतंत्रता पूर्वक चलते हैं किन्तु ज्योतिषी की वेधशाला को अपने समस्त यंत्रों के साथ दृढ़ नींव पर जमे रहना चाहिये। इसीलिये रमेश ने दुनिया की मन खराब कर देने वाली अस्थिरता के बीच अपने को किताबों और उनके दर्शन में जमा रखा था। लेकिन अब एक नये और अपूर्व सौंदर्य से उसका उदास आचार-व्यवहार झलक उठा था। हास-विनोद का प्रत्युत्तर वह भले ही न दे पाये लेकिन मुक्त, हार्दिक हँसी से उसमें हिस्सा जरूर लेता था। बालों में पोमेड भले न हो, लेकिन वेश-भूषा में अब वह कम से कम मैला नहीं रहता था। शरीर, मन दोनों से वह अधिक फुरतीला और संजीदा हो गया जान पड़ता था।

● ८

तरुण प्रेमियों के लिये कवियों ने जिस सही वातावरण की व्यवस्था की है, कलकत्ते में उसका एकान्त अभाव है। न अशोक और बकुल के खिलते हुये कुंज, न मरभा का पल्लव-विस्तार, न पीतकंठ कोकिला का गीत। लेकिन फिर भी जादूगर प्रेम सूखे, प्रेमहीन आज के शहर से हारकर चला नहीं जाता। देवों में से तरुणतम और प्राचीनतम देव आने-जाने वाले लोगों की भीड़ में से धनुष तानता-छोड़ता, लाल पगड़ी वाले पोलिस मेन की निगाह बचाकर किस किस रास्ते जाता है, इसे कौन जान सकता है?

उन दिनों में, जब नलिनी इम्तिहान में एकाग्र थी, उसका सीना-पिरोना बंद था। इसलिये कुछ दिन से वह अपने मित्र से इस काम की शिक्षा लेती थी। रमेश इस काम को एकदम व्यर्थ समझता था। जहाँ साहित्य का सवाल था, वहाँ हेमनलिनी और रमेश एक थे। लेकिन जब सीने पिरोने की बात आती, रमेश को अलग रहना पड़ता।

"आजकल सोने पिरोने की ऐसी धुन क्यों है?" वह तनिक चिढ़कर पूछता, "यह उन लोगों के लिये ठीक है, जिन्हें करने के लिये कुछ और अच्छा काम नहीं है। हेमनलिनी सुनकर मुसकरा देती और सुई में धागा डालने लग जाती।

एक दिन सुबह रमेश जब अपने अध्ययन-कक्ष में गया, तो उसने टेबल पर पाई, रेशन की जिल्दवाली एक ब्लाटिंग बुक, जिसके कवर पर फूल कढ़ा था। एक कोने पर 'र' लिखा था और दूसरे में सोने के धागे से कमल बना था। रमेश को न इसके दाता के बारे में कोई संशय रहा और न उसकी भावना के बारे में और उसकी छाती धड़कने लगी। एक क्षण में सीने-पिरोने के प्रति उसकी सारी घृणा हवा हो गई, और वह उसका समर्थक हो गया। ब्लाटिंग बुक को छाती से लगाकर वह अक्षय के सामने भी अपनी गलती स्वीकार करने तैयार हो जाता।

उसने पुस्तक खोली, उसमें एक कागज रखा और पत्र लिखा।

"अगर मैं कवि होता तो अपनी कविता की प्रति लिपि भेजता, लेकिन बात जैसी है, मैं बदले में कुछ नहीं भेज सकता। प्रदान करने की सामर्थ मुझे नहीं मिली, लेकिन ग्रहण करने की क्षमता मुझमें है। इस अप्रत्याशित उपहार का मेरे लिये क्या अर्थ है, इसे अंतर्यामी के सिवा कोई और नहीं जानता। उपहार तो देखा जा सकता है, उसका स्पर्श किया जा सकता है, किन्तु मेरा आभार अदृश्य है। उसके लिये शब्दों पर विश्वास करो। तुम्हारा चिरऋणी— रमेश।

पत्र हेमनलिनी को यथा-समय मिला, लेकिन दोनों में से किसी ने इसकी चर्चा न की।

लगातार बरसात से अन्नदा बाबू की कब्जियत बढ़ती है, लेकिन इससे रमेश और हेमनलिनी के उत्साह में कोई गीलापन नहीं आता। बरसात के कारण अक्सर रमेश का कचहरी जाना न हो पाता। दिनों-दिन वर्षा ऐसी तेज होने लगी कि हेमनलिनी चिंतित होकर पूछ बैठती, "रमेश बाबू, इस मौसम में आप घर कैसे पहुँचेंगे?"

"कोई बात नहीं है," रमेश शरमाता हुआ कह देता, "कोई न कोई इन्तजाम कर लूँगा।"

"भीगने की क्या जरूरत है? ठंड लग जायेगी।" हेमनलिनी पीछे पड़ जाती, "अच्छा हो कि आप ठहर जायें और खाना खाकर जायें।"

रमेश को अपने स्वास्थ्य के बारे में कोई चिन्ता न थी। उसके दोस्तों और रिश्तेदारों ने उसे कभी आसानी से ठंड लगते नहीं देखा था, लेकिन बरसात के दिनों में वह अचरजकारी तत्परता के साथ हेमनलिनी के आदेश को मान लेता और अपने घर तक कुछ गज चलना उसे दोष पूर्ण जल्दबाजी मालूम होती। जिस दिन आसमान हर रोज से ज्यादा घिरा हुआ होता, तो दिन के समय के अनुसार रमेश को खिचड़ी के नाश्ते या उबाली चीजों की ब्यालू में शामिल होने के लिये बुलाया जाता। उसे सर्दी लग जाने की फिकर के समय कब्ज हो जाने की फिकर कोई नहीं करता था।

और इस तरह भावावेश में घिरे हुये इन तरुणों के दिन बीतते। इसका क्या परिणाम होगा, यह रमेश ने कभी नहीं सोचा, लेकिन अन्नदा बाबू सोचते थे और उनके मित्र-रिश्तेदार इसे बड़े आकर्षक विषय समझते थे। रमेश का सांसारिक ज्ञान उसके पांडित्य के बराबर नहीं था और उसके

राग-मोह ने सांसारिक बातों पर उसके दृष्टिकोण को और भी धुँधला बना दिया था। अन्नदा बाबू सदा उसके चेहरे को आशापूर्वक परखते थे, लेकिन वहाँ कोई भाव व्यक्त ही न होता था।

● ६

अक्षय का सुर बड़ा भद्दा था, लेकिन जब वह वायलिनके साथ गाता, तो केवल बड़ा आलोचक ही उसकी कमजोरी समझकर उसे दुबारा गाने के लिये न कहता।

एक ढलती दोपहर में आसमान खूब घिरा हुआ था। रात आ रही थी, लेकिन बरसात रुकी नहीं। अक्षय को रुकना पड़ा। हेमनलिनी ने उससे गाने का प्रस्ताव किया, और स्वयं हारमोनियम के सुर साधने लगी।

अक्षय ने वायलिन के सुर साधे और एक हिन्दुस्तानी वर्षा-गीत शुरू किया :

पवन (वायु) बही पुरवैया
नींद नहीं बिन सैंया।

गीत की भाषा सुननेवालों के लिये अपरिचित थी, लेकिन शब्दों के अनबूझ होने से कोई फर्क नहीं पड़ता था, क्योंकि भावना की तीव्रता समझने के लिये संकेत मात्र काफ़ी है। भावना का स्तर स्पष्ट था—बरसात के मेघ झर रहे हैं, मयूरें शोर मचा रही हैं, और कोई प्रेमी अपनी प्रियतमा के बिना व्याकुल हो रहा है।

गीत के सहारे अक्षय अपने अव्यक्त भावों को अभिव्यक्ति देने का प्रयत्न कर रहा था, किन्तु इससे उपस्थित अन्य दो जनों के भाव व्यक्त हो रहे थे। स्वर की तरंगों में डूबकर दो हृदय एक ताल पर धड़क रहे थे। साधारणता और कल्मष नष्ट हो गये और सारी दुनिया गुलाबी कुहासे में

तैरने लगी। ऐसा जान पड़ा मानों मानव-हृदयों में हिलोरें लेनेवाला समस्त राग इन दो प्रेमियों पर बरसा दिया गया हो, और वह इनके हृदयों में आनन्द और पीड़ा, कामना और बेचैनी का रेला बनकर प्रवाहित है।

न बरसात रुकी, न संगीत। हेमनलिनी का इतना कहना था कि "रुकिये मत अक्षय बाबू, और गाइये", और अक्षय ने दूसरा गीत शुरू कर दिया। इस बार स्वर-लहरी श्याम सघन मेघों जैसी थी, जिसमें से बिजली के तीर छूट रहे थे, लेकिन इसमें भी मानव हृदय की लालसा छिपी पड़ी थी।

उस रात अक्षय बड़ी देर में घर गया। विदा होते समय रमेश ने गीत के कुहासे में से एक घड़ी हेमनलिनी पर दृष्टि डाली। गीत का जादू हेमनलिनी पर भी पड़ा था; उसने रमेश की आँखों में अपनी चमक भरी आँखें डाल दीं।

पानी घड़ी भर के लिये ही रुका था। रमेश घर पहुँचा होगा, कि फिर मूसलधार आ गया। उस रात रमेश सो नहीं सका। हेमनलिनी भी बड़ी देर तक अंधकार में बैठी हुई स्वप्नमग्न अनरुद्ध पानी की बूँदों का शब्द सुनती रही। गीत की ये पंक्तियाँ—

"पवन (वायु) बही पुरवैया
नींद नहीं बिन सैंया।"

उसके कानों में भी गूंजती रही।

दूसरे दिन रमेश ने अपने आपसे कहा: अहा! अगर मैं भी गा सकता। अपनी किसी प्राप्ति के बदले में इसे लेने में जरा नहीं हिचकिचाऊंगा। लेकिन वह जानता था कि दुनिया की कोई शिक्षा उसे गायक नहीं बना सकती। पर वह कम से कम कोई वाद्य बजाना तो सीख सकता है; उसने हारमोनियम खरीदा। वाद्य को अपने कमरे में ले जाकर दरवाजा बंद करके उसने सावधानी से उस पर अंगुलियाँ फेरना शुरू किया।

अगली बार अन्नदा बाबू के घर में रमेश के प्रवेश करते ही हेमनलिनी ने यह कहकर उसका स्वागत किया, "कल आपके कमरे में कोई हारमोनियम बजा रहा था।"

रमेश का ख्याल था कि दरवाज़ा बन्द कर देने से कोई पता नहीं लगा सकेगा। लेकिन किसी की श्रवण शक्ति इतनी तेज़ थी कि बंद दरवाज़े में से आने वाली आवाज़ सुन सकती थी। कुछ शरमाते हुए रमेश को स्वीकार करना पड़ा।

"कमरे में अपने को बन्द करके, अपने तईं सीखने की बेकार कोशिशें करना ठीक नहीं है," हेमनलिनी बोली, "अच्छा हो कि यहीं अभ्यास करें। मैं थोड़ा बहुत जानती हूँ, सो कुछ मदद कर सकूँगी।"

"मैं इतना मंद हूँ," रमेश ने कहा, "कि तुम्हें सिखाने में तकलीफ होगी।"

"आप मंद भले ही हों," हेमनलिनी ने कहा, "जितना मैं जानती हूँ, उतना सिखा दूँगी।" यह जल्दी ही स्पष्ट हो गया कि अपने को मंद कहकर रमेश ने विनीत होने की गलती नहीं की थी। ऐसी शिक्षिका की मदद के बावजूद उसके दिमाग में संगीत की कोई धारणा भरना मुश्किल था। आपने तैरना न जानने वाले किसी आदमी को जलाशय में गिरकर पागलों की तरह हाथ-पैर फड़फड़ाते देखा होगा। इससे आपको रमेश की छटपटाहट का अंदाज लग जायेगा, यद्यपि यहाँ पानी केवल घुटनों तक था। कौन अँगुली कहाँ पड़ना चाहिये, इसका उसे कोई ख्याल नहीं था। हेमनलिनी कहती, "यह क्या कर रहे हो, यह सब तो गलत है।" तो वह पहली गलती सुधारने के लिये जल्दी ही दूसरी गलती कर बैठता। लेकिन गम्भीर-मन, परिश्रमशील रमेश शुरू किये काम से हाथ अलग करने वाला न था। सड़क का ऐंजिन जैसे अपने धीमे रास्ते पर क्या दबाता है और

क्या पीसता है, यह भूलकर सरकता चला आता है, वैसे ही रमेश अबाध और सचेष्ट अपने हारमोनियम की चाबियों पर हाथ फेरता रहता था।

हेमनलिनी उसकी गलतियों पर हँसती थी; रमेश स्वयं अपनी गलतियों पर हँसता था। हेमनलिनी का विनोद-प्रिय मन रमेश की गलती करने की विचित्र क्षमता में आनन्द लेता था। प्रेम गलती, विरोध और अक्षमता में आनन्द लेना जानता है। चलना सीखते हुये बच्चे के गलत कदमों पर मा का प्यार उमड़ पड़ता है और रमेश की संगीत सीख जाने की अक्षमता से हेमनलिनी को मन ही मन आनन्द होता था।

रमेश ने एक दो बार कहा: मुझ पर तुम्हारा इस तरह हँसना ठीक है, लेकिन जब तुम बजाना सीख रही थीं, क्या गलती नहीं करती थीं?

"क्यों नहीं करती थी," हेमनलिनी ने कहा, "लेकिन सच, रमेश बाबू, ऐसी नहीं, जैसी आप करते हैं।"

रमेश हार न मानता। केवल हँस देता और फिर शुरू से प्रारम्भ कर देता। अन्नदा बाबू को संगीत का कोई ज्ञान नहीं था, लेकिन जब कभी वे मंगल-सूचक भाव धारण कर लेते, कानों को तेज़ करते और कहते, "कुछ भी कहो, लेकिन रमेश बड़ा दक्ष होता जा रहा है।"

हेमनलिनी: बेमेल सुरों में दक्ष।

अन्नदा बाबू: नहीं, नहीं, जब से मैंने उसे पहले सुना था, तब से उसने बड़ी उन्नति कर ली है। तुम निश्चय जानो, अगर रमेश इस अभ्यास में लगा रहे, तो समय आने पर बुरा गायक न होगा। एक चीज़ ही चाहिये, लगातार अभ्यास। एक बार सुरों का ज्ञान हो गया कि बाद में सब सीधा है।

इस कथन का कोई विरोध न होता था। जब वृद्ध महाशय कोई कानून बना देते, तो परिवार को आदरपूर्ण मौन से उसे सुनना पड़ता था।

● १०

पूजा की छुट्टियाँ बड़े दिन की छुट्टियों के समान होती हैं। करीब दस दिन काम बन्द रहता है और कुटुम्ब के लोग एकत्र होते हैं।

प्राय: हर शरद में छुट्टी के दिनों में निकलने वाले सस्ते रेल-टिकटों का फ़ायदा उठाकर अन्नदा बाबू हेमनलिनी को लेकर परिवर्तन के लिये जबलपुर आते थे। वे अन्नदा बाबू के बहिनोई के घर ठहरते थे, जो वहाँ सरकारी मुलाज़िम थे और अन्नदा बाबू इस वार्षिक यात्रा को पाचन शक्ति के लिये टानिक समझते थे।

सितम्बर शुरू हो गया था, छुट्टियाँ करीब थीं और अन्नदा बाबू यात्रा की तैयारियों में लगे थे। हेमनलिनी की गैरहाज़िरी में हारमोनियम की शिक्षा में विक्षेप पड़ेगा, इसलिये रमेश ने बचे हुये वक़्त का अधिक से अधिक उपयोग करने का प्रयत्न किया। एक दिन बात के दौरान में हेमनलिनी ने कहा: "रमेश बाबू, मेरा ख्याल है हवा बदलने से आपको फायदा होगा। कलकत्ते से थोड़े दिन के लिये भी बाहर जाना आपको फायदा करेगा; क्यों न, पिताजी?"

अन्नदा बाबू को प्रस्ताव ठीक जँचा। रमेश को मृत्यु-शोक था और हवा बदलने से उसकी उदासी दूर हो जायेगी।

"ठीक तो है," उन्होंने कहा, "कुछ दिनों का वायु परिवर्तन बड़ी मुफ़ीद चीज़ है।"

हेमनलिनी: रमेश बाबू, आपने नर्मदा देखी है?

रमेश: नहीं मैं कहाँ कभी नहीं गया।

हेमनलिनी: आपको जरूर देखना चाहिये, क्यों न पिताजी?

अन्नदा बाबू: देखो, रमेश हमारे साथ क्यों न चले? हवा भी बदल जायगी और धूआँधार देखना भी हो जायेगा।

इस दुहरे टानिक को अपने इलाज का आवश्यक अंश समझकर रमेश ने कोई उज्र नहीं की।

सारे दिन उसका समस्त अस्तित्व हवा पर तैरता रहा। दिल की बेचैनी शान्त करने के लिये उसने दरवाजा बन्द कर दिया और हारमोनियम उठाया, लेकिन उसकी आत्मा सैद्धांतिक शुद्धता से परे थी, और उसकी अंगुलियाँ सुर-बेसुर के संघर्ष के बीच पागल की तरह चाबियों पर नाच रही थीं। हेमनलिनी से शीघ्र वियोग होने की कल्पना ने उसे उदासी की गहराई में ढकेल दिया था। अब अपने आनन्द के अतिरेक में उसने इतनी कठिनाई से पाई शिक्षा को एकदम भुला दिया।

दरवाजे पर दी गई दस्तक और आती हुई आवाज ने उसे रोका "ईश्वर के नाम पर बन्द करो, रमेश बाबू, यह कर क्या रहे हो ?"

रमेश बाबू ने घबराकर दरवाजा खोला। अक्षय ने भीतर आकर कहा, "रमेश बाबू, अपने इस गुप्त कुकर्म से क्या अपनी आत्मा की कचहरी में अपने को दोषी नहीं बना रहे हो ?"

रमेश हँसा: "मैं अपराध स्वीकार करता हूँ।"

"अगर बुरा न मानो, रमेश बाबू, तो एक खास बात तुमसे करना है"—अक्षय कहता गया।

क्या बात है, इस पर अचरज करता हुआ रमेश चुपचाप अक्षय के कहने की प्रतीक्षा करने लगा।

अक्षय: अब तक तुम जान गये होगे कि हेमनलिनी की भलाई मेरे सरोकार का विषय है।

रमेश ने न हाँ कहा, न ना और अगली बात सुनने के लिये ठहर गया।

अक्षय: अन्नदा बाबू के मित्र होने के नाते मुझे यह पूछने का अधिकार है कि हेमनलिनी के संबंध में तुम्हारी क्या मंशा है ?

रमेश को बात, और बात कहने का ढँग, दोनों बुरे लगे, लेकिन एक तीखा प्रत्युत्तर देने की न तो उसकी इच्छा थी, न उसमें शक्ति। उसने धीरे से कहा, "क्या कोई ऐसी बात है जिससे तुम्हें मेरी मंशा बुरी होने का शक हुआ।"

अक्षय: देखो, तुम हिन्दू कुटुम्ब के आदमी हो और तुम्हारे पिता हिन्दू थे। उन्हें तुम्हारे ब्राह्म परिवार में शादी करने का डर था, इसलिये तुम्हारी शादी करने के लिये वे तुम्हें घर ले गये थे, यह बात मैं जानता हूँ—अक्षय को बात मालूम थी और उसीने वृद्ध महाशय मे इस बात का संकेत किया था। कुछ क्षण रमेश अक्षय के मुँह की तरफ देख ही न सका।

"तुम जानते हो," अक्षय ने फिर कहा, "पिता की मृत्यु के बाद तुम मनचाही करने के लिये स्वतंत्र हो? जब उनकी इच्छा... ... ...।"

"देखो, अक्षय बाबू," रमेश ने बात काटते हुये कहा, "अगर किसी और विषय पर तुम मुझे उपदेश देना चाहते हो, तो दे सकते हो, लेकिन मेरे पिता के साथ मेरे सम्बन्धों की चर्चा करना तुम्हारी चिन्ता का विषय नहीं है।

"ठीक है," अक्षय ने कहा, "हम वह बात छोड़ देंगे, लेकिन जो बात मैं जानना चाहता हूँ, वह यह है: क्या तुम हेमनलिनी से शादी करना चाहते हो और क्या तुम ऐसा करने की परिस्थिति में हो?"

ये लगातार आघात रमेश के गम्भीर स्वभाव के लिये भी बहुत थे।

"देखो, अक्षय बाबू," उसने कहा, "भले ही तुम अन्नदा बाबू के मित्र हो, लेकिन हमारा-तुम्हारा परिचय इतना करीब का नहीं है कि तुम ऐसी बातें करो। भला हो, इस विषय को यहीं छोड़ दो।"

अक्षय: अगर मेरे इस विषय को छोड़ देने से सारा प्रश्न छूट जाता और तुम नतीजों का कोई ख्याल किये बिना अनिश्चित काल तक जिन्दगी का मनमाना आनन्द लेते चले जा सकते, तो कुछ कहने की बात ही

नहीं थी, लेकिन समाज तुम जैसे लोगों के लिये शिकार का स्थान तो नहीं है कि जिन्हें नतीजे की कभी चिन्ता न हो। तुम्हारे आदर्श ऊँचे से ऊँचे हों और तुम इस बात की कोई चिन्ता नहीं करो कि संसार तुम्हारे बारे में क्या कहता है, लेकिन हेमनलिनी जैसी स्थिति की लड़की के साथ मनचाही करने की तुम पर जवाबदेही है। लोग तुमसे सफाई चाहेंगे और अगर तुम्हारी यही इच्छा है कि जिन लोगों कि तुम इज्जत करते हो, उन्हें समाज के सामने अपमानित होने दिया जाय, तो तरीका यही ठीक है।"

रमेश: तुम्हारी इस सलाह के लिये मैं तुम्हारा आभारी हूँ। मैं जल्दी ही निश्चय करूँगा कि मुझे क्या करना चाहिये और फिर अपने निश्चय पर दृढ़ रहूँगा। इसके लिये तुम्हें चिन्ता नहीं करना होगा। इस बात पर और बहस करने की जरूरत नहीं।

अक्षय: यह सुनकर मुझे खुशी हुई, रमेश बाबू। इस बात से मुझे बड़ी सांत्वना मिली कि तुम निश्चय करने जा रहे हो और फिर उस निश्चय पर दृढ़ रहने की तुम्हारी इच्छा है। तुम्हें कुछ और जल्दी निश्चय करना था। खैर, मैं इस पर अधिक बहस नहीं करना चाहता। तुम्हारी संगीत शिक्षा में दखल दिया, क्षमा करो। उसे जारी करलो, अब मैं बाधा नहीं डालूंगा ;और अक्षय जल्दी से चला गया।

रमेश की रुचि किसी संगीत के लिये न रही, न सुरे, न बेसुरे।

सिर के नीचे हाथों को धरकर वह चटाई पर पड़ रहा, और समय निकलता गया। अचानक घड़ी ने पाँच बजाये और वह हड़बड़ाकर खड़ा हुआ। भगवान जाने, उसने क्या निश्चय किया, लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि यह उसका तत्काल धर्म था कि पड़ोसी के घर जाये और दो कप चाय पिये।

"तबियत खराब है क्या, रमेश बाबू ?" हेमनलिनी ने उसे देखते ही पूछा।

"कोई खराबी तो नहीं है," रमेश ने उत्तर दिया।

"सिर्फ तुम्हारी पाचन शक्ति खराब है," अन्नदा बाबू बोल पड़े, "महज पित्तविकार। जो गोलियाँ मैं खाता हूँ, उनमें की एक तुम भी खा देखो... ... ... ।"

हेमनलिनी बीच में बोल उठी, "अब पिताजी आप चाहते हैं कि आपके सब दोस्त ये गोलियाँ खायें, लेकिन फायदा मैंने एक को भी होते नहीं देखा।"

अन्नदा: लेकिन इनसे नुकसान भी किसी को नहीं हुआ। मैंने तो अनुभव से जाना है कि किसी और गोली ने मुझे इतना फ़ायदा नहीं किया।

हेमनलिनी: आप जब कोई नई गोली शुरू करते हैं, कुछ दिन तक तो वह एकदम अक्सीर रहती है।

अन्नदा: मैं जो कहता हूँ, उस पर तुम लोग कभी विश्वास थोड़े करोगी। अच्छी बात है, अक्षय से पूछना कि मेरी दवा से उसे फ़ायदा हुआ, या नहीं।

हेमनलिनी ने इस डर से विषय समाप्त किया कि कहीं ताईद करने अक्षय को न बुलाया जाये। लेकिन बिना माँगे प्रमाण देने के लिये गवाह उसी क्षण हाजिर हो गया और जो पहली बात उसने अन्नदा बाबू से कही, वह थी: उनमें से एक और गोली मुझे दीजिये। उनसे मुझे बड़ा फायदा हुआ है, आज मैं बड़ा स्वस्थ अनुभव करता हूँ।

अन्नदा बाबू ने विजय भरी आँखों से अपनी पुत्री को देखा।

● ११

अन्नदा बाबू ऐसे अतिथिसेवी न थे कि गोली खिलाकर अक्षय को चले जाने देते और स्वयं अक्षय ने जल्दी जाने की प्रवृत्ति दिखाई नहीं। वह रमेश की तरफ अरुचि के भाव से कटाक्षपात करता रहा। रमेश कोई ऐसा चौकस जन नहीं था, लेकिन अक्षय की अरुचिपूर्ण निगाहें उसकी आँखों से बच नहीं सकीं और इनसे उसका थिर चित्त चंचल हो गया।

हेमनलिनी जबलपुर यात्रा के बारे में सोचा करती थी। समय करीब था और उसने रमेश से अगली मुलाकात के वक्त छुट्टियों का सारा कार्यक्रम तय करने का विचार किया था: वे आपस में तय करके उन किताबों की सूची बनाना चाहते थे, जो वे अपने साथ ले जाकर फुरसत के वक्त पढ़ेंगे, इसलिये यह तय हुआ था कि रमेश जल्दी आयेगा, क्योंकि अगर चाय के वक्त के पहले वह न आया, तो अक्षय अथवा कोई और मुलाकाती आ जायेगा और उनकी व्यक्तिगत मुलाकात न हो पायेगी।

हुआ यह कि रमेश ने आने में रोज से भी देरी करदी और जब वह आया, तो बड़ा चिन्तापूर्ण। इसीलिये हेमनलिनी का उत्साह ठंडा पड़ गया। उसे मौका मिला, तो उसने धीरे से कहा, "आज आपने बड़ी देर कर दी... ...है न।"

रमेश का मन कहीं और था। "हाँ कर तो दी," क्षणभर ठहरकर उसने कहा।

अब हेमनलिनी ने समय पर अपने को तैयार कर लेने की खासियत सीखली थी। दोपहर ढलते उसने बाल सँवार लिये थे, कपड़े पहन लिये थे और घड़ी की तरफ आँख लगाये प्रतीक्षा में बैठी थी।

बहुत देर तक तो उसने यह सोचकर अपने को संतोष दिया था कि शायद रमेश की घड़ी धीमी हो और वह किसी भी वक्त आ सकता है, लेकिन

जब इस विचार ने काम नहीं दिया, तो सीने का काम लेकर वह खिड़की में बैठ गई और अपनी अधीरता को भरसक थामती रही। इसके ऊपर जब रमेश आया, तो उसके चेहरे पर गम्भीरता का भाव था और उसने अपने विलम्ब का कारण समझाने का प्रयत्न नहीं किया। वह जल्दी आने की अपनी बात को जैसे एकदम भूल गया।

चाय का वक्त हेमनलिनी के लिये बड़ी कठिनाई से कटा। जब वह समाप्त हुआ, तो उसने रमेश की गम्भीरता जानने की बड़ी कोशिश की। दीवाल से लगी एक टेबल पर कुछ किताबें रखी थीं। उसने उन्हें उठाकर बाहर ले जाने का उपक्रम किया। रमेश की जैसे तंद्रा भंग हुई, और वह घड़ी भर में उसके पास आ गया। "इन्हें कहाँ लिये जा रही हो?" उसने पूछा, "आज तो हम अपने साथ ले जाने वाली किताबों का चुनाव करने वाले हैं?"

हेमनलिनी के ओंठ काँप रहे थे, और उसने बड़ी मुश्किल से आँखों में उमड़ आये आँसू रोके।

"क्या हुआ," उसने काँपते स्वर में कहा, "अब चु॰ जरूरत नहीं है।" वह ऊपर चली गई और उसने किताबें सोने के कमरे के फर्श पर फेंक दी।

उसके चले जाने से रमेश की मायूसी और बढ़ गई।

"आज तुम्हारा मन ठीक नहीं जान पड़ता, रमेश बाबू," अक्षय ने मन ही मन हँसते हुये कहा।

रमेश ने धीमे स्वर में कुछ कहा। अन्नदा बाबू ने रमेश के स्वास्थ्य के बारे में अक्षय को कहते-सुनकर उस ओर ध्यान दिया।

"रमेश को देखकर मैंने भी ठीक यही बात कही थी," वे बोले।

"रमेश बाबू जैसे लोग" अचय ने जीभ तालू से लगाते हुए कहा, "अपने स्वास्थ्य के बारे में फिक्र करना अपनी इज्जत के खिलाफ समझते हैं। वे ज्ञान की दुनियाँ में रहते हैं, और अगर क़ब्ज हो जाय, तो उसका कारण खोजना भद्दा समझते हैं।" अन्नदा बाबू ने बड़े परिश्रम के साथ यह तर्क समझाना शुरु किया, "अच्छी पाचन शक्ति दार्शनिक के लिये भी उतनी जरूरी है, जितनी दूसरों के लिये।" रमेश इन दोनों के बीच बैठा हुआ चुपचाप बातों की व्यथा सह रहा था। "मेरी तो सलाह है, रमेश बाबू" अचय ने कहा, "कि अन्नदा बाबू की एक गोली लेकर तुम आज जल्दी सोने चले जाओ।" "मुझे अन्नदा बाबू से कुछ कहना है," रमेश ने उत्तर दिया, "और मैं वक्त के इन्तजार में हूँ।" अचय कुर्सी से उठ खड़ा हुआ। "अब यह सब छोड़ो भी; कहना था, तो जरा जल्दी कह लेते। रमेश बाबू तो बात को घंटों सोचते हैं और जब बहुत देर हो जाती है, तब कहते हैं।" यह कह कर उसने अपने आतिथ्यक से विदा ली।

अपने जूतों की नोक निहारते हुए रमेश ने कहना शुरू किया, "अन्नदा बाबू! मैं अपने को भाग्यशाली समझता हूँ कि आपने मुझे अपने घर आने का मौका दिया और मुझे परिवार में से एक समझा। आप नहीं जानते कि मेरे लिए इन सबका कितना मूल्य है।"

"यह तो ठीक है," अन्नदा बाबू ने जवाब दिया, "तुम हमारे जोगेन्द्र के मित्र हो और हमारे लिए यह स्वाभाविक है कि तुम्हें उसके भाई जैसा समझें।"

रमेश खुशी से नाच उठने ही को था, लेकिन दूसरे ही क्षण उसकी हँसी काफूर हो गई।

उसे शर्मिन्दगी का मौका न देने के लिये अन्नदा बाबू कहते गये, "यथार्थ में भाग्यशाली हम हैं कि तुम्हारे जैसा लड़का इस घर का बेटा है, रमेश।"

लेकिन इतने से भी रमेश का संकोच टूटा नहीं। "देखो," अन्नदा बाबू ने कहा, "तुम्हारे और हेमनलिनो के नामों को लेकर लोगों में चर्चायें शुरू हो गई हैं। लड़की जब विवाह योग्य हो जाए तो कहते हैं 'कि उसे अपने जीवन-साथी के चुनाव में बड़ा सावधान रहना चाहिये।' मैं उनसे कह देता हूँ, 'मेरा रमेश पर पूर्ण विश्वास है, वह हमें धोखा नहीं देगा।'

रमेश—"अन्नदा बाबू, आप मेरे बारे में सब जानते हैं; अगर आप मुझे हेमनलिनी के योग्य वर समझते हैं, तो... ... ...।"

अन्नदा—अधिक न कहो। बात यह है कि मैंने लगभग पूरा निश्चय कर लिया था, लेकिन चूँकि तुम शोक में थे, मैंने तुमसे कोई निश्चित प्रस्ताव नहीं किया। अब बात को टालने में कोई मतलब नहीं है, बेटा। लोग चर्चायें करते हैं, और मैं यह सब एकदम बन्द कर देना चाहता हूँ। मानते हो न?"

रमेश—जैसा आप ठीक समझें। आपकी पुत्री से बेशक पहले पूछ लेना चाहिये।

अन्नदा—बिलकुल ठीक, लेकिन मैं जानता हूँ, उसका निश्चय क्या होगा। फिर भी हम कल सुबह बात करके निश्चित प्रबन्ध कर लेंगे।

रमेश—आपको बड़ी देर तक बैठा रक्खा, अब मैं चलूँ।

अन्नदा—एक मिनट ठहरो, मैं समझता हूँ कि जबलपुर जाने के पहले शादी हो जाना अच्छा होगा।

रमेश—लेकिन यह तो बड़ी जल्दी होगी।

अन्नदा—हाँ सिर्फ दस दिन, अगले रविवार को शादी हो सकती है। फिर बचे हुए दो-तीन दिन में यात्रा की तैयारियाँ हो जायेंगी। देखो रमेश, मैं तुम्हें जल्दी करने के लिये नहीं कहता हूँ, लेकिन मुझे अपने स्वास्थ के बारे में भी सोचना है।

रमेश ने इस पर हामी भर दी। उसने अन्नदा बाबू की एक गोली खाई और चल दिया।

• १२

कमला की छुट्टियाँ जल्दी शुरू होने वाली थी, लेकिन रमेश ने हेड-मिस्ट्रेस के साथ इन्तजाम करा दिया था कि वह छुट्टियों में भी वहीं रहेगी। अन्नदा बाबू से बात होने के दूसरे दिन सुबह वह जल्दी उठा और घूमने के लिये निकला। घूमने गया, कलकत्ता की प्रमुख खुली जगह 'मैदान' की एक कम चलती हुई सड़क पर। वह शादी के पूर्व कमला के बारे में हेमनलिनी को बता देना चाहता था। बाद में वह कमला को सच्ची हालत बता देगा; और इस तरह गलतफहमी की सारी संभावनायें दूर हो जायँगी। कमला को हेमनलिनी के रूप में एक मित्र मिल जायेगा और वह उस तरुण दम्पत्ति के साथ रहने के लिये तैयार हो जायेगी। अगर वह अपने लोगों के बीच में रहा, तो चर्चायें होंगी, इसलिये उसने हजारीबाग जाकर वहाँ वकालत करने का निश्चय किया।

लौटते में रमेश अन्नदा बाबू के घर पहुँचा और सीढ़ियों पर उसे हेमनलिनी मिल गई। साधारण परिस्थितियों में ऐसी मुलाकात दोस्ताना बातचीत का जरिया होती, लेकिन इस वक्त हेमनलिनी शरमा गई। एक धुँधली हँसी से, जैसे पौ फटने की चमक हो, इसका चेहरा चमक उठा, और वह नीची निगाह करके शीघ्रता से चली गई।

रमेश अपने कमरे पर लौट आया और हारमोनियम पर हेमनलिनी की सिखाई धुन निकालने बैठा। लेकिन एक ही धुन कोई दिन भर तो नहीं बजा सकता। इसलिये उसने कविता की किताब उठा ली, लेकिन कविता उस ऊँचाई तक उसे न ले जा सकी, जिस ऊँचाई तक वह प्रेम के सहारे पहुँच गया था।

हेमनलिनी भी उस दिन सुबह मानों हवा पर चल रही थी। दोपहर होते उसका घर का काम खतम हो गया। वह अपने कमरे में बन्द हो गई और सीने के काम में लग गई। उसका प्रशांत मुख महान आनन्द में चमक उठा, और इस चेतना से उसका समस्त अस्तित्व पूर्ण हो गया कि उसने जीवन में अपना सौभाग्य पा लिया है।

आज चाय के समय के कुछ पहले रमेश कविता की किताब और हारमोनियम फेंककर अन्नदा बाबू के घर चला। साधारण मौकों पर हेमनलिनी आने में देर न करती, लेकिन इस दोपहर में रमेश ने देखा कि कमरा खाली है और ऊपर के बैठकखाने में भी कोई नहीं है। हेमनलिनी अभी भी अपने कमरे में थी। अन्नदा बाबू ठीक वक्त पर हाजिर होकर चाय की टेबल पर बैठ गये और रमेश बेचैनी से दरवाजे की तरफ़ देखता रहा।

पैरों की आवाज़ हुई, लेकिन यह तो अक्षय था; उसने रमेश से बड़े दोस्ताना ढंग से कहा, "अच्छा, रमेश बाबू, अभी मैं आपके कमरे से ही आ रहा हूँ।" रमेश ने सुना, तो कुछ अस्थिर हो गया।

अक्षय हँसा और कहता गया, "डर की कोई बात नहीं है, रमेश बाबू, मेरा इरादा कोई बुरा नहीं था। यह उचित था कि तुम्हारे दोस्त इस खुशखबरी पर तुम्हें बधाई देते और यही वजह मेरे तुम्हारे यहाँ पहुँचने की थी।"

इस कथन से अन्नदा बाबू का ध्यान हेमनलिनी की अनुपस्थिति पर गया। उन्होंने उसे आवाज दी, लेकिन कोई प्रत्युत्तर नहीं, तब वे स्वयं उसे लाने पहुँचे। "यह क्या है, हेम," वे बोले "अभी तक सो रही हो। चा तैयार है। रमेश और अक्षय आ गये हैं।"

"मेरी चाय यहीं भिजा दीजिये, पिता जी।" हलकी शर्म से हेमनलिनी ने कहा, "मैं अपना सिलाई का काम पूरा कर लेना चाहती हूँ।"
"यह ठीक तुम्हारे स्वभाव की बात है, हेम। एक बात शुरू करती हो,

तो बाकी सब भूल जाती हो। जब इम्तिहान की तैयारी कर रही थीं, तब किताबों में से सिर नहीं उठाती थीं; अब सिलाई की धुन है, तो कुछ और सूझता ही नहीं। न, न, यह नहीं होगा। मेरे साथ नीचे चलकर चाय पियो;" और लगभग खींचते हुये वे बेटी को नीचे ले आये। आते ही वह टी-ट्रे पर झुक गई, और चाय तैयार करने में ऐसी मशगूल हो गई कि आँख उठाकर मेहमानों को नमस्ते भी न कह सकी।

"क्या कर रही हो, हेम?" अन्नदा बाबू ने कहा, "मुझे शक्कर क्यों दे रही हो? तुम जानती हो, मैं शक्कर कभी नहीं लेता।"

अक्षय मुसकराते हुये बोला, "वे आज अपनी उदारता रोक नहीं पा रहीं। सबको मिठाई बाँट रही हैं।"

हेमनलिनी पर अक्षय का व्यंग करना रमेश को असह्य हो गया, और उसने तत्काल निश्चय कर लिया कि शादी के बाद वह अक्षय से कोई सरोकार नहीं रखेगा।

कुछ दिनों बाद ऐसे ही एक अवसर पर अक्षय ने कहा, "रमेश बाबू, आपके लिये अपना नाम बदल डालना बेहतर होगा।" अक्षय की मज़ाक करने की कोशिशों ने उसके प्रति रमेश की अरुचि को बढ़ा दिया।

"किस कारण?" उसने पूछा। "यह देखिये" एक अख़बार खोलते हुये अक्षय ने कहा, "रमेश नाम के एक लड़के ने अपने एक सहपाठी को अपने नाम से इम्तिहान में बैठाकर पास होने की कोशिश की, लेकिन अंत में बेचारा पकड़ा गया।"

हेमनलिनी जानती थी कि रमेश में व्यंग का प्रत्युत्तर देने की क्षमता नहीं है। इसलिये जब कभी अक्षय एक बात कहता, उसके जवाब देने का भार वह अपने ऊपर ले लेती। इस मौके पर उसके बोलने की

जरूरत थी। अपने क्षोभ को दबाकर उसने प्रसन्नता से कहा, "अगर यही बात होती, तो जेल में अक्षयों की कमी न रहती।"

"सुनते हैं इनको?" अक्षय ने कहा, "मैंने तो एक दोस्ताना चेतावनी दी और इन्हें बुरा लग गया। मुझे पूरी कहानी कहना पड़ेगी। आप जानते हैं कि मेरी छोटी बहिन शरत, लड़कियों के हाई स्कूल में जाती है। कल शाम उसने आकर मुझसे कहा, "आप जानते हैं, आपके रमेश बाबू की पत्नी हमारे स्कूल में हैं?" मैंने कहा, "पगली लड़की, तुम समझती हो कि दुनिया में एक अपने रमेश बाबू मर हैं!" "कोई भी हों" वह बोली, "लेकिन अपनी पत्नी के प्रति कठोर हैं। प्राय: सभी लड़कियाँ छुट्टी में घर जा रही हैं और उन्होंने अपनी पत्नी के रहने का प्रबंध बोर्डिंग में किया है। बेचारी, रो रो कर आँखें निकाले देती है।" मैंने सोचा, "इससे काम नहीं चलेगा, दूसरे लोग भी शरत जैसी गलती कर सकते हैं।"

अन्नदा बाबू खिल-खिलाकर हँस पड़े। "अक्षय तुम बिलकुल पागल हो। अगर कोई रमेश अपनी पत्नी को स्कूल में रोता छोड़ दे, तो अपने रमेश को नाम क्यों बदलना चाहिये?" लेकिन रमेश का चेहरा पीला पड़ गया, और वह कमरा छोड़कर चला गया।

"क्या बात है रमेश बाबू, कहाँ चले?" अक्षय बोल उठा, "मैंने तुम्हें दुख तो नहीं पहुँचाया। तुम यह तो न सोचते होंगे कि मैं तुम पर शक करता हूँ?" और वह रमेश के पीछे पीछे चला गया।

"इस सबका क्या मतलब है?" अन्नदा बाबू बोले। उन्हें अचरज हुआ कि हेमनलिनी फूट फूट कर रोने लगी। "क्या बात है, हेम! रो क्यों रही है?"

"पिताजी, अक्षय बाबू की यह बड़ी बुरी बात है।" वह सिसकते हुये बोली, "वे हमारे घर आये मेहमान का ऐसा अनादर क्यों करते हैं?"

"अक्षय तो मजाक कर रहा था, इसका बुरा नहीं मानना चाहिये।"

"मैं ऐसा मजाक बर्दाश्त नहीं कर सकती।" कहती हुई वह ऊपर भाग गई।

कलकत्ता लौटने के बाद से रमेश ने कमला के पतिदेव का पता लगाने में कोई कोशिश बाकी नहीं छोड़ी थी। बड़ी मुश्किल से उसने पता लगा पाया था कि धोबापूकुर कहाँ है और कमला के चाचा तारिणी चरण को पत्र लिख दिया था।

ऊपर की घटना के दूसरे दिन उसका जवाब आया। तारिणी चरण ने लिखा था, कि दुर्घटना के बाद से उन्होंने अपनी भतीजी के पति नलिनाक्ष के बारे में कुछ नहीं सुना। नलिनाक्ष रंगपुर में डाक्टर थे। तारिणी चरण ने वहाँ पूछताँछ की, लेकिन किसी को भी इससे ज्यादा नहीं मालूम, और न उसे स्वयं नलिनाक्ष के गाँव का पता मालूम है।

रमेश ने अब अपने मन से यह ख़्याल ही निकाल दिया कि कमला का पति जीवित है।

उसी डाक से उसे और भी पत्र मिले। उसके कई परिचितों ने उसकी शादी के बारे में सुना था, और उसे बधाइयाँ भेजी थीं। जब वह इन पत्रों को पढ़ रहा था तभी अन्नदा बाबू का नौकर एक चिट्ठी लेकर आया। पत्र हेमनलिनी का था। हस्ताक्षर पहिचानकर उसका हृदय जोर से धड़कने लगा। जो कुछ अक्षय ने कहा, उसके बाद वह मुझ पर शक किये बिना नहीं रह सकती थी, और अब अपना समाधान करने के लिये उसने यह पत्र लिखा है।

उसने पत्र खोला। पत्र छोटा सा था। "अक्षय बाबू ने कल आपके साथ बड़ी अशिष्टता का व्यवहार किया।" उसने लिखा था, "आप आज सुबह क्यों नहीं आये? मैं राह देख रही थी। अक्षय बाबू के कहे की आप चिन्ता क्यों करते हैं। आप जानते हैं, मैं उनकी मूर्खता पर कोई ध्यान नहीं देती। आप आज जल्दी आयें। मैं आज सीने का काम नहीं

करूँगी।" इन पंक्तियों में प्रतिध्वनित हेमनलिनी के हृदय की व्यथा का अंदाज़ लगाकर रमेश की आँखों में आँसू आ गये। पिछली साँझ से उसे रमेश के घाव पर मरहम लगाने की ललक थी, और यह ललक सारी रात और सुबह भर घटी नहीं। जब वह अपने को नहीं सँभाल पाई, उसने अपने मन का भाव इस खत में प्रकट कर दिया। रमेश को यह बात साफ़ जान पड़ी।

पिछली साँझ से उसे लग रहा था कि सच्चा क़िस्सा हेमनलिनी को बता दे, लेकिन कल की घटना से उसका काम और कठिन हो गया था। वह नहीं चाहता था कि उसकी हालत उस अपराधी जैसी समझी जाये, जो जुर्म करते वक़्त पकड़ लिया गया हो, और जो अपने को निर्दोष सुबूत करने की कोशिश कर रहा हो। साथ ही इस मौके पर कुछ भी बताना अक्षय की विजय के समान होगा और यह ख्याल उसे बड़ा निरादरकारी जान पड़ा।

उसने विचार किया कि अक्षय कमला के पति को कोई दूसरा रमेश समझ रहा है, नहीं तो वह चुप बैठने वाला जाव नहीं था कि ढँकी-मुँदी बातें करता। वह तो मकान के छप्पर पर खड़े होकर चिल्ला चिल्लाकर इस बात को कहता। इस विचार ने सीधा रास्ता अख्तियार करने की बजाय रमेश को मुसीबत टालने का कोई उपाय सोच निकालने की सलाह दी।

इसी समय डाक से एक और खत आया। रमेश ने खोला तो मालूम हुआ कि हेड मिस्ट्रेस का खत है। उसने लिखा था कि छुट्टियों में स्कूल में रहने की कल्पना का असर कमला पर इतना बुरा हुआ है कि हम लोग उसकी जिम्मेदारी लेने को तैयार नहीं हैं। स्कूल शनिवार को बंद होगा और रमेश को उस दिन इसका इन्तजार करना चाहिये।

कमला शनिवार को आने को है और इतवार को उसकी शादी है।

"रमेश बाबू मुझे माफ करो" इस बुरे वक्त अक्षय ने आकर कहा, "अगर मैं जानता कि रोज-जैसे मजाक का तुम इतना बुरा मानोगे, तो मैं चुप रह जाता। लोगों को व्यंग तब बुरा लगता है, जब उसमें कुछ सचाई हो; लेकिन यह बात तो बिलकुल बेबुनियाद थी, इसीलिये मैं समझ नहीं पाया कि तुम क्रुद्ध क्यों हो गये। अन्नदा बाबू मुझे डाँट रहे हैं, और हेमनलिनी मुझसे बात नहीं करती। आज सुबह मैं उनसे मिलने गया, तो वह कमरे से चली गईं। आप सब मुझसे इतने नाराज क्यों हैं?"

"इस समय मैं कुछ नहीं बता सकता। इस समय तुम मुझे क्षमा करो, मैं बहुत व्यस्त हूँ।"

"आहा शादी की तैयारियाँ। बाजे वाले शायद पेशगी चाहते हैं, और आप यहाँ वक्त बरबाद करना नहीं चाहते। अच्छा! मैं चला, अलविदा।"

जैसे ही अक्षय वापिस हुआ, रमेश अन्नदा बाबू के यहाँ पहुँचा। हेमनलिनी इंतजार में थी और बेचैनी से बाट जोह रही थी। सामने रूमाल में सिलाई का सामान बँधा पड़ा था और बगल में हारमोनियम। उसे राज जैसे संगीत की प्रतीक्षा थी। किन्तु एक और प्रकार का संगीत होता है, जिसे केवल प्राण सुनते हैं, और उसे इसकी भी प्रतीक्षा थी।

रमेश के आते ही उसके होठों पर हलकी मुसकराहट नाच उठी; लेकिन दूसरे ही क्षण नष्ट हो गई, जब रमेश ने उससे प्रश्न किया कि "पिताजी कहाँ है?"

"अपने कमरे में। क्यों, क्या कोई खास बात है? वे अभी चाय के लिये आयेंगे।"

रमेश—"मैं एकदम मिलना चाहता हूँ, काम बड़ा जरूरी है।"

हेमनलिनी—"अच्छी बात है, वे अपने कमरे में मिलेंगे।"

रमेश चला गया।

बहुत जरूरी क्या बात होगी जिसके सामने और किसी चीज का कोई मोल नहीं ? क्या प्रेम भी इस जरूरत के दरवाजे पर खड़ा रहेगा ? शरद के आनन्द-भंडार का स्वर्ण द्वार बन्द हो गया, और उसे लगा जैसे शरद का प्रकाशवान दिन उसाँसें ले रहा हो। हेमनलिनी ने कुर्सी हारमोनियम से दूर खींच ली और टेबल पर सिलाई करने बैठ गई। लेकिन जैसे ही उसने सीना शुरू किया कि कोई अदृष्ट सुई उसके हृदय में छिद गई। रमेश के जरूरी काम में कुछ वक्त लग गया, और प्रेम भिखारी सा भटकने लगा।

• १३

रमेश अन्नदा बाबू के कमरे में पहुँचा, तो उन्हें चेहरे पर अखबार धरे एक कुर्सी में ऊँघते पाया। रमेश के खाँसने से वे चौंककर उठे, और अखबार बढ़ाकर उन्होंने शहर में हैजे से मरे हुओं की संख्या की ओर रमेश का ध्यान खींचा।

रमेश ने सीधे अपनी बात शुरू की। "मेरी इच्छा है कि शादी कुछ दिन के लिये टाल दी जाये।" उसने कहा, "मुझे कुछ जरूरी काम है।"

इस अचरजकारी घोषणा से कलकत्ता की मृत्यु-संख्या की बात अन्नदा बाबू के दिमाग़ से उड़ गई। उन्होंने रमेश की तरफ ताककर कहा—"क्या कहते हो रमेश, निमंत्रण भेजे जा चुके हैं।"

"आप आज लिख सकते हैं कि शादी अगले इतवार तक टल गई है।"

"तुमने तो मेरी जान ले ली, रमेश। यह कोई कचहरी का मुकदमा नहीं है कि अपने सुभीते के मुताबिक तारीख बढ़ाने की दरख्वास्त दे दी और मिल गई। तुम्हारा यह जरूरी काम क्या है ?"

रमेश : यह बहुत जरूरी है। मैं इसे स्थगित नहीं कर सकता।

आँधी में गिरे पेड़ की तरह अन्नदा बाबू कुर्सी में गिर पड़े।

अन्नदा : हम स्थगित नहीं कर सकते। अच्छा ख़्याल है तुम्हारा ! बहुत अच्छा; जो चाहो करो। निमंत्रित लोगों को समझाने का जिम्मा तुम्हारा रहा ! अगर कोई मुझसे पूछेगा, तो मैं कह दूँगा | मैं कुछ नहीं जानता। वह अपना काम समझता है, वही बतायेगा कि कब उसे शादी करने की सहूलियत होगी।

रमेश की आँखें ज़मीन पर गड़ी रहीं।

"हेमनलिनी से इस बारे में कह दिया ?" अन्नदा बाबू ने पूछा।

रमेश : उसे अभी कुछ भी नहीं मालूम।

अन्नदा बाबू—उसे एकदम बताओ। यह उसकी शादी का सवाल है।

र०—मैंने सोचा, पहले आपको बता लूँ।

"हेम ! हेम !" अन्नदा बाबू ने पुकारा। हेमनलिनी भीतर आ गई, 'जी, पिता जी।'

अ०—रमेश कहता है उसे कुछ जरूरी काम है। उसे अभी शादी करने का समय नहीं है।

हेमनलिनी पीली पड़ गई और उसकी आँखें रमेश के चेहरे पर जम गईं। जुर्म करते हुए पकड़े जाने वाला कोई अपराधी उससे अधिक लज्जित न दिखता।

उसने नहीं सोचा था कि हेमनलिनी को समाचार इस कठोर तरीक़े से दिया जावेगा। और उसकी भावना ने उसे बताया कि इस प्रकार कह देने से हेमनलिनी को कितना आघात पहुँचा होगा। लेकिन छूटा हुआ तीर वापस नहीं आता, और रमेश जानता था कि इस तीर ने हेमनलिनी का हृदय छेद दिया है।

इस कठोर सत्य को नर्म करने का कोई उपाय नहीं था, क्योंकि सचाई में परिवर्तन करने का गुंजाइश नहीं थी...... शादी स्थगित करना ही होगी, रमेश का काम जरूरी है, और वह रहस्य बतायेगा नहीं। फिर वह नर्मी कहाँ से लाये ?

"बात तुम्हारे मतलब की है," अन्नदा बाबू ने हेमनलिनी से कहा, "तुम्हीं दोनों कहो, क्या करना चाहिये ?"

"मैं कुछ नहीं जानती पिताजी।" हेमनलिनी ने आँख उठाकर ऐसे देखा, जैसे कि आँधी के बादलों पर डूबते हुए सूरज की पीली किरण हो, और कमरे से चली गई।

अन्नदा बाबू ने अखबार उठा लिया और पढ़ने का बहाना किया, लेकिन सचमुच में वे गम्भीरता से सोच रहे थे। रमेश एक दो मिनिट चुपचाप बैठा रहा, फिर उठकर बाहर चला गया।

बड़े बैठक खाने में पहुँचकर उसने देखा कि हेमनलिनी खिड़की पर खड़ी हुई चुपचाप बाहर सड़क की ओर निहार रही है।

रमेश को उसके बाजू में खड़े होते संकोच हुआ, और वह देहली पर खड़ा होकर उसके थिर शरीर को देखने लगा। शरद की मधुर धूप में खुली खिड़की के सामने खड़ी हुई वह आकृति सदा के लिये उसकी स्मृति में पैठ गई। उसके सुन्दर कपोल, उसका केश-प्रसाधन, गर्दन के पास की लटें, उनके नीचे सोने की जंजीर, कँधे पर फहराता हुआ वस्त्र: इन सबने उसके बीमार दिमाग़ पर अमिट निशान बना दिया।

धीरे धीरे वह उसके क़रीब आया। हेमनलिनी ने अपने प्रेम का कोई ख्याल नहीं किया, बल्कि और भी ध्यान से वह सड़कों का दृश्य निहारती रही। नीरवता भंग करते हुए रमेश ने लड़खड़ाती आवाज़ में कहा, "मैं तुमसे कुछ कहना चाहता हूँ।"

हेमनलिनी ने रमेश की आवाज़ का दर्द पहचाना और उसकी ओर मुड़ गई।

"मुझ में विश्वास न खोना," उसने कहा, "मुझसे कहदो कि तुम मुझ पर अविश्वास न करोगी। मैं ईश्वर को गवाह बनाकर कहता हूँ कि मैं कभी तुम्हारे विश्वास की हत्या नहीं करूँगा।" आज पहिली बार उसने अधिक परिचित संबोधन हेमनलिनी के लिये प्रयुक्त किया।

वह अधिक बोल नहीं सका। उसकी आँखों के आगे आँसुओं का धुँधलापन छा गया।

हेमनलिनी ने कातर दृष्टि से उसकी ओर देखा और उसके चेहरे में अपनी आँखें गड़ा दीं। फिर वह द्रवित हो गई, उसके गालों पर आँसू ढुलक पड़े, और इस प्रकार खिड़की के एकांत में एक दूसरे के क़रीब खड़े हुए उनकी आँखें एक दूसरे से मिली। शब्द एक भी नहीं कहा गया, लेकिन दोनों पर आनन्द-दायिनी शांति छा गई और उसके आवेग में उन्हें ऐसा लगा कि वे स्वर्ग-लोक में हों।

शांति की गहरी साँस लेते हुए रमेश ने नीरवता भंग की। "तुम जानती हो कि क्यों मैं शादी एक हफ्ते के लिए स्थगित कर रहा हूँ ?" हेमनलिनी ने सिर हिला दिया। वह जानना नहीं चाहती थी।

"शादी के बाद मैं तुम्हें सारा क़िस्सा बताऊँगा," रमेश ने कहा। शादी की बात से लड़की के गाल पर एक हलकी सुर्खी आ गई।

दोपहरी में जब हेमनलिनी रमेश के आने के लिये अपनी तैयारियाँ कर रही थी, तब उसने सोचा था कि वे भविष्य के बारे में व्यक्तिगत बातें करेंगे, अपने सपनों के किले बनायेंगे। उसे यह कल्पना नहीं थी कि थोड़े ही मिनटों में उन्हें अपने निश्चय को दुहराना होगा, और

गिराना पड़ेगा और बात करने के बजाय केवल एक दूसरे के बाजू में खड़ा रहना पड़ेगा। साथ ही उसे कल्पना नहीं थी कि इस सबके बाद कितना गहरा विश्वास और पूर्ण शांति उन्हें मिलेगी।

हेमनलिनी ने कहा, "तुम एकदम पिताजी के पास जाओ, वे बहुत परेशान हैं।"

रमेश हँसता हुआ चला गया। वह इस समय संसार के बड़े से बड़े आघात को छाती पर सहने की ताकत लिये हुए था।

• १४

रमेश को कमरे में फिर से आते देख अन्नदा बाबू चिन्तित हो गये।

रमेश ने कहा, "अगर आप मुझे मेहमानों की लिस्ट दे दें, तो मैं उन्हें तारीख की तबदीली के बारे में लिख दूँ।"

"तो तुम लोगों ने शादी स्थगित करने का फैसला कर लिया?"

"जी हाँ, इसके सिवा हो भी क्या सकता है?"

"अच्छी बात है, देखो बेटा," अन्नदा बाबू ने कहा, "याद रखो इस सब में अब मेरा कोई हाथ नहीं है। तुम्हीं खुद सारे प्रबंध करो। मैं अपने को हँसी का विषय नहीं बना सकता। अगर तुम लोगों ने शादी को बच्चों का खेल समझा है, तो मेरी जैसी उमर का आदमी उससे कोई सरोकार नहीं रखेगा। यह रही तुम्हारे मेहमानों की लिस्ट। मैंने पहले ही बहुत पैसा खर्च कर दिया है और वह व्यर्थ जायेगा। मैं इस तरह पैसा नहीं फेंक सकता।" रमेश ने खर्चे का भार अपने ऊपर लेने की और सारे इन्तजाम कर लेने की तत्परता दिखाई।

वह उठ ही रहा था कि अन्नदा बाबू ने पूछा, "शादी के बाद तुमने वकालत कहाँ करने का निश्चय किया है ? मैं समझता हूँ, कलकत्ते में नहीं।"

"नहीं, मैं उत्तर में कोई अच्छी जगह खोजना चाहता हूँ।"

अन्नदा बाबू—उत्तर में ? विचार तो ठीक है। देखो, बेटा यह मेरी इकलौती बेटी है और इससे अलग रहकर मुझे सुख न होगा। इसीलिये मैं तुमसे स्वास्थकर जगह चुनने कहता हूँ।

रमेश ने उन्हें नाराज़ कर दिया था, इसलिये अन्नदा बाबू मौका पाकर ज़रा कुछ मुश्किल माँगे पेश कर रहे थे। रमेश के मन की हालत इस वक्त ऐसी थी कि अगर अन्नदा बाबू चेरापूँजी, या गारोघाटी या ऐसी और कोई गीली, पहाड़ी जगह जाने की बात कहते, तो रमेश एकदम स्वीकार कर लेता।

'बहुत अच्छा,' उसने कहा और निमंत्रणों को सुधारने का काम हाथ में लेकर वह चला गया।

रमेश गया ही था कि अक्षय आ पहुँचा और अन्नदा बाबू से उसे मालूम हुआ कि शादी एक हफ्ते के लिये स्थगित कर दी गई है।

अक्षय : क्या सचमुच ? ऐसा वह कर सकता है। क्यों, अभी तो परसों होने को थी ?

अन्नदा : वह इतनी जल्दी न कर पाता। साधारण लोग ऐसा काम नहीं करते, लेकिन आज के पढ़े-लिखे लड़के हर काम कर सकते हैं।

अक्षय ने गंभीरता का भाव धारण किया और उसके मन ने काम करना शुरू किया। अंत में उसने कहा :

"आपने एक बार लड़का क्या पा लिया, आप और संभावनाओं की ओर से आँखें बन्द कर लेते हैं। जिस आदमी को अपनी कन्या जीवन भर के लिये सौंपते हैं, उसके बारे हर बात जान लेना चाहिये। अगर वह आदमी स्वर्ग का देवदूत हो, तब भी हर सावधानी बरतना चाहिये।"

अन्नदा : अगर रमेश जैसे लड़के पर शक किया जा सकता है, तो विश्वास किस पर किया जाये ?

अक्षय : क्या उसने तारीख बढ़ाने की कोई वजह बताई है ?

"नहीं, उसने कोई कारण नहीं बतलाया," सिर खुजलाते हुए अन्नदा बाबू ने कहा, "मैंने जब पूछा, तो उसने कहा, जरूरी काम है।"

अक्षय ने झूठी हँसी छिपाने के लिये मुँह फेर लिया। "शायद आपकी पुत्री को कारण बताया हो।"

अन्नदा : मेरा ख्याल है, हाँ, बताया है।

अक्षय : क्या यह ठीक न होगा कि उनको बुलाकर पूछ लिया जाये ?

"जरूर," और अन्नदा बाबू ने हेमनलिनी को पुकारा। उसने आकर जब अक्षय को देखा, तो अपने पिता के पीछे इस प्रकार बैठ गई कि वह उसे देख न सके।

"क्या रमेश ने तारीख बदलने का कोई कारण तुम्हें बताया है ?" अन्नदा बाबू ने पूछा।

सिर हिलाकर हेमनलिनी ने कहा, 'नहीं।'

अन्नदा०—तुमने पूछा नहीं ?

हेम०—नहीं पूछा।

अन्नदा०—कैसे अचरज की बात है। तुम दोनों एक से हो। उसने आकर कहा—मुझे अभी शादी करने का वक्त नहीं है। तुमने कहा—अच्छी बात, शादी किसी और दिन हो जायगी; और फिर उस विषय की चर्चा बंद।

अक्षय ने अब हेमनलिनी का पक्ष लिया। उसने कहा—आखिर जब कोई साफ कह दे कि मैं कारण नहीं बताना चाहता, पूछनेवाला क्या पूछे? अगर कोई बताने लायक बात होती, तो रमेश अपने आप बता देता।

हेमनलिनी गुस्से से लाल हो गई। उसने कहा—इस विषय में मैं गैरों का मत नहीं सुनना चाहती। बात जैसी कुछ है, उससे मुझे संतोष है।

अक्षय हरा पड़ गया; लेकिन उसने हँसने की चेष्टा की, "दुनिया की यही रीत है। भला करते हाथ जलते हैं। आपके मित्र होने के नाते मेरा धर्म है कि रमेश के बारे में अपना संशय प्रकट करूँ। इसके लिये आप चाहे जितना मुझे बुरा कहें। आपके ऊपर संकट छाया देखकर मैं आराम से नहीं बैठ सकता। मैं मानता हूँ, वह मेरी कमजोरी है। ठीक है, कल जोगेन्द्र आ रहा है। सारी कहानी सुनने के बाद अगर जोगेन्द्र अपनी बहिन के प्रश्न पर निश्चिंत हो जायेगा, तो मैं फिर कुछ नहीं कहूँगा।"

अन्नदा बाबू जानते थे कि रमेश के चरित्र के बारे में अक्षय से पूछने का यही मनोवैज्ञानिक मौका है, लेकिन जो रहस्य जानना चाहता है, वह एक तूफान खड़ा कर देता है और वृद्ध महाशय की प्रकृति ऐसे काम के खिलाफ़ थी।

उन्होंने अक्षय पर गुस्सा निकाला, "तुम बड़े शक्की हो अक्षय! अगर तुम्हारे पास कोई प्रमाण नहीं है, तो... ..."

अक्षय में आत्म-नियंत्रण बहुत था, लेकिन लगातार आघातों से उसका धीरज टूट गया था। "देखिये, अन्नदा बाबू," उसने कहा, "आप मुझ

पर हर तरह की तोहमत लगा रहे हैं। आपका ख़्याल है कि मुझे आपके होने वाले दामाद से बुराई है और मैं एक निर्दोष आदमी पर शक कर रहा हूँ। मैं बड़ा मामूली आदमी हूँ, लेकिन मैं सदा इस कुटुम्ब तथा आपके प्रति निष्ठ रहा हूँ। यद्यपि मैं रमेश बाबू के साथ समता का दावा नहीं करता, लेकिन मेरा दावा है कि मैंने आपसे कोई बात छिपाई नहीं है। मैं अपनी ग़रीबी बताकर आपसे ताँबा माँग सकता हूँ, लेकिन आपके घर में सेंध नहीं लगा सकता। मेरा मतलब आपको कल मालूम हो जायगा।"

● १५

सब पत्र भेजते भेजते रात हो गई। रमेश ने आराम करने की कोशिश की, लेकिन उसे नींद नहीं आई। दो धाराओं में उसके विचार बह रहे थे—एक निर्मल, दूसरी कलुषित, गंगा जमुना के संगम जैसी। दोनों धाराओं ने मिलकर उसकी शांति नष्ट कर दी थी। कुछ देर वह करवटें बदलता रहा और फिर चादर फेंककर उठ खड़ा हुआ।

वह खिड़की पर आया और बाहर देखने लगा। गली के एक तरफ़ के मकान घनी छाया में थे और दूसरी तरफ के उ   दनी से प्रकाशित। रमेश नीरव विचारों में डूबा खड़ा था। अपने सांसारिक वातावरण के झगड़े, अनिश्चय को फेंककर उसकी अंतरात्मा असीम संसृति की अमरता, शान्ति और सर्वव्यापिता में बह गई थी।

धीरे धीरे रमेश छत पर चढ़ गया। उसकी आँखें अन्नदा बाबू के मकान की ओर फिर गईं। नीरवता को भंग करने वाली कोई आवाज़ न थी। छाया और चाँदनी ने दीवाल पर, छप्पर के कोनों पर, दरवाजे और खिड़कियों पर और समस्त छप्पर पर भी आकृति बना दी थी। कैसा भव्य था यह सब! जन-संकुल शहर के हृदय में स्थित इस मामूली मकान में एक विद्यार्थिनी के रूप में कितना बड़ा विस्मय रहता है।

बड़ी रात तक वह छत पर चहल-कदमी करता रह । अस्त होता चाँद सामने के मकान के पीछे छिप गया; रमेश के थके अलसाये अंग ंड से कांपने लगे, और किसी अकस्मात् दुख ने उस पर काबू कर लिया, उसके हृद ो अपनी मुट्ठी में बाँध लिया। कल सुबह उसे फिर जिन्दगी के मैदा लड़ना होगा। आसमान के चेहरे पर चिन्ता की कोई रेखा न थी, किसी कृत्य से चाँदनी की भव्यता नष्ट नहीं हुई, रात की निस्तब्धता टूटी नहीं, और समस्त संसृति अनन्तर्गातपूर्ण असंख्य सितारों के साथ विश्राम में लीन थी। केवल आदमी के विश्राम-हीन संघर्ष का कोई अंत नहीं है। सुख, दुख दोनों में मानव-जीवन तकलीफ़ों से अनरुक संघर्ष करता रहता है।

एक तरफ असीम की अनन्त शान्ति, दूसरी ओर संसार का अनन्त संघर्ष ! कैसे दोनों एक साथ रह पाते हैं ? अपनी कठिनाइयों में फँसे हुये रमेश ने ठहरकर इस अबूझ समस्या पर विचार किया।

अभी उसे प्रेम का वरदान मिला था। अब वही प्रेम दुनिय संसर्ग में पददलित और क्षुब्ध हो रहा था। क्या सत्य है और क्या मिथ्या ?

१६

दूसरे दिन सुबह की गाड़ी से जोगेन्द्र उत्तर से लौट आया। शनिवार का दिन था, और इतवार को हेमनलिनी की शादी थी। लेकिन घर पहुँचकर उसे आनन्द के कोई चिन्ह न दिखे।

उसे किसी की अकस्मात बीमारी की खबर मिलने की आशंका थी लेकिन में दाखिल होने पर उसे कोई अनहोनी बात न दिखी, खाना उसके लिये तैयार था। अन्नदा बाबू चाय की टेबल पर बैठे अखबार पढ़ रहे थे, सामने आधा पिया चाय का प्याला रखा था।

"हेम तो ठीक है ?" कमरे में आते ही जोगेन्द्र ने पूछा।

अन्नदा बाबू—बिलकुल ठीक है।

जो०—शादी का क्या हाल है ?

अन्न०—अगले इतवार को होगी।

जो०—शादी स्थगित क्यों कर दी गई ?

अ०—अच्छा हो कि अपने दोस्त से पूछो। रमेश ने इतना ही बताया कि उसे कुछ जरूरी काम है और शादी इतवार को न हो सकेगी।

जोगेन्द्र ने मन ही मन अपने पिता की इस ढील-ढाल को धिक्कारा। "मैं जब यहाँ नहीं रहता, आप लोग बड़ी उलझनें पैदा कर लेते हैं, पिताजी!" उसने कहा, "उसे ऐसा क्या जरूरी काम हो सकता है ? वह अपना खुद मालिक है। उसके कोई खास रिश्तेदार नहीं हैं। अगर उसपर कोई मुसीबत आ गई है, तो मैं नहीं समझता, वह हमें बताने में क्या बाधा समझता है। आपने बात वहीं क्यों रह जाने दी ?"

"आखिर वह भाग नहीं गया है। क्यों जाकर खुद नहीं पूछ लेते ?"

जोगेन्द्र ने एक कप चाय गले से उतारी और चल दिया। "ठहरो, जोगेन," अन्नदा बाबु ने उसे बुलाते हुए कहा, "ऐसी जल्दी क्या है ? अभी तुमने कुछ खाया नहीं है।" लेकिन जोगेन्द्र ने सुना नहीं। वह चला गया, और 'रमेश' 'रमेश' कहता हुआ ऊपर सीढ़ियों पर चढ़ गया। लेकिन रमेश का कोई पता न था, न शयन-कक्ष में, न बैठकखाने में, न छत पर, न नीचे के कमरे में। बड़ी देर खोजने के बाद उसे नौकर मिला। उसने उससे मालिक के बारे में पूछा। "वे तड़के निकल गये" उस जवाब दिया।

"कब तक लौटेंगे ?"

नौकर ने बताया कि रमेश अपने साथ कुछ कपड़े ले गये हैं और कह गये हैं कि तीन-चार दिन नहीं लौटेंगे; लेकिन कहाँ गये हैं, यह उसे न मालूम।

नाश्ते के समय जोगेन्द्र का मन चिंतामग्न था ।

"क्या हुआ ?" अन्नदा बाबू ने पूछा । "क्या उम्मीद करते हैं आप ?" बेटे ने खीझ से कहा, "आपको तो अपने होने वाले दामाद की गति-विधि का पता तक नहीं है; और तब, जब वह आपका पड़ोसी है ।"

"क्यों, कल रात तो वह यहीं था ।" अन्नदा बाबू ने कहा ।

"आपको पता नहीं था कि वह कहाँ जाने वाला है और उसका नौकर नहीं जानता कि वह कहाँ गया है । कोई राज की बात जरूर है । मुझे तो पिताजी, कुछ गड़बड़ दीख पड़ती है । आप इसे इतना साधरण क्यों समझते हैं ?"

इस सब शिकायत के बाद अन्नदा बाबू को मजबूरन परिस्थिति अधिक ध्यान से देखना पड़ा ।

"तब फिर इन सबका क्या मतलब है ?" समय के अनुसार गंभीरता चेहरे पर लाते हुये उन्होंने पूछा ।

पिछली रात अन्नदा बाबू ने रमेश को बड़ी सरलता से छोड़ दिया था, लेकिन वह इतना व्यवहारशून्य था कि इसे समझ न सका । उसने सोचा कि मुझे कुछ जरूरी काम है, यह कह देने से काम बन जायगा; और वह अपने अगले काम में इस विश्वासवश लग गया कि उसका दिया हुआ कारण पर्याप्त है ।

जोगेन्द्र : हेमनलिनी कहाँ है ?

अन्नदा०—रोज से जल्दी चाय लेकर वह ऊपर चली गई है ।

'बेचारी लड़की,' जोगेन्द्र ने कहा, "मेरा ख्याल है कि रमेश के विचित्र व्यवहार से वह भी बहुत शर्मिन्दा है, और इसीलिये वह मेरे सामने नहीं आना चाहती ।" वह लज्जा और व्यथा में डूबी अपनी बहिन को सांत्वना देने ऊपर चला गया । बड़े बैठकखाने में हेमनलिनी अकेली थी । जोगेन्द्र की आहट सुनकर उसने एक किताब उठा ली और पढ़ने का बहाना

करने लगी। भाई के आते ही उसने किताब नीचे रख दी और प्रसन्नता से भाई का अभिवादन किया।

"अरे, आप कब आ गये? जैसे होना चाहिये, वैसे चंगे नहीं हैं?"

"कैसे होऊँ," कुर्सी पर बैठते हुए जोगेन्द्र ने कहा, "मैंने सब सुन लिया है, हेम। फिर भी तुम चिन्ता न करो। मैं यहाँ नहीं था, इसीलिये इतनी बात हो गई। मैं फिर सब व्यवस्था करूँगा। हाँ हेम, क्या रमेश ने तुम्हें कोई कारण नहीं बतलाया?"

हेमनलिनी ने अपने आपको बड़े असमंजस में पाया। उसे अन्नय और जोगेन्द्र के शंकालु मन पर खीझ थी, और वह जोगेन्द्र को यह बताते हिचकिचाती थी कि रमेश ने उसे शादी स्थगित करने का कोई कारण नहीं बताया। साथ ही वह एकदम झूठ भी नहीं बोलना चाहती थी।

"वे तो बता रहे थे, लेकिन मैंने जरूरी नहीं समझा।" उसने उत्तर दिया।

"कैसा मान," उसने सोचा, "विचित्र," और जोर से उसने कहा, ठीक है, घबराओ मत, मैं आज ही उससे कारण जान लूँगा।

"लेकिन मुझे तो कोई घबराहट नहीं है," हेमनलिनी ने गोद में पड़ी किताब के पन्ने निरुद्देश्य उलटाते हुए कहा, "और मैं नहीं चाहती कि इसके लिये तुम उन्हें तंग करो।"

"फिर मान!" जागेन्द्र ने सोचा; "अच्छी बात है," उसने कहा, "तुम्हें चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है।" और वह जाने लगा।

हेमनलिनी अपनी कुर्सी पर से खड़ी हो गई। "देखा, ध्यान रखना! इस बारे में उनसे कुछ न कहना। तुम सब चाहे जो समझो, लेकिन मैं उन पर बिलकुल शक नहीं करती।"

जोगेन्द्र को यह बात ठीक मान जैसी न लगी। बहिन के लिये उसकी मुहब्बत और करुणा उमड़ आई और यह सोचकर वह मन ही मन मुसकराया, "इन पढ़ी-लिखी औरतों को दुनिया का कोई ज्ञान नहीं है। किताबों में पढ़ी बहुत सी बातें यह जानती हैं। लेकिन किसी पर शक करने का मौका हो, तो यह बच्चे जैसी सरल हो जाती हैं।" फिर जोगेन्द्र ने इसके नितान्त विश्वास से दूसरे के कपट-आचरण की तुलना की। उसका हृदय रमेश के प्रति कठोर हो गया; और उसके हृदय में रमेश से कारण जान लेने का निश्चय दृढ़ हो गया। फिर वह बाहर जाने के लिये उठा। लेकिन हेमनलिनी ने उसकी बाँह पकड़कर कहा :

"वचन दो कि यह कोई बात रमेश से न कहोगे?" उसने कहा।

"देखूँगा," जोगेन्द्र ने जवाब दिया।

"देखने की बात नहीं है। जाने के पहिले मुझे वचन दो। मैं तुम्हें निश्चय दिलाती हूँ कि तुम्हारे चिन्ता करने जैसी कोई बात नहीं है। मेरे लिये इतना जरूर करो।"

हेमनलिनी के आग्रह से जोगेन्द्र को विश्वास हो गया कि रमेश उसे पूरा कारण समझा गया है। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि यह कारण सच्चा हो। हेमनलिनी को किसी कहानी से बहला देना मुश्किल नहीं है। इसलिए उसने कहा, "देखो हेम, यह किसी पर अविश्वास करने का सवाल नहीं है, लेकिन जब एक लड़की की शादी हो रही है, तो उसके संरक्षकों का एक कर्तव्य होता है। उसने तुम्हें कोई कारण बताया होगा, जो तुम अपने तक रखे हो, लेकिन इतना तो काफी नहीं है। उसे अभी हमको सारा मामला समझाना होगा। सच तो यह है कि इस समय तुमसे ज्यादा हम लोगों को उसका कारण समझने की चिन्ता है। एक बार शादी हो जाय, फिर हमें ज्यादा नहीं कहना पड़ेगा।" कहकर जोगेन्द्र चला गया।

तूफान की आशंका ने हेमनलिनी को ऐसा अस्थिर कर दिया कि वह अपने मित्रों-रिश्तेदारों की नजर से भी भागने लगी। जोगेन्द्र के जाने के

बाद वह कुर्सी में बैठ गई और कमरे के एकान्त में उसने सारा दिन गुजार दिया।

घर से बाहर निकलते ही जोगेन्द्र को अचय मिला। अचय ने कहा, "अहा, जोगेन तुम आ गये! सब सुन ही लिया होगा? तुम्हारा क्या विचार है।"

जो०—मैंने उसके बारे में बहुत-कुछ सोचा है। मैं उस पर न बार बार बहस करना चाहता हूँ और न व्यर्थ धारणायें बनाना चाहता हूँ। वक्त चाय की टेबल पर बैठकर बाल की खाल निकालने का नहीं है।

अ०—तुम जानते हो, बाल की खाल निकालना मेरा काम नहीं है। मैं तो काम-काजी आदमी हूँ। यही मैं तुमसे कहने आया हूँ।

अधीर जोगेन्द्र ने कहा, मैं भी काम चाहता हूँ। बता सकते हो, रमेश कहाँ गया है?

"हाँ।"

"कहाँ।"

"अभी नहीं बताऊँगा।" अचय ने कहा, "आज तीन बजे तुम्हें उससे मिला दूँगा।"

"यह सब क्या है। मुझे क्यों नहीं बताते।" जोगेन्द्र बोला, "तुम सभी रहस्यमय हो। मैं छुट्टियों में कुछ दिन बाहर रहकर जब लौटता हूँ, तो सब तरफ डरावने रहस्य पाता हूँ। सुनो अचय! अधिक छिपाने की जरूरत नहीं है, बोलो तो।"

अचय : तुम्हें यह कहते सुनकर खुशी होती है। बातें कहकर ही तो मुसीबत में पड़ गया हूँ। तुम्हारी बहिन मेरी सूरत भी नहीं देखती, तुम्हारे पिताजी मुझे शक्की स्वभाव के कारण झिड़कते हैं और रमेश को मुझसे मिलकर खुशी नहीं होती। एक तुम्ही बचे हो और तुमसे मुझे डर लगता

है। तुमसे नाजुक विवाद करते नहीं बनता। तुम तो जीवन में सीधे कामकाजी आदमी हो। मैं दुबला-पतला आदमी, तुम्हारे मुक़ाबले क्या हा पाऊँगा?

जो०—देखो अक्षय! यह सब छल-कपट मुझे पसन्द नहीं। मैं जानता हूँ, तुम कुछ बता सकते हो। तुम उसे छिपाकर यहाँ-वहाँ की बातें क्यों करते हो? मुझे सच्ची बात बताओ, बोलो तो।

अ०—अच्छी बात है। मैं सारी बात शुरू से बताऊँगा। तुम्हारे लिये काफ़ी नई होगी।

● १७

दर्जीपुरा का मकान अभी रमेश के कब्जे में था, और रमेश को उसे किराये पर देने का ख़्याल नहीं हुआ था। कुछ दिन से वह ऐसी दुनिया में रहता था, जहाँ आर्थिक समस्या का कोई मूल्य न था। स्कूल छोड़ने के बाद कमला को जगह अवश्य चाहिये, इसलिये सुबह होते ही वह अपने दर्जीपुरा के मकान पहुँचा। उसने कमरे साफ़ कराये, चटाई आदि की व्यवस्था की और चीज-बसत का इंतजाम किया।

इन इंतजामों के हो जाने और कमला के आने में कुछ समय था। रमेश ने यह समय भविष्य की चिन्ता में काटा। वह कभी इटावा नहीं गया था, लेकिन उत्तर का वातावरण जानने के कारण उसे अपने भविष्य के मकान की कल्पना करने में कठिनाई नहीं हुई। लेकिन उस एकान्त बंगले में लम्बी दोपहरियाँ हेमनलिनी कैसे काटेगी, वह सोचकर वह घबरा उठा, अगर कमला सदा उसकी वधू के साथ रहे, तभी रमेश ऐसे बंगले में उसे रखने का फसला करेगा।

रमेश ने शादी तक कमला को कुछ भी न बताने का निश्चय किया था। फिर हेमनलिनी मौका पाकर कमला को अपने हृदय से लगाकर उसके जीवन की कहानी प्यार की ऐसी कोमलता के साथ सुनायेगी कि

भाग्य की उलझनों का कोई दर्द न रहे। और इस प्रकार घर से बहुत दूर, अपने परिचितों से विलग कमला बिना आघात या व्यथा के इनके नन्हें घर में स्थान बना लेगी।

दोपहर की नीरवता गली पर फल गई थी। मजदूर फेक्टरियों में चले गये थे और दूसरे लोग आराम की तैयारी में थे। ठंड के आगमन की शीतलता मौसम में थी और हवा आनेवाली छुट्टियों की संजीदगी से ओत-प्रोत थी। रमेश को अपने भविष्य की कल्पना से डिगानेवाला कोई नहीं था और वह कल्पना की कूँची से गहरे रंग भर रहा था।

पहियों की आवाज़ से उसका सपना टूटा—एक बड़ी गाड़ी आकर उसके दरवाजे पर खड़ी हो गई। रमेश ने समझ लिया कि गाड़ी स्कूल की है, जो कमला को लेकर आई है; और उसकी धड़कन बढ़ गई। वह कमला का कैसा स्वागत करे? किस विषय पर बात करे? उसके प्रति कैसा रुख़ रखे? ये बड़े अधीर कर देने वाले प्रश्न थे, और वह शान्ति के साथ इनका फैसला न कर सका। उसके दो नौकर नीचे थे। उन्होंने कमला की ट्रंक उतराकर बरांडे में रखी। कमला दरवाजे तक आकर रुक गई।

"आओ कमला," रमेश ने कहा। क्षणिक संकोच को दबाती हुई कमला कमरे में आ गई। रमेश उसे छुट्टियों में स्कूल में रखना चाहता था और उसके सुधि न लेने से वह कितना रोई थी। इस याद और इतने लम्बे विछोह ने उसमें एक झिझक का भाव पैदा कर दिया था, इसलिये कमरे में आकर कमला ने रमेश की तरफ़ न देखा। उसकी नज़र दरवाज़े पर गड़ी रही।

कमला को देखकर रमेश को अचरज हुआ। उसे वह बिलकुल अपरिचित जैसी लगी। इन कुछ महीनों में उसमें अचरजकारी परिवर्तन हो गया था। वह एक नन्हें पौधे जैसी बढ़ गई थी। गाँव की कुमारी के अविकसित अंगों का स्वास्थ्य-सूचक तेज जा चुका था, चेहरे की तरुणाई

खो गई थी, रूप-रेखा में स्पष्टता आ गई थी, गालों का गहरा चमकीलापन हलके पीलेपन में बदल गया था, उस गति-विधि में संकोचहीनता और आजादी आ गई थी।

कमरे में आकर वह खुली खिड़की की तरफ झुकी हुई खड़ी हो गई, और शरद की दोपहरी की रोशनी उस पर पड़ी। उसका सिर खुला हुआ था, लाल फीते से बँधी उसकी चोटी पीठ पर झूल रही थी, और नारंगी रंग की साड़ी उसके अर्ध विकसित अंगों पर कसी हुई थी।

कुछ घड़ी रमेश चुपचाप उसे देखता रह गया।

पिछले महिनों में कमला के सौंदर्य का धुँधला चित्र उसकी स्मृति में था। अब अतिरिक्त तेज के साथ उभरे इस सौंदर्य का आकर्षण रमेश दबा नहीं सका।

"बैठो कमला," उसने आदेश दिया। कमला बिना कुछ कहे बैठ गई।

"स्कूल कैसा लगा ?" उसने पूछा।

"अच्छा तो," कमला ने रूखेपन से कहा।

रमेश कुछ और कहने के लिये दिमाग खुजला रहा था, कि उसे एक ख्याल आया।

"मेरा ख्याल है," उसने कहा "अभी काफ़ी देर से तुमने कुछ नहीं खाया होगा। खाना तैयार है, यहीं बुलवादूँ ?"

"नहीं," कमला बोली। "रवाना होने के पहिले मैंने खाया था।"

"कुछ नहीं खाओगी ?" रमेश ने पूछा, "अगर मीठा न खाना चाहा, तो फल रखे हैं।"

रमेश फिर लड़की की तरफ ताकने लगा। सिर आगे झुकाकर वह अपनी अंग्रेजी-रीडर की तसवीरें देख रही थी। खूबसूरत चेहरा

जादूगर की लकड़ी जैसा होता है, अपने आसपास की चीजों को भी मोहक बना देता है। शरद का दिन भी रूप बदल रहा था।

रमेश भीतर जाकर एक तश्तरी में फल ले आया।

"तुम्हें कुछ नहीं चाहिये, कमला।" उसने कहा, "लेकिन मुझे भूख लगी है, मैं और नहीं ठहर सकता।" कमला ने मुसका दिया और इस अप्रत्याशित मुसकराहट के तेज ने उन दोनों के बीच के संकोच-कुहरे को दूर कर दिया। रमेश सेब उठाया और उसे तराशने लगा। उसकी जल्दबाजी और अकुशलता देखकर कमला खिलखिलाकर हँस पड़ी।

उसके निर्बाध आनन्द से रमेश को प्रसन्नता हुई। "मैं सेब ठीक नहीं काट रहा, इसलिये तुम हँस रही हो," उसने कहा, "अच्छी बात है, जरा तुम्हीं काटकर बता दो।"

"हँसिया होता, तो मैं काट सकती," कमला ने कहा। "चाकू से मुझसे बनेगा नहीं।"

"तुम समझती हो, अपने पास हँसिया नहीं है।" रमेश ने कहा, और नौकर को बुलाकर आदेश दिया।

हँसिया आ गया, तो कमला ने जूते उतारे और बैठकर तराशने लगी। रमेश सामने बैठा हुआ टुकड़े तश्तरी में रखने लगा। तुम्हें भी खाना पड़ेगा, "उसने कहा।"

"न, मैं नहीं खाऊँगी" कमला ने कहा।

"तब मैं भी न खाऊँगा।"

कमला ने आँख उठाकर उसकी ओर देखा। "अच्छी बात है, पहले आप कुछ खाइये, फिर मैं खाऊँगी।

"देखो धोखा न देना।" रमेश ने कहा। "नहीं। सच, धोखा न दूँगी।" कमला ने निश्चय के साथ सिर हिलाकर कहा।

इस हामी से संतुष्ट होकर रमेश ने एक टुकड़ा उठाकर मुँह में रखा। और उसी क्षण देखा कि जोगेन्द्र और अक्षय दरवाजे पर खड़े हैं।

अक्षय पहले बोला। "क्षमा करना, रमेश बाबू। हम समझे थे, तुम अकेले होगे। जोगेन, हमें इस तरह बिना जताये नहीं आना था। चलो, हम नीचे चलकर बैठें।"

कमला के हाथ से हँसिया गिर गया और वह भागी। दोनों जन दरवाजा रोके खड़े थे। जोगेन्द्र ने जरा सरककर उसे निकल जाने दिया, लेकिन नज़र उस पर से अलग नहीं की। वह एकटक देखता रहा। कमला घबराकर बगल के कमरे में घुस गई।

१८

"रमेश, यह लड़की कौन है?" जोगेन्द्र ने प्रश्न किया।

"मेरी एक रिश्तेदार," रमेश ने उत्तर दिया।

"क्या रिश्ता है?" जोगेन्द्र ने पूछा, "यह कोई तुम्हारी बड़ी-बूढ़ी तो है नहीं; और मेरा अनुमान है कि यह रिश्ता प्रेम-जात नहीं है। तुमने अपने सारे रिश्तेदारों के बारे में मुझे बता दिया है, लेकिन इस रिश्ते के बारे में मैंने कभी सुना नहीं।"

"ठहरो जोगेन्द्र," अक्षय बोल पड़ा, "कुछ चीजें ऐसी होती हैं, जो आदमी अपने दोस्तों से छिपा रखना चाहता है।"

"अच्छा, रमेश," जोगेन्द्र ने कहा, "क्या यह ऐसी ही गुप्त बात है?"

रमेश लाल पड़ गया, "हाँ यह राज है।" उसने कहा, "मैं इसके बारे में तुमसे बात नहीं करना चाहता।"

जोगेन्द्र ने व्यंग किया, "लेकिन अभाग्यवश मैं खास तौर से इस प्रश्न पर तुमसे बात करना चाहता हूँ। अगर हेमनलिनी के साथ तुम्हारी मँगनी न हुई होती, तो तुम्हारे वंश-वृक्ष की शाखायें आँचने की हमें कोई जरूरत न होती, तुम भले अपनी बातें गुप्त रखे रहते'।"

"मैं इतना बता सकता हूँ" रमेश ने कहा, "कि दुनिया में किसी के भी साथ मैंने ऐसा संबंध स्थापित नहीं किया है, जो मेरे साफ़ मन से हेमनलिनी के साथ शादी करने में बाधक हो।"

जो०—तुम्हारी निगाह में बाधक न हो, लेकिन हेमनलिनी के रिश्तेदारों की नजर में बाधक हो सकता है। मैं इतना भर तुमसे पूछता हूँ—चाहे तुम उसके रिश्तेदार हो या नहीं, लेकिन उसे यहाँ छिपाकर क्यों रखा है?"

र०—अगर यही बता दूँ, तो मेरा रहस्य खुल जायगा। क्या बिना कारण जाने तुम मुझ पर विश्वास नहीं कर सकते?"

जो०—इस लड़की का नाम कमला है न?

र०—है तो।

जो०—तुमने उसे अपनी पत्नी के रूप में घोषित किया है, या नहीं।

र०—किया है।

जो०—इसके बाद भी मुझसे विश्वास करने कहते हो? क्या तुम बताना चाहते हो कि वह तुम्हारी पत्नी नहीं है? बाकी सबको तुमने यही बताया है कि वह तुम्हारी पत्नी है। यही क्या सचाई का आदर्श है?

अ०—लेकिन जोगेन्द्र अभ्यास में यह जरूरी हो जाता है कि खास परिस्थितियों में दो अलग अलग लोगों को दो अलग अलग बातें बताई जाँये। दोनों में से एक के सही होने की संभावना रहती है। जो रमेश बाबू ने तुम्हें बताया, शायद वह सही हो।

र०—मैं तुम लोगों को कुछ भी बताने तैयार नहीं हूँ। मैं इतना ही कह सकता हूँ कि शादी करके मैं हेमनलिनी का बुरा कुछ नहीं चेत रहा। कमला का मामला तुमसे न कहने का मेरे पास काफी कारण है। तुमसे कहना मेरे हक में ठीक न होगा, इसके लिये तुम मुझ पर कितना भी शक करो। अगर केवल मेरी इज्जत, मेरे सुख का सवाल होता, तो मैं कुछ न छिपाता, लेकिन मैं इसलिये नहीं बताता कि ऐसा करने से एक दूसरे का भविष्य बिगड़ जायगा।

जो०—क्या तुमने हेमनलिनी से हर बात कह दी है?

र०—नहीं, मैं शादी के बाद बताऊँगा। अगर वह चाहे, तो मैं अभी बता दूँगा।

जो०—अच्छा, क्या मैं कमला से एक दो सवाल कर लूँ?

र०—बिलकुल नहीं? अगर तुम मुझे दोषी समझते हो, तो मुझे जो दंड उचित समझो, दे सकते हो; कमला बिलकुल निर्दोष है और मैं उस पर तुम्हारे सवालों की बौछार न होने दूँगा।

जो०—किसी और से पूछने की जरूरत नहीं है। जानने योग्य मैंने सब जान लिया है। तुमने मुझे पर्य्याप्त सुबूत दे दिये हैं। मैं एक बात तुम्हें साफ बता देना चाहता हूँ कि तुमने अब अगर हमारे घर पैर रखा, तो निकाल दिये जाओगे।

रमेश पीला पड़ गया, लेकिन उसने कहा कुछ नहीं। जोगेन्द्र कहता गया, "मैं कुछ और भी कहना चाहता हूँ। तुम हेमनलिनी को न तो कोई पत्र लिखना, और न किसी प्रकार से उससे ताल्लुक रखना। अगर तुमने ऐसा किया, तो मैं तुम्हारे स्पष्ट या गुप्त इस रहस्य के बारे में सप्रमाण सब ओर प्रकाशन दूँगा। अगर अब कोई हमसे इस शादी के टूट जाने का कारण पूछे, तो मैं कहूँगा कि मेरी स्वीकृति नहीं थी; मैं सच्चा कारण न बताऊँगा। लेकिन अगर तुमने सावधानी न रखी, तो सारी कहानी प्रकाश में

आ जायेगी। तुम्हारे निर्दय व्यवहार के बावजूद इतना आत्म-नियंत्रण इसलिये नहीं रख रहा कि मुझे तुमसे हमदर्दी है, लेकिन इसलिये कि मुझे अपनी बहिन हेमनलिनी का खयाल है। मेरी अन्तिम चेतावनी यह है कि तुम्हारे वचन, कार्य से कभी संकेत न मिले कि तुम्हारी हेमनलिनी से कभी पहिचान थी। तुमसे वचन लेना फ़िजूल है। इस धोखे के बाद तुमसे निष्कपटता की आशा व्यर्थ है। लेकिन अगर तुममें शर्म बाकी है, अगर तुम्हें बात खुल जाने का डर है, तो इस चेतावनी को जाने, या अनजाने भूल न जाना।"

अ०—ठीक है, जोगेन, बिलकुल ठीक। तुम्हें क्या रमेश बाबू के लिये दर्द नहीं है? देखो, वह कैसा शांत सब बातें सुन रहा है। अब हम चलें। अच्छा, रमेश बाबू, अब हम चलें।

जोगेन्द्र और अक्षय चले गये, रमेश चकित खड़ा रह गया। जब वह अर्धचेतना से जागा, तो उसे लगा कि खुले में जाकर सारी परस्थिति पर फिर से विचार करे। लेकिन अजनवी जगह में कमला को वह अकेले नहीं छोड़ सकता था।

वह बगल वाले कमरे में गया। उसने देखा कि लड़की सड़क वाली खिड़की का एक दरवाजा पकड़े खड़ी है। रमेश की पगध्वनि सुनकर उसने खिड़की का दरवाजा बन्द कर दिया और उसकी ओर देखने लगी। रमेश पाल्थी मारकर फर्श पर बैठ गया।

"ये कौन आदमी हैं?" कमला ने पूछा, "ये आज सुबह स्कूल आये थे।"

"स्कूल गये थे, सचमुच?" रमेश ने अचरज से पूछा।

"हाँ," कमला ने कहा, "आपसे क्या कह रहे थे?"

"मुझसे पूछ रहे थे कि तुम मेरी कौन हो?"

कमला ने सास के चरणों में बैठकर कभी यह नहीं सीखा था कि किस मौके पर नववधू के अनुरूप लज्जा प्रदर्शन करना चाहिये। फिर भी उसके मन ने उसे रमेश के इन शब्दों पर शर्माने की सीख दी।

"मैंने कह दिया," रमेश बोला, "कि इसमें कोई संबंध नहीं है।"

कमला को इस प्रकार का मनोरंजन अच्छा नहीं लगा। उसने क्रोध से यह कहते हुए मुँह फेर लिया—"फिजूल बात न करो।"

रमेश सोचने लगा कि क्या वह कभी कमला को सारी सच्ची कहानी सुना सकेगा?

अचानक वह यह कहती हुई उठी—"देखो, गाय तुम्हारे फल ले गई।" वह दौड़कर दूसरे कमरे में गई, और गाय को भगाकर फलों की तश्तरी लिये लौट आई। "आप कुछ खायेंगे नहीं?" कहते हुये उसने तश्तरी रमेश के सामने रख दी।

रमेश की भूख मर गई थी, लेकिन इस प्रकार फिकर की जाने से उसका हृदय द्रवित हो गया। "तुम नहीं खाओगी, कमला?" उसने पूछा। 'पहले आप खाइये,' पत्नी की भाँति, जो पति की क्षुधा-तुष्टि के पहिले नहीं खाती, उसने कहा। साधारण सी बात थी, लेकिन रमेश का हृदय तो भरा हुआ था और भोली कमला के इस भरम से उसके आँसू लगभग गिरने लगे। वह बोल नहीं सका, लेकिन अपने को किसी तरह सँभाल कर खाने लगा। जब खा चुका, तो उसने कहा, "आज हम लोग घर चलें, कमला?"

इस कथन से कमला का मन गिर गया, "मैं वहाँ नहीं जाना चाहती," उसने कहा।

रमेश: क्या तुम स्कूल में ठहरना चाहोगी?

कमला: न, मुझे वापिस न भेजिये। वहाँ लड़कियाँ मुझसे आपके बारे में पूछती हैं और मुझे शर्माती हैं।

र०—तुम उनसे क्या कहती हो ?

क०—कुछ भी नहीं कहती। वे पूछा करती थीं कि आप मुझे छुट्टियों में स्कूल में क्यों छोड़ना चाहते हैं। मैं......कमला वाक्य पूरा न कर पाई। याद ने उसके मन का घाव हरा कर दिया।

र०—तुमने क्यों नहीं कह दिया कि मैं तुम्हारी कोई नहीं हूँ ?

कमला ने आँख के कोने से अधीरतापूर्वक उसकी ओर देखा। फिर उसने कहा, "फिजूल बातें न कीजिये।"

"आखिर मैं क्या करूँ ?" रमेश ने अपने आप कहा। यह रहस्य जैसे कीड़े के समान था, जो उसके प्रानों को खाये जा रहा था और दर्द पैदा करता था। उसका मन पीड़ादायक प्रश्नों से भरा था। अब तक जोगेन्द्र ने हेमनलिनी से क्या कहा होगा ? हेमनलिनी पर खबर का क्या असर हुआ होगा ? वह उसे सच्ची बात कैसे बता सकेगा ? हेमनलिनी से अनन्त वियोग कैसे सह सकेगा ? लेकिन वह इतना घबराया हुआ था कि इन प्रश्नों का उत्तर न खोज सका।

इतना वह जान गया कि कमला के साथ उसके संबंध को लेकर कलकत्ता के उसके मित्र-शत्रुओं में गम्भीर चर्चायें शुरू हो गई हैं। कमला को अपनी पत्नी कहकर घोषित करने की गलत बात चर्चायें और बढ़ा देगी। एक भी दिन और वह उस जगह कमला के साथ नहीं रह सकता था।

उसकी ध्यानमग्नता कमला ने देख ली और पूछा, "किस चिन्ता में हैं आप ? अगर आप घर जाकर रहना चाहते हैं, तो मैं आपके साथ चलूँगी।"

लड़की अपनी इच्छा को उसके आधीन कर रही है, यह रमेश के लिये नया आघात था। वह फिर सोचने लगा कि क्या करे। कमला की बात का जवाब दिये बिना उसकी ओर एकटक देखते हुए वह अपने आप

में खो गया। कमला को पता लगा कि परिस्थिति गंभीर है। "बताइये, मैं छुट्टियों में स्कूल में नहीं ठहरी, इसलिये आप नाराज हो गये हैं? मुझे सच बताइये।"

"सच यह है" रमेश ने जवाब दिया, "कि मैं अपने आपसे नाराज हूँ, तुमसे नहीं।"

बड़ी ताकत लगाकर उसने अपने आपको विचारों की उलझन से मुक्त किया और वह कमला के साथ बातचीत में लग गया।"

● १६

अन्नदा बाबू ईश्वर से प्रार्थना कर रहे थे कि जोगेन्द्र अच्छी खबर लेकर आये और सारी गलतफहमी दूर हो जाये। जब योगेन्द्र और अक्षय कमरे में आये, तो वे घबराये से ताकने लगे।

लड़के ने कहना शुरू किया, "देखिये पिताजी, मैंने नहीं सोचा था कि आप रमेश को इतनी दूर तक जाने देंगे। अगर मुझे यह मालूम होता, तो मैं आपसे उसकी मुलाकात न कराता।"

अन्नदा बाबू—तुम्हीं तो कहा करते थे कि अगर रमेश और हेमनलिनी की शादी हो जाय, तो तुम्हें बड़ा सुख होगा। अगर तुम रोकना चाहते, तो ... ...

योगेन्द्र—ठीक है। मैंने कभी रोकने की चेष्टा नहीं की, फिर भी···

अन्नदा बाबू—मैं नहीं जानता कि अब उसमें 'फिर भी' की कहाँ गुंजाइश है। या तो इस बात को चलने दिया जाता, या रोक दिया जाता। इसमें बीच का कोई रास्ता नहीं हो सकता।

योगेन्द्र—फिर भी बात इतनी दूर तक बढ़ जाये!

अब अक्षय ने झूठी हँसी हँसते हुए कहा, "कुछ चीजे ऐसी होती है, जो अपने आप बढ़ जाती हैं; उन्हें बढ़ाने की जरूरत नहीं पड़ती। वे यहाँ क बढ़ती जाती हैं कि अब फूटें, तब फूटें। फिर भी बीती बात की चर्चा से क्या फ़ायदा। हमें आगे की बात सोचना चाहिये।"

"तुम्हारी रमेश से बातचीत हुई?" अन्नदा बाबू ने बेचैनी से पूछा।

जोगेन्द्र—अवश्य हुई। हमने उसे अपने परिवार के बीच में पाया। यथार्थ में हमने उसकी पत्नी से परिचय प्राप्त किया।

अन्नदा बाबू पर जैसे गाज गिर गई। जब वे बोल सके, तब उन्होंने दुहराया, "उसकी पत्नी से परिचय प्राप्त किया!"

जोगेन्द्र—जी हाँ, रमेश की पत्नी से।

अन्नदा बाबू—मैं कुछ समझ नहीं पा रहा, किस रमेश की पत्नी।

जोगेन्द्र—अपने रमेश की, पिछले मर्तबा वह यहाँ से अपनी शादी के लिये ही गया था।

अन्नदा बाबू—मैंने समझा कि पिता की मृत्यु से शादी रुक गई थी।

जोगेन्द्र—उसकी शादी पिता की मृत्यु के पहले हो चुकी थी।

अन्नदा बाबू सिर थपथपाते हुए बिल्कुल गूंगे जैसे बैठे थे। कुछ देर के बाद उन्होंने कहा, "ऐसी हालत में अपनी हेम की शादी उसके साथ नहीं हो सकेगी।"

जोगेन्द्र—"और इसीलिये हम कहना चाहते हैं कि... ... ..."

अन्नदा बाबू—तुम कुछ भी कहो, लेकिन बात यह है कि शादी की प्राय: सभी तैयारियाँ हो चुकी हैं। हमने सबको लिख दिया है कि शादी इस इतवार के बजाय अगले इतवार को होगी। अब क्या उन्हें यह लिखना पड़ेगा कि शादी एकदम स्थगित कर दी गई है?"

"स्थगित करने की कोई जरूरत नहीं। हमें एक ही परिवर्तन करना होगा। बाकी सब ठीक है।" जोगेन्द्र ने कहा।

"क्या परिवर्तन करना होगा?" अन्नदा बाबू ने आश्चर्य से पूछा।

जोगेन्द्र—यह तो बड़ी स्पष्ट बात है। हमें रमेश के बदले दूसरा वर लाना होगा और सोचे मुताबिक अगले इतवार को समारोह पूरा करना होगा। नहीं तो, हम समाज में क्या मुँह दिखलायेंगे।" और जोगेन्द्रने अक्षय की तरफ़ देखा।

विनीत भाव से अक्षय की आँखें जमीन पर झुक गई।

अन्नदा बाबू—लेकिन इतनी जल्दी वर मिलेगा कहाँ?

जोगेन्द्र—आपको इसके लिये चिन्ता करने की जरूरत नहीं।

अन्नदा बाबू—लेकिन हेम की स्वीकृति तो लेना ही होगी।

जोगेन्द्र—रमेश के व्यवहार की बात सुनने के पश्चात् वह स्वीकृति अवश्य दे देगी।

अन्नदा बाबू—अच्छी बात है। जैसा ठीक समझो, वैसा करो। लेकिन यह कैसी बुरी बात है! रमेश समर्थ, पढ़ा-लिखा था। अभी कल तो यह तय हुआ था कि शादी के बाद वह उत्तर में वकालत करेगा और देखो तो, इसी बीच यह क्या हो गया।

जोगेन्द्र—उसके बारे में अब चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। रमेश को उत्तर जाकर वकालत करने दीजिये। मैं हेम को बुला लाऊँ। नष्ट करने के लिये हमारे पास समय नहीं है।

वह जाकर एक दो मिनट में हेमनलिनी के साथ लौटा। अक्षय कोने की एक पुस्तकों की अलमारी के पीछे जा बैठा।

"बैठो हेम," जोगेन्द्र ने कहा, "हमें तुमसे कुछ कहना है।" हेम बिना कुछ कहे कुर्सी पर बैठ गई और पूछताछ के लिये तैयार हो गई।

जोगेन्द्र ने तरीके से खबर देने के खयाल से कहना शुरू किया—"क्या तुमने रमेश के व्यवहार में कोई संदेहजनक बात नहीं पाई ?" हेमनलिनी ने केवल सिर हिला दिया।

'उसने शादी एक हफ्ते के लिये स्थगित करा दी है। उसके पास ऐसा क्या कारण होगा, जो वह हमें नहीं बता सकता था ?"

"कुछ कारण अवश्य होगा।" हेमनलिनी ने बिना आँखें उठाये कहा।

"तुमने ठीक कहा, कारण है। लेकिन क्या यह अपने आप में संदेह-जनक नहीं है ?" हेमनलिनी ने सिर हिलाकर जताया कि वह ऐसा नहीं सोचती।

रमेश में ऐसा अटल विश्वास देखकर जोगेन्द्र को खीझ हुई। उसने मामला सम्हालने की बजाय रूखेपन से कहा—तुम्हें याद होगा कि रमेश पिता के साथ घर गया था। कई दिनों तक उसकी कोई खबर नहीं मिली और उसके इस व्यवहार से हमें अचम्भा हुआ था। तुम्हें भी मालूम है कि पहले जब वह पड़ोस में रहता था, तो दिन में दो दफ़ा हमारे यहाँ आया करता था। लेकिन जब वह कलकत्ता लौटा, तो मीलों दूर छिपकर रहता था। वह हमसे कभी नहीं मिला, फिर भी तुम लोगों ने उस पर विश्वास किया और उसने पुराने ताल्लुक कायम किये। मैं अगर यहाँ होता, तो ऐसी बात कभी न होती।" हेमनलिनी ने कुछ भी न कहा।

जोगेन्द्र—क्या तुम लोगों में से किसी ने उसके इस अनहोने व्यवहार को समझने की कोशिश की ? क्या तुम्हें कभी जानने की उत्सुकता नहीं हुई-तुम्हारा ऐसा अटल विश्वास उस पर था ?

फिर भी हेमनलिनी न बोली।

जोगेन्द्र—ठीक है तुम स्वभावतः किसी पर शक नहीं करतीं। मैं जो कुछ कहने जा रहा हूँ, उस पर भी न करोगे। मैं स्वयं लड़कियों के स्कूल

गया था और वहाँ रमेश की पत्नी को मैंने बोर्डर की हैसियत से पाया। रमेश ने छुट्टियों में उसे वहीं रखने का प्रबंध किया था। दो-तीन दिन हुए अकस्मात् इमिस्ट्रेस ने उसे पत्र लिखकर कमला अर्थात् रमेश की पत्नी को छुट्टियों में वहाँ रखने में मजबूरी जताई। आज छुट्टियाँ शुरू हो गई हैं और कमला अपने दर्जीपाड़ा वाले मकान में आ गई है। मैं खुद वहाँ गया था और मैंने देखा कि कमला सेब काट रही थी और सामने फर्श पर बैठा हुआ रमेश टुकड़े खाता जा रहा था। मैंने रमेश से बात समझना चाही, लेकिन उसने कुछ नहीं बताया। अगर वह कमला को अपनी पत्नी मानने से इंकार कर देता, तो हम उसकी बात पर विश्वास कर लेते और अपने मन से संदेह दूर करने का प्रयत्न करते। लेकिन न उसने स्वीकृति दी, न उसने इंकार किया। इसके बाद भी तुम रमेश के ऊपर विश्वास कर सकती हो?''

अपनी बहिन के चेहरे पर आँखें गड़ाये जोगेन्द्र उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा था। हेमनलिनी पीली पड़ गई थी, और कुर्सी के हाथों को अपनी सारी ताकत से दबा रही थी। अगली घड़ी उसका सिर आगे झुका और वह बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ी।

अन्नदा बाबू की हालत बड़ी दयनीय थी। उन्होंने जमीन से अपनी पुत्री का सिर उठाया और अपने हृदय से लगाकर बोले—"क्या हुआ? यह क्या हुआ? बेटी, इनकी बात का एतबार मत करो, ये सब झूठ कह रहे हैं।"

जोगेन्द्र ने अपने पिता को अलग किया और हेमनलिनी को सोफ़े पर लिटा दिया। पास पानी का बर्तन रखा था। जोगेन्द्र उसके सिर पर पानी छिड़क रहा था और अक्षय पंखा लेकर जोर जोर से हवा कर रहा था। हेमनलिनी ने जल्दी आँखें खोलीं और विस्मय से चौंक पड़ी। उसने पिता की ओर देखकर चिल्लाकर कहा, "पिताजी, अक्षय बाबू से कहिये कि यहाँ से चले जाँय।" अक्षय ने पंखा रख दिया और दरवाजे के बाहर खड़ा हो गया।

अन्नदा बाबू सोफ़े पर हेमनलिनी के पास बैठ गये और धीरे धीरे उसके सिर और गर्दन को सहलाने लगे। उन्होंने गहरी साँस लेकर इतना ही कहा, "मेरी प्यारी बच्ची।"

सहसा हेमनलिनी की आँखें आँसू से भर गईं और वह सिसकियाँ भरने लगी। पिता की गोद में अपने को छिपाकर उसने अपने बेकाबू दुख को कम करने की चेष्टा की।

अन्नदा बाबू ने रुँधे स्वर से कहा, "चिन्ता न करो, बेटी। मैं रमेश को अच्छी तरह जानता हूँ। वह हमें कभी धोखा न देगा। जोगेन ने जरूर कोई गल्ती की है।"

जोगेन्द्र का धीरज जल्दी छूट गया। "उसे झूठी आशाओं से भरमाइये मत, पिताजी! अगर आप उसकी भावना का ख्याल करेंगे, तो बाद उसे ही अधिक कष्ट होगा। उसे सारी बात समझने का मौका दीजिये।"

हेमनलिनी ने पिता की गोद से सिर उठाया और जोगेन्द्र के मुँह की तरफ देखकर बोली, "मैं यह साफ बताये देती हूँ कि उनके मुँह से सुने-बिना मैं विश्वास नहीं करूँगी।" लड़खड़ाते पैरों से उसने उठने की। चेष्टा की अन्नदा बाबू ने उसे गिरने से बचा लिया!

हेमनलिनी अन्नदा बाबू का सहारा लेकर अपने कमरे में चली गई।

"मुझे थोड़ी देर अकेला छोड़ दीजिये, पिताजी। मैं सो जाऊँगी।" बिछौने पर लेटते हुए उसने कहा।

"पंखा करने के लिए नौकरानी को भेज दूँ?" पिता ने कहा।

"नहीं, मैं अकेले ही रहना चाहती हूँ।"

अन्नदा बाबू बगल के कमरे में चले गये। उन्हें हेम की मा का ख्याल आया, जो लड़की को तीन साल का छोड़कर मर गई थी। उन्हें उसकी भक्ति, उसके धैर्य, उसके सदा हँसमुख चहरे का स्मरण हो आया और उनका हृदय बच्ची की चिन्ता में टुकड़े-टुकड़े हो गया।

जोगेन्द्र ने नारी बुद्धि को सदा से तुच्छ समझा था। आज की घटना से उसका विचार और दृढ़ हो गया। ऐसे लोगों से कैसे पार पार पाया जाय, जो प्रत्यक्ष प्रमाण को नहीं मानते! अगर किसी के व्यक्तिगत सुख का सवाल हो, तो नारी दो और दो चार होते हैं, इस बात से भी इन्कार कर देगी। अगर तर्क उससे कहे कि काला काला होता है और प्रेम कहे कि काला सफ़ेद होता है, तो बेचारा तर्क ही खुद झख मारेगा। जोगेन्द्र की समझ में नहीं आया कि औरत के बिना भी संसार का काम कैसा चलता है! उसने अक्षय को बुलाया। अक्षय धीरे धीरे कमरे में दाखिल हुआ। "तुमने सब कुछ सुन लिया। अब क्या किया जाये?" जोगेन्द्र ने पूछा।

"मुझे इस सबमें क्यों घसीटते हो, मेरे भाई? इससे मुझे क्या सरोकार? इतने दिनों मैं चुप रहा हूँ। इस उलझन में मुझे घसीटना क्या ठीक होगा?"

जोगेन्द्र, "अच्छी बात है। तुम्हारी शिकायत बाद में सुनी जायगी। अभी तो जब तक रमेश को हेमनलिनी के सामने सब कुछ क़बूल करने के लिये मजबूर न किया जावेगा, तब तक कुछ नहीं हो सकता।"

अक्षय—पागल हुए हो क्या? क्या तुम सोचते हो कि कोई आदमी... ... ...

जोगेन्द्र—हम उसे पत्र ही लिखने के लिये मजबूर कर सकें, तो भी ठीक होगा। यह काम तुम्हारा रहा। तुम्हें एकदम अपने काम में लग जाना चाहिये।

अक्षय—मुझसे जो हो सकेगा, मैं करूँगा।

● २०

उस रात कमला को लेकर रमेश सियालदह स्टेशन पर पहुँचा। सीधे रास्ते न जाकर चक्कर वाले रास्ते से गया और एक खास

मकान के सामने से निकलते हुए उसने खिड़की से झाँककर देखा। उसे कोई परिवर्तन नज़र नहीं आया।

उसने इतनी जोर से उसाँस भरी कि कमला नींद में से चौंक पड़ी। उसने पूछा कि क्या बात है। "कुछ नहीं," कहकर रमेश अपनी सीट पर खिसक गया। कमला कोने में बैठी बैठी फिर सो गई। एक घड़ी के लिये रमेश को कमला के अस्तित्व ही से खीझ हो गई।

वक्त रहते वे स्टेशन पहुँचे और रिजर्व किये दूसरे दर्जे में जा बैठे। रमेश ने नीचे की बर्थ पर कमला का बिस्तर कर दिया, रोशनी कम कर दी, चिटखनी लगा दी और कहा, "तुम्हारे सोने का वक्त हो गया है। तुम सो जाओ।"

"गाड़ी चलने तक मैं बैठकर बाहर न देखूँ? गाड़ी चलते ही मैं सो जाऊँगी।" रमेश ने बात मान ली। कमला ने सिर का घूंघट ज़रा आगे सरका लिया और खिड़की के पास बैठकर भीड़ देखने लगी। रमेश बीच की बर्थ पर बैठा हुआ ध्यानमग्न बाहर की तरफ़ ताक रहा। गाड़ी ने चलना शुरू ही किया था कि उसकी नज़र एक दौड़कर आते हुए यात्री पर पड़ी। आकृति से यह आदमी उसे परिचित जान पड़ा

कमला खिलखिला कर हँस पड़ी। रमेश ने सिर निकाल कर देखा कि एक देर से आया हुआ यात्री रेलवे कर्मचारी से अपने को छुड़ाकर गाड़ी पर चढ़ गया है। उसका शॉल कर्मचारी के हाथ में रह गया। खिड़की से झुक-कर ज्योंही उसने शॉल के लिये हाथ बढ़ाया, रमेश ने उसे पहचान लिया—अक्षय। कमला बड़ी देर तक इस दृश्य पर हँसती रही।

"साढ़े दस बज गये हैं। गाड़ी चल दी है। अब तुम सो जाओ।" रमेश ने कहा। लड़की बात मानकर लेट गई। लेकिन जब तक सोई नहीं, रह रह कर उसके कहकहे रुके नहीं।

रमेश को इस घटना से आनन्द नहीं हुआ। वह जानता था कि गाँव में अक्षय का कोई मकान नहीं है। पीढ़ियों से ये लोग कलकत्ते में रह रहे हैं, इसलिये एक खास गाड़ी पकड़ने की उसे ऐसी क्या जल्दी थी? हो न हो कि वह उसकी और कमला की टोह में निकला है। अक्षय उसके गाँव में जाकर जाँच-पड़ताल करेगा, यह बात रमेश को बुरी मालूम हुई। बस्तीवाले उसकी इज्जत से खिलवाड़ करेंगे और यह सारी बात उसे बड़ी गन्दी लगेगी। उसने कल्पना कर ली कि गाँव में किस प्रकार की चर्चा चलेगी। कलकत्ता जैसे शहर में अपने को छिपा रखने के अनेक स्थान हैं, लेकिन छोटी सी बस्ती में छोटी सी बात भी बड़ी खलबली पैदा कर देती है। जितना ही वह सोचता, उतना ही वह घबराहट से काँप उठता।

अक्षय न बैरकपुर पर उतरा, न नैहाटी पर, न बोगूला पर। आगे की किसी स्टेशन पर उतरेगा, इसकी संभावना नहीं थी।

थके होने पर भी रमेश बहुत रात गये सोया। बड़ी सुबह गाड़ी ग्वालन्दो पहुँची—जहाँ से यात्री पूरब के लिये बदली करते हैं, और रमेश ने देखा कि अक्षय सिर और चेहरे को शॉल में लपेटे हाथ में हैंडबैग लिये दरियाई स्टीमरों की ओर जा रहा है। जो स्टीमर रमेश के गाँव की ओर जाती है, उसके खुलने में कुछ देर थी। एक और स्टीमर घाट पर खड़ी शीटी बजा रही थी। रमेश ने जाना कि यह स्टीमर पश्चिम जा रही है, और गहरा पानी मिलते यह बनारस तक जावेगी

रमेश ने कमला को दूसरे एक केबिन में बिठा दिया और खुद यात्रा के लिये दाल, चावल, केला, दूध लेने चला गया। उसी बीच अक्षय सबसे पहले दूसरी स्टीमर पर सवार हो गया और ऐसी जगह पर खड़ा हो गया, जहाँ से वह सारी भीड़ को देख पाता। इस स्टीमर के जाने में अभी देर थी, इसलिये इससे जानेवाले यात्री खास जल्दी में नहीं थे। उन्होंने अपना समय नहाने-धोने में बिताया। कुछ ने अपनी रसोई बनाकर खाना-पीना भी कर डाला।

अक्षय ने सोचा कि रमेश कमला को लेकर किसी पास की होटल में नाश्ते के लिये गया होगा। वह कभी ग्वालन्दो नहीं आया था, इसलिये स्टीमर पर ठहर कर इंतजार करने लगा। अंत में जब शीटी बजी, तब भी रमेश कहीं दिखाई नहीं पड़ा। यात्री झूलते हुए तख्ते पर चढ़कर सवार होने लगे और देर से आने वाले जल्दी जल्दी स्टीमर पर चढ़ने लगे। लेकिन न देर से चढ़ने वाले लोगों में, न पहले से चढ़े हुए लोगों में, रमेश का कहीं पता नहीं था। सब सवार हो चुके थे। पटिया खींच लिया गया था। लंगर उठाने को आज्ञा दे दी गई थी। तब अक्षय घबराकर बोला, "मैं उतरना चाहता हूँ।" खलासियों ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया। स्टीमर किनारे के करीब थी और अक्षय कूद पड़ा।

किनारे पर भी रमेश का कोई पता नहीं चला। सुबह वाली कलकत्ता की गाड़ी अभी अभी गई थी। अक्षय ने सोचा कि रमेश ने उसे रात को जरूर देख लिया था और उसकी नियत परखकर देश न जाकर सुबह की गाड़ी से वह कलकत्ते लौट गया है। कलकत्ते जैसा जगह में किसी आदमी का पता लगाना मुश्किल काम था।

२१

अक्षय ने सारा दिन ग्वालंदो में भटकते काटा और शाम की मेल से कलकत्ता लौटा। दूसरे दिन सुबह कलकत्ता पहुँचकर वह पहले रमेश के दर्जीपाड़ा वाले मकान गया। दरवाजा बंद था। उसे मालूम हुआ कि वहाँ कोई नहीं है।

वहाँ से वह कोलूटोला गया। वहाँ भी कोई नहीं था, सो वह अन्नदा बाबू के घर पहुँचा और जोगेन्द्र से बोला "वह तो भाग निकला। मैं उसे पकड़ नहीं सका।"

"क्या मतलब?" जोगेन्द्र ने पूछा।

अक्षय ने विस्तार से अपने अनुभव कहे। जोगेन्द्र का संदेह अब निश्चय के रूप में बदल गया। उसने कहा, "लेकिन अपनी इस गवाही से आखिर क्या काम निकलेगा? हेमनलिनी ही नहीं, पिताजी भी वही फ़िज़ूल बात कहते हैं कि रमेश के मुँह से सब कुछ सुने बिना वे उस पर संदेह नहीं कर सकते। बात यहाँ तक पहुँच गई है कि अगर रमेश आकर कहे: 'मैं अभी कुछ नहीं बता सकता,' तो मुझे विश्वास है कि पिताजी को हेमनलिनी के साथ उसको शादी करने में संकोच न होगा। ऐसे लोगों से कैसे पार पड़े? हेमनलिनी को किसी प्रकार से दुख में देखना पिताजी बर्दाश्त कर नहीं सकते। हमें जल्दी से जल्दी रमेश से बात कबूल कराना है। हमें उम्मीद न छोड़ना चाहिये। यह काम मैं खुद करूँगा। लेकिन समझ में नहीं आता कि कैसे शुरू करूँ। मैं तो शायद रमेश से उलझ पड़ता। खैर, तुम हाथ-मुँह धोना चाहोगे और चाय पियोगे।" हाथ-मुँह धोकर अक्षय चाय पीने बैठा। उसका दिमाग व्यस्त था। अन्नदा बाबू पुत्री को लिये आये, तो उसकी विचारधारा भंग हुई। अक्षय को देखते ही हेमनलिनी उलटे पैरों भाग गई।

"हेम की यह बुरी आदत है," गुस्से में जोगेन्द्र ने कहा, "हेम को ऐसी अशिष्टता को बढ़ावा नहीं देना चाहिये, पिताजी। उसे आप वापिस बुलाइये;" और उसने पुकारा—हेम, हेम! लेकिन तब तक हेमनलिनी अटारी पर पहुँच चुकी थी।

अक्षय ने बीच में पड़कर कहा; "मेरा पक्का ख्याल है कि तुम मेरा मामला बिगाड़ रहे हो, जोगेन! अच्छा होता, अगर तुम उससे मेरे बारे में कुछ न कहते। अगर तुम उसे छेड़ोगे, तो बहुत बड़ी गलती होगी।"

अक्षय ने चाय खत्म की और वह चला गया। इस तरुण का धीरज-कोष अक्षय था। जब हवा उसके खिलाफ़ थी, तो वह जानता था

कि बैठे रहकर परिस्थिति परखने के सिवा उसे कुछ और नहीं करना है। उसका स्वभाव बड़ा स्थिर था। अपमान होने पर न तो वह रोष प्रकट करता था, न खीझकर चला जाता था। धमकी-निन्दा का उस पर कोई असर न होता था। उसके दोस्त उसके साथ भले ही भद्दा व्यवहार करें, वह कभी झिझकता नहीं था।

अक्षय के जाते ही अन्नदा बाबू हेमनलिनी को चाय की टेबल पर वापिस ले आये। उसके कपोलों का रंग उड़ गया था और उसकी आँखों के चारों तरफ कालिमा छा गई थी। वह निगाहें नीची किये कमरे में दाखिल हुई, क्योंकि वह जोगेन्द्र का सामना नहीं कर सकती थी। वह जानती थी, जोगेन्द्र उससे और रमेश से बेहद खीझा हुआ है और उसने दोनों को कड़ा दंड देने का फैसला कर लिया है, इसलिये वह उससे आँखें न मिला सकी।

यद्यपि प्रेमवश हेमनलिनी का विश्वास रमेश में था, किन्तु इसलिये वह तर्क को पूरी तौर से तरह न दे सकी। दो दिन पहले उसने जोगेन्द्र के सामने अपने विश्वास की घोषणा कर दी थी, लेकिन रातों के सूनेपन में उसका विश्वास डिग गया था।

सच तो यह था कि वह रमेश के इस अनहोने आचरण का कोई संतोषदायक कारण सोच नहीं सकी। विश्वास के किले में से उसने संदेह को निकाल भगाने की बहुतेरी कोशिश की, लेकिन शक चोर-दर्वाजे पर आघात कर रहा था। अपनी छाती में छिपाकर अपने बच्चे की रक्षा करने वाली मा की तरह हेमनलिनी रमेश के खिलाफ़ शिकायतें सुनकर उसके प्रति अपने विश्वास को हृदय में दबा रखती थी। लेकिन हाय! उसकी शक्ति उसके प्रयत्नों में कहाँ तक साथ देगी!

अन्नदा बाबू फिर हेमनलिनी के बगल वाले कमरे में सोये और उन्हें मालूम हुआ कि कितनी परेशानी में उसकी रात कटी। कई बार

उसके कमरे में जाकर उन्होंने उसे जगे हुये पाया। उनकी चिन्ताजात पूछताछ पर वह कह देती, "आप सो क्यों नहीं जाते, पिता जी ? मुझे बड़ी नींद आ रही है, अभी सो जाऊँगी।"

सुबह वह तड़के उठी और छत पर टहलने लगी। रमेश के घर का हर दरवाजा, हर खिड़की बंद थी। सूरज धीरे धीरे चढ़ रहा था, लेकिन हेमनलिनी के लिये नया दिन इतना नीरस, इतना सूना, इतना निरानंद, इतना भयावह था कि वह छत के एक कोने में बैठकर हाथों से मुँह छिपाये फूट फूट कर रोने लगी। दिन चला जायगा, उसका प्रेमी न आयेगा; सांझ के समय भी कोई उम्मीद न होगी। और यह सांत्वना कि वह करीब ही, उसके पड़ोस में है, आज नहीं मिलेगी।

पिता की आवाज सुनकर वह चौंक उठी, "हेम! हेम।" उसने जल्दी से अपने आँसू पोंछे और बोली, "जी पिताजी'।'

"मैं आज देर से जागा," छत पर आकर कहते हुये अन्नदा बाबू ने उसके कंधों पर हाथ फेरना शुरू कर दिया।

पुत्री की चिन्ता ने उनका आराम छिन्न कर दिया था। और वे सुबह होते होते ही सो पाये थे। सूरज की किरन चहरे पर पड़ने से उनकी नींद खुल गई थी, और वे हाथ-मुँह धोकर उसकी खोज में निकल आये थे। उसका कमरा सूना था, और यह ख्याल करके कि उसे अभी भी एकान्त अच्छा लगता है, उन्हें बड़ी व्यथा हुई।

"नीचे चलो और चाय पीलो, बेटी;" उन्होंने कहा।

हेमनलिनी चाय का टेबल पर जोगेन्द्र से मिलने में घबराती थी, लेकिन वह यह भी जानती थी कि रोज के कार्यक्रम में फर्क होने से उसके पिता को दुख होगा। फिर रोज वही चा बनाकर पिताजी को देती है; आज वह इस खबरदारी से वंचित न रहना चाहती थी।

दरवाजे पर पहुँचकर उसने भीतर जोगेन्द्र को किसी से बात करते सुना। यह सोचकर कि शायद रमेश हो, क्योंकि इतने सुबह और आयेगा कौन ! उसका हृदय धड़कने लगा, काँपते-शरीर वह कमरे में दाखिल हुई और उसने देखा—अक्षय ! वह अपने को न रोक सकी, उलटे पैरों चली आई। जब उसके पिता उसे लौटाकर फिर ले आये, तो वह पिता की कुर्सी से चिपट कर बैठ गई और समस्त ध्यान से चा बनाने में लग गई।

उसके इस व्यवहार से जोगेन्द्र को बड़ा रोष आया। रमेश के लिये नलिनी इतनी दुखी है, यह बात उसे असह्य लगी। पिता को उसके दुख में दुखी देखकर और उसे पिता के स्नेह-अंचल में छुपते देखकर उसे और भी खीभ हुई। "हम सब अपराधी हैं," उसने सोचा, "कि हम तो प्रेमवश अपना कर्तव्य करके इसके सच्चे सुख का प्रयत्न करते हैं, और इस कारण धन्यवाद मिलने की कौन कहे, हमें मन ही मन दोषी समभा जाता है। पिताजी नहीं समभते कि इस परस्थिति में क्या करना चाहिये। इस समय उन्हें धीरज बँधाने के बजाय डर दिखाना चाहिये। उसे रंज न हो, इस डर वे अप्रिय सत्य उससे छिपा रहे हैं।"

"जानते हैं पिताजी, क्या हो गया है ?" उसने जार से कहा।

"नहीं क्या हुआ ?" अन्नदा बाबू ने उत्सुकता से पूछा।

"परसों रात रमेश अपनी पत्नी के साथ ग्वालंदो- मेल से रवाना हुआ। जब उसने अक्षय को गाड़ी में सवार होते देखा, तो इरादा बदल कर वह कलकत्ते लौट आया।

हेमनलिनी के हाथ काँपने लगे। उसने चाय गिरादी। वह कुर्सी में सँभलकर बैठ गई।

आँख की कोर से जोगेन्द्र ने उसकी ओर देखा। "मैं समभ नहीं पाता कि भागने में उसका क्या मतलब था, जब कि उसे मालूम था कि अक्षय सब जानता है। उसका पिछला बर्ताव ही कमीना था। इसके ऊपर

डरकर चोर की तरह भागना कैसी बुरी बात है ? मैं नहीं जानता, हेम का क्या ख्याल है। लेकिन मुझे उसका भागना अपराध का यथेष्ट प्रमाण समझ में आता है।"

काँपती हुई हेमनलिनी उठ खड़ी हुई, "मुझे तुम्हारे प्रमाण की जरूरत नहीं है," उसने अपने भाई से कहा, "तुम उन्हें नीच समझो लेकिन मैं उनकी विचारक नहीं।"

जो०—जिस व्यक्ति के साथ तुम्हारा व्याह होने को था, उसके साथ क्या तुम्हारा कोई सरोकार नहीं है ?

हे०—मैंने शादी के बारे में कुछ नहीं कहा। संबंध तोड़ो, या न तोड़ो, लेकिन मेरे निश्चय का तोड़ने की तुम्हें जरूरत न होना चाहिये।

उसकी हिचकी भर गई और वह अधिक न बोल सकी। अन्नदा बाबू ने उठकर उसका अश्रु-सिक्त मुँह छाती से लगा लिया।

"चलो, बेटी। हम ऊपर चलें।" इतना ही वे कह पाये।

● २२

जिस नाव में रमेश और कमला थे, वह निश्चि- समय पर ग्वालंदो से छूटी। पहले-दूसरे दरजे के और यात्री न थे; रमेश ने एक केबिन पर कब्जा करके उसमें अपना सामान धर दिया।

सुबह के भोजन के प्रबंध शुरू हुये। रमेश जाकर एक सिगड़ी ले आया। इतना ही नहीं, उमेश नाम के एक छोकरे को बनारस के टिकट और रोजाना मजदूरी पर वह कमला की मदद के लिये लेता आया।

कमला ने गृहणी का भार अपने सिर पर ले लिया, क्योंकि अपने चाचा के घर उसकी जिंदगी भोजन बनाना, टहल करना और घर का कामकाज करना थी। उसकी सफ़ाई, कुशलता और आनन्दपूर्ण फुर्ती से

रमेश बड़ा आकर्षित हुआ, लेकिन साथ साथ तकलीफदेह सवाल उसके मन को भरने लगे। उनके भविष्य के संबंध क्या होंगे? उसे रखना और निकाल देना दोनों नामुमकिन थे। अपने रोजाना ताल्लुक की सीमा वह कहाँ रखे? अगर हेमनलिनी भी साथ होती, तो सारी बात सहल हो जाती! लेकिन वह तो असंभव था, आज की उलझन का वह कोई हल नहीं सोच सका। उसने अंत में तय किया कि राज बनाये रखना ठीक नहीं है: कमला को सारी बात जान लेना चाहिये।

दोपहर के शुरू में नाव बालू की जमीन पर लगी। उसे पानी में लाने की कोशिशें बेकार हुईं। धीरे धीरे रेतों के फैलाव के पार सूरज डूब गया। रमेश रेलिंग के सहारे खड़ा पश्चिमी किनारे की नदी को सूरज की आखिरी किरनों में चमकते देख रहा था, कि कमला अपने चौके से निकल कर केबिन के दरवाजे पर खड़ी हो गई और हलके खाँसकर रमेश का ध्यान आकर्षित करने लगी। जब रमेश ने न सुना, तो उसने दरवाजे पर चाबियों का गुच्छा बजाया। जोर से बजाया, तब रमेश ने मुड़कर देखा और डेक से आकर वह उसके बाजू में खड़ा हो गया।

"तो मुझे बुलाने का आपका यह तरीका है, है ना?" रमेश ने कहा।

"और कोई तरीका मुझे सूझा नहीं।"

"क्यों मेरे मा-बाप ने मेरा नाम किसलिये रखा था? जब जरूरत पड़े, तब मुझे "रमेश बाबू" कहकर क्यों नहीं बुलातीं?"

यह मजाक कमला को बुरा लगा। क्या हिन्दू औरत अपने पति का नाम लेकर बुलायेगी? कमला के चेहरे पर डूबते सूरज जैसा सिंदूरी रंग आ गया। "जानती नहीं, आप क्या कह रहे हैं?" उसने मुँह फिराये हुये कहा, "देखिये ब्यालू तैयार है। अच्छा हो चलकर खा लीजिये। सुबह आपने अच्छी तरह नहीं खाया था।"

दरियाई हवा से रमेश की भूख खुल गई थी, यह बात उसने कमला को बताई नहीं थी, क्योंकि चीजें पास में ज्यादा नहीं थीं और कमला को बहुत परिश्रम करना पड़ जाता। फिर भी कमला को बिना याद दिलाये हुये आकर ब्यालू के लिये बुलाना रमेश को मिला-जुला बोध मालूम हुआ। एक तो सीधी सादी भूख शान्त करने की इच्छा थी; लेकिन इसके साथ यह आनन्ददायक बोध था कि कोई उसकी फिकर कर रहा था, और उसका काम-काज कर रहा था। इसके अस्तित्व से वह अपरिचित न था; लेकिन उसके सामने यह अप्रिय सत्य आता था कि यह लगाव उसका दावा नहीं था और भले ही वह इसकी कीमत करता हो, यह भरम था। उसाँस ले गिरे मन से वह केबिन में दाखिल हुआ।

उसका यह भाव कमला की निगाह से बचा नहीं। "ऐसा मालूम होता है कि आपको ब्यालू की इच्छा नहीं है," उसने अचरज में कहा, "मैंने सोचा, आप भूखे होंगे, नहीं तो आपकी इच्छा के खिलाफ आपको खींच नहीं लाती।"

रमेश ने एकदम आनन्द का भाव धारण कर लिया।

सवेरे जब नाव रेत पर ठहरी थी, कमला ने उमेश को भोजन की चीजें लाने पास के गाँव भेज दिया था। स्कूल जाते वक्त रमेश के दिये खर्च के रुपयों में से अभी उसके पास कुछ रुपये बाकी थे। यही उसने घी और आटे में खर्च कर दिये। "तुम अपने लिये क्या लाओगे?" उसने उमेश से पूछा।

"मा, गाँव के ग्वाले के यहाँ मैंने अच्छा दही देखा था। केबिन में केले बहुत हैं, और अगर थोड़ा सा चावल मिल जायेगा, तो मेरा भोजन अच्छा बन जायेगा।"

कमला ने लड़के की मीठी जीभ के साथ हमदर्दी दिखाई। "कुछ पैसे बचे हैं, उमेश?" उसने पूछा।

"बिलकुल नहीं, मा"

यह बड़ा मुश्किल था, क्योंकि कमला को रमेश से सीधे पैसे माँगते संकोच लगा। थोड़े विचार के बाद उसने कहा, "सुनो, आज तो तुझे यह भोजन नहीं मिल सकता। पूरियाँ हैं, सो तेरा काम चल जायेगा। चल, आटा गुँधाने में मदद कर।"

"और दही, मा!"

"देख उमेश, बाबूजी के ब्यालू पर आने तक ठहर और तब तू पैसे की याद दिलाना।"

जब रमेश आधा भोजन कर चुका, तो संदेह से सिर खुजलाता हुआ उमेश हाज़िर हुआ। जब रमेश ने उसकी तरफ़ देखा, तो वह धीरे से बोला। "वो बाजार के लिये पैसे, मा!"

रमेश को अचानक ख़्याल आया। "अरे हाँ, तुम्हारे पास पैसे नहीं है, कमला!"

कमला ने चुपचाप अपराध स्वीकार करलिया।

ब्यालू के बाद रमेश ने एक छोटा केश-बाक्स कमला के हवाले करते हुये कहा, "अभी हाल अपने रुपये और कीमती जेवर इसीमें रखो।"

यह सोचकर कि परिस्थितिवश प्रबंध का सारा भार कमला पर है, रमेश फिर जाकर रेलिंग के सहारे खड़ा हो गया और पश्चिमी आकाश से आखिरी रोशनी जाते देखने लगा।

उमेश ने चावल, दही, केले से अपना पकवान बनाया और भरपेट खाया। कमला पास खड़ी होकर उसकी जिंदगी का हाल पूछती रही।

सौतेली मा के अत्याचारों के कारण वह घर से भागकर बनारस जा रहा था, जहाँ उसके मा की तरफ से कोई रिश्तेदार रहते थे।

"अगर तुम अपने साथ रखलो, मा, तो फिर मैं कहीं और न जाऊँ," उसने बात खतम करते हुये कहा।

लड़की के गहरे हृदय-तल में लड़के के मा सम्बोधन से मातृत्व-भावना जाग उठी।

"अच्छी बात है, उमेश, तू हमारे साथ चल;" उसने उत्साह दिलाते हुये कहा।

● २३

रमेश ने बेत की कुर्सी अगाड़ी तक खींच ली, और प्रथमा के चाँद की हलकी रोशनी में बैठ गया। पश्चिमी आसमान में साँझ की रोशनी अँधेरे की छाया में डूब गई थी, और चाँदनी के जादू में दृढ़ धरती पिघलकर कुहासा बनती जा रही थी। रमेश अपने आप से कह रहा था, "हेम, हेम;" और यह प्यारा नाम नीरव, मधुर बंधन बनकर उसके हृदय से लिपट गया। मात्र नाम लेने से उसकी खोई स्वामिनी की आँखों का चित्र उसके सामने उतर आया। उसका सारा शरीर काँप उठा और उसकी आँखों में आँसू आ गये।

पिछले दो सालों की जिंदगी उसके सामने खड़ी हो गई। उसे हेमनलिनी से पहिली मुलाकात की याद आई; वह न जानता था कि ऐसा भाग्यशील वह दिन था! जोगेन्द्र उसे घर लाया था और हेमनलिनी को चाय की टेबल पर देखकर शर्मीले युवक ने बड़ा संकट अनुभव किया था। धीरे धीरे उसकी शर्म जाती रही और उसे हेमनलिनी के साथ बैठना भला लगने लगा। जैसे जैसे परिचय बढ़ता गया, रमेश ने हेमनलिनी को अपनी पढ़ी सारी प्रेम-कविताओं का विषय समझ लिया। चुपके चुपके वह इस बात में आनन्द लेने लगा कि वह प्रेम करता है, और उसे अपने उन सहपाठियों पर दया आती थी, जो इम्तिहान के लिये प्रेम-काव्य रटा करते उसके लिये तो प्रेम जीवित यथार्थ था।

उसने विचारकर जाना कि उन दिनों वह प्रेम के बाहिरी दरवाजे पर खड़ा था। जब कमला ने आकर उसके जीवन की समस्या को उलझा दिया, केवल तभी एक दूसरे से विरुद्ध धाराओं के बीच हेमनलिनी के प्रति उसके प्रेम का यथार्थ स्वरूप प्रकट हुआ, वह उसके लिये सजीव चीज बन गई।

सोचते सोचते रमेश ने सिर अपने हाथों में धर लिया। उसके सामने जीवन का विस्तार था—हृदय की भूख का जीवन, जिसका समाधान असम्भव था, किसी ऐसे जीव का जीवन, जो जाल में फँसकर निकलने की बेकार कोशिश कर रहा था। क्या वह सारी शक्ति लगाकर इस जाल को तोड़ नहीं सकता?

इस निश्चय की उत्तेजना में उसने सिर ऊँचा किया और देखा तो पास में कमला एक दूसरी बेत की कुर्सी पर हाथ धरे खड़ी थी। रमेश की चेष्टा से वह चौंक उठी। "आप सो रहे थे और मैंने आपको जगा दिया," उसने कहा, और पछताती सी चली जा रही थी कि रमेश ने उसे बुलाया। "ठीक है, कमला, मैं सो नहीं रहा था। आओ बैठो, मैं एक कहानी सुनाऊँगा।

कहानी की कल्पना से कमला को आनन्द का रोमांच हो आया। वह कुर्सी खींचकर उसके पास बैठ गई। रमेश ने तय कर लिया था कि कमला का सारा सत्य जान लेना चाहिये; लेकिन उसे लगा कि बिना किसी भूमिका के इसका आघात गहरा होगा, इसलिये उसने उसे बुलाकर कहानी सुनने का निमंत्रण दिया।

'नौका-डूबी' प्रसंग से लेकर अब तक की घटनाओं को राजपूती शौर्य-कथा के आवरण में रमेश सुना गया। और अंत में कहने लगा, "मानलो मैं चेतसिंह (कहानी का नायक) और तुम चन्द्रा (अकस्मात् प्राप्त बधू) हो।"

कमला: ऐसी बात न कहिये, मुझे अच्छी नहीं लगती।

रमेश: लेकिन मैं कहूँगा जरूर। ऐसी हालत में मेरा क्या धर्म होगा, और तुम्हारा क्या ?

कमला ने इस प्रश्न का जवाब नहीं दिया। इसके बजाय वह कुर्सी से उठकर चली गई। वह उमेश के पास आई, जो केबिन के दरवाजे पर बैठा चुपचाप नदी देख रहा था।

"उमेश, तूने कभी भूत देखा है ?" उसने पूछा।

"हाँ, मा, देखा है।"

"कैसा था रे, मुझे बता तो," और बेत का स्टूल खींचकर वह उस पर बैठ गई।

एकाकी बैठे रमेश ने कमला को न बुलाना ठीक समझा, और इसमें संदेह न था कि वह बहुत नाराज़ हो गई थी।

रात के विचित्र वातावरण में आसमान के नीचे बैठे रमेश ने अपनी आत्मा द्वारा इस उलझन को सुलझाने का बहुतेरा प्रयत्न किया। स्पष्ट ही हेमनलिनी और कमला में से उसे एक का त्याग करना होगा। दोनों को अपने जीवन में रखने का कोई तरीका संभव न था और उसे अपने धर्म के बारे में भी कोई संशय न रहा। हेमनलिनी के पास और भी उपाय थे: वह रमेश को अपने मन से निकाल कर किसी अन्य को स्वीकार कर सकती थी, लेकिन कमला को त्यागने का अर्थ हुआ संसार में उसे बेआसरे छोड़ देना। और फिर भी कैसा स्वार्थी है आदमी—रमेश को इस बात से कोई सांत्वना न मिली कि हेमनलिनी उसे मन से भुला दे, किसी अन्य को चुन ले, क्योंकि उसकी मुक्ति का साधन मात्र रमेश न था। इसके बजाय इस विचार से हेमनलिनी के प्रति उसका लगाव बढ़ गया। पहुँच के ज़रा बाहर वह उसकी आँखों के आगे झूलने लगी, जैसे कि उसे पाने के लिये हाथ बढ़ाकर पकड़ने भर की देर थी।

विचार करते करते उसका सिर उसके हाथों पर झुक गया। दूर सियार बोल उठा और सुनकर गाँव के कुत्ते लगातार भूँकने लगे। आवाज सुनकर रमेश ने सिर उठाया, तो कमला उसके पास अँधेरे में रेलिंग के सहारे खड़ी थी।

"सोने नहीं गईं, कमला, रात तो बहुत हो गई।"

"और आप सोने नहीं जाँयगे क्या?"

"अभी जा रहा हूँ,। मैंने अपना बिस्तर दाहिने केबिन में लगा लिया है। तुम मेरे लिये न ठहरो।"

कमला चुपचाप धीरे धीरे अपने केबिन में चली गई। वह रमेश को यह न बता सकी कि अभी उसने भूतों की कहानी सुनी है और अकेले उसे डर लगेगा। उसकी गति में यह बाधा-हिचकिचाहट देखकर रमेश को व्यथा हुई। 'डरो मत, कमला!" उसने कमला से कहा, "मेरा केबिन तुम्हारे केबिन से लगा हुआ है और मैं बीच का दरवाजा खोलकर सोऊँगा।"

कमला ने विरोध में सिर हिलाकर कहा, "डर की कौन सी बात है?"

रमेश ने अपने केबिन की रोशनी बुझा दी और वह लेट गया।

"मैं कमला को नहीं छोड़ सकता," उसने अपने तईं कहा, इसलिये हेमनलिनी! विदा। यह मेरा अंतिम निश्चय है, और इसमें कोई ढील-ढाल न होगी।" लेकिन अंधेरे में लेटे लेटे उसने हेमनलिनी को त्यागने के हानि-लाभ पर विचार किया, तो ये विचार असह्य हो उठे और वह केबिन छोड़कर बाहर आ गया।

● २४

अँधेरा रहते कमला जाग उठी और सब ओर देखकर उसे अपने अकेलेपन का अनुभव हुआ; एक दो मिनट बाद उसे ख्याल आया कि वह कहाँ है। वह कोच से उठी और दरवाजा खोलकर बाहर देखने लगी। शान्त जल पर सफेद कुहासे की चादर पड़ी थी, अँधेरे पर पीलापन छाया हुआ था, पूरबी किनारे की तरु-पंक्ति के पीछे आसमान में सुबह की रोशनी चमकने लगी थी। उसके देखते देखते सुर्ख पानी पर मछुओं की नावों के सफेद पाल लहराने लगे।

कमला के हृदय में हलका दर्द हो रहा था, जिसका कारण वह समझ नहीं सकी। धुँधले हेमन्ती प्रभात का दृश्य ऐसा नीरस क्यों था? उसकी छाती में इतनी सिसकियाँ कहाँ से भर गईं कि उसकी आवाज रुँध गई, और आँखों में आँसू आने से लगे? वह अपने एकाकीपन पर इतना क्यों सोच रही है? चौबीस घंटे पहले उसे ख्याल न था कि वह और उसके पति अनाथ हैं: उनके कोई साथी-रिश्तेदार नहीं हैं। इतनी सी देर में ऐसा क्या हो गया कि उसे अपने एकाकीपन का भान हो आया? क्या रमेश उसके लिये पर्याप्त सहारा न था? क्यों उसे समझ पड़ा कि वह इतनी तुच्छ है और संसार इतना विशाल?

खुले दरवाजे से जैसे उसने कदम बढ़ाये, नदी का वक्ष पिघले सोने की धारा सा चमकने लगा। खलासी अपने काम में लग गये और एंजिन की आवाज फिर शुरू हो गई। जहाज चलने की प्रारंभिक आवाज सुनकर गांव के बच्चे जागकर दौड़ आये।

रमेश की भी नींद टूटी और वह कमला की खोज में केबिन के दरवाजे पर आया। उसे देखकर कमला अचरज से चौंक उठी और उसने पहले से सरके हुये घूंघट को और सरकाकर मुँह ढाँकने की चेष्टा की। "मुँह-हाथ धोना हो गया, कमला?" रमेश ने पूछा।

प्रश्न में क्या बुराई थी, कि कमला नाराज हो जाये। लेकिन वह नाराज हो गई और उसने सिर हिलाकर मुँह फेर लिया।

"अभी लोगों का आना—जाना शुरू हो जायगा," उसने कहा, "अच्छा हो कि तुम तैयार हो जाओ।"

उत्तर में कमला ने कुछ नहीं कहा। कुर्सी पर से अपनी साड़ी उठाकर रमेश के बगल से बाथ-रूम की ओर चली गई।

रमेश सुबह उठकर उसके नहाने-धोने की फिकर करे, यह बात कमला को व्यर्थ ही नहीं, उच्छृंखल भी जान पड़ी। उसे मालूम था कि अपने व्यवहार में रमेश एक सीमा में बद्ध था और उसके परिचय की इस सीमा का उल्लंघन उसने कभी नहीं किया। सास के चरणों में बैठकर कमला ने आचार-व्यवहार की कभी नहीं पाई थी कि कब और कहाँ घूंघट डालना चाहिये, लेकिन आज सुबह रमेश के सामने जाने कहाँ की लज्ज उसमें आ गई थी!

कमला नहाकर लौटी तो दिन का काम सामने पड़ा था। कंधे पर पड़े हुये आँचल के छोर से चाबी का गुच्छा लेकर उसने कपड़े निकालने के लिये ट्रंक खोली, ता उसकी निगाह केश-बाक्स पर पड़ी। कल इसे पाकर उसे आनन्द हुआ था, इसकी प्राप्ति ने उसे शक्ति और आजादी की चेतना दी थी, और उसने उसे बहुमूल्य कोष के समान सावधानी से रख छोड़ा था। लेकिन कल जैसा आनन्द उसे आज न मिला। सन्दूक तो रमेश की है, उसका नहीं। वह उसकी एकमात्र अधिकारणी नहीं है। उस पर उसका एकछत्र अधिकार नहीं है; वह केवल एक जिम्मेदारी के रूप में उसके पास है।

"बड़ी चुप हो," केबिन में घुसते हुये रमेश ने पूछा, "क्या बाक्स में से भूत निकला?" "यह आपका है," केश बाक्स उसकी तरफ बढ़ाते हुये कमला ने कहा।

"क्या नाराज़ हो गई ?" रमेश ने पूछा

"नहीं तो;" कमला ने निगाहें ज़मीन पर गड़ाये हुए कहा।

रमेश: "अगर नहीं, तो यह बॉक्स अपने पास रखो।"

कमला: "इसका क्या मतलब ? चीज़ आपकी है और आपको रखना चाहिये।"

रमेश: लेकिन यह मेरी नहीं है। जो दी हुई चीज़ वापिस लेता है, वह मरने पर भूत होता है। क्या तुम चाहती हो कि मैं भूत बनूँ।

रमेश के भूत बनने की बात कमला को छू गई और वह हँसी न रोक सकी।

इसी बीच बड़े यत्न के बाद खलासी जहाज को गहरे पानी में ले आये। अभी जहाज ज्यादा दूर न गई होगी कि सिर पर टोकनी धरे किनारे उमेश दीख पड़ा। कप्तान को समुचित रिश्वत देकर रमेश ने उमेश को नाव पर तो चढ़ा लिया, लेकिन फिर उसे डाँटने-डपटने पहुँचा। उमेश ज़रा न हिला। उसने तरकारी-भाजी भरी टोकनी कमला के चरणों में रखदी और यों हँस पड़ा कि जैसे कुछ हुआ हो न हो।

कमला के पूछने पर उमेश ने बताया कि गांव के खेतों-बगीचों से थोड़ी थोड़ी योंही चुनकर ले आया हूँ। चोरी करके लाया है, इसलिये कमला ने उसे धमकाया, और रमेश ने उसे टोकनी लेकर आँखों के सामने से चले जाने को कहा।

उमेश ने कमला की तरफ देखा और उसका संकेत पा टोकनी लेकर चला गया। उसे कमला के बर्ताव से अनुमान हुआ कि वह उसे प्यार करती है।

"उसने बहुत बुरा काम किया है। तुम्हें उसे तरह नहीं देना चाहिये।" कहते रमेश पत्र लिखने अपने केबिन में चला गया।

उस दिन सुबह का खाना बड़ा अच्छा रहा। इतने काम और विनोद की मात्रा के बीच अनजाने ही कमला की उदासी दूर हो गई। दोपहर भर कमला पान लगाने, बाल बाँधने, मुँह-हाथ धोने और कपड़े बदलने में लगी रही और जब तक सूरज गाँव की सीमा पर बाँस के पेड़ों के पीछे छिपा, उसने अपने कामों से फुरसत नहीं पाई।

पिछले दिन के समान जहाज स्टेशन पर रात भर के लिये रुकी। प्रथमा का चाँद जल-थल पर अपनी किरनें बिखेर रहा था। जहाज के स्टेशन के पास कोई गाँव न था और चमकीली रात धान के खेतों के हरे फैलाव पर ऐसे जाग रही थी, जैसे वह स्त्री जिसका प्रेमी अभिसार-स्थान पर न पहुँचा हो।

खुले दरवाजे से रमेश बाहर देख रहा था। कमला उसके पीछे रेल के सहारे खड़ी थी, लेकिन रमेश उसकी उपस्थिति न जान सका। उसने सोचा था कि ब्यालू के बाद रमेश उसे बुलायेगा। उसका काम खतम हो गया और रमेश ने नहीं बुलाया, इसलिये वह स्वयं ही चुपचाप डेक पर आ गई थी।

लेकिन रमेश को देखते ही वह एकाएक रुक गई। उसके पैरों ने आगे बढ़ाने से इन्कार कर दिया, रमेश के चेहरे पर चाँदनी पड़ रही थी, और उसके भाव से मालूम पड़ता था कि उसका मन दूर है कमला से दूर। उसकी विचार-धारा में कमला का कोई स्थान नहीं है। विचारों में मग्न रमेश और अपने बीच उसे रात की आत्मा चाँदनी के कपड़ों में लिपटे हुए होठों पर उँगली धरे किसी महाकाय पहरेदार सी जान पड़ी।

जब रमेश ने हाथों में अपना मुँह छिपा लिया और टेबल पर सिर रख लिया, तो कमला चुपचाप अपने केबिन में चली गई। उसे किसी प्रकार की आवाज करने का साहस न हुआ, नहीं तो कहीं रमेश सुनले और जान जाय कि यह उसकी खोज में आयी थी।

उसका केबिन अँधेरा और घिनौना था। देहली लाँघते वह काँपी। अपनी असहाय और एकाकी दशा की चेतना पूर के समान उसे हिलोर गई। अँधेरे में लकड़ी के तख्तों का बना उसका नन्हा कमरा उसे मुँह फैलाये घूरते हुये किसी विचित्र दानव सा जान पड़ा, लेकिन और कहाँ वह आश्रय पाये ? ऐसी कोई जगह नहीं थी, जहाँ वह अपना बेचारा नन्हा शरीर डालकर इस साँत्वना के साथ आँखें मूँद सके कि इतनी जमीन पर उसका अधिकार है।

उसने भीतर झाँककर देखा। फिर भय से पीछे हट आई। जब दुबारा उसने देहली लाँघी, रमेश का छाता आवाज करता हुआ उसकी टीन की ट्रँक पर आ गिरा।

आवाज से चौंककर रमेश ने सिर उठाया और वह कुर्सी से उठा, "तुम हो, कमला !" उसने अपने केबिन के दरवाजे पर खड़ी हुई कमला को देखकर कहा, "मैंने समझा, तुम कभी की सो गई होगी। जान पड़ता है तुम्हें डर लगता है। देखो, अब मैं बाहर न ठहरूँगा। मैं तुम्हारे बगल वाले केबिन में सो रहा हूँ और बीच वाला दरवाजा खुला रखूँगा।"

"मैं नहीं डरती," दर्द से कमला ने कहा। वह जल्दी अपने केबिन घुस गई और रमेश के खोले किवाड़ों को उसने बंद कर लिया। फिर वह मुँह को शाल में लपेट कर अपने बिस्तर पर लेट रही। उसे अपने अकेलेपन पर बड़ा दर्द हुआ। उसका समस्त अस्तित्व विद्रोही से उठा। अगर उसका कोई रक्षक नहीं है और न वह अपने आप की स्वामिनी है, तो उसका जीवन असहाय हो जायेगा।

वक्त सरक रहा था; बगल के केबिन में रमेश गाढ़ निद्रा में लीन था। कमला और अधिक थिर न सकी। वह धीरे धीरे उठी, जाकर रेल के सहारे खड़ी हो आई और नदी का किनारा निहारने लगी।

न किसी प्राणी का शब्द सुन पड़ता था, न कोई दीख पड़ता था। चाँद अस्त होने पर था और खेतों में के सकरे रास्ते अब नहीं दीख पड़ते थे।

अपने पास किसी को खड़ा पाकर कमला चौंक पड़ी। "मैं हूँ, मा"। आवाज़ उमेश की थी।

"इतनी रात हो गई, अभी तक तुम सोई नहीं?"

अंत में उसकी आँखों में आँसू उमड़ आये। उसने रोकने की चेष्टा नहीं की और वे बड़ी बड़ी बूँदों में गिर पड़े। कमला ने उमेश से छुपाने के लिये मुँह फेर लिया।

जलवाही बादल तब तक सरकता जाता है, जब तक उसे वायु के रूप में अन्य भ्रमणचारी नहीं मिल जाता; और जब वायु से भेंट हो जाती है, तो फिर वह अपने को रोक नहीं पाता। यही हाल कमला का था। बेचारे बेघरबार के लड़के से सहानुभूति का शब्द पाकर वह अपनी छाती में उमड़े आँसुओं को नहीं रोक पाई। उसने बोलने की कोशिश की, लेकिन उसकी आवाज रुँध गई।

इस विपत्ति में उमेश ने उसे धीरज बँधाने का उपाय खोजा। बड़ी देर की चुप्पी के बाद उसने कहा, "मा! तुम्हारे दिये रुपये में से अभी सात आने बाकी हैं।"

कमला के आँसुओं की धारा रुक गई और उसने उमेश को बेमौके की बात के लिये प्यार करते हुये हँसकर कहा, "अभी पैसे अपने पास रख, और जाकर सो रह।"

चाँद पेड़ों के पीछे अस्त हो गया। इस बार लेटते ही कमला की थकी आँखें लग गईं। सुबह सूरज निकलने के बाद तक वह सोती रही।

● २५

सुबह से कमला भारीपन अनुभव कर रही थी। धूप में चमक नहीं थी और नदी थकी सी बह रही थी। किनारे के पेड़ थके राहियों जैसे सुस्त थे।

उमेश उसे काम में मदद देने आया, तो उसने उसे डाँट दिया। रमेश ने उसके उदास चेहरे को देखकर पूछा, "क्या तबियत ठीक नहीं है, कमला?" लेकिन उसे कोई उत्तर नहीं मिला। सिर हिलाकर कमला ने जताया कि प्रश्न निरर्थक है; और वह चौके की तरफ़ चली गई।

रमेश ने अनुभव किया कि हर दिन परेशानी बढ़ती जाती है, और अब समस्या का हल खोजने में देर न होना चाहिये। वह इस नतीजे पर पहुँचा कि अगर वह हेमनलिनी के सामने अपना हृदय खोल सके, तो उसे अपना कर्तव्य थिर करने में सरलता होगी। बड़ी देर सोचने के बाद वह हेम को लिखने बैठा।

वह बड़ी देर तक लिखता-काटता रहा, कि उसे एक अजनवी आवाज सुन पड़ी। "क्या मैं आपका नाम पूछ सकता हूँ, महाशय?" उसने अचरज से सिर उठाया। उसके सामने पक रहे मूँछों-बालों वाले एक अधेड़ सज्जन खड़े थे। सामने के बाल गंजेपन की सूचना दे रहे थे।

रमेश का मन पत्र में ऐसा लगा हुआ था कि अपने को सँभालते उसे वक्त लगा।

ये सज्जन त्रैलोक्य चक्रवर्ती थे, जो नदी के उत्तरी भागों में चक्रवर्ती चाचा कहलाते थे। वे बड़ी बेतकल्लुफ़ी से पेश आये और रमेश की आज्ञा लेकर कमला को मदद देने उसके चौके में पहुँचे।

वृद्ध महाशय के संग ने कमला का सूनापन भर दिया। उनके आने से रमेश को भी राहत मिली। रमेश के पहले प्यारपूर्ण बर्ताव, जब वह कमला

को अपनी परिणीता वधू समझता था, और आज के रूखे व्यवहार का स्पष्ट अंतर कमला को बड़ी व्यथा पहुँचा रहा था। कोई भी चीज, जो उसे रमेश के ध्यान से बिलगा सके, उसे पसंद थी; और इसके द्वारा उसे अपने मन की पीड़ा का इलाज खोजने का समय मिलने की आशा थी।

जब रमेश अपने विचारों में मग्न था, कमला अपने केबिन के दरवाजे पर आ खड़ी हुई। उसका इरादा लम्बी बेकाम-काज हीन दोपहर भर चक्रवर्ती के संग रहने का था; लेकिन जब वृद्ध महाशय ने उसे देखा, तो वे बोल उठे, "न, न, यह ठीक नहीं है, यह नहीं चलेगा।" कमला इस गूढ़ बात का मतलब न समझ सकी। इस अचानक कथन से वह चकित रह गई और उसकी उत्सुकता जाग उठी।

"जूतों के लिये कह रहा हूँ," वृद्ध महाशय ने उसके उत्सुक भाव के उत्तर में कहा। "रमेश बाबू, यह सब आपने क्या किया है? कुछ भी कहो, है यह बिलकुल अधर्म। जो अपनी पवित्र धरती माता और अपने चरणों के बाच में किसी चीज को व्यवधान बनाता है, वह अपने देश का अपमान करता है। अगर रामचन्द्र ने सीता के लिये डॉसन के जूते बनवा दिये होते, तो वनवास-काल के चौदह साल लछमण उनमें लगन रखते? तुम हँसोगे, रमेश बाबू! तुम्हें विश्वास नहीं होता। मुझे कोई अचरज नहीं है; क्योंकि जो आदमी स्टीमर की शीटी सुनकर बिना गंतव्य जाने जहाज पर चढ़ सकता है, उसके लिये हर चीज संभव है!"

"देखो चाचा", रमेश ने कहा "तुम्हीं तय कर दो कि हम कहाँ उतरें? स्टीमर की शीटी से आपकी बात की ज्यादा कीमत होगी।"

"अरे बड़ी जल्दी तुमने निश्चय करना सीख लिया। अभी जरा देर की तो हमारी मुलाकात! अच्छा हो, तुम गाजीपुर उतर जाओ। चलोगे गाजीपुर? बड़े प्यारे गुलाब फूलते हैं वहाँ; और वहीं तुम्हारा यह वृद्ध प्रेमी रहता है।"

रमेश ने कमला की तरफ देखा और कमला ने स्वीकृति-सूचक सिर हिला दिया।

रमेश को बाहर अकेला छोड़कर चक्रवर्ती और उमेश दोपहरी में कमला के केबिन में जा बैठे। स्टीमर थिर भाव से चली जा रही थी और शारदी धूप के गहरे रंगों से रंगा किनारा सरकता जा रहा था। रह रहकर कमला की हँसी शारदी दोपहर की भली नीरवता के बीच किनारे के केबिन से रमेश के कान में पहुँचती थी। "कितना सुन्दर है यह सब, लेकिन मुझसे कितना दूर!" उसके हृदय में यही बात गूँजती रही।

२६

कमला की जैसी उम्र में शक, डर और चिन्ता हृदय में चिरस्थायी नहीं रह पाते: वक्त उसे अब भारी नहीं लगता था और अब उसको रमेश के व्यवहार पर सोचने का मन न होता था।

सुनहली नदी की पृष्ठभूमि पर शारदी धूप में गाँव अनेक रूप में दीख पड़ते थे। कमला नन्हें घर की गृहणी के रूप में बड़ी प्रसन्न थी और उसका हर दिन किसी सहज कविता के नये पृष्ठ की भाँति कटता था।

हर सुबह वह दिन का काम नये उत्साह से करती थी। हर स्टेशन पर उमेश भाजी-भरी टोकनी ले आता था। लेकिन वह जहाज फिर कभी नहीं चूका।

उमेश के आने के समय रमेश जब उपस्थित रहता, तो टोकनी के प्रश्न को लेकर विवाद हो जाता, क्योंकि उसे उमेश पर सदा चोरी का शक रहता था। कमला और चक्रवर्ती उमेश का पक्ष लेते, और जितना ही रमेश उसे डराता-धमकाता, उतना ही उमेश कमला की ओर खिंचता जाता था। चक्रवर्ती के सहयोग से कमला का दल रमेश से स्वतंत्र हो गया था।

चक्रवर्ती के आने के बाद रमेश ने कमला के प्रति अपने प्यार में अधिक उत्साह दिखाना प्रारम्भ कर दिया था, फिर भी अन्य लोगों की तरह वह उसका अनुगामी न हो सका। वह उस सूखी जहाज़ की तरह था, जो किनारे तक नहीं आ पाती; जो धारा के बीच में रहकर किनारे का अंदाज लगा लेती है, जबकि छोटी-मोटी नावें-किश्तियाँ आसानी से किनारे तक आ जाती हैं।

पूनों को दो-एक दिन थे। एक दिन सुबह यात्रियों ने जागकर देखा कि आसमान में काले बादल छाये हैं और हवा की रुख-गति हर घड़ी बदल रही है। झलों के बीच धूप की चमक झलक जाती थी। बीच धारा में और कोई बजरा न था। किनारे पर जरूर कुछ नावें थीं, लेकिन उनकी गति-विधि से उनके खलासियों की बेचैनी साफ जाहिर होती थी। पनिहारिनें किनारे ठहरती न थीं; और रह रहकर पानी का अंचल इस किनारे से उस किनारे तक सिहर उठता था।

जहाज़ सरका चला जा रहा था; और मौसम कमला का रसोई में जरा भी बाधक नहीं हो रहा था।

भोजन करते इन्हें देर हो गई। आँधी का ज़ोर बढ़ रहा था, नदी में तरंगें फेनिल हो रहीं थीं। निशा के आगमन से बहुत पहिले ही सूर्यदेव बादलों की ओट हो रहे। लंगर डाल दिया गया।

रात आई, और मुसकाते हुए चाँद की ताक-झाँक शुरू हो गई। इतने में ही हवा ने तूफ़ान का रूप धारण कर लिया—बादल मूसलाधार पानी बरसने लगे।

कमला एक बार और भी ऐसे तूफ़ान में जहाज़ डूबने के भयानक परिणाम को भुगत चुकी थी। जैसा कि स्वाभाविक था, वह चौकन्नी और चिंतित हो उठी। रमेश ने उसे धीरज बँधाते हुए कहा, "डरने की कोई बात नहीं, स्टीमर पर हम काफ़ी सुरक्षित हैं। तुम जाकर सो जाओ; चिंता न करो। मैं बगल वाले केबिन में ही हूँ और अभी सोऊँगा नहीं।"

जरा देर बाद चक्रवर्त्ती कमला के दरवाजे पर आया और बोला, "डरो नहीं बेटी, यह तूफ़ान तुम्हारा कुछ न बिगाड़ सकेगा!" तूफ़ान का भय जो कमला के जी में सिमटा हुआ था, उसके मुँह से चीख बनकर निकल पड़ा; और वह कह उठी "भीतर आ जाओ और मेरे पासही बैठो, चाचा।" उसकी वाणी में तीव्र अनुरोध झलक रहा था।

चक्रवर्त्ती कुछ झिझका। "अब तक तो तुम लोगों को सो जाना चाहिये था," किंतु यह कहते कहते उसने केबिन के भीतर जो नजर डाली, तो रमेश का वहाँ कोई पता न था। "क्यों, रमेश बाबू कहाँ हैं?" उसने आश्चर्य से पूछा। "अरे! क्या तुम हो, चाचा? मैं यहाँ हूँ, बगल वाले कमरे में हो;" रमेश की आवाज़ आई। चक्रवर्त्ती ने बगल के कमरे में झाँककर देखा कि रमेश बाबू बिस्तर में पड़े हुए लैम्प के प्रकाश में एक पुस्तक पढ़ रहे हैं।

"आपकी प्यारी पत्नी अकेले में घबरा रही हैं," उन्होंने कहा, "अच्छा हो कि किताब अलग रखकर आप यहाँ आयें।

एक दुर्निवार आवेश में कमला ने अपने आपको भूलकर "न, न, चाचा" आधे रुँधे कंठ से चाचा को खींचते हुये कहा। उस गरजते तूफ़ान में उसकी आवाज रमेश तक नही पहुँची, लेकिन सुनकर चक्रवर्त्ती को खटका हुआ। उन्होंने मुड़कर देखा।

रमेश ने किताब रख दी और दूसरे केबिन में आया, "क्या बात है, चक्रवर्ती चाचा," उसने पूछा, "कमला और आप, जान पड़ता है—। बिना रमेश की तरफ देखे कमला बोल पड़ी "न, न, "मैंने तो उन्हें बातचीत करने बुलाया था।" "न, न" कहकर वह किस बात का निषेध कर रही थी, सो वह स्वयं नहीं जानती थी, लेकिन अर्थ इन शब्दों का यही था कि अगर आप समझते हैं कि डर दूर करने के लिये मुझे किसी की जरूरत है, तो आप गलती कर रहे हैं; मैं डरती नहीं। अगर आप समझते हैं कि मुझे संग की जरूरत है, तो यह गलत है। मुझे उसकी भी जरूरत नहीं है

"चाचा, देर हो रही है," वह कहती गई, "आप सोइये; चाहे उमेश को जरा देख लीजिये, कहीं तूफान में डर न जाये"

"मुझे डर नहीं लगता, मा," बाहर अँधेरे में से एक आवाज आई। उमेश, जान पड़ा मालकिन के दरवाजे पर बैठा काँप रहा था।

उसकी भक्ति से द्रवित होकर कमला बाहर आई। "उमेश, तू बरसात में भीगा जा रहा है। चल, उठ गधे! जाकर चाचा के केबिन में सो जा।"

उमेश सिर झुकाकर चाचा चक्रवर्ती के साथ चला गया। यद्यपि कमला की बात में प्यार था, लेकिन उसका 'गधे' कहना उमेश को अखर गया।

"तुम्हारे सोने तक मैं तुमसे बात करूँ," कमला से रमेश ने कहा।

"न, रहने दीजिये, मुझे नींद आ रही है।"

रमेश ने कमला की विचार-धारा पहिचान ली, लेकिन उसकी बात काटने का प्रयत्न नहीं किया। एक नजर में उसने कमला के आहत मान को समझ लिया और वह अपने केबिन में खिसक गया।

कमला इतनी बेचैन थी कि सोना उसके लिये संभव न था, लेकिन वह जबर्दस्ती लेट रही। तूफान की तेजी बढ़ रही थी; लहरें और ऊँची होती जा रहीं थीं। सब ओर खलबली मची हुई थी।

कमला चादर फेंककर उठी और और डेक पर आई। बरसात घड़ी भर के लिए रुक गई थी, लेकिन हवा किसी आहत प्राणी की तरह यहाँ से वहाँ झूमकर चीख रही थी।

रात घिरी हुई थी और पूर्नो का चाँद बावले आसमान पर धुँधली रोशनी फेंक रहा था। नाश के दूत बनकर बादल तूफान के आगे आगे भागे चले जा रहे थे।

बावले आसमान और रात की अस्थिरता पर टकटकी बाँधे कमला की छाती में कैसी हलचल जाग उठी थी, वह समझ न पाई। हो सकता है, भय हो; हो सकता है, उल्हास हो।

प्रकृति के कोष में कोई ऐसी दुर्दम शक्ति, निर्बंध आजादी थी, जिसने उसके प्राणों के सोये तार जगा दिये। प्रकृति के विद्रोह की उग्रता ने उसे मोह लिया था। लेकिन किसके खिलाफ़ यह विद्रोह था, कमला जान नहीं पाई। उत्तर अव्यक्त था, वैसे ही जैसे उसके वक्ष में उठा तूफान।

❁ २७

दूसरे दिन तूफान थम चला था, लेकिन उसमें ज़ोर बाकी था। कप्तान बेचैनी से आसमान की तरफ़ देख रहा था कि लंगर गिराया जाय, या नहीं।

चक्रवर्ती बड़े सुबह रमेश के केबिन में पहुँचे। रमेश अपने बिस्तर पर था, चक्रवर्ती को देखकर उठ बैठा। यह देखकर कि रमेश इस कमरे में सोया है, और रात की घटना का ख्याल करके वृद्ध महाशय से मन ही मन सब समझ लिया। "शायद रात तुम यहीं सोये थे?" उन्होंने प्रश्न किया।

रमेश ने प्रश्न बरकाना चाहा। "कैसी बुरी सुबह है," उसने कहा, "आपकी रात कैसी कटी, चाचा?"

"रमेश बाबू," चक्रवर्ती ने प्रत्युत्तर दिया, "तुम मुझे मूर्ख समझते होगे। जिंदगी के इतने साल कुछ बिना उलझनें सुलझाते नहीं काटे हैं, लेकिन तुम एक ऐसी उलझन जान पड़ते हो, जिसे सुलझा नहीं पाता।"

रमेश अनजाने शरमा गया, लेकिन अपने भावों को छिपाकर हँसते हुये बोला, "उलझन बन जाना अपराध तो नहीं है, चाचा।"

"माफ़ करना रमेश बाबू," वृद्ध महाशय ने कहा, "जिसका विश्वास अर्जन नहीं कर पाया हूँ, उसे समझने की कोशिश करना मेरी धृष्टता है। लेकिन ऐसा भी होता है कि पहली मुलाकात में अभिन्नता आ जाये। तुम फिर सोचोगे, तो नाराजी का कारण न पाओगे।"

"दूसरी बार सोचकर ही कहता हूँ कि मुझे बुरा नहीं लगा," रमेश ने उसाँस लेते हुये कहा।

रमेश अब सोचने बैठा कि गाज़ीपुर जाकर रहना क्या सचमुच ठीक होगा? उसका पहले ख़्याल यही था कि नई जगह में इन लोगों की मित्रता काम आयेगी, लेकिन अब उसे लगा कि शहर में ज्यादा जान-पहिचान से नुकसान भी है। अगर कमला के साथ उसके संबंध को लेकर विवाद और पूछताछ शुरू हो गई, तो अंत में बड़ी खराबी होगी। अच्छा हो, किसी ऐसी जगह जाँय, जहाँ कोई सवाल न करे।"

तदनुसार जहाज़ जिस दिन गाज़ीपुर पहुँचने को थी, उसके एक दिन पहले उसने चक्रवर्ती से कहा, "चाचा, पेशे के ख्याल से गाज़ीपुर मेरे लिये ठीक न होगा, इसलिये मैं बनारस जाना चाहता हूँ।"

रमेश की इस बात का दृढ़ स्वर पहिचानकर वृद्ध महाशय को अचरज हुआ। "घड़ी घड़ी अपने इरादे बदलना निश्चय नहीं है, यह तो अनिश्चय हुआ। खैर, लेकिन अभी हाल क्या बनारस जाने का पूरा निश्चय कर लिया है?"

'हाँ' थोड़े में रमेश ने कहा।

वृद्ध महाशय बिना कुछ कहे चले गये और अपना सामान बाँधने लगे।

"आज मुझसे नाराज हो, चाचा?" कमला ने चतुरता से पूछा।

"और क्या करूँ? हम लोग सुबह से शाम तक लड़ा ही करते हैं।" उत्तर दिया, "मैं तुमसे कभी पार पा नहीं सकता।"

कमला : आज सुबह से आप मुझसे दूर दूर रह रहे हैं।

चक्रवर्ती : तुम ऐसा कहती हो। तुम्हीं मुझसे बिलकुल दूर भागी जा रही हो।

कमला उनकी तरफ निःशंक ताकने लगी।

"क्यों रमेश बाबू ने तुम्हें नहीं बताया?" वृद्ध महाशय ने कहा, "यह निश्चय हो चुका है कि तुम लोग बनारस जा रहे हो।"

कमला ने यह बात न स्वीकार की, न इससे इन्कार किया। तनिक ठहरकर उसने कहा "तुमसे न बनेगा, चाचा। लाओमैं, बाँध दूँ"।

गाजीपुर उतरने के प्रस्ताव के प्रति बेरुखी से चक्रवर्ती को बड़ा क्षोभ हुआ। उन्होंने मन ही मन कहा, "अच्छा तो है, जिंदगी के इस समय में।नये बंधन जोड़ना व्यर्थ है।"

इसी बीच रमेश स्वयं कमला को अपना बदला हुआ कार्य-क्रम बताने आया। "मैं तुम्हींको खोज रहा था", उसने कहा। सुनकर कमला चक्रवर्ती के कपड़े सँजोने में लग गई।

"हम लोग अभी हाल गाजीपुर नहीं जा रहे हैं," उसने कहा, "मैंने बनारस में वकालत करने का तय किया है। तुम्हें कुछ कहना है?"

चक्रवर्ती की ट्रंक पर से बिना आँख उठाये उसने कहा, "मैं गाजीपुर जाऊँगी। मैंने सब बाँध-बूँध लिया है।"

"तब वहाँ अकेली जा रही हो?" कमला के जवाब से चौंककर रमेश ने पूछा।

"न, न, चाचा साथ रहेंगे," और उसने प्यार भरी निगाह से वृद्ध महाशय को देखा।

चक्रवर्ती को यह परिस्थिति कुछ भली नहीं लगी। उन्होंने कहा, "देखो कमला, अगर मेरे प्रति ऐसा पक्षपात जताओगी, तो रमेश बाबू

ईर्षा करेंगे।" कमला ने मात्र यह दुहराया, "मैं गाजीपुर जाऊँगी"। उसके स्वर से जान पड़ा कि वह मनमानी करने के लिये अपने को स्वतंत्र समझती है।

रमेश ने कहा, "अच्छी बात है, गाजीपुर ही सही।"

बरसात के बाद साँझ में आसमान साफ हो गया और रमेश चाँदनी में देर तक सोचता हुआ बैठा रहा। "इस प्रकार काम कैसे चलेगा?" उसने अपने आपसे कहा, "अगर कमला ऐसा ही करने लगी, तो हालत नाजुक हो जायगी। मैं समझ नहीं पाता कि उसके साथ रहते हुये दूरी कैसे बरत सकूँ? अब ऐसे नहीं चल सकेगा। आखिर कमला मेरी पत्नी तो है। मैंने शुरू से उसे अपनी पत्नी माना। अगर बाकायदा मंत्रोचारण नहीं हुआ, तो क्या? मृत्यु ने स्वयं उसे मेरे हाथ सौंपा है और उस रात हमें एक सूत्र में बाँध दिया है। मौत से बढ़कर और कौन पुजारी होगा!"

उसके और हेमनलिनी के बीच गहरा मोर्चा कायम था। उसे सिर ऊँचा किये बाधा, संदेह, अपमान के बीच से अपना रास्ता बनाना था और वह तो मोर्चे के ख्याल में सकुचा रहा था। उसे जीत की उम्मीद नहीं थी? वह अपने को निर्दोष कैसे साबित रे: और अगर वह निर्दोष साबित कर भी सके, तो समाज अपने आँचल का छोर उससे ऐसे दूर रखेगा कि नतीजा कमला के लिये भयंकर होगा; यह तरीका ठीक न होगा। उसे यह कमजोरी, यह अस्थिरता झटकार फेरना होगा। उसके लिये यही एक रास्ता बाकी था कि कमला को पत्नी रूप में स्वीकार करले। हेमनलिनी को उसके प्रति अरुचि होना चाहिये, ऐसी कि वह रमेश को भूलकर किसी दूसरे के प्रति झुक जाये। रमेश ने उसाँस भरी और हेमनलिनी को पाने की उम्मीद छोड़ दी।

● २८

रमेश यह स्पष्ट जान गया कि अपने दल के संयोजन और गंतव्य का सारा अधिकार और सारी जिम्मेदारी कमला ने ले ली है। वह अध्याय,

जब वह विनीत भाव से रमेश के आदेश मान लेती थी, अचानक खत्म हो गया। कमला की इच्छानुसार उमेश भी दल के साथ हो लिया।

शहर और यूरोपियनों की बस्ती के बीच चाचा का बँगला था। मकान के सामने के हिस्से में पक्का कुआँ था, पीछे के हिस्से में अमराई। सड़क और कम्पांउड के बीच निचली दीवाल थी और दीवाल और बँगले के बीच तरकारी-भाजी का बगीचा था। अपना खुद का मकान पाने तक रमेश और कमला को यहीं अतिथ्य दिया गया!

हरिभाविनी चाची को चाचा सदा नाजुक बताया करते थे, लेकिन देखने से उनमें दुर्बलता का कोई चिन्ह नहीं मिलता था। वे प्रौढ़ थीं, लेकिन ताकत और सामर्थ्य उनके चहरे से स्पष्ट झलकती थीं। कनपटी पर जरूर कुछ बाल सफेद थे। उम्र ने मानों उनके खिलाफ़ डिगरी पा ली थी, लेकिन अभी तक वसूल नहीं की थी।

स्कूलमास्टर चक्रवर्ती ने मेहमानों को बाहर के कमरे में बैठाला और खुद पत्नी की खोज में भीतर गये। वे आँगन में बर्तन-सुराही रखे गेहूँ फटक रही थीं।

"सुनती हो," चक्रवर्ती बोले "आज जरा ठंड है। शाल क्यों नहीं ओढ़ लेतीं?"

हरि०—क्या कह रहे हो, ठंड! अरे, मेरी तो पीठ झुलसी जा रही है।

"आगे ऐसा न होगा। आँगन में सहन डलवाये देता हूँ।"

हरि०—अच्छा, वह तो हो जायेगा। अब बताओ, इतने दिन बाहर क्यों रहे?

चक्र०—बड़ी लम्बी कहानी है। मैं कुछ मेहमान अपने साथ लाया हूँ। कुछ और करने के पहले हमें उनका इंतजाम करना है; कहकर उन्होंने थोड़े में आये हुओं का परिचय दिया।

यह पहला मौका नहीं था कि चक्रवर्ती ने बे-पहिचान वालों की मेहमानदारी की हो, लेकिन किसी दम्पति को अतिथि रूप में स्वीकार करने हरिभाविनी तैयार न थी। "माफ करो, उन्हें ठहराने की जगह है कहाँ?" उसने कहा। "उन्हें पहले देख तो लो," पति ने कहा—"तब उनके स्थान के बारे में सोचेंगे। शैल कहाँ है?" "बच्चे को नहला रही है।"

चक्रवर्ती तब कमला को हरिभाविनी के सामने ले आये।

कमला ने बुजुर्ग हरिभामिनी को प्रणाम किया। वृद्धा ने कमला की ठोढ़ी छूकर अँगुली चूम ली और पति से कहा, "बिलकुल अपनी बिन्दु जैसी है न?"—बिन्दु उनकी बड़ी लड़की का नाम था, जो अपने पति के साथ इलाबाद में रहती थी।

चक्रवर्ती इस तुलना पर मन ही मन खुश हुये। कमला और बिन्दु में जरा भी समानता न थी, लेकिन हरिभाविनो दूसरी किसी लड़की को अपनी लड़की से गुण-रूप में बढ़ा-चढ़ा नहीं मान सकती थी। उनकी दूसरी पुत्री शैलजा अपने पिता-माता के संग रहतो थी और रूप में बड़ी साधारण थी। मा अपनी बात रखने ऐसी तुलना केवल अनुपस्थित लड़की से करती थी।

"तुम्हारे आने से हमें बड़ी खुशी हुई।" हरिभाविनी ने कहा, "लेकिन यहाँ तुम्हें शायद बहुत आराम न मिलेगा। हमारे नये मकान की मरम्मत हो रही है, और यहाँ काम चलाने के सिवा कोई चारा नहीं है।" सचही बाजार में चक्रवर्ती का एक छोटासा घर था, जिसकी मरम्मत चल रही थी। लेकिन न तो वह रहने योग्य था, न इस रूप में उसका उपयोग करने की बात इन लोगों ने कभी सोची थी।

पत्नी की इस गप्प पर चक्रवर्ती मुसकराये, लेकिन उसे और बोलने का मौका न दिया। "अगर तुम तकलीफ़ की शिकायत कर सकतीं, तो मैं तुम्हें यहाँ लाता ही नहीं," उन्होंने कमला से कहा और फिर पत्नी

से बोले, "तुम्हारा यहाँ ज्यादा ठहरना ठीक नहीं है। शरद का सूरज तुम्हें नुकसान करेगा;" और रमेश की खोज में चले गये।

कमला को अकेला पाकर हरिभाविनी ने उस पर प्रश्नों की बौछार करदी। इतने प्रश्न और टीका-टिप्पणियों ने कमला पर उसकी अयोग्यता साबित करदी, और उसे यह स्पष्ट जान पड़ा कि पति की स्थिति और कुल की जानकारी से अज्ञात रहना कितनी अनोखी और तुच्छ बात है! उसे लगा कि अब तक रमेश के साथ इसके विषय में बात करने का कभी मौका नहीं मिला और वह अपने पति के बारे में प्रायः कुछ भी नहीं जानती। पहिली बार उसे अनुभव हुआ कि उसकी स्थिति कैसी विचित्र है और उसको अपनी अयोग्यता पर मन ही मन बड़ी खीझ हुई।

"तुम्हारी चूड़ियाँ देखूँ, बेटी" हरिभामिनी ने कहा कहना शुरू किया, "सोना बहुत अच्छा नहीं है। शादी के वक्त तुम्हारे पिता ने तुम्हें गहने नहीं दिये? अरे पिता नहीं हैं? फिर भी कुछ गहने होना ही चाहिये। पति ने कुछ नहीं दिया? बिन्दु के पति तो हर दूसरे माह कुछ न कुछ गहना उसे देते रहते हैं।"

यह सवाल-जवाब चल ही रहे थे कि अपनी दो बरस की बेटी उमी का हाथ पकड़े शैलजा आई। शैलजा का रंग साँवला था और मुखाकृति छोटी। लेकिन चहरे का भाव सतेज, और ललाट उन्नत था। गम्भीर और शांत उसकी प्रकृति थी।

घड़ी-एक कमला को निहार कर शैलजा की नन्हीं पुत्री ने उसे मौसा कहा, इसलिये नहीं कि उसे बिन्दु और इसमें कोई समानता दीख पड़ी, किन्तु इसलिये कि जो स्त्री उसे अच्छी लगती, उसे वह निसंकोच 'मौसी' कह देती थी। कमला ने एकदम बच्ची को गोद में उठा लिया।

हरिभाविनी ने शैलजा को कमला का परिचय दिया। इनके पति वकील हैं। यहाँ वकालत करने आये हैं। रास्ते में तुम्हारे पिता से मुलाकात हो गई और वे इन्हें यहाँ ले आये।

एक दूसरे की आँखें मिली और उस एक निगाह ने दोनों को अभिन्न मित्र बना दिया।

हरिभाविनी मेहमानों का इन्तजाम करने चली गई और शैलजा कमला को अपने कमरे में ले गई। जल्दी ही दोनों ऐसे घुलमिलकर बातें करने लगे कि उनकी उम्र का अन्तर समझ नहीं पड़ता था।

कमला के विचार अपनी उम्र के लिये उदार और गम्भीर थे, इसलिये कि सास के शासन की कतर-ब्योंत के अभाव में उसका व्यक्तित्व बदला नहीं था।

अभी अभी बने मित्र बातचीत में ऐसे मग्न हो गये कि उमी की उनका ध्यान खींचने की चेष्टायें भी उनका ध्यान आकर्षित न कर पाईं। कमला को अपनी बात करने की अक्षमता का ध्यान आता था। शैलजा के पास कहने को बहुत था, कमला के पास कुछ भी नहीं। कमला ने अपने विवाहित जीवन का जो चित्र प्रस्तुत किया, वह मात्र रेखा-चित्र था, जो यहाँ-वहाँ अधूरा था और जिसमें रंग कहीं नहीं थे।

अब तक उसे इसकी अपूर्णता परखने का मौका नहीं आया था। उसे अपने भीतर कमी महसूस हो रही थी, जिसके ख़िलाफ़ वह विद्रोह करने के लिये बेचैन थी, लेकिन कमी कौन सी, यह वह न समझ पाई थी।

बात का सिलसिला चलते ही शैलजा ने अपने पति के बारे में कहना शुरू कर दिया था। उसकी जीवन-तंत्री के इस केन्द्र-तार को छुआ नहीं, कि उसका समस्त जीवन झंकृत हो उठता था। लेकिन कमला इस तार पर नहीं खेल सकती थी; उसके पास पति के विषय में कहने के लिये कुछ नहीं था; न तो सामग्री थी, न मन।

जब कि शैलजा का बजरा आनन्द के बोझ से बोझिल प्रवाह के साथ सोल्लास सरकता जा रहा था, कमला का छूँछा बेड़ा रेत में फँसा हुआ था।

शैलजा के पति विपिन गाज़ीपुर की अफ़ीम-फैक्टरी में नौकर थे। चक्रवर्ती की दो पुत्रियाँ थीं: बड़ी अपनी ससुराल में रहती थी; छोटी का विछोह उनके लिये असह्य था, इसलिये उसके लिये उन्होंने ऐसे लड़के को चुना, जिसे अपने प्रभाव से नौकरी दिलाकर उन्होंने घर-जमाई बना लिया।

सहसा बातचीत भंग करके शैलजा ने कहा, "थोड़ी देर के लिये मुझे क्षमा करना, मैं जल्दी ही आई," फिर उसने कुछ गर्व के साथ बताया, "वे स्नान करके चौके में आ गये हैं। उन्हें भोजन परोस आऊँ। फिर वे आफिस जायेंगे।"

सरल भाव से कमला ने पूछा, "उनका आना तुम कैसे जान गईं?"

"हँसी न करो," शैलजा ने जवाब दिया, "कोई कैसे जान जाता है? तुम्हीं क्या अपने पति की पगध्वनि सुनकर पहिचान नहीं जातीं?" उसने मुसकाकर, कमला की ठोड़ी ज़रा हिला दी। चाबी का गुच्छा जिस छोर में बँधा था, उसे कंधे पर डालकर उसी को लिये वह चली गई।

कमला ने पगध्वनि की भाषा की बोधगम्यता कभी न जानी थी। वह ध्यानमग्न खिड़की के बाहर देखने लगी।

बाहर सिही के पेड़ की फूली डालों पर भौंरा-शिकारियों का दल गूँज रहा था।

२६

गंगा के एकांत किनारे का एक मकान लेने के लिये रमेश बातचीत चला रहा था। सामान लाने और गाज़ीपुर में वकालत करने के लिये प्रारम्भिक इन्तज़ाम के सिलसिले में उसका कलकत्ता जाना ज़रूरी था। लेकिन वहाँ जाने में वह हिचकता था। एक पथ-विशेष की याद उसके

हृदय पर भार के समान थी। अभी भी वह छल के पंजे में घिरा था, लेकिन परिस्थिति ऐसी आ गई थी कि कमला को पत्नी-रूप में स्वीकार करने के खतरे को वह ज्यादा नहीं झेल सकता था। अवश्यम्भावी का सामना न कर सकने के कारण वह अपनी रवानगी टालता जाता था।

बँगले में जगह सीमित थी, इसलिये कमला जनाने में रहती थी, रमेश बाहर के कमरे में और एक दूसरे से मिलने का उन्हें शायद ही मौका मिलता था। शैलजा ने इस अटल विछोह के प्रति दुख प्रकट किया।

"इस बात को इतना बड़ा बनाने की क्या जरूरत ?" कमला ने पूछा, "कोई खतरे की बात है क्या ?"

शैलजा हँसी, "कैसी कठोर-दिल औरत हो ! ऐसे बहानों से मुझे भुलावा नहीं दे सकतीं। मैं तुम्हारे मन की बात खूब जानती हूँ।"

"अच्छा तो सच बताओ," कमला ने कहा, "अगर दो दिन विपिन बाबू तुम्हारे पास न आयें, तो... ... ..."

और शैलजा का शेखी मारना शुरू हो गया। बीते दिनों का आनन्द याद करके उसका मुख चमक उठा। जान पड़ता था कि शैलजा अपने संस्मरणों की याद में मग्न है, लेकिन बाहर फाटक से एक हलकी आवाज आई नहीं कि वह उठ खड़ी हुई। विपिन बाबू दफ्तर से लौटे थे। वह कह तो रही थी अपने बीते दिनों की कहानियाँ, लेकिन उसके कान उत्सुकता से बगीचे के फाटक पर लगे थे।

यह न समझना चाहिये कि विवाहित जीवन के प्रति शैलजा के दृष्टिकोण को कमला मात्र भरम समझती थी। वैसे ही झिलमिल खयाल उसके भी थे। शैलजा की बातें सुनकर वह अपने पिछले संवेदनों का अर्थ समझने लगी, लेकिन इन अनुभवों में न तो गहराई थी, न चिरन्तनता। इनकी कोई थिर छाप उसके हृदय पर नहीं थी। उसके और रमेश के बीच ऐसा कुछ नहीं था, जैसा शैलजा और विपिन के बीच। रमेश से क्षणिक

वियोग होने में उसे कोई आंतरिक पीड़ा नहीं हुई। उसे कल्पना भी न हुई कि बाहर बैठा हुआ रमेश उसकी झलक पाने का कोई बहाना सोच रहा होगा।

इतवार आया, तो शैलजा को बड़ी हैरानी हुई। वह न तो अपने नये दोस्त को सारे दिन अकेला छोड़ने तैयार थी, न हफ्ते के इसी एक दिन मिलने वाला विपिन की मुलाकात का आनन्द। और फिर अपने आनन्द को पूरी तौर से कैसे पाती, जब वहीं रहने वाले रमेश और कमला के बीच मिलन संभव नहीं था। काश वह इन लोगों का मिलन करा सकती।

उसने किसी से सलाह नहीं ली। और चक्रवर्ती जैसे आदमियों को भी सलाह की जरूरत नहीं पड़ती। उन्होंने किसी काम से सारे दिन के लिये शहर जाने की मंशा जाहिर की, और रमेश को जता दिया कि अब कोई लोग आने वाले नहीं हैं, इसलिये वे बाहर का ताला लगाते जायेंगे। यह उन्होंने अपनी पुत्री को सुनाकर कहा। वे जानते थे कि पुत्री उनके संकेत को समझ जायेगी।

"आओ बहन, तुम्हारे केश सुखा दूँ।" कमला नदी से नहाकर आई, तो शैलजा ने कहा।

"आज कोई खास जल्दी है क्या?"

"वह बाद में बताऊँगी। पहिले तुम्हारे बाल सँवार दूँ।" शैलजा ने उत्तर दिया। बाल बड़े उलझे थे। सुलझाते वक्त लगा। फिर साड़ी के प्रश्न पर देर तक दोनों में बहस होती रही। शैलजा जरा तड़क-भड़क वाला रंग चाहती थी और कमला उसकी मंशा नहीं समझ पाती थी। अंत में शैलजा का मन रखने के लिए उसने उसकी बात मान ली।

इसके पहिले कभी रमेश से मिलने में उसने हिचक नहीं दिखाई थी। उसे मालूम भी न था कि ऐसे मिलने में कोई अनरीत है। रमेश ने प्रारम्भ से ही संकोच के बंधन तोड़ दिये थे और कमला की कोई ऐसी सखी थी नहीं कि इस कृत्य के लिये उसकी निन्दा करती। फिर भी आज वह

शैलजा का आग्रह मानने में सकुचाने लगी। वह जानती थी कि शैलजा जिस अधिकार से पति से मिलती है, वह उससे वंचित है और मात्र प्रार्थी के रूप में वह रमेश से नहीं मिल सकती थी।

जब शैलजा ने देखा कि कमला अपने तईं जाने तैयार नहीं है, तो उसने समझा कि यह बड़ी मानिनी है। गर्व के सिवा इस इन्कारी में और क्या हो सकता है? इतने दिन से दूर दूर रह रहे हैं और रमेश ने कभी किसी बहाने से कमला के पास आने की चेष्टा नहीं की।

गृहिणी कमरा बंद करके सो रही थी। शैलजा ने विपिन के पास जाकर कहा, "रमेश को कमला का सँदेसा दे दो कि वह उसके कमरे में मिले। पिताजी एतराज न करेंगे और मा को पता न चलेगा।"

विपिन शान्त, गम्भीर तरुण था और इस तरह का दूतत्व उसे पसन्द न आया, लेकिन वह पत्नी को नाराज करके अपना इतवार खराब नहीं करना चाहता था।

रमेश बाहर के कमरे में कम्बल पर लेटा हुआ अखबार के पन्ने उलट रहा था कि विपिन कमरे में दाखिल हुआ। रमेश चौंककर उठ बैठा। "आइये बिपिन बाबू, आइये।" यद्यपि विपिन कोई मजेदार साथी न था, लेकिन वक्त काटने के लिये अच्छा ही था।

बैठने की बजाय खड़े खड़े सिर खुजलाते हुये उसने कहा, "वे भीतर बुला रही हैं?"

"कौन, कमला?"

"हाँ।"

रमेश चकित रह गया। उसने तय कर लिया था कि भविष्य में दिखावे के सिवा यथार्थ में भी कमला उसकी पत्नी रहेगी, लेकिन मौजूदा विछोह जैसे मृत्यु-दंड की तैयारी थी, और अब वह फिर अनिश्चय की हालत में पहुँच गया था। कमला के साहचर्य्य में मिलने वाले आनन्द की ललकपूर्ण

तसवीर उसने बनाई थीं, लेकिन इसे शुरू कौन करे? एकाएक इतने दिन के समय को फेंककर वह कमला के साथ खुले कैसे? इसीलिये उसने मकान खोजने में भी जल्दी नहीं दिखाई थी।

विपिन की खबर सुनकर उसने समझा कि कमला किसी व्यावहारिक बात पर सलाह लेना चाहती होगी, लेकिन ऐसा सोचने पर भी इस बुलाने से उसके शरीर में उमंग की लहर दौड़ गई। उसने अखबार अलग रख दिया और शरद की आलसपूर्ण दोपहरी में विपिन के पीछे हो लिया। उसे वह उत्तेजना हुई, जो प्रेमी को प्रेमिका की खोज में होती है।

विपिन ने एक दरवाजे की ओर संकेत कर दिया और वह चला गया।

कमला समझी थी कि शैलजा अपनी योजना त्यागकर पति से जा मिली है। वह बाहर के दरवाजे की देहली पर बैठी बगीचे में ताक रही थी। शैलजा ने अनजाने में उसकी तंत्री पर प्रेम साध दिया था। जैसे बाहर गरम हवा पत्तियों में अस्थिरता और मर्मर जगा जाती थी, वैसे ही रह-रह कर उसांस कमला की छाती में एक अव्यक्त बेचैनी भर जाती थी।

अचानक रमेश आया और कमला के पीछे खड़ा होकर जोर से बोला, "कमला!" कमला चौंक उठी, उसके सारे शरीर में खून दौड़ गया और वह, जो कभी उसके आगे शर्माती नहीं थी; सिर झुकाकर लजा गई।

इस विशेष पोशाक और नव-जाग्रत आत्मबोध में कमला रमेश को नई लगी और इस रूप में देखकर वह उसकी मोहकता का शिकार हो गया। उसके पास पहुँचकर एक घड़ी ठिठककर उसने पूछा, "तुमने मुझे बुलाया है, कमला?"

सुनकर कमला चौंक गई, "बिलकुल नहीं। मैं क्यों बुलाती?" उसने अनावश्यक रोष से कहा।

"लेकिन अगर बुलातीं ही, तो क्या अपराध हो जाता?"

"मैंने आपको नहीं बुलाया।" दुहरे जोर से कमला ने फिर कहा।

"अच्छी बात है, तो बिना बुलाये आया हूँ, इसीलिये मुझे अप-मानित करके लौटा तो न दोगी।"

"ये लोग सुनेंगे कि आप आये थे, तो नाराज होंगे। चले जाइये न। मैंने आपको नहीं बुलाया।"

"अच्छी बात है," उसका हाथ थामते हुए रमेश ने कहा "तो तुम्हीं मेरे कमरे में चलो। वहाँ और कोई नहीं है।"

काँपते हुए कमला ने हाथ छुड़ाया, और बगल के कमरे में भागकर किवाड़ बन्द कर लिये।

रमेश की समझ में अब आया कि क्या हुआ था। सारी योजना स्त्रियों की बनाई हुई थी। बड़ी उत्तेजना में वह बाहर के कमरे में लौट आया; लेटकर फिर अखबार पर निगाह दौड़ाने लगा।

लेकिन ध्यान उसका कहीं और था। एक के बाद एक विचार मन में आते थे, जैसे हवा से हाँके बादल।

शैलजा ने कमला के बंद दरवाजे पर दस्तक दी; लेकिन कोई उत्तर नहीं। किसी तरह हाथ डालकर उसने दरवाजा खोला और वह कमरे में आई।

चकित होकर उसने देखा कि कमला फर्श पर पड़ी हाथों में मुंह छिपाये रो रही है। शैलजा कारण न समझ पाई। उसने उसके बाजू में बैठकर धीमे से पूछा, "यह क्या है, बहिन? क्या हुआ? रो क्यों रही हो?"

"तुमने उन्हें मेरे पास क्यों भेजा? क्यों यह गलती की?"

न कमला स्वयं, और न अन्य कोई ही, उसकी इस अकस्मात् और रोषपूर्ण अभिव्यक्ति का कारण समझ सका। अनेक दिनों से छिपे हुए उसके इस दुख को कोई न जान सका।

वह हवा में अपना महल बना रही थी और अंतिम स्पर्श खत्म कर ही पाई थी कि रमेश आ गया। अगर जरा और हलके रमेश उसके

स्वप्नलोक में आता, तो सब ठीक होता। लेकिन रमेश के इस सोचने ने कि उसने उसे बुला भेजा है, कमला के स्वप्न-महल को ढहा दिया। उसे स्कूल में बन्दी रखने की रमेश की चेष्टा, जहाज पर रमेश की बेरुखी, ये और ऐसी और यादों की भीर उसके मन में भर गई। अनायास निकटता एक बात होती है, मात्र बुलावे पर आना एकदम भिन्न, गाजीपुर आने पर उसने यह बात खूब समझ ली थी।

लेकिन शैल न समझ पायेगी। रमेश और कमला के बीच दीवार का व्यवधान है, यह बात उसकी कल्पना के परे थी।

प्रयत्न से उसने कमला का सिर उठाकर अपनी गोद में रखा और कहा, "कहो तो बहिन, रमेश बाबू क्या कुछ भला-बुरा कह गये हैं? मेरे पति बुलाने गये थे, इसलिये शायद नाराज हो गये। कह देतीं कि यह सब शैल का किया है।"

"न, न इस बारे में उन्होंने कुछ नहीं कहा, लेकिन तुमने उन्हें क्यों बुलवाया?"

"गलती हुई। मुझे माफ़ कर दो," उसने पछतावे से कहा।

कमला उठकर बैठ गई और उसने अपने हाथ शैल के गले में डाल दिये।

"भागो तो अब," उसने कहा, "विपिन बाबू बेचैन हो रहे होंगे!"

इस बीच रमेश अखबार के पन्ने उलट रहा था। अखबार फेंककर वह उठा। "बहुत हुआ," उसने मन ही मन कहा, "कल मैं कलकत्ते जाकर सारा काम निपटा आऊँगा। कमला को पत्नी-रूप में स्वीकार करने में जितनी देर हो रही है, उतना ही अधिक दुर्वृत्त मैं अपने आपको लगता हूँ।"

● ३०

रमेश का पूरा विचार कलकत्ते जाकर अपना काम निपटाने का उसने तय किया था कि वह कोलूटोला किसी कारण से नहीं जायेगा।

वह अपने दर्जीपारा वाले मकान में पहुँचा। काम में रोज बड़ा थोड़ा वक्त लगता था। बाकी घन्टे बड़ी मुश्किल से कटते थे! अपने पिछले मुलाकातियों से वह मिल न सका। सड़क पर वे कहीं मिल न जाँय, इसके लिए वह बड़ा सतर्क रहता था।

उसे लगा कि पुराने डेरे में जाने से अनजाने उसमें तबदीली हो रही है। विस्तृत आसमान के नीचे गाँव की अनरुद्ध शांति में कमला का उभरता रूप उस पर जादू कर गया था। यहाँ शहर में उसकी सारी चमक धुल गई। दर्जीपाड़ा वाले मकान में रमेश ने बहुतेरा चाहा कि उसकी मुग्ध आँख के आगे कमला की छवि उतरती रहे, लेकिन कल्पना ने साथ न दिया। रमेश ने बार-बार निश्चय किया कि वह हेमनलिनी का विचार मन में कभी नहीं लायेगा, फिर भी उसकी स्पष्ट याद दिन-रात उसके सामने झूलती रहती। जितना ही वह भूलने का निश्चय करता, याद उतनी ही उसे आती।

अगर रमेश से सम्भव होता, तो वह अपना काम निपटाकर कब का लौट गया होता। लेकिन जैसे-जैसे देर होती गई, छोटी-छोटी बातें भी भयावनी दीखने लगीं। आखिर ये भी निपट गईं, और एक दिन उसने इलाहाबाद जाने का निश्चय कर लिया, जहाँ से वह गाजीपुरा लौटेगा। उसके अखंड संयम का, उसे लगा, कोई फायदा नहीं हुआ और और उसने सोचा कि कलकत्ता छोड़ने के पहले चुपके से एक बार कोलूटोला का चक्कर लगा आना बुरा नहीं है।

यह निश्चय करके वह हेमनलिनी को पत्र लिखने बैठा। उसने उसमें कमला का हाल विस्तार से लिखा और अंत में यह बात जाहिर की कि गाजीपुरा लौटकर उसकी इच्छा अभागिन कमला को पत्नी बनाने की है।

विदा का पत्र था, जिसमें उसने अंतिम विदाई के पहले अपनी प्रिया के सामने अपना हृदय अगोपन कर दिया था।

उसने पत्र लिफाफे में बन्द किया, लेकिन अन्दर-बाहर कहीं उसने सम्बोधित व्यक्ति का नाम नहीं लिखा। साँझ ढलते ही वह अमिट यादों पूर्ण काँपते अंगों और धड़कते हृदय से उस पथ में पहुँचा। दरवाजा और खिड़कियाँ बन्द थीं। घर में कोई न था और सब ओर अन्धकार था। उसने दरवाजे पर दस्तक दी। तीन-चार दस्तकों के बाद एक नौकर, सुक्खन साँकल खोलकर बाहर आया। सुक्खन ने बताया कि सब उत्तर की तरफ गये हैं। साथ नलिन बाबू हैं। पिछले दिनों ये नलिन बाबू अक्सर इस घर में आते जाते थे, हेमनलिनी की रमेश को कोई उम्मीद नहीं थी, फिर भी नलिन के प्रति उसे स्पष्ट ईर्षा हुई।

"मैं घड़ी भर के लिए ऊपर जाना चाहता हूँ," रमेश ने कहा।

धुँधुआरा लेम्प हाथ में लिये सुक्खन आगे हो लिया।

भूत की तरह रमेश एक कमरे से दूसरे कमरे में भागा-फिरा। कभी ठहरकर परिचित कुर्सी या सोफ़े पर बैठ जाता। सब कुछ पहले ही जैसा था, सिवा इस दस्तंदाज नलिन के रमेश के। हृदय में आहत गर्व उभर पड़ा।

अगले दिन वह इलाहाबाद जाने की बजाय सीधा गाजीपुरा रवाना हुआ।

❁ ३१

रमेश कलकत्ते में लगभग एक माह रहा। और कमला की उम्र की पूर्ण-यौवना लड़की के लिये एक माह लम्बा वक्त होता है। जैसे पौ फटकर अचानक भोर में बदल जाती है, वैसे ही उसका नारीत्व नींद से जागा नहीं कि पूर्ण चेतन हो उठा। शैलजा से मित्रता न होती, तो यह चेतना आते वक्त लगता; लेकिन प्यार की रोशनी और उष्णता उस पर बरसाकर शैलजा के व्यक्तित्व ने इस परिवर्तन के क्रम को द्रुत कर दिया था।

इसी बीच रमेश की ढील-ढाल और शैलजा के दबाव ने चाचा को मकान की खोज में प्रयत्न-शील किया, और उन्होंने इस तरुण दम्पति के लिये गंगा-किनारे एक छोटा सा बँगला ले लिया। मकान को रहने योग्य बनाने के लिये उन्होंने परिश्रम से जरूरी फ़र्नीचर जुटाया और व्यवस्था के के लिये काफी नौकरों का इन्तज़ाम किया गया।

रमेश लम्बी गैरहाजिरी के बाद गाज़ीपुर लौटा, तो कमला के पास अपना खुद का मकान था और दम्पति को अब चाचा के आतिथ्य की जरूरत नहीं थी।

मकान एक अर्से से बिना किरायेदार के था, और जमीन पर गैरनिगरानी के चिन्ह स्पष्ट थे। बगीचा उजाड़ था। कमरे बिना झाड़े-बुहारे और गंदे थे। लेकिन कमला को इस कारण कोई पछतावा न था। गृहणी का पद पाने के आनन्द में उसे हर चीज सुन्दर दीखती थी। हर कमरे का उचित उपयोग, बगीचे के हर कोने में क्या बोया जाय, यह तय करने में उसे वक्त नहीं लगा, और चाचा की मदद से उसने उजड़ी जमीन को बस्ती बनाने के प्रयत्न किये।

गृहकार्य में नारी का सौंदर्य विभिन्न और मोदक रूपों में निखर पड़ता है और कार्य-व्यस्त कमला को देखकर रमेश को पिंजर-मुक्त पंछी का उन्मुक्त उड़ना याद आ जाता था। आलोकित मुखमंडल और दोष-हीन कार्य-कुशलता ने आश्चर्य और आनन्द की मिली-जुली संवेदना उसमें जा कर दी। उसने पहिली बार कमला को गृहणी के रूप में देखा था। वह जैसे अपने राज्य में आ गई थी और उसके रूप में भव्यता जैसे झलक रही थी।

कमला को काम करते देख बातों-बातों में रमेश ने ऐसी धीमी आवाज़ में कहा कि नौकर न सुन सकें, "चाहे काम हो या कुछ और, मैं तुम्हारा साझेदार होना चाहता हूँ।"

कमला के गालों पर लाली दौड़ गई। जवाब देने की बजाय उसने जरा अलग सरककर उमेश को बुलाया।

"उमेश एक बाल्टा पानी और डाल। देख तो, यहाँ कितनी धूल है! और झाड़ू मुझे दे;" और वह जोर-जोर से झाड़ने लगी।

"क्यों रमेश बाबू," पीछे से आवाज आई, "भले काम में कौन सा नुकसान है। और कमला मैंने तुम्हारा कूरा-कर्कट साफ कर दिया है। अब बताओ तो भला, माली की क्यारियां कहाँ बनेगी?"

"जरा ठहरो चाचा, मैंने यहां का काम अभी पूरा नहीं किय;" और कमला फिर अपने काम में लग गई।

कमरा साफ़ हो गया, तो उसने आँचल कमर से खोला, सिर पर खींचा और वह चाचा से माली की क्यारियों के बारे में गम्भीर बातचीत करने लगी।

जल्दी दिन चला गया। लेकिन मकान कमला के मन-मुताबिक अभी साफ़ नहीं हुआ था, इसलिये इन्हें एक रात और चाचा के यहाँ काटनी पड़ी। रमेश ने सारे दिन साँझ अपने घर में काटने की आशा की थी। सोचा था, वह अपना हृदय खालेगा और कमला लेम्प की रोशनी में शर्मीली हँसी हँसते उसके बाजू में खड़ी रहेगी। लेकिन यहाँ तीन-चार दिन की और देरी समझकर वह वकालत के काम को अधिक स्थगित न कर सका और अगले दिन इलाहाबाद रवाना हो गया।

एक-दो दिन बाद चाचा भी अपनी बड़ी पुत्री बिन्दु से मिलने इलाहाबाद चले गये।

● ३२

उनके जाने के दिन सुबह कमला ने शैलजा को अपने नये घर में दावत दी। विपिन को खिला-पिलाकर आफिस के लिये विदा करके शैल

कमला के यहाँ आ गई। अभी दोपहरी ढल ही रही थी कि वह अथिर होने लगी। उसके पति लौटने वाले होंगे और उसे जाना चाहिये।

"अपनी प्रतिदिन की रीत से क्या एक दिन भी विलग नहीं हो सकतीं?" कमला ने पूछा। शैल ने मुसकाकर सिर हिला दिया और कमला की ठोड़ी छू दी। लौटते समय उसने कमला को अँधेरा होने के पहले आ जाने की ताकीद कर दी।

साँझ होने के पहले ही कमला ने अपना घर का काम खतम कर लिया। सिर और कँधों पर शाल ओढ़कर वह नीम-तले बैठकर नदी-पार के ऊँचे किनारे के पीछे डूबते सूरज को देखने लगी। मल्लाहों की कुछ नावें चमकते आकाश की पृष्ठभूमि पर सिलहुट, श्याम-चित्र सी दीख पड़ती थीं।

इसी समय उमेश बहाने से उससे बात करने आया। "बहुत समय से तुमने पान नहीं खाया, मा," उसने कहा, "उस मकान से बनवाकर मैं लेता आया हूँ," और उसने कागज में लिपटे हुए पान उसे दे दिये।

कमला ने चौंककर देखा कि झुलपुटी हो गई है और वह उठ खड़ी हुई।

"चक्रवर्ती चाचा ने तुम्हारे लिए गाड़ी भेजी है," उमेश ने कहा।

जाने के पहले देखदाख करने बँगले में दाखिल हुई। प्रधान कमरे में विलायती ढंग का अग्नि-स्थान था। उसी पर मिट्टी के तेल का लेम्प जल रहा था। पान 'मेंटलपीस' पर रखने के लिए कमला रुकी। वह आगे बढ़ने वाली ही थी कि उसकी निगाह कागज पर रमेश के हाथ से लिखे 'कमला' शब्द पर पड़ी।

"यह कागज तुझे कहाँ मिला?" उसने उमेश से पूछा।

"मालिक के कमरे में कोने में पड़ा था। फर्श झाड़ते वक्त मैंने उठा लिया था।"

कमला उसे उठाकर पढ़ने लगी। यह वही पत्र था, जिसमें रमेश ने हेमनलिनी को सब बातें स्पष्ट लिख दी थीं, और जिसे असावधानी-वश उसने फेंक दिया था।

उसने पत्र पूरा पढ़ा।

"तुम इस तरह चुप क्यों खड़ी हो, मा? रात हो रही है।"

कमरे में नितान्त नीरवता थी और कमला के भाव से उमेश भयभीत हो गया। "सुनती नहीं, मा, चलो, घर चलें, देर हो रही है।" उसने फिर कहा। वह बिना हिले-डुले तब तक खड़ी रही, जब तक चाचा से एक नौकर ने आकर नहीं कहा कि गाड़ी देर से खड़ी है।

कमला आई, तो शैलजा ने पूछा कि क्या तबियत खराब है, सिर में दर्द है?

"न, अच्छी तो हूँ, चाचा क्या घर नहीं हैं?"

"मा ने बहिन को देखने इलाहाबाद भेजा है। उनकी तबियत कुछ दिन से ठीक नहीं है।"

"कब लौटेंगे?"

"कहते हैं, कम से कम एक हफ्ता लग जाय। बँगले में बड़ा काम करती रही हो! बड़ी थकी हुई जान पड़ती हो। जल्दी खाकर सो जाओ।"

ऐसे समय में कमला की मुक्ति इसी में थी कि शैल को अपने विश्वास में ले। लेकिन यह उसे असंभव जान पड़ा। कम से कम शैल को वह यह न बता सकती थी कि जिस आदमी को वह अब तक उसका पति समझे थी, वह उसका पति एकदम नहीं था।

कमला अपने कमरे में बन्द हो गई और लेम्प की रोशनी में बार-बार रमेश का पत्र पढ़ती रही।

पत्र में सम्बोधित व्यक्ति का नाम स्थान नहीं लिखा था, लेकिन लिखी बातों से यह स्पष्ट था कि व्यक्ति औरत है, जिसकी रमेश के साथ मँगनी हो गई थी और जिसे कमला के साथ अपने संबंधों के कारण उसे छोड़ना पड़ा था। साथ ही रमेश ने यह बात नहीं छिपाई थी कि इस स्त्री को वह सारे दिल से प्यार करता है और केवल असहाय कमला की खातिर, जिसका भाग्य ऐसे आश्चर्यकारी ढंग से उसके भाग्य के साथ मिल गया है, उसे इस औरत से अपना संबंध विच्छेद करना पड़ा है।

रेत के किनारे की पहली मुलाकात से लेकर गाजीपुर-आगमन तक की रमेश के साथ अपनी सारी जिंदगी याद करके कमला ने समस्त रहस्यों का धुँधलापन स्पष्ट समझ लिया। रमेश सारे वक्त जानता था कि कमला उसकी पत्नी नहीं और उसे अलग करने की भरसक कोशिश करता रहा था, लेकिन कमला शान्त भाव से उसे पति माने रही थी और निस्संकोच होकर उसके साथ जीवन-सहचरी के रूप में बस जाने के इंतजाम करती रही थी।

कटार की तरह शर्म उसके हृदय को बेध गई। जैसे जैसे घटनाओं की याद उसे आती गई, वह धरती में समा जाने की सोचने लगी। सारे जीवन भर अपमान उससे चिपटा रहेगा, उसके दंश से बचने का कोई तरीका न था।

वह दरवाजा खोलकर घर के पीछे बगीचे में पहुँची। ऊपर शीत, श्याम आसमान काले संगमर्मर की तरह शीतलता बिखेरता फैला हुआ था—न एक बादल का टुकड़ा, न कोई धुँधलापन; तारे साफ़ चमक रहे थे। सामने के आम के नन्हें पौधे अँधेरा बढ़ा रहे थे। इस यातना से बेचने का उसे कोई जरिया नजर न आया। वह ठंडी दूब पर बैठ गई और मूरत की तरह बिना आँसू बहाये, आवाज किये बैठी रही।

वक्त का उसे अंदाज न रहा. लेकिन समय-जाते तीखी ठंड उसके हृदय तक चुभ गई और उसका अँग अँग काँपने लगा। अन्त में जब

ढलते हुये चाँद ने निश्चल खजूरों के पीछे से अँधेरे को भेदा, तो कमला धीरे-धीरे उठी और अपने कमरे में चली गई।

सुबह आँख खुली, तो शैल उसके बिस्तर के पास खड़ी थी। देर तक सोने की लज्जा लिये वह उठ बैठी।

"उठो मत बहिन," शैल बोली, "थोड़ा और सो लो। मैं जानती हूँ, तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है। तुम थकी हुई जान पड़ती हो और तुम्हारी आँखों-तले कालापन आ गया है। कहो तो, क्या बात है?" और उसने कमला के बगल में बैठकर अपनी बाहें उसके गले में डाल दी।

कमला की छाती धड़कने लगी, और वह आँसुओं को अधिक न रोक सकी। शैल के कंधों में मुँह छिपाकर वह खूब रोई और शैल उसे अपने दृढ़ आलिंगन में बाँधे रही। उसने कमला को ढाढस बँधाने की चेष्टा नहीं थी।

अंत में शैल की बाँहों से छुड़ाकर, आँसू पोंछकर कमला खिलखिला-कर हँस पड़ी।

शैल समझी कि रमेश बाबू को इलाहाबाद गये तीन दिन हो गये हैं और उन्होंने पत्र नहीं दिया है, इसीलिये कमला रमेश से नाराज है। उसने कमला से पूछा कि सच तो कहो अब रमेश बाबू को कभी क्षमा न करोगी?

"सच ही तो कहती हूँ," कमला बोली।

उसी दिन सबेरे शैल ने पिता को पत्र लिखकर रमेश के पत्र के लिये कमला की बेचैनी जाहिर की। चक्रवर्ती ने रमेश की खोज की खोज की और बेटी के पत्र का कुछ हिस्सा उसे पढ़ सुनाया। यह सच नहीं था कि कमला रमेश के मन से बहुत कुछ उतर गई थी, लेकिन वह जितना ही उसका ध्यान करता था, उतनी ही उलझन

बढ़ती थी। यह अरुचि नहीं, अनिश्चय था कि वह इलाहाबाद में बिलम रहा था; और सारी उलझनों के ऊपर यह पत्र। पत्र के भाव से स्पष्ट था कि कमला को उसका वियोग अखर रहा है, यद्यपि हिचकिचाहट के कारण वह स्वयं नहीं लिख पा रही। रमेश दा रास्तों के संगम पर पहुँच गया था और उसने अपना कर्तव्य स्थिर कर लिया। अपना आनन्द ही नहीं, कमला का प्यार भी उसके निश्चय में सहायक होगा। भाग्य ने केवल जीवन ही नहीं जोड़ दिये थे, लेकिन उस सुन्दर रेतीले किनारे पर हृदय भी गूँधे थे।

उसने कमला को पत्र लिखा। "प्रियतमे—सम्बोधन को सहज रीत न समझना, कमला! अगर मैं तुम्हें दुनिया में सबसे अधिक प्यार न करता होता, तो प्रियतमा कहकर कभी सम्बोधन न करता।

... ...इस बात को क्या बढ़ाऊँ? मेरे पिछले बहुत से बर्तावों से तुम्हें व्यथा हुई होगी। अगर इसके लिये तुम मुझे अपराधी समझती हो, तो इसे मैं अस्वीकार नहीं कर सकता। इतना ही मैं दुहरा सकता हूँ कि तुम मेरी प्रियतमा हो, और दुनिया में किसी और के लिये मुझे इतना प्यार नहीं है... विश्वास करो कि तुम्हारे सिवा मुझे किसी का ध्यान नहीं और तुम्हीं सचमुच में मेरी प्रियतमा हो। अगर तुम्हें इस बात का विश्वास हो जाय, तो शंकायें, सवाल सदा के लिये शान्त हो जाँय।... ... ...

"प्यारी कमला, कब मैं तुम्हारे हृदय का दरवाजा पा लूँगा!

"यह सब धीरे धीरे होगा। जल्दी में काम बिगड़ सकता है। इस पत्र के पहुँचने के दूसरे दिन मैं गाजीपुर पहुँचूँगा। तुम घर ही पर रहना। हम बहुत दिन बेघर के रहे। अब ऐसी जिंदगी नहीं सह सकता। मैं अब अंत में साथ साथ अपनी देहली लाँघने का सपना देखता हूँ और अपनी हृदय की रानी को गृह-स्वामिनी के रूप में देखने की आशा करता करता हूँ। यह क्षण दूसरा 'मंगल दर्शन' होगा।

"नदी के एकांत रेतीले किनारे पर उस चाँदनी रात में अपनी पहली मुलाकात तुम्हें याद होगी—खुले आसमान के तले, जब समारोह में न पिता-माता थे, न रिश्तेदार ?

"वह अब मुझे सपना जान पड़ती है। इसलिये मुझे चार दीवारों से घिरे नितांत यथार्थ के बीच साफ़, शान्त प्रात:प्रकाश में एक और "मंगल दर्शन, की तीव्र लालसा है.........प्रियतमे, मैं तुम्हारे हृदय-द्वार पर याचक हूँ। मुझे खाली न लौटाना! तुम्हारा अनन्य

—रमेश!"

● ३३

"अपने बँगले नहीं जा रही हो ?" दूसरे दिन कमला की उदासी दूर करने के ख़्याल से शैल ने पूछा।

"वहाँ अब कुछ करना बाकी नहीं है।"

"सब कमरे ठीक-ठीक हैं ?"

"हाँ, मैंने साफ़ कर लिये हैं।" शैल गई और जल्दी लौटकर आई। "मैं तुम्हें कुछ दूँ, तो तुम मुझे क्या दोगी ?"

"मेरे पास देने लायक कुछ नहीं है, दीदी," कमला ने कहा।

"कुछ भी नहीं ?"

"नहीं"

शैल ने उसका कपोल सहला दिया। "तो यह बात है। जो कुछ तुम्हारे पास है, तुमने रखने के लिए किसी को दे दिया है। इसे क्या कहते हैं ?" और उसने आंचल में से एक पत्र निकाला।

कमला लिफाफे पर रमेश की लिखावट देखकर पीली पड़ गई और उसने मुँह फेर लिया।

"फिर अब" शैल ने कहा, "अपने गर्व का बहुत प्रदर्शन कर चुकीं। अब उसे छोड़ो। मैं जानती हूँ, इसे छीनने के लिए तुम व्याकुल हो। लेकिन जब तक तुम माँगोगी नहीं, मैं नहीं दूँगी। देखती हूँ, कब तक तुम नहीं माँगती।"

तभी साबुन के डब्बे को धागे से बाँधकर खींचती हुई, "मौसी, मौसी" कहती उमी कमरे में आई।

कमला ने चूमते हुए उसे उठा लिया। अपने खिलौने से बिछुड़कर उमी रोई, लेकिन कमला उसे लेकर बच्चों जैसी बात करते हुए अपने कमरे में चली गईं।

शैल अचरज करते हुए पीछे पीछे पहुँची। "मैं हारी। इस बार तुम जीत गईं। मैं इसे अधिक नही रख सकती, लो कमला, यह लो। मैं फिर कभी ऐसी बात तुमसे न कहूँगी।"

वह चिट्ठी बिस्तर पर फेंककर, उमी को कमला की गोद से छुड़ाकर चली गई।

कमला ने लिफाफा उलट-फेरकर देखा, फिर खोला और पढ़ना शुरू किया। लेकिन शुरू की पंक्तियों पर से निगाह फेरी ही थी कि क्रोध से लाल होकर पत्र उसने दूर फेंक दिया। बाद में अपनी पहली उत्तेजना पर काबू करके उसने फिर पत्र उठाया और पूरा पढ़ डाला।

वह पूरा पत्र समझी या नहीं, यह कहना कठिन है, लेकिन उसे लगा कि वह कोई गन्दी चीज लिये है, और उसने एक बार फिर पत्र फेंक दिया। उसमें उसे ऐसे मनुष्य के साथ घर बसाने का प्रस्ताव था, जो उसका पति न था। सब जानते हुए भी रमेश ने उसे अपमानित करने का वक्त निकाल लिया। अगर गाज़ीपुरा आने के बाद उसका हृदय रमेश के प्रति द्रवित हुआ था, तो यह समझकर कि वह वह मात्र "रमेश" नहीं था, वह उसका पति था। रमेश ने मनमानी धारणायें बना ली, और यह

समाज-च्युत के प्रति उसकी सहृदयता थी कि उसे ऐसा प्रेम पत्र लिखने बैठा। घर उसे दानव के समान खाने दौड़ता था और वह उससे बचने की व्यर्थ चेष्टा कर रही थी। दो दिन पहले उसने रमेश के इस हिंसक रूप की कल्पना भी न की थी।

वह विचारमग्न थी कि उमेश ने दरवाजे पर आकर खाँसा। जब कमला का ध्यान न टूटा, तो उसने धीरे से कहा—मा। कमला दरवाजे तक आई। उमेश रहस देखने जाना चाहता था। स्नेहसिक्त कमला ने उसे जरूरी आज्ञा के साथ पाँच रुपये और पहिनने के कपड़े दे दिये। कमला के चरणों में भद्दे तरीके से सिर झुकाकर उसने चल दिया।

उसके जाने पर कमला ने आँख पर आ गया एक आँसू पोंछा और वह खिड़की के पास खड़ी हो गई।

तभी शैल ने आकर पत्र पढ़ने माँगा। कमला ने फर्श पर इशारा कर दिया। पत्र पढ़कर शैल ने कहा, "क्या तुम्हारे पति उपन्यास लिखते हैं, बहिन ?"

भन्नाई तो पहिले सी थी, 'पति' शब्द सुनकर कमला और भन्ना उठी।

उमी तब तक पेंसिल उठाकर हर किसी चीज़ पर लकीरें बनाने में व्यस्त थी, और अपनी ही भाषा में जोर जोर से पढ़ रही थी। शैल ने उसकी साहित्य-साधना में बाधा डाली, तो वह जोर से रोने लगी। कमला ने यह कहते हुये उसे उठा लिया, कि चल मेरे साथ, मैं एक सुन्दर चीज़ दूँगी; अपने कमरे में ले गई। जब उसने चीज़ माँगी, तो कमला ने बाक्स में से अपने सोने के कंगन निकालकर दे दिये। उमी के लिये ये बहुत सुन्दर खिलौने थे। उसका मन मोह गया। मौसी ने उन्हें उसकी कलाइयों पर पहिना दिये, तो वह नाचती मा को दिखाने चली गई।

शैल ने कंगन एकदम उतार कर कमला को दे दिये। "क्या कर रही हो, कमला," उसने चिल्लाकर कहा. "क्यों तुमने उन्हें इसको पहिना दिया ?"

"मैंने तो उमी को उपहार दिया है," पास आकर कमला ने कहा। उमी रोकर आसमान सिर पर उठाये ले रही थी।

"पागल हो गई हो क्या ?" शैल बोली।

"देखूँ तो, दीदी ! कंगन कैसे मुझे लौटाती हो'। उन्हें तुड़ाकर उमी के लिये हार बनवा देना।"

"कसम खाती हूँ, तुमसे बढ़कर और कोई नहीं देखा।" और शैल ने कमला के गले में बाँहें डाल दीं।

"दीदी, आज तुमसे विदा माँग लूँ," वह कहती गई, "मैं यहाँ बड़ी सुखी रही, जीवन में इतनी सुखी कभी न थी।" और उसकी आँखों में आँसुओं का पूर आ गया।

शैल भी अपने आँसू न रोक पाई। जब कमला विदा लेकर जाने लगी, तो शैल ने कहा, "मैं दोपहर में आऊँगी," लेकिन कमला ने हाँ, ना कुछ भी न कहा।

लौटने पर उमेश उसे बँगले में मिला। उसे रहस देखने भेजने के पहिले कमला ने उससे कहा, "देख, अगर चाचा आयें, तो……….।" वह सोच न सकी कि वाक्य कैसे पूरा करे। उमेश हक्का-बक्का उसकी तरफ देखता रहा। जरा ठहर कर उसने कहा, "याद रख, चाचा बड़े भले आदमी हैं। अगर तुझे कुछ जरूरत पड़े, तो मेरा नाम लेकर माँग लेना। वे कभी इंकार न करेंगे।"

'अच्छा' कहकर उमेश चला गया। वह बात का मतलब समझ नहीं सका।

दोपहर में बिसन ने पूछा," "मालकिन कहाँ जा रही हैं ?"

"गंगा नहाने ।"

"मैं साथ चलूँ ?"

'न, तुम ठहरकर घर देखो ?" उसने अकारण बिसन को एक रुपया दे दिया और वह नदी की तरफ चल दी ।

❀ ३४

यहाँ अन्नदा बाबू एक दिन साँझ को हेमनलिनी से बात कर रहे थे। हेम मा के रूप-रंग-व्यवहार और उन दिनों के कुटुम्ब-जीवन के बारे में प्रश्नों की बौछार किये जा रही थी और वे भरसक जवाब दिये जा रहे थे । वे बातें करते गये और दिन ढल चला । धीरे धीरे झुलपुटी हो गई और ओस की नन्हीं बूँदें आँसु की तरह गिरने लगीं ।

अचानक सीढ़ियों पर जोगेन्द्र के पैरों की आवाज आई । इनकी बातचीत बन्द हो गई और ये उठ खड़े हुये ।

"आजकल हेम ने छत पर अपना बैठकखाना बना लिया है ।" जोगेन्द्र ने प्रश्न सूचक निगाह से दोनों के चेहरों की तरफ देखा ।

"निश्चिंतता से बातें करने के लिये मैंने ही यह जगह चुनी है ।" अन्नदा बाबू ने शीघ्र ही उत्तर दिया । वे चाहते थे कि अपनी बच्ची को जोगेन्द्र के हृदय-हीन व्यंगों से बचाये रखें । लेकिन उनकी बात का यह अर्थ भी हुआ कि वे हेम को बातों में लगाने के लिये ऊपर खींच लाये हैं।

"क्या चाय की टेबल पर बात नहीं हो सकती ?" जोगेन्द्र ने जोर से कहा । आप हेम को उसकी मूर्खता में उत्साहित कर रहे हैं, पिता जी ! मुझे इस तरह घर से निकाल देने पर ही तुले हैं क्या ?"

आत्मा में चोट खाये हुये हेमनलिनी ने पूछा, "आपने चा नहीं पी क्या, पिता जी ?"

जो:—तुम यहाँ छत के कोने में बैठी रहोगी, तो चा के प्याले कवि की कल्पना की तरह अपने आप भरकर यहाँ नहीं चले आयेंगे !"

हेमनलिनी की उलझन सँभालने के लिये अन्नदा बाबू बोल उठे, "मैंने आज चा न पीने का निश्चय किया है।"

जो:—क्यों पिताजी, आप पूरे साधू बने जा रहे हैं ? लेकिन मेरा क्या होगा। मैं हवा पर नहीं जी सकता।"

अ:—साधूपन की बात नहीं है। कल रात नींद आई थी, इसलिये सोचा, थोड़ा परहेज़ बरत लूँ।

हेमनलिनी को विश्वास नहीं हुआ कि रोज के अमल से परहेज़ करके पिता जी उन्निद्र रोग का इलाज करना चाहते हैं।

"चलिये पिताजी, थोड़ी सी चा पी लीजिये," उसने कहा और उन्निद्रता का भय छोड़कर अन्नदा बाबू उसके साथ हो लिये।

जब ये कमरे में दाखिल हुये, तो अक्षय को मौजूद देखकर उन्हें बुरा लगा। अभी तो हेम जरा प्रसन्न नजर आई थी, अक्षय को देखकर उसका मन खराब हो जायगा। लेकिन अब परिस्थिति से बचने का कोई उपाय नहीं था। हेमनलिनी उसके पीछे कमरे में आ गई थी। अक्षय खड़ा हो गया। "अच्छा जोगेन, अब मैं चलूँ।" लेकिन सब आश्चर्य-चकित रह गये, जब हेमनलिनी ने कहा, "क्या बात है, अक्षय बाबू ! ऐसी जल्दी है ? पहिले चा तो पीजिये।"

अक्षय अपनी जगह पर बैठ गया "दो कप पी चुका हूँ। आपका आग्रह हो, तो दो और पी लूँ।"

हेमनलिनी मुसकराई। "यह पहला मौका होगा कि हमें आग्रह करने की जरूरत पड़े"।

अक्षय ने कहा, "अच्छी चीज दी जाय, तो उससे इन्कार न करने की सद्बुद्धि मुझमें काफ़ी है।"

"इसी तरह अगर तुम स्वयं अपने आपको अर्पित करो, तो कोई भली चीज तुमसे इन्कार न करे—इससे भला क्या आशीर्वाद पुजारी देगा ?" जोगेन्द्र ने कहा।

लम्बे विराम के बाद फिर अन्नदाबाबू की चा की टेबल पर बातचीत का ठाठ जमा। हेमनलिनी कभी खुलकर न हँसी थी; आज उसकी खिलखिलाहट का स्वर बड़ा ऊँचा था।

आज की बैठक और देर तक चलती, अगर केश प्रसाधन के लिये हेमनलिनी चली न जाती। तब अक्षय को भी एक जरूरी काम की याद आ गई और वह चला गया।

जोगेन्द्र और उसके पिताजी अकेले रह गये, तो जोगेन्द्र बोला—"पिताजी हमें देर नहीं करनी चाहिये। हेम की शादी अब हो ही जाना चाहिये।"

अन्नदाबाबू विस्मय से जोगेन्द्र की तरफ ताकने लगे।

जोगेन्द्र कहता गया:—"रमेश के साथ शादी टूट जाने की बात को लेकर कितनी चर्चा हो रही है। मैं अकेले किस किस को जवाब दूँ। अगर मैं सच बात बता सकता, तो रुकता नहीं। लेकिन हेम का ख्याल करके सब बात नहीं कह सकता। मेरी तो राय है कि अब देर न करना चाहिये।

अ०—"लेकिन शादी कर किसके साथ दूँ, जोगेन ?"

जो०—"एक ही आदमी है। जो कुछ हो गया है और जैसी कुछ चर्चा हो रही है उसके बाद किसी अन्य आदमी का मिलना मुश्किल होगा। एक बेचारा अक्षय है, जिसे कोई उज्र न होगो।"

अ०—पागल तो नहीं हो गये, जोगेन। क्या तुम समझते हो, हेमनलिनी अक्षय से शादी करने तैयार होगी।"

जो०—अगर आप बीच में न बोलें, तो उसे मैं किसी तरह मना लूँगा।"

"नहीं जोगेन नहीं," पिता ने कहा, "मैं तुम्हें हेम पर दबाव नहीं डालने दूँगा। इससे वह घबरा जायेगी, दुखी होगी। कुछ समय के लिये उसे अकेला छोड़ दो। बेचारी को बड़ा बुरा अनुभव हुआ है, और अभी एकदम उसे शादी न करना चाहिये।"

जो०—"मैं दबाव डालने नहीं जा रहा। मैं समझदारी और नर्मियत से काम लूँगा। क्या आप समझते है कि झगड़े के बिना मैं उससे बात ही नहीं कर सकता?"

जोगेन्द्र ने किसी के लिए ठहरना सीखा नहीं था। हेमनलिनी केश प्रसाधन करके कमरे के बाहर निकली कि उसने उसे बुलाया, "हेम, मै तुम से कुछ बात कहना चाहता हूँ।"

सुनकर हेम की नसों में खून तेज हो गया। वह उसके पीछे-पीछे बैठकखाने में गई और उसके बात शुरू करने की राह देखने लगी।

"तुमने देखा है पिताजी की हालत है?" जोगेन ने उससे पूछा।

हेमनलिनी ने कहा कुछ नहीं, लेकिन उसके चेहरे पर चिंता का भाव स्पष्ट हो आया।

जो०—मेरी बात पर गौर करो। अगर हम कुछ न करेंगे, तो उन्हें कोई खतरनाक बीमारी हो जायेगी।

उसकी बात की रुख से स्पष्ट था कि पिताजी के लिये वह हेमनलिनी को जिम्मेदार ठहरा रहा है। हेमनलिनी ने निगाह नीची कर ली और साड़ी की किनारी से खेलने लगी।

"जो हो गया, सो हो गया।" जोगेन्द्र कहता गया, "पिछली बातों के लिये जितना तुम पछतावा करोगी, उतना ही हमारे लिये अपमान-जनक है। अगर तुम पिताजी के मन को शांति देना चाहती हो, तो इस दुर्घटना की सब बातें भूल जाओ।" और वह बहिन के मुँह की तरफ देखता हुआ जवाब का इन्तजार करने लगा।

उसने घबराकर कहा, "तुम डरो मत, मैं इस बात की चर्चा से पिताजी को परेशान न करूँगी।"

जो०—"मैं यह जानता हूँ, लेकिन लोगों का मुँह बन्द करने के लिये इतना काफी नहीं है।"

"तुम्हीं बताओ कि मैं क्या करूँ" ? हेमनलिनी ने पूछा।

जो०—"इस सारी चर्चा को बन्द करने का एक ही तरीका है।"

हेमनलिनी जोगेन्द्र के मन की बात जानती थी, इसलिये उसने एकदम उत्तर दिया, "क्या हवा बदलने के लिये पिताजी को उत्तर की तरफ ले जाना ठीक न होगा ? हम तीन-चार माह बाहर रहें, तब तक चर्चायें भी ख़त्म हो जायेंगी।"

"इससे तो पूरा आराम नहीं होगा। तुम्हें पिताजी को विश्वास दिलाना होगा कि तुम्हारा मन शान्त है। इसके बिना उनका घाव बढ़ेगा ही और फिर वे अच्छे न हो पायेंगे।"

हेमनलिनी की आँखों में बरबस आँसू उमड़ आये और उसने जल्दी पोंछ डाले।

"तब मुझे क्या करना होगा ?" उसने पूछा।

"मैं जानता हूँ कि यह बात तुम्हें अच्छी नहीं लगेगी, लेकिन तुम्हें एकदम शादी कर लेना चाहिये… …किसी भले आदमी के साथ शादी करके यह नाटकीयता समाप्त करो।"… … …"तुम मुझे इस तरह ताने क्यों देते हो ?" हेमनलिनी दंशन से क्षुब्ध होकर बोली,… … …"मुझसे ऐसी बात न करो। अगर पिताजी किसी से शादी करने की आज्ञा देते हैं, तो मैं वैसा करूँगी। अगर उनकी आज्ञा न मानूँ, तो नाटकीयता की बात कहना।"

जोगेन्द्र जरा कोमल पड़ा, "हेम बहिन, मुझसे नाराज न होओ। तुम जानती हो कि जब मुझे खीझ होती है, तो मैं कुछ भी कह जाता हूँ…" और वह पिता की खोज में चला गया।

अन्नदा अपने कमरे में बैठे थे। जोगेन्द्र ने पहुँचकर कहा, "पिताजी, हेम शादी के लिये राजी हो गई है। मैंने कोई दबाव नहीं डाला। वह अक्षय से भी शादी करने तैयार हो जायेगी, अगर आप उससे स्पष्ट कह दें।"

"मुझे उससे कहना होगा?"

"जी हाँ, अपने आप आकर तो वह आपसे कहेगी नहीं। अगर आप न कहना चाहें, तो मुझसे कहिये, मैं कह दूँगा।"

"न, न," अन्नदा एकदम बोल उठे, "जो कहना है, वह मैं ही कह दूँगा। लेकिन ऐसी जल्दी क्या है। मैं तो समझता हूँ, हम थोड़े दिन और ठहर जाँय।"

जोगेन्द्र को जब जल्दी हो, तब उससे पार नहीं पाया जा सकता। वह फिर मानता नहीं है, और अन्नदा को भी यह आंतरिक खतरा था।

"अच्छी बात है, मैं कहूँगा।" मामले को टालने के इरादे से उन्होंने कहा।

"अभी से अच्छा और क्या वक्त होगा," जोगेन्द्र ने कहा "वह बैठी आपका इंतजार कर रही है। आज ही तय कर लीजिये।"

'अच्छा तुम यहीं ठहरो, मैं अकेले मिलकर आता हूँ।"

अन्नदा बाबू ने बैठकखाने में अँधेरा पाया। हेम कुर्सी से उठी और रुँआसे कँठ से बोली, "लेम्प बुझ गया पिताजी, नौकर से जलाने कह दूँ?" लेकिन अन्नदा जानते थे कि लेम्प अचानक नहीं बुझ गया है।

"रहने दो, बेटी, रोशनी की जरूरत न पड़ेगी।" और वे टटोल कर बेटी के करीब कुर्सी पर बैठ गये।

"आप अपनी पूरी फिकर नहीं रखते, पिताजी," हेमनलिनी ने कहा।

"और उसका कारण है बेटी! मेरी सेहत तो एकदम ठीक है, इसलिये फिकर की जरूरत नहीं है, फिकर तो तुम्हें अपनी करनी चाहिये।"

"आप लोग सभी एक ही बात कहते हैं, पिताजी ?" हेमनलिनी ने खीझकर कहा, "मैं तो खुद जिम्मेदार व्यक्ति हूँ। आप क्यों कहते हैं कि मुझे अपने स्वास्थ्य की फ़िकर नहीं है ? अगर आप मुझे कोई दवा देना चाहते हैं, तो वैसा कहिये। मैंने कभी आपको नाहीं नहीं की है, क्यों न, पिताजी ?" और सिसकियाँ दुहरी रफ्तार से आ गई।

"न, न, बेटी !" बेटी को धीरज बँधाते हुये अन्नदा बाबू ने कहा, "मुझे तो तुमसे कोई चीज करने कहने की जरूरत भी नहीं पड़ी।"

'कमरा अँधेरा है, पिताजी ! मैं रोशनी ले आऊँ।" और वह बगल के कमरे से हाथ का लेम्प ले आई और उसने पिताजी को अखबार पढ़कर सुनाने का प्रस्ताव किया। अन्नदा बाबू उठ खड़े हुए, "अच्छी बात है, बेटी ! एक घड़ी ठहरो, मैं अभी आया। तब तुम पढ़कर सुनाना।" वे जोगेन्द्र के पास वापिस आये। वे कहना चाहते थे "मैं आज नहीं कह पाया, अच्छा हो कि हम कल तक ठहर जाँय," लेकिन जैसे ही जोगेन्द्र ने पूछा, "क्या हुआ पिताजी ? शादी के बारे में आपने बात की ?" तो उन्होंने जल्दी से जवाब दिया। "हाँ, मैंने उससे कह दिया है।" उन्हें डर था कि जोगेन्द्र हेमनलिनी पर फिर वार करेगा।

"उसने हाँ तो कह ही दिया होगा ?"

"हाँ, एक तरह से।"

"तो मैं जाकर अक्षय से कहता हूँ ?"

"न, न अभी अक्षय से कुछ न कहो।" पिता ने हड़बड़ाकर कहा, "अगर तुम जल्दबाजी दिखाओगे, तो सारा काम बिगाड़ लोगे, जोगेन ! अभी किसी को बताने की जरूरत नहीं है। उत्तर से लौट आने तक अँतिम तैयारियाँ स्थगित कर रखना अच्छा होगा।"

जोगेन बिना कोई जवाब दिये चला गया। उसने कँधे पर शाल डाला और वह सीधा अक्षय के घर गया। अक्षय किताब पढ़ रहा था।

जोगेन ने किताब अलग फेंककर कहा. "अभी इसकी फिक्र छोड़ो। अभी, तुम्हारी शादी का मुहूर्त तय करना है।"

"हे भगवान!" अजय ने कहा।

● ३५

अगली सुबह हेमनलिनी जल्दी उठकर पिता की खोज में निकली। अन्नदा बाबू अपने कमरे में थे; कुर्सी खिड़की के करीब खींचकर वे विचारमग्न थे।

कमरे में एक पलँग और एक अलमारी थी। दीवार पर बड़े फ्रेम में हेमनलिनी की स्वर्गीय मा की धुँधली पड़ गई तसवीर थी, उसके सामने की दीवाल पर उनका कसीदे का काम था। अलमारी में उनके कंगन और उनकी अन्य चीजें थीं, जो उनकी मृत्यु के बाद से जैसी की तैसी रखी हैं।

हेमनलिनी पिता के पीछे खड़ी हो गई और सफेद बाल निकालने के बहाने से उनका सिर सहलाने लगी।

"पिताजी," वह बोली, "अगर हम बड़े तड़के चाय पी लें, तो फिर आपके कमरे में बैठेंगे। आप पुरानी बातें सुनायेंगे ही। आप नहीं जानते. मुझे इन बातों में कितना आनन्द आता है।"

अन्नदा बाबू बेटी के मन का भाव इतना समझने लगे थे, कि वे उसकी जल्दी चा पी लेने की इच्छा का कारण समझ गये: अभी अजय चा की टेबल पर आ जायगा, और जल्दी चा पीकर पिता के कमरे में जाने से हेमनलिनी उससे बच सकेगी।

अपनी पुत्री की घबराहट से उन्हें बड़ा कष्ट हुआ। वह घबराये हरिन की भाँति डर गई थी।

नीचे आकर उन्होंने जल्दी चा बनवाई। आज सदा की तरह धीरे-धीरे चा पीने, घूँट घूँट का आनन्द लेते हुये अपनी पुत्री से बात करने की बजाय वे अनावश्यक जल्दी से पीने लगे।

"क्या बाहर जाने की जल्दी है, पिता जी?" हेमनलिनी ने आश्चर्य से पूछा।

"अरे नहीं, ठंड रहती है, तो मैं चा एकदम पी लेना चाहता हूँ। गरम चा से पसीना आ जाता है, जो बहुत फायदेमंद है।" लेकिन पसीना आने के पहले जोगेन्द्र अक्षय को लिये कमरे में दाखिल हुआ।

अक्षय ने सिंगार पर खास ध्यान दिया था; वह चाँदी की मूँठ की छड़ी का प्रदर्शन कर रहा था, और घड़ी की सुन्दर चेन उसके वक्ष पर शोभा पा रही थी। बांये हाथ में वह ब्राउन पेपर में बँधी एक किताब लिये था। रोज की जगह बैठने की बजाय उसने हेमनलिनी के बगल में कुर्सी खींच ली और नखरे से हँसते हुये कहा, "आपकी घड़ी आज तेज है।"

हेमनलिनी ने उस तरफ न देखा, न उत्तर देने की कृपा की।

"हेम बेटी! चलो हम ऊपर चलकर गरम कपड़े धूप में डाल दें।" अन्नदा बाबू बोले।

"ऐसी जल्दी की क्या जरूरत है, पिताजी," जोगेन्द्र ने एतराज किया। "धूप भाग न जायगी। हेम, अक्षय बाबू को चा नहीं दोगी? मुझे भी चाहिये, लेकिन मेहमानों को पहले।"

अक्षय हँसा, और हेमनलिनी की ओर मुड़कर बोला, "आत्मत्याग देखा?"

अक्षय की ठठोली पर कोई ध्यान दिये बिना हेमनलिनी ने दो कप चा भरी, एक जोगेन्द्र को दे दी, दूसरी अक्षय की तरफ सरका दी और पिता की तरफ देखने लगी।

"जल्दी चलो, नहीं तो छत गरम हो जायगी।" अन्नदा बाबू ने कहा, "चलो तो, हेम, हम ऊपर चलें।"

"छोड़िये कपड़ों को"। जोगेन्द्र बोला, "अक्षय ... ..."

अन्नदा बाबू का क्रोध भड़क उठा। "तुम दोनों झगड़ा करना चाहते हो। बहुत दिन चुपचाप तुम्हारी बातें सहीं, अब नहीं सह सकता। हेम बेटी! अब से हम ऊपर ही चाय पिया करेंगे?" उन्होंने हेम को बाहर ले जाने की कोशिश की। लेकिन हेम ने शान्ति से कहा। "अभी न जाइए, पिताजी, अभी आपने चा खत्म नहीं की है। अक्षय बाबू, मैं पूछूँ, इस बन्द पार्सल में क्या है?" "पूछिये ही नहीं, स्वयं देख लीजिये;" और अक्षय ने पैकेट हेम को दे दिया।

हेम ने कागज़ अलग किया, तो मरक्को की जिल्द में 'टेनीसन' की प्रति निकली। वह जैसे आघात खाकर चौंक उठी और पीली पड़ गई। एक बार पहले उसने ठीक यही उपहार पाया था। जोगेन्द्र मुसकराया, "अभी सब कुछ तो देखा नहीं है।" और उसने किताब का पहला पृष्ठ खोलकर बहिन को दिखाया। लिखा था, "अक्षय द्वारा सम्मान के साथ श्रीमती हेमनलिनी को।"

गरम आलू की तरफ हेमनलिनी ने किताब गिरा दी, और उस पर से निगाह फेर ली। "आइये पिताजी," उसने कहा, और पिता-पुत्री कमरे के बाहर हो गये।

जोगेन्द्र की आँखें अंगार हो गईं। "मैं इस घर में एक घड़ी नहीं रह सकता।" उसने कहा, "मैं चला जाऊँगा और कहीं स्कूल-मास्टरी कर लूँगा।"

"तुम बात का व्यर्थ बुरा मान रहे हो," अक्षय बोला, "मैंने तुमसे कहा था और अब मुझे दृढ़ निश्चय हो गया है कि हेमनलिनी मेरी फिक्र

नहीं करेगी। यह बात तुम अपने दिमाग से निकाल दो। अगर हम सही काम करना चाहते हैं, तो उसे रमेश को याद न आने दो।"

"यह तो ठीक है, लेकिन हम करें क्या ?"

"जल्दी में काम बिगड़ेगा। लड़के-लड़की को कुछ दिन मिलकर परिचित हो जाने दो, फिर अवसर देखकर प्रस्ताव कर देना।"

जो०—ठीक कहा। अच्छा अब लड़का बताओ।

अक्षय—तुम उसे जानते नहीं हो, लेकिन तुमने उसे देखा है : डाक्टर नलिनाक्ष।

जो०—नलिनाक्ष ?

अ०—अचरज हुआ! ब्राह्म समाज में होने के कारण समाज में उनके बारे में चर्चा जरूर है, लेकिन वह कोई बात नहीं है ; सिर्फ इसी कारण तुम इतने योग्य वर को हाथ से न जाने दोगे, यह मुझे निश्चय है।

जो:—इतना योग्य जन मिल जाय, तो मैं कभी हाथ से न जाने दूँ। लेकिन तुम समझते हो कि नलिनाक्ष राजी हो जायगा ?

अ:—आज ही प्रस्ताव करो, तो कह नहीं सकता, लेकिन समय बड़ा साधक है। मेरी बात सुनो, जोगेन। नलिनाक्ष का आज लेक्चर है। तुम हेमनलिनी को सुनने ले जाओ। वह अच्छा वक्ता है और औरतों को आकर्षित करने के लिये वक्तृत्व जैसी और चीज नहीं।

जो:—लेकिन नलिनाक्ष के बारे में तुम मुझे बताओ। मैं और जानना चाहूँगा।

अ०—अच्छी बात है जोगेन। लेकिन अगर कोई बात तुम्हें बुरी लगे, तो उसका ख्याल न करना।

अक्षय ने बताया कि नलिनाक्ष के पिता राजवल्लभ फरीदपुरे के पास एक छोटे जमींदार थे। तीस वर्ष की उम्र में वे ब्राह्म समाजी हो गये। उनकी पत्नी ने अपने पति का धर्म स्वीकार न किया और वे अपनी धार्मिक

शुद्धता अनुसरण रखे रहीं। स्वभावतः राजवल्लभ का पत्नी का आचरण बुरा लगा। पुत्र नलिनाच की धार्मिक वृत्ति और वाग्शक्ति ने उसे छोटी उम्र में ही ब्राह्म समाज में प्रवेश दिला दिया। वह प्रान्तीय डाक्टरी सर्विस में था, और सरकारी नौकरों की 'खानाबदोश' जिंदगी बसर करता था। जहाँ भी वह गया, अपने शुद्ध आचरण, कार्य-कुशलता और अत्यंत धार्मिकता की छाप छोड़ आया।

और फिर जैसे गाज सी गिरी। लोगों की शिकायत के बावजूद राजवल्लभ ने हिंदू रीति के अनुसार एक विधवा से शादी कर ली।

नलिनाच की मा ने पति से अलग बनारस में रहने का निश्चय किया। नलिनाच तब रंगपुर में डाक्टरी करता था। डाक्टरी छोड़कर उसने मा के साथ पवित्र नगरी में रहना तय किया। पिता के विश्वासघात का कलंक उसे चुभ सा गया था और मा का सुख ही उसका प्रमुख उद्देश्य हो गया। तदनुसार वह मा के साथ बनारस चला गया।

नलिनाच के शादी न करने के इरादे को उसकी मा ने समझा। अपने पिछले समाज को छोड़कर उसने बड़ा भारी त्याग किया था, लेकिन वह ब्राह्म समाज के बाहर शादी नहीं करना चाहता था। मा ने जब मनचाही जगह शादी करने की आज्ञा दे दी, तो नलिनाच बोला, "मा, तुम्हारे मन की बहू तुम्हारे लिये लाऊँगा, जो कभी तुम्हें व्यथा का मौका न देगी।" [illegible] वह वधू की खोज में बंगाल चला गया।

बाद में क्या हुआ, इसके बारे में अलग-अलग कहानियाँ [illegible] एक यह है कि किसी गाँव में चुपचाप जाकर उसने एक अनाथ लड़[illegible] शादी कर ली, जो एकदम मर गई। लेकिन और लोग इस पर [illegible] [illegible]गट करते हैं। स्वयं अचय का विश्वास था कि वह शादी करने वाला [illegible] कि अखीरी घड़ी उसका इरादा बदल गया।

जो भी हो, अचय का मत था कि नलिनाच की मा इ[illegible] पर कोई एतराज न करेगी। सच तो यह है कि उन्हें मनचाही ब[illegible] सुख

होगा। हेमनलिनी जैसी सुन्दर बहू खोजने से नहीं मिलेगी। थोड़ी सी ही मुलाकात में नलिनाच को विश्वास हो जायगा कि हेम में समुचित गुण हैं।

अक्षय की सलाह थी कि जल्दी से जल्दी इन तरुणों में परिचय हो जाये।

३६

अक्षय के जाते ही जोगेन्द्र ऊपर गया। अन्नदा बाबू और हेमनलिनी बैठकखाने में बातचीत में लगे थे। पुत्र को देखकर अन्नदा बाबू जरा कुछ शर्मा गये। उन्हें चा के समय के अपने बर्ताव के लिये पछतावा हुआ, इसलिए उन्होंने पुत्र के प्रति अधिक सहृदयता प्रकट की।

"आओ जोगेन्द्र, बैठो बेटा।"

"देखिये पिताजी," जोगेन्द्र ने कहना शुरू किया "आप और हेम-नलिनी कभी घर से निकलते ही नहीं हैं।"

"हम लोग तो सदा से घर-भीतर रहनेवाले लोग हैं। फिर हेम के निकलने के लिये कुछ बहाना भी हो;" अन्नदा ने उत्तर दिया।

"देखिए, पिताजी," हेमनलिनी बोल उठी, "मुझ पर दोष न लादिये। आप जानते हैं, मैं आपके साथ कहीं भी जाने के लिये सदा प्रस्तुत हूँ।"

यद्यपि यह प्रयत्न हेम के लिये प्रतिकूल था, लेकिन वह यह समझाने के लिये बेचैन थी कि अपने आंतरिक दुख के ही कारण वह घर में कैदी की तरह नहीं रहना चाहती। वह उन्हें विश्वास दिलाना चाहती थी कि बाहर जा भी हो रहा है, उसमें उसकी रुचि है।

"अच्छा पिताजी," जोगेन्द्र ने कहा, "कल एक सभा है। आप हेम को उसमें ले जाइये।"

आम भीड़-भाड़ के प्रति हेमनलिनी की अरुचि अन्नदा बाबू जानते थे और इसलिये उत्तर देने के बदले उन्होंने पुत्री की तरफ उसकी इच्छा जानने के लिये देखा।

"सभा;" हेमनलिनी ने दिखाऊ उत्साह से कहा. "कौन बोलेगा ?"

जो०—डाक्टर नलिनाच।

अ०—नलिनाच ?

जो०—बड़ा सुन्दर वक्ता है और उसकी जीवन-कहानी बड़ी असाधारण है। इतना आत्म-निषेध, इतनी लगन: हजारों में एक आदमी है।" और अभी दो घंटे पहले जोगेन्द्र एक अफवाह के सिवा नलिनाच के बारे में कुछ नहीं जानता था।

"अच्छा पिताजी," हेमनलिनी ने फुर्ती से कहा, "हमें इस आदर्श व्यक्ति को जरूर सुनना चाहिये।"

अन्नदा बाबू को हेमनलिनी की उत्सुकता पर जरा विश्वास नहीं हुआ, लेकिन इससे उन्हें बड़ी शांति मिली। हेमनलिनी ऐसे ही बाहर लोगों में आती-जाती रहे। समाज मन की बीमारियों का सबसे अच्छा इलाज है।"

नलिनाच के बारे में पूछने पर बताते हुए जोगेन्द्र ने कहा, "अपनी मा के सुख के लिए नलिनाच अपनी स्वाभाविक इच्छायें दबाकर बनारस रहने चला गया और लोगों ने उसके बारे में चर्चायें करना शुरू कर दिया। स्वयं मैं उसके आचरण की प्रशंसा करता हूँ। तुम क्या कहती हो, हेम ?"

"मैं तुम्हारी बात मानती हूँ। हेमनलिनी ने कहा।

"मैं जानता था कि हेम मेरी बात मानेगी।" जोगेन्द्र ने कहा। "मैं जानता हूँ कि अगर जरूरत आ गई, तो वह भी इतना आत्म-निषेध अपने पिता को सुखी करने के लिये करेगा।"

अन्नदा ने प्यार की नजर से पुत्री को देखा। हेम का चेहरा लाल पड़ गया और उसने घबराहट में आँखें नीची कर लीं।

३७

दोपहर में देर से अन्नदाबाबू और हेमनलिनी सभा से लौटे।

नलिनाक्ष के शब्दों ने हेमनलिनी पर बड़ा प्रभाव डाला। तारों-जड़े आसमान के नीचे छत पर चुपचाप ध्यान-मग्न बैठे हुए उसका हृदय भग हुआ था और अब आसमान और धरती उसे शून्य नहीं जान पड़े।

सभा से लौटते हुए जोगेन्द्र ने अक्षय से कहा था, "आदमी तो बिल-कुल योग्य है। लेकिन कैसा योगी है! उसकी आधी बात तो मेरी समझ में ही नहीं आई।"

अक्षय ने प्रत्युत्तर दिया : "हेमनलिनी रमेश के बारे में भ्रमित है और उसका इलाज करने के लिये एक योगी ही चाहिए; हम तुम जैसे आदमी नहीं कर सकते। भाषण के समय तुमने हेमनलिनी की ओर देखा नहीं! ...हम और तुम बोलते होते, तो वह इतनी मुग्ध न होती, लेकिन सन्यासियों का बाना औरतों के लिए बड़ा आकर्षण होता है... ...अब अगर तुम किसी बहाने नलिनाक्ष को यहाँ बुला सको और हेमनलिनी से उसे परिचित करा दो, तो हेम को कोई शुबह न होगा। फिर श्रद्धा से परिणय तक का रास्ता सरल होगा।"

जो०—बात यह है कि नलिनाक्ष थोड़ा रहस्यात्मक आदमी है। ऐसे आदमी से व्यवहार रखने मुझे घबराहट होती है। ऐसा न हो कि आसमान से गिरे, तो खजूर में अटके।

अ०—देखो भाई, अगर ऐसा कुछ हो जाय, तो दोष तुम्हारा। आजकल तो तुम छाया से डरते हो। रमेश के बारे में तुम लोग शुरू से ही अन्धे थे। स्वयं मुझे रमेश कभी भला नहीं लगा। लेकिन मैं मुँह नहीं खोल सकता था। तुम लोगों को एतबार ही न होता कि मुझ जैसा अयोग्य, निकम्मा आदमी ईर्षा के सिवा किसी और भावना से इतने बड़े पुरुष की आलोचना करेगा।

जो०—देखो अक्षय, अगर हजार बार भी कहो, तो हमें विश्वास न होगा कि हम लोगों में से तुम्हीं ने पहिले रमेश को पहचाना। सच यही है कि तुमने उसके प्रति ऐसी धारणा बना ली थी कि उसका कोई काम तुम्हारी आँखों में भला नहीं लगता था। इसलिये अपनी तेज बुद्धि का रोब मुझपर मत जताओ। देखो, आगे कुछ करना-धरना होगा, तो वह तुम्हीं को करना होगा। मुझसे किसी मदद की आशा न करना। मुझे नलिनाक्ष की परवाह नहीं है, और यहाँ बात खत्म।

जोगेन्द्र और अक्षय दोनों अन्नदा के कमरे में पहुँचे कि हेमनलिनी दूसरे दरवाजे से निकल गई।

अक्षय मुसकराया और अन्नदा के बगल में बैठकर चाय पीते हुए बोला, "नलिनाक्ष की बात हृदय तक पहुँचती है, क्योंकि वह हृदय से कहता है।"

अन्नदा बाबू बोले, "योग्यता!" अक्षय ने कहा, "उससे भी कुछ ज्यादा, योगी जैसा है।"

जोगेन्द्र भी षड्यंत्र में शामिल था, लेकिन वह यह कहे बिना न रह सका। "योगियों की बातें तो न करो। भगवान हमें इन योगियों से बचाये।" यही जोगेन्द्र कल नलिनाक्ष के आचरण की प्रशंसा में आसमान गुँजा रहा था और उसके आलोचकों को बुरा-भला कह रहा था।

"देखो जोगेन्द्र, तुम्हें ऐसा न कहना चाहिये। नलिनाक्ष का भाषण नवीनतापूर्ण और उत्साह-वर्धक था। पाखंडी व्यक्ति ऐसी सच्ची बात न कह पाता। मुझे तो लगा कि स्वयं जाकर उसे धन्यवाद दूँ।"

"मुझे एक ही आशंका है कि उसका स्वास्थ्य ठीक नहीं है। वह स्वास्थ्य की फिकर ही नहीं करता। सारा दिन प्रार्थना, अध्ययन-आराधन में बिताता है।"

"यह तो बुरी बात है," अन्नदा बाबू ने कहा. "उसे समझाना चाहिये।"

"देखिये," अक्षय ने कहा, "मैं उसे लाकर आपसे मिलाऊँगा। अच्छा हो, आप ही उससे गम्भीर चर्चा करें। परीक्षा के दिनों में जो भाजी का रस आपने मुझे बताया था, वह उसके लिये मुफ़ीद होगा। आप नलिनाक्ष की जिम्मेदारी खुद लेकर... ... ..."

जोगेन्द्र उठ खड़ा हुआ। "अक्षय तुम मुझे पागल बना होगे। बिलकुल फिजूल बात कर रहे हो। मैं यह बरदाश्त नहीं कर सकता।" और वह कमरे से बाहर निकल गया।

● ३८

हेमनलिनी के मामले में दुर्योग आने के पहिले अन्नदा बाबू स्वस्थ रहते थे, फिर भी हिन्दुस्तानी-विलायती दवाओं के नुस्खे गले उतारने की उनकी आदत थी। लेकिन अब दवा से उन्हें अरुचि हो गई थी। उन्हें अपनी बीमारी का सहज भरम था, तब तो वे उस बारे में बड़ी चर्चा करते करते थे। लेकिन अब, जब उनकी सेहत सचमुच खराब थी, वे उस प्रसंग को कभी उठाते भी न थे।

खूब थककर वे अपनी कुर्सी पर सो रहे थे कि हेमनलिनी सीढ़ियों पर जोगेन्द्र के पैरों की आवाज सुनकर भाई को चेताने दरवाजे तक गई। भाई के साथ नलिनाक्ष को देखकर उसे बड़ी घबराहट हुई। वह दूसरे कमरे में भाग जाने को ही थी कि जोगेन्द्र ने उसे रोका।

"हेम," उसने कहा "मैं नलिनाक्ष बाबू को लाया हूँ। आओ, मैं तुम्हारा परिचय करा दूँ।"

हेम घबराई हुई खड़ी रही, और नलिनाक्ष ने जाकर बिना सिर उठाये उसे नमन किया।

इस बीच अन्नदा बाबू ने जागकर बेटी को बुलाया। हेम ने कमरे में आकर धीमे से कहा, "नलिनाथ बाबू!"

जोगेन्द्र मेहमान को लेकर कमरे में आया और अन्नदा बाबू स्वागत करने आगे बढ़े। "हमारा सौभाग्य है," उन्होंने कहा, "कि आप हमारे यहाँ आये। हेम बेटी, भागो नहीं, बैठो। नलिनाथ बाबू, यह मेरी बेटी है। उस दिन हम-दोनों आपका भाषण सुनने गये थे और वह हमें खूब अच्छा लगा था। एक प्रार्थना है, नलिनाथ बाबू, जब-कभी आ जाया करें, तो हम पर बड़ा अनुग्रह हो। हम लोग कभी बाहर नहीं जाते और आप हमें सदा इस कमरे में पायँगे।"

कुछ कहने के पहिले नलिनाथ ने हेमनलिनी के शर्मीले चहरे पर एक निगाह डाली।

"भाषण में बड़े-बड़े शब्द कहे थे, इसलिये आप मुझे गम्भीर प्रकृति का आदमी न समझ लीजिये।" बात के सिलसिले में उसने कहा, 'हमारा परिचय अधिक होगा, तब आप जानेंगे कि मैं किसी चीज को बुरा नहीं समझता। दुनिया में मैं दूसरों पर आश्रित होकर आया। मेरे तन-मन का विकास बड़े परिश्रम और बहुत से लोगों की प्यार-भरा मदद से ही हुआ है, फिर मैं किसे बुरा समझूँ।"

अन्नदा बाबू—बहुत सच है। ऐसा ही कुछ अपने भाषण में कहा था।

जोगेन्द्र:—मैं चल दिया, मुझे काम है।

नलिनाथ:—मैं भी चलूँ। कुछ दूर साथ रहेगा।

जोगेन्द्र:—न, आप न जाइये। मेरे जाने का ख्याल न कीजिये। मैं एक ही जगह देर तक नहीं बैठ सकता।

जोगेन्द्र के जाने के बाद अन्नदा बाबू से नलिनाथ के मकान का पता पूछा।

"इस समय किसी खास जगह नहीं रह रहा। मेरे बहुत से परिचित हैं, जा मुझे खींच ले जाते हैं। लेकिन आदमी को थाड़ी शाँति और आराम चाहिये, इसलिये जोगेन बाबू ने बगल वाले मकान में मेरे लिये कमरे ले लिये हैं। आपकी यह गली सचमुच बड़ी शाँत है।"

अन्नदा बाबू को इस समाचार से बड़ा संतोष हुआ, लेकिन अगर वे अपनी पुत्री की तरफ देखते, ता उसके चहरे पर व्यथा की क्षणिक मरोड़ पाते: बगल वाला मकान वही था, जिसमें रमेश रहता था।

इसी समय चा पीने के लिये सब लोग नीचे आये।

"हेम बेटी, नलिनाक्ष बाबू को चा दो;" अन्नदा बाबू ने कहा।

लेकिन मेहमान ने पहले से ही नम्रतापूर्वक इन्कार कर दिया।

अन्नदा: यह क्या है, नलिनाक्ष बाबू? सचमुच चा न लोगे, एक केक ही सही।

नलिनाक्ष: मुझे क्षमा ही कर दीजिये।

अन्नदा: आप डाक्टर हैं, इसलिये आपको मैं क्या नियम बताऊँ? लेकिन व्यक्तिगत रूप से मैं चा के बहाने भोजन के तीन चार घंटे बाद गरम पानी पीना पाचन के लिये मुफ़ीद पाता हूँ। अगर आपकी आदत न हो, तो आपके लिये हलकी बनवा दूँ।

संशक मन से नलिनाक्ष ने हेमनलिनी की ओर देखा, और उसे अपनी असमर्थता के कारण का अनुमान लगाते पाया। उसके चेहरे पर आँख जमाये हुये उसने कहा, "शायद आप मुझे गलत समझ रहे हैं। मुझे आपके रीति, रिवाज से नफ़रत नहीं है। कभी मैं भी नियमपूर्वक चा पीता था, आज उसकी खुशबू में आनन्द लेता हूँ। लेकिन शायद आप नहीं जानते कि धार्मिक पवित्रता के विषय में मेरी मा बहुत दृढ़ है और मेरे लिये दुनिया में वही सब कुछ हैं। मैं आजकल ऐसा कोई काम नहीं करना चाहता, जिससे हमारी आत्मीयता में फर्क आ जाय।"

नलिनाच की बातचीत से पहले-पहल हेमनलिनी को आघात सा हुआ था। उसे लगा कि वह अपना सच्चा स्वरूप प्रकाशित न करके बातचीत की बाढ़ में उसे छिपा लेना चाहता है। वह यह न समझ सकी कि नलिन अपरिचितों से बिना संकोच के बात नहीं कर सकता; और पहिली मुलाकात में वह अपने संकोचवश ऐसे निश्चय पूर्ण ढंग से बात करता था, जो उसके स्वभाव के लिये विदेशी था। अपने सच्चे विचार प्रकट करने में भी अनजाने में अमधुरता का स्वर वह व्यक्त करता था। यही कारण था कि जोगेन्द्र चला गया। लेकिन जब नलिनाच ने मा का प्रसंग छेड़ा, तो हेम श्रद्धा के साथ उसकी ओर देखने लगी। नलिनाच का अनन्य भक्ति से प्रकाशित मुख देखकर उसका हृदय द्रवित हो गया। उसे लगा कि वह मा के विषय में प्रश्न करे, लेकिन संकोच ने ऐसा न करने दिया।

"ठीक कहते हो," नलिनाच की बात खतम होते ही अन्नदा बाबू बोल उठे, "अगर मैं यह जानता, तो कभी आपको चा के लिये न कहता। माफ करना।"

"अगर चा नहीं पीता, तो क्या आपके निमंत्रण के वंचित रह जाऊँ?" मुसकाकर नलिनाच ने जवाब दिया।

मेहमान चले गये, तो हेमनलिनी पिता को ऊपर ले गई और जब तक वे सो नहीं गये, पढ़कर सुनाती रही। ऐसी थकान आजकल वृद्ध महाशय का स्वभाव बन गई थी।

● ३६

अन्नदा बाबू और उनकी पुत्री के साथ नलिनाच की पहिचान शीघ्र आत्मीयता में विकसित हो गई। हेमनलिनी जान गई कि दर्शन विषय के सिवा साधारण बातचीत भी वे मजे में कर लेते थे और सजीव से सजीव बहस में अपना व्यक्तित्व बनाये रखते थे।

एक दिन जब अन्नदा बाबू और हेमनलिनी नलिनाच से बातें कर रहे थे, जोगेन्द्र धड़धड़ाता हुआ आया और पिता से बोला, "मैं कहता हूँ पिताजी, समाज के लोग हमें नलिनाच बाबू का शिष्य कहने लगे हैं।"

"इसमें नाराज़ होने की कौन सी बात है?" अन्नदा बाबू मुसकराकर बोले, "मैं तो ऐसे समाज में शामिल होना शर्म की बात समझूँगा, जिसमें सभी गुरु हों, शिष्य कोई नहीं।"

नलिनाच: मैं आपके साथ हूँ। चलिये हम सब शिष्य हो जाँय, पर्य्यटन पर निकलें और जहाँ कुछ सीखने मिल जाय, वहीं ठहर जाँय।

लेकिन जोगेन्द्र संतुष्ट न हुआ। "यह सब ठीक है," उसने कहा, "लेकिन यह गम्भीर बात है। नलिन बाबू, आपके दोस्त भी बिना शिष्य कहलाये आपसे नहीं मिल सकते। आप अपनी ये आदतें छोड़ दीजिए।"

नलिनाच: कौन सी आदतें?

जोगेन्द्र: मुझे बताया गया है कि आप प्राणायाम करते हो, ऊगते सूरज को ताकते हो, और बिना हजार तरह के पूजा-पाठ किये भोजन नहीं करते। नतीजा यह होता है कि आप समाज में मेल नहीं खाते, मानों म्यान के बाहर रहते हैं।

जोगेन्द्र की अशिष्ट अभिव्यक्ति से खीभकर हेमनलिनी ने आँखें नीची कर लीं, लेकिन नलिनाच ने मात्र मुसका दिया।

"ठीक है, जोगेन बाबू," उन्होंने उत्तर दिया। "यह मैं मानता हूँ कि जो आदमी समाज से मेल नहीं खाता, वह दोषी है, लेकिन न तो तलवार को ही, न मनुष्य को ही सदा म्यान में रहना चाहिए। मुझे अचरज है कि जनता की निगाह के परे अपने कमरे की गोपनता में मैं जो करता हूँ, उसे देखने और उस पर विवाद करने का अवसर लोग कैसे पा जाते हैं।"

जोगेन्द्र: नलिन बाबू, जब लोग अपनी मानी हुई गोपनता में अनरीत करते हैं, तो लोग उस पर ध्यान देते हैं। साधारण रीत का व्यवहार करो, तो

क्यों लोग नज़र उठायें ? यही हेम ने छत पर से तुम्हारा धरम-करम देखा और पिताजी से कहा ।

हेमनलिनी के चेहरे से उसका रोष साफ़ दीख पड़ा । वह कुछ कहने वाली ही थी कि नलिनाच उसकी तरफ मुड़े, "इसमें लज्जा की कौन सी बात है ? दो आँखें पाईं, तो देखने का कौन अपराध ? इस अपराध के तो हम सभी दोषी हैं !'

अन्नदा: इससे भी अधिक यह है कि हेम ने आपके रोजाना पूजन को नापसन्द नहीं किया। उसने सकल श्रद्धा के साथ सहज ही आपके आराधन के विषय में प्रश्न किये थे ।

जोगेन्द्र: बात यह है कि मैं आपका दृष्टिकोण नहीं समझता । मेरा यही कहना है कि जब तक सदा से चले आने वाले नियमों का पालन किया जाये, आलोचना का मौका नहीं आता । जहाँ यह सीमा पार की, कि भीड़ इकट्ठी हो जाती है, चाहे वह उपहास करे, या प्रशंसा । लेकिन भीड़ के बीच जीवन बेसहारे रहता है । मैं स्वयं और लोगों की राह चलने में ही संतुष्ट हूँ ।

नलिनाच: चले कहाँ जोगेन बाबू ! छत पर से घसीटकर मुझे फर्श पर ले आये और आप भागे जा रहे हो । यह न होगा ।

जोगेन्द्र: आज इतना ही काफ़ी । मैं घूमने जा रहा हूँ ।

भाई के जाने के बाद हेमनलिनी नीची निगाह किये टेबल-क्लाथ की किनारी पर अँगुलिया चलाती सहमी सी बैठी रही । करीब से देखते तो उसकी आँखों में आँसु झलक आये थे । नलिनाच के साथ के रोजाना ताल्लुक ने उसके आचरणों की गलतियाँ को स्पष्ट कर दिया था, और वह नलिनाच के बताये रास्ते पर चलने के लिये ललक-पूर्ण प्रयत्न करती थी । अपनी उलझन के समय जब वह किसी बाहरी या आन्तरिक सहारे की व्यर्थ खोज कर रही थी, तब नलिनाच ने उसे दुनिया का एक नया रूप दिखाया था और अब समय के साथ भक्तिन की भाँति वह अपने को कड़े आत्म-नियमन के अनुकूल नियंत्रण में अधिकाधिक रखना चाहती थी ।

फिर दुख तो ऐसी भावना है जो मन की एक ही स्थिति के रूप में रह ही नहीं पाती। किसी कठिन कार्य के करने में वह निवारण पाती है! अब तक हेमनलिनी किसी श्रम में अपने को न लगा सकी थी और सामने आने के संकोच में उसने दुख को हृदय के गुह्यतम कोने में सँभाल रखा था। नलिनाक्ष के चरण-चिन्हों पर चलने में और संयम और निरामिषाहार में उसे बड़ी शांति मिली। अपने निश्चय के मुताबिक उसने अपने कमरे की सारी सजावट अलग कर दी। हर रोज वह फर्श को पानी से अपने हाथ से साफ़ करती। एक फूलदानी भर उसने अपने पास रहने दी। नहाकर श्वेत-वस्त्रावृता वह फर्श पर बैठ जाती। खुली खिड़की में से किरनें और हवा कमरे को निर्बाध आलोकित करतीं और वह प्रातः की रोशनी और हवा में भीग जाती।

अन्नदा बाबू पुत्री की धार्मिक तन्मयता तक नहीं पहुँच पाये थे, लेकिन पुत्री के इस स्वयं-योजित नियमन से उसके मुख पर आ गई कांति देख देखकर वे प्रसन्न होते। जब नलिनाक्ष आये, तो तीनों हेमनलिनी के कमरे में फर्श पर बैठकर बात करने लगे।

जोगेन्द्र ने जोर से इसका विरोध किया। एक वक्त था, जब हेमनलिनी भाई के व्यंग से आहत हो जाती थी, लेकिन अब अन्नदा बाबू भले ही जोगेन्द्र के व्यंगों के आघात से चुप हो जायँ, हेमनलिनी नलिनाक्ष की अनुगामिनी होकर मात्र मधुर मुसकरा देती। उसे अब निश्चित, अडिग और सम्पूर्ण सहारा मिल गया था और इस पर लज्जित होना तो महान कमज़ोरी होती!

एक दिन सुबह स्नान-ध्यान करके वह अपने कमरे के एकान्त में खुली खिड़की के सामने ध्यान-मग्न बैठी थी कि अन्नदा बाबू नलिनाक्ष के साथ आये। उसने दोनों को साष्टांग दंडवत किया। नलिनाक्ष बड़े संकोच में पड़ गये।

अन्नदा बाबू ने उन्हें समझाया, "घबराओ नहीं, नलिनाक्ष बाबू," उन्होंने कहा, "वह ठीक ही कर रही है।"

नलिनाक्ष इतने सुबह कभी नहीं आये थे, इसलिये हेमनलिनी उत्सुकता पूर्वक ताकने लगी। उन्होंने बताया: मा बनारस में बीमार है, दिन भर वह यात्रा की तैयारी करेंगे और रात की गाड़ी से चले जायेंगे।

अन्नदा बाबू ने विदा के समय कृतज्ञता-ज्ञापन करते हुए कहा, "गये कुछ हफ्तों में आपने हमारी जो मदद की है, उसे हम कभी भुला न सकेंगे।"

नलिनाक्ष: मैं एक बात बताना चाहता हूँ। मैंने अपने जीवन का राज आप लोगों के सिवा किसी और को नहीं बताया।

इस बातचीत में हेमनलिनी ने कोई हिस्सा नहीं लिया। वह खिड़कियों में से छनकर आती और सारे कमरे को प्रकाशित करती हुई धूप में नलिनाक्ष के विदा लेते तक विचार-मग्न बैठी रही। उसने इतना ही कहा, "अपनी मा के बारे में हमें खबर अवश्य दीजिये।" और जैसे ही वे जाने लगे, एक बार फिर उसने साष्टांग दंडवत् की।

४०

पिछले दिनों अक्षय का आना बंद था। लेकिन नलिनाक्ष के बनारस जाते ही जोगेन्द्र उसे चा पीने के लिये बुला लाया। हेमनलिनी के व्यवहार से अक्षय जानना चाहता था कि उसके विचारों में रमेश की स्मृति का कितना अंश है, लेकिन उसने उसे नितान्त गम्भीर पाया।

"इन दिनों आप कम दीखते हैं!" सहज मित्रता के भाव से हेमनलिनी ने कहा।

"क्या आपका ख्याल है कि मैं रोज देखने लायक हूँ।" अक्षय ने व्यंग किया।

"अगर यही बात हो कि योग्यता होने पर ही कोई किसी के यहाँ जाय, तो हममें से कितनों को अपने दिन एकान्त में काटना पड़े।"

जो: हम जैसे साधारण लोगों की दोस्ती रोज बर्दाश्त की जा सकती है, लेकिन कुछ ऐसे अपवाद स्वरूप व्यक्ति होते हैं कि उनके संग जब-कभी ही मिला जा सकता है। उनसे रोज मिलना असह्य हो उठे। ऐसे लोग तभी वन, पहाड़, गुफाओं में भटकते रहते हैं। अगर ऐसे लोग घरों में बस जाँय, तो जोगेन्द्र और अक्षय जैसे लोगों को जंगल में भागना पड़े।

जोगेन्द्र के शब्दों का दंश हेमनलिनी ने समझा, लेकिन प्रत्युत्तर देने के बदले उसने तीनों लोगों के लिये प्यालों में चा भरी।

'तुम चा नहीं पियोगी?' भाई ने पूछा।

हेमनलिनी जानती थी कि उसे जोगेन्द्र से डाँट मिलेगी, लेकिन उसने परम शांति से कहा, "न, मैंने चा छोड दी है।"

हेमनलिनी के संयम पर व्यंग करते हुये जोगेन्द्र ने कप में चा भरी और उसके सामने सरका दी।

उसे बिना छुये उसने कहा, "अरे पिताजी, आप चा के साथ कुछ न खायेंगे?"

अन्नदा बाबू के अंग और आवाज काँपने लगे। 'सच मानों बेटी, कुछ भी खाऊँगा, तो गला रुँध जायगा। इतने दिनों जोगेन्द्र की अशिष्टता सहते ऐसी हालत पर आ गया हूँ कि क्रोध में, कुछ भी भला-बुरा कह जाऊँ।"

हेमनलिनी उठी और पिता की कुर्सी के पास पँहुची।

"नाराज न होओ, पिताजी," उसने कहा, "जोगेन ने चा देकर स्नेह जताया है, मुझे जरा बुरा नहीं लगा। हाँ, लेकिन बिना कुछ खाये चा आपका नुकसान करेगी।" और उसने तश्तरी में केक लाकर रख दिये।

अन्नदा धीरे धीरे खाने लगे।

हेमनलिनी अपनी जगह पर आकर चा पीने ही को थी कि अक्षय बोल उठा, "देखिये यह चा मुझे दे दीजिये। मेरी खत्म हो गई है।"

जोगेन्द्र ने कप हेमनलिनी से लेकर पिताजी से कहा, "मुझे माफ़ कीजिये।"

अन्नदा कुछ कह नहीं सके! उनकी आँखें आँसू से भर गईं। जोगेन्द्र और अक्षय बाहर चले गये। थोड़ा-बहुत और खाकर अन्नदा बाबू उठे और पुत्री का सहारा लेकर ऊपर चले गये।

उस रात उन्हें भयंकर दर्द हुआ। डाक्टर ने आकर बताया कि पित्ताशय बिगड़ गया है, और उत्तर के किसी स्वास्थ्यकार स्थान में जाने की सलाह दी।

"हेम बेटी," डाक्टर के जाने के बाद और जरा दर्द कम होने पर वृद्ध महाशय ने कहा, "हम कुछ दिन चलकर बनारस रहें?"

उसी समय हेमनलिनी को भी यही विचार आया था।

"हाँ चलिये, पिता जी!" उसने कहा।

अगले दिन यात्रा की तैयारियाँ देखकर जोगेन्द्र ने पिताजी से पूछा। पिता जी ने उसे बताया कि वे और हेमनलिनी उत्तर की ओर जा रहे हैं।

"कहाँ?"

"कुछ दिन घूमकर कहीं ठहर जायँगे।" अन्नदा बाबू यह न कह सके कि बनारस जा रहे हैं।

'मैं आपके साथ न चल सकूँगा, मैंने हेड-मास्टरी की दरख्वास्त दी है और जवाब के लिये ठहरा हूँ।"

● ४१

बड़े तड़के रमेश इलाहाबाद से गाजीपुर लौटा। सड़कें प्राय: सुनसान थीं और तीखी ढंग में गर्मी के लिये किनारे के दरख्त सिकुड़े जा रहे थे। हर मकान पर चमकीला कुहासा फैला हुआ था, जैसे हंसिनी अपने अंडे से रही हो। सुनसान राह पर से घर जाते हुये रमेश को एक ही बात की चेतना थी, अपने हृदय की धड़कन की।

फाटक पर गाड़ी खड़ी कराके वह उतरा। कमला ने चकों की आवाज सुनी होगी और वरांडे में खड़ी इन्तजार कर रही होगी। इलाहाबाद से वह कीमती हार लाया था। लेकिन वरांडे में पहुँच कर उसने सब दरवाजे बंद और बिसन को सोते पाया। वह घड़ी एक खीझ में खड़ा रहा और फिर उसने जोर से बिसन को आवाज दी कि भीतर सोने वाला अन्य व्यक्ति जाग उठे। आधी रात से उत्तेजित जन के लिये यह बड़ा ठंडा स्वागत था।

बार बार के चिल्लाने से बिसन नहीं जगा, तो रमेश ने उसे हिलाया। नौकर उठ बैठा और घबराया सा ताकने लगा।

"मालकिन घर में हैं ?" रमेश ने पूछा।

"हैं तो," ऊँघते हुये उसने कहा और फिर सो गया।

दरवाजा धक्का देने से खुल गया। रमेश एक के बाद दूसरे कमरे में गया, लेकिन सबको खाली पाया।

उसने चिल्लाकर 'कमला' पुकारा, लेकिन कोई जवाब नहीं। वह नीम के पेड़ तक खोजने गया, लेकिन कमला का कहीं पता नहीं था।

लौटकर रमेश ने देखा तो बिसन गाढ़ी नींद में था। उसने झुककर उसे हिलाया, तो उसकी साँस से ताड़ी की बास आ रही थी। झकझोरने से बिसन उठ खड़ा हुआ।

"मालकिन कहा हैं ?" रमेश ने पूछा।

"घर ही में तो हैं, मालिक"

रमेश: घर में तो नहीं हैं !

बिसन: कल तो यहाँ आयी थीं ।

रमेश: उसके बाद कहाँ गईं ?

बिसन ताकता रह गया। उसी समय कमला के कीमती कपड़े पहने और सारी रात जागने के कारण सुर्ख आँखें लिये उमेश आया।

"मा कहाँ हैं, उमेश ?" स्वामी ने पूछा।

"कल से तो यहीं हैं।"

"तुम कहाँ थे ?"

"मा ने सिधू बाबू के घर तमाशा देखने भेजा था।

इसी बीच गाड़ीवान ने भाड़े की माँग की।

रमेश गाड़ी में बैठकर सीधा चाचा के घर गया। वहाँ बड़ी घबराहट थी। पहले उसे ख्याल हुआ कि कमला बीमार है, लेकिन उसने गलत सोचा। पिछली साँझ से उमी की तबियत अचानक बिगड़ गई थी। और बिना सोये सब लोग देख-भाल कर रहे थे। रमेश ने सोचा कि बीमार की तीमारदारी के लिये कमला को बुलाया गया होगा, इसलिये उसने बिपिन से कहा, "उमी के लिये बेचारी कमला बड़ी बेचैन होगी।" बिपिन को निश्चित मालूम नहीं था कि रात में कमला आई थी कि नहीं, इसलिये उसने सिर हिलाकर इतना ही कहा। "हाँ, उसे बच्ची से बहुत प्यार है, और वह सचमुच में बेचैन होगी लेकिन डाक्टर कहते हैं कि अब चिन्ता की कोई बात नहीं है।"

बात दिलासादेह थी, लेकिन रमेश की आशायें जैसे रुँध गईं। वह उदासी से भर गया और उसे लगा कि कमला से उसके मिलन के बीच किसी अमंगल विधान का व्यवधान है।

उमेश अब तक बँगले में आ गया। लड़के का अंत:पुर तक प्रवेश था और शैलजा उसे बड़ा चाहती थी।

उसे भीतर घुसकर अपने कमरे की ओर आते देख शैलजा दरवाजे तक उसे चेताने आई कि वह बच्ची को जगा न दे। लेकिन उसे अचरज हुआ, जब उमेश ने कमला के बारे में पूछा।

"क्यों, तू ही तो कल उनके साथ घर गया था ?" शैलजा ने कहा, "मैं रात लछमनियाँ को भेज रही थी, लेकिन उमी की बीमारी के कारण न भेज सकी।"

"क्या अभी वे वहाँ नहीं हैं ?" उमेश ने पूछा।

"क्या कहता है !" शैल बोली, "सारी रात तू कहाँ था ?"

उमेश: मा ने मुझे साथ ठहरने ही न दिया। हम बँगले पहुँचे, तो मुझे सिधू बाबू के यहाँ तमाशा देखने भगा दिया।

शैल: अच्छा लड़का है तू ! बिसन कहाँ था ?

उमेश: बिसन कुछ नहीं जानता ! उसने कल बहुत ताड़ी पी ली थी।

शैल: उन्हें तो जल्दी भेज।

विपिन आये, तो उसने कहा, "सुना, बड़ी दुर्घटना हो गई है।"

वि: क्यों, क्या हुआ ? विपिन को जब पता चला, तो रमेश और विपिन रमेश की गाड़ी में सीधे बँगले पहुँचे। बड़ी पूछताछ के बाद बिसन से यह मालूम हुआ कि:

दोपहर में देर से कमला नदी जाने निकली। बिसन ने साथ चलने कहा, पर उन्होंने इंकार कर दिया और उसे एक रुपया दिया। वह फाटक पर खड़ा था, तभी ताड़ी वाला वहाँ से निकला। फिर क्या हुआ, इसकी कोई खबर उसे नहीं है। किस रास्ते कमला गंगा गई, यह उसने बताया।

रमेश, विपिन और उमेश उसी रास्ते कमला की खोज में निकले। उमेश दोनों बाजू ऐसे गुर्राकर देखते जाता था, जैसे कोई शेरनी, जिसका बच्चा छीन लिया गया हो।

नदी किनारे पहुँचकर तीनों ठहर गये। उन्हें कोई दिखाई न पड़ा। उमेश जोर से चिल्लाया, लेकिन कोई उत्तर नहीं।

यहाँ-वहाँ खोजते उमेश को दूर पर एक सफेद चीज़ दिखी। उस ओर दौड़कर पानी के किनारे उसे रूमाल में बँधी चाबियों का गुच्छा मिला।

प्राय: एक ही समय रमेश ने पहुँचकर पूछा, "क्यों, क्या है ?"

कमला की चाबियों का गुच्छा था। पास ही नन्हें पैरों के निशान थे, जो पानी की ओर गये थे।

उथले पानी में कोई चीज़ चमक रही थी। उमेश ने उसे निकाला। वह कमला का रमेश का दिया हुआ सोने और एनेमल का ब्रूच था।

सारी बातों से एक ही शक की पुष्टि समझकर उमेश फूट फूट कर रोने लगा।

विपिन ने रमेश के कंधे पर हाथ रखकर जैसे उसे नैराश्य से जगा दिया।

"चलो रमेश बाबू," उसने कहा, "यहाँ समय न खराब करो। हम पुलिस में खबर कर देंगे और वे सब ज़रूरी तहकीकात कर लेंगे।"

उस दिन शैल के घर किसीने खाना नहीं खाया, आज घर चीखों से भर गया।

मल्लाहों और पुलिस ने प्रयत्न किये। स्टेशन पर पता लगाया गया, लेकिन कमला का कहीं पता न लगा।

दोपहर में चाचा लौटकर आये। सब कुछ सुनकर उन्हें निश्चय हो गया कि कमला ने डूबकर आत्महत्या की है।

रमेश दुर्घटना से ऐसा निश्चेष्ट हो गया कि एक आँसू भी न गिरा सका।

वह साँझ को नदी पहुँचा और जहाँ चाबियाँ मिली थीं, उस जगह खड़े होकर नन्हें पद-चिन्हों को एक बार फिर निहारने लगा। फिर उसने पानी में उतरकर गाज़ीपुर से लाया हुआ हार बीच धारा में फेंक दिया।

वह गाज़ीपुर में अधिक न ठहर सका। लेकिन कमला के दुख की तीव्रता में किसी को रमेश का जाना मालूम नहीं हुआ।

● ४२

रमेश का भविष्य अब सूना था। उसे किसीका सहारा न था, न कोई काम, न कोई आश्रय। यह न समझा जाय कि वह हेमनलिनी को एकदम भूल गया था। उसे लगा कि दुनिया की हरयाली में वह उखड़े हुये पेड़ की तरह है।

यात्रा में उसने बेचैनी के साथ शांति खोजी और एक जगह से दूसरी जगह गया। लेकिन अंत में उसका मन घर की ओर फिरा। जब घर की याद तीव्र हो उठी, तो वह कलकत्ते की ओर रवाना हुआ।

उसकी हिम्मत कुछ दिन कलकत्ते में रहने के पहले कोलूटोला जाने की न पड़ी। एक दिन वह गली तक गया और दूसरे दिन साहस करके अन्नदा बाबू के मकान के सामने वाले दरवाजे तक। सारे खिड़की-दरवाजे बन्द थे और जान नहीं पड़ता था कि कोई अन्दर रहता हो। उसे लगा कि शायद सुक्खन हो, लेकिन दरवाजे पर धक्का देने पर भी कोई न बोला। पड़ोसी चन्द्रमोहन ने रमेश को पहिचानकर बातचीत की। उससे रमेश को मालूम हुआ कि अन्नदा बाबू और उनकी पुत्री उत्तर की तरफ़ गये हैं, और नलिन बाबू इनके जाने के कुछ दिन पहले ही बनारस चले गये। रमेश ने

इन्हींसे जाना कि नलिन बाबू का नाम नलिनाक्ष चट्टोपाध्याय है, जो शायद रंगपुर में डाक्टरी करते थे और आजकल मा के साथ बनारस में हैं। जोगेन्द्र के बारे में मालूम हुआ कि वह मैमनसिंह के बिसईपुर गाँव में वहाँ के जमींदार द्वारा स्थापित हाई-स्कूल का हेडमास्टर है। जाने क पहले चन्द्रमोहन ने रमेश से उसका हाल जान लिया।

रमेश गया नहीं था कि अक्षय आ पहुँचा। उसे देखते ही चन्द्रमोहन ने कहा, "कुछ देर हुई रमेश बाबू आये थे। अभी अभा गये हैं।"

"रमेश बाबू! यहाँ क्या करने आये थे?"

"यह तो मैं नहीं जानता। मैंने यहाँ के सब समाचार दे दिये। इतने बीमार दिखते थे कि मैं पहिचान भी न सका। वो तो उन्होंने नौकर को बुलाया, तब मैंने आवाज़ से जाना कि कौन है।"

अक्षय: तुमने यह पूछा कि आजकल वह कहाँ रहता है?

चन्द्र:—इतने सारे दिन गाजीपुर में थे। अब वह जगह छोड़ दी है, और आगे कहाँ रहना है, इस बारे में कोई निश्चय नहीं किया है।" "ओह" कहकर अक्षय अपने काम से चला गया।

रमेश सोचता हुआ अपने निवास-स्थान पर आ गया:

"किस्मत मेरे साथ भयंकर खेल खेले जा रही है। एक तरफ कमला के साथ मेरे संबंध, दूसरी तरफ़ नलिनाक्ष के हेमनलिनी के साथ। यह उलझन भाग्य जैसे निर्मोही की ही कृति हो सकती है।" फिर भी उसने अपने आपको जटिल से जटिल उलझन से मुक्त पाया। जटिल जीवन की कहानी के अन्तिम अध्याय की समाप्ति लिखते समय भाग्य उस पर अधिक क्रूर न होगा।

जोगेन्द्र जमींदार के मकान के पास इक-मंजिले मकान में रहता था। इतवार की सुबह वह अखबार पढ़ रहा था कि एक आदमी एक चिट्ठी

लेकर आया। लिफाफे पर लिखावट देखकर उसने आँखें मलीं। खोली, तो रमेश ने लिखा था कि वह बिसईपुर की एक दूकान पर इंतजार कर रहा है, कुछ जरूरी बात कहना है।

जोगेन्द्र कुर्सी पर से उठा। वह तूफ़ानी दृश्य के बाद रमेश से क्रोध में विदा हुआ था, लेकिन वह पुरानी बात थी और जब उसके बचपन का साथी इस जंगल में आ पहुँचा है, तो वह उसे लौटा नहीं देगा। रमेश से मिलने की जोगेन्द्र को सचमुच खुशी हुई, उसका मन उत्सुकता-पूर्ण हो गया। हेमनलिनी दूर है, इसलिये इससे मिलने में कोई नुकसान नहीं है।

चिट्ठी लाने वाले के साथ जोगेन्द्र रमेश की खोज में निकला। जोगेन्द्र एक मोदी की दूकान पर बैठा था। जोगेन्द्र उसके पास गया। उसने उसे हाथ पकड़कर उठाया।

"तुमसे तो पार पाना मुश्किल है," उसने कहा, "यहाँ बैठे रहने की बजाय सीधे घर क्यों न आ गये?"

इस स्वागत से आश्चर्यान्वित होकर रमेश ने महज़ मुसकरा दिया। जोगेन्द्र अनरुक बातें करता हुआ उसे साथ लेकर जल्दी जल्दी लौटा। जोगेन्द्र के घर पहुँच कर रमेश कुर्सी पर बैठ गया।

"बैठो मत," जोगेन्द्र ने कहा, "नहा-धो लो। तब तक मैं चा बनाता हूँ।"

सारा दिन खाते-पीते बोलते, सोते बीता। जोगेन्द्र ने रमेश को वह जरूरी बात कहने का मौका ही न दिया, जिसके लिये वह बिसईपुर आया था।

ब्यालू के बाद रमेश को अपनी बात कहने का मौका मिला।

"जोगेन," उसने कहा, "समझ तो गये होगे कि मैं क्यों यहाँ आया हूँ। तुमने कभी मुझसे कुछ पूछा था, जिसका तब मैं उत्तर नहीं दे सका था। अब उसका उत्तर देने में कोई बाधा नहीं है।"

रमेश मौन हो गया। कुछ घड़ी के बाद कमला की सारी कहानी उसने सुना दी। कहीं उसका गला रुँध जाता और कहीं उससे बोलते भी न बनता। जोगेन्द्र चुपचाप सुनता रहा।

जब उसने कहना समाप्त किया, तो जोगेन्द्र ने लम्बी साँस ली।

"अगर उस दिन कहते, तो मुझे कभी विश्वास न होता।"

"यह आज भी उतनी ही अविश्वनीय है। चलो, मैं तुम्हें पहले अपने गाँव ले चलूँ, फिर हम कमला के गाँव चलेंगे।"

"मैं कहीं नहीं जा सकता। मैं तुम्हारे हर शब्द पर विश्वास करने तैयार हूँ। मैंने सदा तुम पर एतबार किया है। एक बार नहीं किया, सो उसके लिये मुझे माफ़ कर दो।"

जोगेन्द्र अपनी कुर्सी से उठा और दोनों दोस्त गले मिले।

जब रमेश बोल सका, तो उसने कहा, "भाग्य ने मुझे असत्य के ऐसे जाल में फँसा लिया था कि उसमें से निकलने का मुझे कोई रास्ता नज़र नहीं आता था। अब मैं उससे मुक्त हूँ, इसलिये तुमसे कुछ नहीं छिपा रहा। अब मैं आराम की साँस ले सकता हूँ।"

"यह निश्चित नहीं है कि कमला ने आत्महत्या कर ली। लेकिन तुम्हारे लिये रास्ता साफ़ है। सिर्फ नलिनाक्ष का सवाल है;" और जोगेन्द्र नलिनाक्ष के बारे में कहने लगा। उसने हेम के संयम की बात बताकर कहा, "हम दोनों मिलकर इस सन्यास के खिलाफ मोर्चा लेंगे।"

रमेश हँस पड़ा। जोगेन्द्र ने बड़े दिन की छुट्टियों तक रमेश को अपने यहाँ रोक रखा।

४३

चन्द्रमोहन से मिली खबर ने अक्षय को बहुत-कुछ सोचने का मौका दिया।

उसने अपने से पूछा, "इसका क्या मतलब हो सकता है?" उसने गाजीपुर जाकर सारी खबरें जुटाने का निश्चय किया। इसके बाद वह बनारस जाकर अन्नदा बाबू से मिलेगा। दिसम्बर माह की एक दोपहरी में हाथ में बेग लिये अक्षय गाजीपुर उतरा और उसने अपना काम शुरू किया।

उसने बाजार में पूछा, लेकिन कोई पता न चला। कचहरी में एक पगड़ी वाले बंगाली से पूछने पर उसे मालूम हुआ कि रमेश कुछ दिन चाचा के घर रहा। अब वहाँ है कि नहीं, वह नहीं जानता। उसकी पत्नी गुम गई है और ऐसा ख्याल है कि वह डूबकर मर गई।

अक्षय चाचा के घर पहुँचा। जाते जाते वह सोचता जा रहा था: रमेश की चाल अब समझ में आई। उसकी पत्नी मर गई है और अब वह हेमनलिनी को संतोषजनक तरीके से बतायेगा कि उसकी पत्नी थी ही नहीं। मन की वर्तमान दशा में हेमनलिनी रमेश की किसी भी बात पर विश्वास कर लेगी। और उसने अपनी दृढ़ता को, अपने को धन्यवाद दिया।

रमेश और कमला के बारे में अक्षय द्वारा पूछे जाने पर चाचा अपनी व्यथा सँभाल न सके और उनकी आँखों से आँसू बह चले, "आप रमेश बाबू के विशेष मित्रों में से हैं, तब तो प्यारी बेटी कमला को खूब जानते होंगे। दो दिन की मुलाकात में वह मुझे अपनी बेटी जैसी प्रिय हो गई थी। जानता नहीं था कि प्यारी बेटी इतने थोड़े समय में मोहकर हमें इतना बड़ा दुख दे जायगी।"

"मुझे सारी बात अबूझ लगती है," अक्षय ने दिखाऊ सहानुभूति से कहा, "यह साफ़ है कि रमेश ने उसके साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया।"

"रमेश आपका मित्र है, इसलिये मेरे कहे का बुरा न मानिये। लेकिन यह सच है कि मैं रमेश को कभी समझ नहीं सका। बातचीत

करने के लिये वह बड़ा भला आदमी है, लेकिन उसके मन में क्या चलता रहता हैं, इसे समझना कठिन है। वह बड़ा असाधारण व्यक्ति है, नहीं तो कमला जैसी मोहनी पत्नी को न त्यागता। कमला इतनी सच्ची थी कि उसने कभी पति के खिलाफ़ एक शब्द नहीं कहा। मेरी पुत्री कभी कभी बताती थी कि कमला कुछ सोच रही है, लेकिन किसी बात का पता कमला ने न होने दिया। यह सोचकर मेरा दिल फटा जाता है कि अंतिम निश्चय के पहले उस जैसी लड़की को कैसी यातना सहनी पड़ी होगी। मैं यहाँ होता, तो निश्चय ही लड़की ऐसा न कर पाती।"

अगली सुबह चाचा अक्षय को लेकर रमेश के बँगले गये, वहाँ से कमला के गायब होने की जगह पर।

चाचा के घर लौट आने तक अक्षय ने कुछ नहीं कहा; फिर बोला, "देखिये महाशय आप जैसा विश्वास मुझे नहीं है कि कमला ने गंगा में डूबकर आत्महत्या कर ली।"

"आपका क्या ख्याल है?"

अक्षय: मैं सोचता हूँ, वह घर से भाग गई है। हमें पूरी खोज करना चाहिये।

चाचा उत्तेजित हो उठे।

"शायद आप ठीक कह रहे हों। यह असंगत नहीं है।"

अक्षय: बनारस दूर नहीं है। मेरा और रमेश का परिचित एक कुटुम्ब वहाँ रहता है। हो सकता है, कमला ने वहीं आश्रम लिया हो।

"यह रमेश बाबू ने हमें कभी नहीं बताया।" अपनी स्वाभाविक चपलता के साथ चाचा ने कहा, "अगर मैं जानता तो जरूर वहाँ पूछ-ताछ करता।"

अक्षय: चलिये हम लोग बनारस चलें। आप इस देश को सब जानते हैं इसलिये खोज-खबर ठीक कर सकेंगे।"

चाचा तुरंत तैयार हो गये। अक्षय की बात हेमनलिनी शायद ही सच माने, लेकिन चाचा के प्रमाण के बाद वह रमेश की दुरंगी चाल के बारे में हेमनलिनी को विश्वास दिला सकेगा। इस प्रकार मुकदमे की गवाही के रूप में निश्शंक वृद्ध महाशय बनारस ले जाये जा रहे थे।

४४

अन्नदा बाबू ने शहर के बाहर एकान्त जगह में बँगला किराये से ले रखा था।

बनारस आने पर उन्हें मालूम हुआ कि जिस खाँसी-बुखार मे नलिनाच की मा क्षेमांकरी बीमार थी, वह बढ़कर निमोनिया हो गया है। ठंडी ऋतु से और नियमित गंगा-स्नान न छोड़ने से खतरनाक बुखार ज्यादा बढ़ गया था और उनकी हालत सचमुच में खतरनाक थी। हेमनलिनी की अनरुक फिकर से खतरा तो दूर हो गया, लेकिन बीमारी ने वृद्धा का बहुत कमज़ोर कर दिया। धार्मिक पवित्रता के बारे में क्षेमांकरी के विचार बड़े कड़े थे और वे ब्राह्म लड़की के हाथ से पथ्य न लेती थीं। वे अपना भोजन स्वयं बनाया करती थीं और अब नलिनाच को सारा पथ्य तैयार करना पड़ता था। इससे मा को बड़ा कष्ट होता था।

"अच्छा होता, भगवान मुझे उठा लेते। भगवान मुझे तुम्हारे लिये भार बनाकर क्यों रखे हैं?" वह दुखी होकर नलिनाच से कहती।

अपने आराम और व्यक्तिगत साज के प्रति क्षेमांकरी को जितनी इज्जत थी, उतना ही ख़्याल उन्हें अपने आसपास की चीजों में तरीका और सुँदरता का था—यह हेमनलिनी ने नलिनाच से जान लिया था। इसलिये वह सारे घर को साफ़-सुथरा रखने की फिकर करती थी और वृद्धा के सामने जाने में अपने वस्त्रों का खास ध्यान रखती थी।

क्षेमांकरी को नन्हें बच्चों से बड़ा मोह था। जब वे गंग
बाद रास्ते में मिलने वाली हर शिव-मूर्ति पर जल-फूल चढ़ाती लौटतीं,

तो किसी किसान-बच्चे या नन्ही ब्रह्मण-कन्या को घर लेती आतीं, और खिलौने, पैसे, मिटाई देकर उनका मन मोह लेती।

उनके पास एक बड़ा सीसम का संदूक था, जिसमें बहुत से आभूषण और रेशम की अनेक साड़ियाँ रखी थीं। ये नलिनाच्च की मनचाही होनेवाली बहू के लिये थीं। उन्होंने अपनी बहू की कल्पना बड़ी सुन्दर कुमारी के रूप में की थी, जो अपने कामकाजीपन और मोहक तरीकों से गन्दे मकान को चमका देगी और जिसे इन बेशकीमती चीजों से युक्त करने में उन्हें आनंद आयेगा। ऐसी कल्पनाएँ वृद्धा के लिये अनेक दिवा-स्वप्नों का काम करती थीं।

च्चेमांकरी की अपनी आदतें विरागियों जैसी थीं। वे अपना सारा दिन प्रार्थना और धार्मिक कामों में बिताती थीं। एक बार फल और दूध खातीं थी, लेकिन उन्हें नलिनाच्च की विरागी आदतें बिलकुल पसन्द न थीं। "आदमी को इतना कठोर होने की क्या जरूरत है?" वे लगाव के साथ पूछ बैठतीं। ठीक अपवित्रता चमा नहीं की जाना चाहिए, लेकिन यह उनका विश्वास था कि नेम-नियम पुरुषों के लिए नहीं हैं।

जब च्चेमांकरी अपनी बीमारी से उठीं, तो उन्हें यह देखकर बड़ी बेचैनी हुई कि न केवल हेमनलिनी नलिनाच्च की उत्साही शिष्या बन गई है, किन्तु श्वेतकेशी अन्नदा बाबू भी उसके चरणों में बैठकर उसके उपदेशों को ऐसा श्रद्धा से सुनते हैं, जैसे किसी महात्मा के वचन हों।

एक ढलती दोपहर में हेमनलिनी का केश-प्रसाधन करते हुये च्चेमांकरी ने उसके और अन्नदा बाबू के इस आचरण का तीव्र विरोध किया। उन्हें हेमनलिनी के केश-शृङ्गार की शैली पसंद न थी। वे कहती, "तुम समझती हो, मैं पुरानी चाल की हूँ, और नई फैशनों के बारे में कुछ नहीं जानती। लेकिन मुझे अभिमान है कि केश-प्रसाधन के तरीके मुझे मालूम हैं।" बातों के सिलसिले में वे बतातीं कि जब उनके पति ने सनातन

धर्म त्यागा, तब उन्हें बड़ा गहरा आघात लगा, लेकिन उन्होंने विरोध नहीं किया। उन्होंने इतना ही कहा, "आप अपनी आत्मा का अनुसरण कीजिये। मैं अनपढ़ औरत अपने इतने दिनों के अभ्यास को नहीं छोड़ सकती।" और क्षेमांकरी ने झलक आये आँसू को पोंछ दिया।

वृद्धा को हेमनलिनी की लम्बी केशराशि खोलकर किसी चिर-नई विधि से प्रसाधित करने में बड़ा आनन्द आता था। अपनी सीसम की सन्दूक में से अपनी पसन्द के उज्वल-वर्ण वस्त्र तक वे इस कुमारी को पहिनाती थीं। शृङ्गार करना उनके लिये आनन्दमय क्रीड़ा थी। हेमनलिनी अपना सिलाई का सामान प्राय: प्रतिदिन ले आती और साँझें सिलाई के नये तरीके सीखने में बिता देती।

क्षेमांकरी को बंगाली उपन्यास पढ़ने का बड़ा शौक था और हेमनलिनी अपनी सारी किताबें-पत्रिकायें ले आई। कहानी-लेखों पर वृद्धा की आलोचनाओं की गम्भीरता पर हेम को अचरज होता था। उनके संलाप की सरसता और जीवन-वृत्ति की धार्मिकता ने नलिनाक्ष की मा को हेमनलिनी की आँखों में अनोखी स्त्री बना दिया था। उनमें कहीं कोई समानता, कोई रूढ़ि नहीं थी और उनके साथ संलाप हेम के लिये सदा आश्चर्य पूर्ण होते थे।

४५

जल्दी ही क्षेमांकरी का बुखार का दूसरा दौर आया, लेकिन पहले जैसा अधिक दिन नहीं रहा। एक प्रात:काल नलिनाक्ष ने आकर कर्तव्यशील पुत्र की भाँति उनके पैर छुये, और मौका देखकर मा को अच्छे हो जाने तक ये नेम-नियम न करने के लिये कहा।

"मैं अपनी पुरानी आदतें छोड़ दूँ और तुम दुनिया से ही विराग ले लो?" वृद्धा ने कहा, "बेटा नलिन, यह आडम्बर अधिक न कर सकोगे। जैसा मा कहती है, वैसा करो और शादी कर लो।"

नलिनाच चुप रहा और चेमांकरी कहती गई, "मेरे बूढ़े शरीर का क्या ठिकाना? लेकिन तुम्हें विवाहित देखे बिना सुख से न मर सकूँगी... अच्छा हो कि तुम किसी अपनी उम्र की लड़की से ब्याह कर लो। कल सारी रात बुखार में जागती हुई मैं इसी विषय में सोचती रही। मेरा दृढ़ विश्वास है कि मेरे प्रति तुम्हारा यही आखिरी कर्तव्य है। मैं जीते जी यह करा लेना चाहती हूँ। नहीं तो मेरे मन को कभी शांति न मिलेगी।"

"लेकिन ऐसी लड़की मैं कहाँ पाऊँ, जो संतोषपूर्वक मेरे साथ रह सके?" नलिनाच ने पूछा।

"इसकी फिकर तुम न करो। मैं तुम्हारे लिये सब ठीक कर दूँगी और वक्त आने पर नतीजा तुम्हें मालूम हो जायगा।"

चेमांकरी कभी अन्नदा बाबू से मिली नहीं थी, क्योंकि उनके आने पर वे रिवाज के मुताबिक परदा करती थीं। लेकिन उस दिन साँझ जब वृद्ध महाशय आये, तो चेमांकरी ने उनसे मिलने की इच्छा जाहिर की और जैसे ही अन्नदा बाबू उनके सामने आये, उन्होंने सीधे अपनी बात प्रारम्भ की।

"आपकी पुत्री बड़ी सुन्दर है," उन्होंने कहा, "और मुझे बहुत प्रिय है। आप दोनों मेरे पुत्र नलिन को जानते हैं। उसका आचरण अनिंद्य है और पेशे में उसकी इज्जत खूब है। मेरे साथ आपका भी क्या यह मत नहीं है कि आपकी पुत्री के लिये इससे अधिक सुयोग्य वर मिलने में दिक्कत होगी?"

"सच कहती हैं," अन्नदा बाबू को अचरज हुआ। "मुझे इस बात की कभी आशा नहीं थी। नलिनाच को दामाद-रूप में पाना मेरे लिये बड़ा सौभाग्य है। लेकिन स्वयं नलिनाच—"

"नलिनाच जरूर राजी होगा। आजकल के नौजवानों से भिन्न वह मा का कहा सदा मानता है। उसे मनाने की जरूरत न पड़ेगी। उस लड़की से प्रेम न कर पाना किसी के लिये संभव नहीं है। मेरी इच्छा है, जल्दी विवाह हो जाय, क्योंकि मैं शायद अधिक दिन न जी पाऊँ।"

अन्नदा बाबू खुश होते घर गये। पहुँचकर उन्होंने हेम को बुलाया और उससे इस प्रस्ताव की बात कही।

हेमनलिनी शर्माई और झिझकी। "सच पिताजी! यह तो बड़ा असम्भव जान पड़ता है।"

प्रस्ताव को बात सुनकर वह घबरा गई, क्योंकि उसने पति-रूप में नलिनाक्ष की कल्पना कभी नहीं की थी।

"असम्भव समझती हो?" अन्नदा बाबू ने पूछा।

"नलिनाक्ष!" हेमनलिनी ने अचरज से कहा। "यह कैसे हो सकता है?"

यह शायद ही तर्क पूर्ण जवाब हो, लेकिन किसी भी तर्क से अधिक स्पष्ट था। इस परिस्थिति से छूटने के लिये हेमनलिनी दालान में चली गई।

अन्नदा बाबू की आशायें चूर हो गईं। ऐसे विरोध की उन्होंने कल्पना न की थी। उन्हें पूरा विश्वास था कि उनकी पुत्री नलिनाक्ष से विवाह होने के प्रस्ताव पर प्रसन्न होगा। इस निराशा से आहत होकर वृद्ध महाशय तेल के लेम्प की हिलती बत्ती की ओर निहारते हुए स्त्री-स्वभाव की अबूझ समस्या पर सोचते रहे और फिर उन्हें व्यथा हुई कि हेमनलिनी मातृहीन है।

इस बीच हेमनलिनी अँधेरी दालान में बैठी रही और वक्त बीतता गया।

अन्त में कमरे में उसकी निगाह गई और पिता का दुखी मुख देखकर उसकी आत्मा बेचैन हो उठी। वह शीघ्र भीतर आई और कुर्सी के पीछे खड़े होकर पिता का सिर सहलाती हुई बोली, "चलिए पिताजी, ब्यालू कब की तैयार हो गई है। ठंडी हो रही होगी।"

मशीन की तरह अन्नदा बाबू उठे और भोजन गृह में गए। लेकिन भूख उन्हें रह न गई थी। इस विश्वास में कि हेमनलिनी के जीवन को

स्याह करने वाले बादल छट गये हैं, उन्होंने भविष्य की बड़ी बड़ी उम्मीदें बाँधी थी। लेकिन उसकी इस इन्कारी से उन्हें बड़ी निराशा हुई। 'शायद हेम रमेश को भूल नहीं सकी,' उन्होंने उसाँस लेते हुए मन ही मन कहा।

उनकी आदत थी कि ब्यालू के बाद वे एकदम सोने चले जाते थे, लेकिन आज वे बैठे रहे। आराम करने के बजाय वे दालान में कुर्सी डालकर बैठ गये और बगीचे के पार केन्टोन्मेंट की सुनसान सड़क निहारते हुए विचारों में मग्न हो गए।

उन्हें वहाँ बैठे देखकर हेमनलिनी ने प्यार भरी डपट में कहा, "पिताजी अब सोने जाइये, यहाँ बहुत ठंड है।"

"तुम सोने जाओ, बेटी; मैं अभी आया।"

लेकिन हेमनलिनी ऐसे मानने वाली न थी। ज़रा ठहरकर उसने कहा, "यहाँ आपको ठंड लग जायगी, पिताजी; कम से कम भीतर तो आ जाइये।"

अन्नदा बाबू उठे और चुपचाप सोने चले गये।

हेमनलिनी ने रमेश का ख्याल मन से अलग कर देने का दृढ़ निश्चय कर लिया था, कि ऐसा न करने से उसे कर्त्तव्य-च्युत होने का भय था। इस आत्म-निरोध में उसे अनेक मानसिक संघर्ष करने पड़े थे, और अपने निश्चय की सफलता के प्रयत्न में वह भटक रही थी।

जब उसने निश्चित रूप से नलिनाक्ष को गुरु-रूप में स्वीकार कर लिया और उसके उपदेश के मुताबिक अपने जीवन को नियमित कर लिया, तब उसने समझा कि उसका उद्देश्य पूरा हो गया। लेकिन जब इस शादी का प्रस्ताव आया और उसने हृदय के अँतरतम से पुरातन प्रेम को निकाल फेंकने का प्रयत्न किया, तब उसे जान पड़ा कि वह कितना अटूट है। पुरातन प्रेम के टूट जाने की आशंका ने हेमनलिनी को और दृढ़ता से उसके साथ आबद्ध कर दिया।

४६

क्षेमांकरी ने इसी बीच नलिनाक्ष को बुलाकर उससे प्रस्ताव और उसकी स्वीकृति के बारे में बता दिया था।

नलिनाक्ष मुसकराया, "क्या सारी बात का निश्चय हो गया?" उसने पूछा "तुमने बड़ी जल्दी की!"

क्षेमांकरी—की तो। जानते तो हो, मुझे हमेशा नहीं रहना है। देखो, हेमनलिनी से मेरा मन भर गया है। बड़ी अनोखी लड़की है। जहाँ तक रूप-रेखा का सवाल है, हाँ, रंग बहुत अच्छा नहीं है, लेकिन...

नलिनाक्ष—बचने दो, मा, मैं उसके रंग के बारे में नहीं सोच रहा था। मैं हेमनलिनी के साथ अपनी शादी की असंभावना पर विचार कर रहा था। मैं सचमुच ऐसा नहीं कर सकता है।

क्षेमांकरी: व्यर्थ बात मत करो। मुझे विरोध का कोई कारण समझ में नहीं आता।

नलिनाक्ष के लिये अपने कारणों की फेहरिस्त देना आसान न था। लेकिन उसके अन-कहे विचार इस प्रकार थे:

हेमनलिनी ऐसी लड़की है, जिसके प्रति अब तक मेरा व्यवहार पिता-उपदेशक जैसा रहा है। अचानक इस संबंध को बदलकर उससे शादी का प्रस्ताव करना उस पर अत्याचार करने के बराबर है।

नलिनाक्ष की चुप को मौन स्वीकृति समझकर मा कहती गई: मैं इस बार कोई विरोध नहीं सुनूँगी। पहला मुहूर्त आते ही तुम्हें यह काम करा डालना होगा।

कुछ समय बाते बाद नलिनाक्ष ने कहना शुरू किया, "एक बात है, जो मैं तुमसे कहना चाहता हूँ, मा, लेकिन मेरी प्रार्थना है कि तुम सुनकर दुखी मत होना। किस्सा तो दस महिने पुराना है और अब उस पर दुख करना व्यर्थ है।"

क्षेमांकरी बहुत घबरा उठी। "मैं नहीं जानती थी कि बेटा, तुम क्या कहने जा रहे हो ? लेकिन तुम्हारी भूमिका से दुर्घटना की आशंका होती है। फिर भी अपनी कहानी कहो। यह न सोचा कि खबर अच्छी है या बुरी।"

नलिनाक्ष ने कहना शुरू किया: गई फरवरी रंगपुर की अपनी सारी जायदाद बेचकर, बगीचे के मकान में किराएदार रखकर मैं कलकत्ते के लिए रवाना हुआ। सारा पहुँचकर मेरे मन में आया कि रेल छोड़कर बाकी रास्ता पानी से तय करूँ। इसलिए मैंने सारा पर एक जहाज किराए पर ली और मैं रवाना हुआ। दो दिन चलने के बाद एक रेतीले किनारे पर नाँव बाँधी गई और मैं किनारे नहाने गया, तो बन्दूक लिए अपने पुराने मित्र भूपेन से मुलाकात हो गई। देखकर वह उछल पड़ा और बोला, "तुम्हारे लिए यह अच्छी चिड़िया है।" भूपेन उस तरफ 'डिपुटी मजिस्ट्रेट' था और जाँच के दौरे पर निकला था। कई साल बाद हम लोग मिले थे और उसने मुझे जाने नहीं दिया। उसने अपने साथ दौरे में चलने का आग्रह किया। एक दिन धोबापुर नामक गाँव में कैंप था। साँझ हम लोग घूमने निकले। गाँव छोटा था और घूमते घूमते हम लोग अचानक एक मकान में जा पहुँचे। घर वाले ने बेत की कुर्सियाँ लाकर हमें बिठाया। नाम उसका तारिनी चाटुर्ज्या था। उसने पूछ पूछ कर सारा इतिहास कंठस्थ कर लिया। जब हम लौटे, तो भूपेन बोला, "आज तुम्हारे सौभाग्य का दिन है; तुम्हें शादी का प्रस्ताव मिलने वाला है।" पूछने पर उसने बताया कि चाटुर्ज्या साहूकार है और इस जैसा कंजूस कहीं न होगा। तारिनी की एक बहिन थी, जो पति के मरने पर आश्रय के लिये भाई के पास आ गई। उसे गर्भ था और एक पुत्री का जन्म देकर वह मर गई। एक दूसरी विधवा बहिन ने बच्ची का पालन-पोषण शुरू किया, लेकिन कुछ वर्षों में वह भी मर गई। तब से बेचारी लड़की कुत्ते की जिन्दगी बसर कर रही है। मामा-मामी की गुलामी करती और बदले में डाँट-डपट के सिवा कुछ नहीं पाती। लड़की शादी की उम्र प्राय: पार कर गई है। लेकिन इस अनाथिनी के लिये वर पाना बड़ा मुश्किल है, क्योंकि

गाँव में कोई उसके मा-बाप को नहीं जानता। बच्चो पिता के मरने के बाद हुई थी, इसलिये लोग तरह तरह की बातें करते हैं। लेकिन ऐसी लड़की मैंने और नहीं देखी। कमला उसका नाम है और वह हर प्रकार से कमला की प्रति-छवि है। गाँव में कोई ब्राह्मण-कुमार आया नहीं कि तारिणी घुटने टेककर उससे अपनी भांजी ब्याह लेने कहता है। लेकिन अगर लड़का तैयार भी हो जाय, तो गाँव वाले बहका देते हैं।" मा मैं कुछ ऐसी मन-वृत्ति में था कि बिना सोचे कह बैठा, "अच्छी बात है, मैं शादी करूँगा।" भूपेन आश्चर्य-चकित रह गया। "सच कह रहे हो," उसने कहा। "हाँ, सच ही तो," मैंने जवाब दिया, "मैंने निश्चय कर लिया है।"

"शादी हो गई!" क्षेमांकरी ने अचरज से पूछा, "सच कह रहे हो, नलिन!"

नलिनाक्ष: बिलकुल सच। मैं वधू के साथ नाव में सवार हुआ, और मार्च के भले मौसम की एक दोपहरी में हम नाग विदा हुये। लेकिन उसी साँझ, कुछ ही घंटे बाद वहाँ तेज लू का झोंका आया। जाने कैसे नाँव उलट गई और उसका पता नहीं चला।

"हे भगवान!" भयभीत क्षेमांकरी बोली।

नलिनाक्ष: जब मुझे होश आया तो मैं पानी में पैर हाथ पटक रहा था, और न नाव, न नाव के आदमियों का कहीं पता था। मैंने पुलिस में रिपोर्ट की। जांच हुई, लेकिन कोई नतीजा न निकला।"

क्षेमांकरी का चेहरा पीला पड़ गया।

"बीती बात पर किसका जोर, लेकिन इस बात का जिक्र मुझसे फिर न करना। मैं ख्याल करते काँप उठती हूँ।"

नलिनाक्ष: अगर तुम मेरी शादी के बारे में इतना आग्रह न करतीं; तो मैं कभी न बताता।

क्षेमांकरी: क्यों, इस दुर्घटना से क्या शादी में बाधा पड़ेगी ?

नलि०—लड़की शायद बच गई हो।

क्षेमा०—पागल हो गये हो ? अगर वह जीती होती, तो तुम्हें कुछ खबर अवश्य मिलती।

नलि०—वह मेरे बारे में कुछ नहीं जानती। शायद उसने कभी मेरा मुख नहीं देखा। बनारस आकर मैंने तारिणी चाटुर्ज्या को पत्र लिखा, तो वह डेड लेटर आफिस से लौट आया।

क्षेमा०—फिर !

नलि०—मैं एक साल बीतने के पहिले उसकी मृत्यु को निश्चित नहीं मान सकता।

क्षेमा०—जैसा तुम ठीक समझो, लेकिन कैसी भयंकर बात तुमने सुनाई। मैं अभी भी ख्याल करके काँप रही हूँ।

● ४७

कमला गंगा किनारे पहुँची, तो दिसम्बर का अल्प-जीवी सूरज आसमान की सीमा पर डूब चुका था। आती हुई गोधूली की ओर मुँह करके उसने अस्त होते हुए भगवान को नमन किया, पवित्र जल अपने सिर पर सींचा और पानी में बढ़कर अंजलि में जल लेकर पवित्र नदी की पूजा की और पानी को धारा में फेंक दिया।

समस्त देवी-देवताओं को उसने नमन किया। धरती से जैसे ही उसने सिर उठाया कि उसे एक और व्यक्ति का स्मरण हुआ, जिनको वह नमन करना चाहती थी। उसने कभी उनकी ओर देखने की इच्छा नहीं की थी। उस एक रात में, जो उसने उनके बाजू में काटी थी, उसकी आँखें उनके चरणों पर भी न ठहर सकी थीं। वधू-गृह में उन्होंने उसकी सखियों से दो बातें की थीं, किन्तु उनके शब्द उसके घूंघट और संकोच को भेद नहीं

पाये थे। और अब नदी किनारे खड़े हुए उसने उनके स्वर को याद करने की बहुतेरी, लेकिन व्यर्थ कोशिश की।

विवाह की रस्में खत्म होने तक रात बहुत बीत चुकी थी, इसलिये वह जान ही नहीं सकी कि गहरी थकान में कब नींद ने उस पर कब्जा कर लिया। वह जगी, तो एक तरुणा विवाहित पड़ोसिन उन्मुक्त हास्य से उसे नींद से जगा रही थी। अपनी चेतना के अखीरी क्षण में उसे अपने स्वामी की किसी बात का स्मरण नहीं रहा। उनका व्यक्तित्व उसके लिए एक बन्द किताब था।

रमेश ने जो पत्र हेमनलिनी को लिखा था, वह उसके आँचल में बँधा था। निकालकर रेत में बैठकर उसने पत्र का वह अंश पढ़ा, जिसमें उसके पति का थोड़ा सा जिक्र आया था। पति का नाम था नलिनाक्ष चट्टोपाध्याय। रंगपूर में वे डाक्टर थे और रमेश उनका कोई पता नहीं लगा सका था।

पत्र का बाकी अंश गुम गया था।

नलिनाक्ष! उसकी आत्मा के लिए मरहम जैसा था, जिसने उसके समस्त हृदय का सम्पूर्ण भर दिया। उसकी आँखों से आँसुओं की धार लग गई। उसका निश्चय डिग गया। उसके दुख का असह्य भार हलका हो गया। उसके प्राणों में कोई बोल उठा, "शून्य भर गया है; अँधेरा दूर हो गया। अब मैं भी जीवित विश्व का एक अंश हूँ।" और वह जोर से चिल्ला उठी, "अगर मैं एक सच्ची पत्नी हूँ, तो मुझे उनके चरणों पर गिरने के लिए जीना चाहिये।"

उसने रूमाल से चाबी का गुच्छा खोल कर फेंक दिया। फिर उसे याद आई कि वह रमेश का दिया हुआ एक ब्रोच पहने है। इसे भी खोलकर उसने पानी में डाल दिया। फिर वह पश्चिम की ओर मुड़कर चलने लगी। वह कहाँ जा रही थी और किस प्रकार अपनी खोज में आगे बढ़ेगी, इसका

उसे कोई अंदाज न था। इतना ही वह जानती थी कि उसे जाना ही चाहिए और जहाँ वह है, वहाँ अधिक नहीं बिलम सकेगी।

जाड़े की गोधूलि की आखिरी जोत शीघ्र ही आसमान से ढल गई। नदी का रेतीला किनारा अँधेरे में धुँधला धुँधला चमक रहा था। चन्द्रहीन आसमान एकटक तारों के साथ नदी-किनारे हल्के हल्के उसाँस ले रहा था। कमला नदी के किनारे किनारे आगे बढ़ चली, इससे उसे रास्ता पूछने की जरूरत नहीं रही और अगर खतरा आया, तो वह मा गंगा के हृदय में आश्रय पा सकती थी।

हवा सूखी थी और यद्यपि कमला के चारों ओर अँधेरा था, उसे रास्ता सूझ पड़ता था। कुछ घंटे चलने के बाद समतल किनारे की जगह ऊँची कगार आ गई और रेत की जगह उपजाऊ भूमि। आगे गाँव था, लेकिन धड़कते हृदय के साथ जब कमला ने गाँव में प्रवेश किया, तब उसे मालूम हुआ, ग्राम-वासी गहरी नींद में सो रहे हैं। उसकी शक्ति क्षीण हो रही थी। वह एक पीपल-तले बैठ गई और गहरी थकान के कारण सो गई। सुबह पहर जब वह जागी, तो चाँद उग आया था और अँधेरे पर रोशनी बिखरा रहा था। उसके बाजू में एक अधेड़ औरत खड़ी अपनी भाषा में प्रश्न कर रही थी।

कमला भय से चौंक उठी। चारों तरफ देखकर करीब उसने एक घाट पाया, जहाँ दो बजरे पड़े थे। यह वृद्धा यात्रा पर जा रही थी और दूसरे लोगों के जग जाने के पहिले नहाने के लिये जल्दी उठी थी। कमला से यह जानकर कि वह बनारस जा रही है, उसे अचरज हुआ कि कोई पैर पैर बनारस जाए। उसने कहा, "उस बजरे पर सवार हो जाओ, मैं अभी नहाकर आई।"

वृद्धा नहाकर कमला के साथ हो ली। उसने अपने बारे में बताया कि वह गाजीपुर के सिधु बाबू की रिश्तेदार है। उसका नाम नवीनकाली है और उसके पति का नाम मुकुन्द लाल दत्त है। वे जाति के कायस्थ हैं, बंगाल

के रहने वाले हैं, लेकिन कुछ समय से बनारस में बस गये हैं। कमला से सारा हाल जानकर उसने पूछा कि बनारस में क्या करोगी ? कमला ने उत्तर दिया, "मैं सिर के ऊपर छप्पर और दिन में दो दफे खाना चाहती हूँ। अगर बनारस के कोई भले आदमी मुझे ये दे सकेंगे, तो मैं इसके बदले उनका काम कर दूँगी। मैं भोजन पकाना जानती हूँ।"

नवीनकाली को एक ब्राह्मण रसोई वाली की प्राप्ति की कल्पना से मन ही मन आनंद हुआ। लेकिन उसने अपना आनंद प्रकाशित न करने की सावधानी जतायी।

हवा के रुख के साथ नावें कुछ घंटे में बनारस पहुँच गई। एक दुमंजिले मकान में ये लोग जा पहुँचे। कमला के पहुँचने के बाद नवीनकाली ने घर की गुलामी का सारा भार उसी पर सौंप दिया और एक उड़िया नौकर को, जो अब तक उनके यहाँ नौकर था, निकाल दिया।

नवीनकाली भली सलाह देने से भी न चूकती थी। "जानती हो, बेटी !" वह कमला को डाँटती हुई कहती, "बनारस तरुण लड़कियों के लिये बुरी जगह है। तुम घर से कभी बाहर न जाना। जब मैं गंगा नहाने या विश्वनाथ के दर्शन करने जाऊँगी, तो तुम्हें भी लेती चलूँगी।" वह कमला को अपने पंजे से खिसकने का मौका नहीं देती। लड़की के कोई साथी नहीं थे। सारा दिन वह घर का काम-काज करती; साँझ नवीनकाली की बड़ी बड़ी बातें सुनती।

● ४८

नवीनकाली के यहाँ कमला की जिंदगी ऐसी थी, जैसी उथले और गँदले पोखर में कैद मछली की हो। उसकी एकमात्र मुक्ति भाग निकलने में थी, लेकिन भाग निकलने का तब तक सवाल ही नहीं था, जब तक उसके सामने निर्दिष्ट पथ न हो।

अपने विशेष तरीके से नवीनकाली को कमला प्रिय थी, लेकिन उसका प्रेम कुरुचिपूर्ण ढंग अख्तियार करती था। जरूरत के वक्त वह कमला के काम आई थी, लेकिन इसके लिये कमला का उसके अनुरूप कृतज्ञ होना भी मुश्किल हो गया। कमला को नवीनकाली के सहवास की एकरसता से चाकरी अधिक पसन्द थी।

एक सुबह वृद्धा ने कमला को बुलाकर सुनाया, "देखो, तुम्हारे मालिक की तबियत आज ठीक नहीं है, इसलिये वे आज पूरी खायेंगे। लेकिन पूरियों में बहुत सा घी न लगाना। तुम तो अच्छी रसोई वाली हो। लेकिन मेरी समझ में नहीं आता कि इतना घी क्यों खर्च करती हो। इस बात में तो उड़िया नौकर ही तुमसे अच्छा था। वह घी खर्च जरूर करता था, लेकिन इतना कि रसोई में शायद ही उसकी खुशबू आ पाये।"

कमला ने कभी पलटकर जवाब नहीं दिया। डाँटे जाने के बाद वह ऐसे अपने काम पर चली जाती, मानो कुछ सुना ही न हो। इस सुबह लेकिन बात उसे लग गई और तरकारी काटते काटते कमला इसी बात पर सोचती रही। वह सोच ही रही थी कि दुनिया निरानन्द जगह है और जीवन भार है, जब उसके कान में भनक पड़ी। नवीनकाली नौकर से बुलाकर कह रही थी :

"तुलसी रे, शहर जाकर डाक्टर नलिनाच को फौरन बुला ला; कहना, मालिक की तबियत खराब है।"

डॉ० नलिनाच! किन्हीं अज्ञात अंगुलियों से छुये तंत्री-तारों की तरह सूरज की किरनें कमला की आँखों के आगे नाचने लगी। उसने तरकारी एक तरफ सरका दी और चौके के द्वार पर खड़ी ऊपर से तुलसी के आने की प्रतीक्षा करने लगी। उसके आते ही कमला ने उससे उसका गंतव्य पूछा। "डॉ० नलिनाच को लेने जा रहा हूँ।" तुलसी बोला। "कौन हैं ये?"

"अरे वे तो शहर के सबसे बड़े डाक्टर हैं।"

"कहाँ रहते हैं ?"

"शहर में कोई एक मील दूर।"

नवीनकाली के कड़े शासन में नौकरों को खाना न पर्याप्त मिलता था, न वक्त पर। मालिक-मालकिन की नाराजी के बाद भी कमला उन्हें भूख लगने पर थोड़ा बहुत खाना छिपाकर दे देती थी, इसलिये ये नौकर उसके बेदाम के गुलाम थे।

"क्या खुसखुस होने लगी, तुलसी;" ऊपर से तीखी आवाज आई। "समझता है, मैं कुछ देखती नहीं हूँ। बिना रसोई वाली से सलाह किये शहर जा ही नहीं सकता। तभी तो घर की इतनी चीजें गुम रही हैं। और तू री, औरत! सड़क पर से उठाकर तुझे मैंने आश्रय दिया और तू इस तरह उसका बदला देती है।"

नवीनकाली का ख़्याल था कि चोरी करने के लिये सारा घर उसके खिलाफ षड़यंत्र किये बैठा है। और वह नौकरों को बता देना चाहती थी कि वह सब देख रही है और उसे धोका देना आसान काम न होगा।

इस बार कमला के लिये कहे उसके शब्द मानों बहरे कानों पर पड़े। बादलों-घिरा मन लिये कमला अपने काम में लग गई।

वह चौके के द्वार पर खड़ी तुलसी के लौटने का इन्तजार करने लगी। कुछ समय बाद वह लौटा, लेकिन अकेला।

"डाक्टर आ गये, तुलसी?" कमला ने पूछा।

"नहीं आ सके।"

"क्यों?"

"उनकी मा बीमार हैं।"

"उनकी मा! क्या कोई उनकी सेवा करने के लिये नहीं है?"

"न, उनकी शादी अभी नहीं हुई।"

"तुम्हें कैसे मालूम ?"

"मुझे नौकरों से मालूम हुआ कि उनके पत्नी नहीं है।"

"शायद उनकी पत्नी की मृत्यु हो गई ?"

तु०—हो सकता है। लेकिन उनके नौकर बज्र ने बताया कि जब ये रंगपुर में डाक्टरी करते थे, तब भी इनके पत्नी नहीं थी।" ऊपर से चीख आई, "तुलसी।"

कमला चौके में भाग गई और तुलसी मालकिन के पास चला गया।

नलिनाच : रंगपुर में डाक्टर। कमला के सारे संशय दूर हो गये। तुलसी लौटकर आया, तो उसने पूछा :

"देखो तुलसी, इसी नाम के एक मेरे रिस्तेदार हैं। ये ब्राह्मण होंगे ही न ?"

तु०—हाँ ब्राह्मण हैं, चाटुर्ज्य।

तुलसी को मालकिन का भय था, इसलिये वह इतना कह कर भाग गया।

कमला सीधा नवीनकाली के पास जाकर बोली कि सारा काम खत्म हो गया है और मैं दशवाश्वमेध घाट नहाने जाना चाहती हूँ।

नवीन: यह तो बड़ा असंभव है। उनकी तबियत खराब है। कौन जाने, उन्हें कब किस चीज की जरूरत पड़ जाय। आज ही वहाँ क्यों जाना चाहती है ?

कमला: मुझे अभी मालूम हुआ है कि मेरे एक रिस्तेदार बनारस में आये हुए हैं। मैं उनसे मिलना चाहती हूँ।

नवीन०—चुप रह ! मैंने कच्ची गोलियाँ नहीं खेली हैं। किसने तुझे खबर दी—तुलसी ने ? उसे घर से निकालना पड़ेगा। और तू समझ ले कि

जब तक तू मेरे घर में है, तुझे न तो अकेले नहाने जाना होगा, न रिश्तेदारों को खोज-खबर में।

तुलसी को घर से निकाल दिया गया और दूसरे नौकरों को कमला से बातचीत न करने की चेतावनी दे दी गई।

जब तक नलिनाक्ष का ठीक पता न लगा था, कमला धीरज धारे थी। लेकिन अब उसकी आत्मा बेचैन हो उठी। उसके पति उसी शहर में हों और वह दूसरे के घर रहे, यह उसे असह्य हो गया। काम से उसका मन उचटने लगा और नवीनकली की झिड़कियां बढ़ने लगीं।

"देख औरत," उसने कहा, "मुझे तेरी ये आदतें पसन्द नहीं। तू चाहे, तो उपास कर, लेकिन हमें भूखों मारने की कोशिश क्यों करती है? आजकल तेरा पकाया खाना खाने लायक नहीं रहता।"

"मैं अब ज्यादा काम नहीं कर सकती," कमला ने उत्तर दिया, "मैं कर नहीं पाती। मुझे जाने दो।"

"क्यों नहीं?" नवीनकाली ने कहा, "लोगों पर भलाई करने का आजकल यही नतीजा होता है। तेरे लिये मैंने अपने बरसों पुराने बूढ़े नौकर को निकाल दिया। जाने कहां गया होगा? तू अपने को सच्चा ब्राह्मण बताती है। शर्म नहीं आती कि आकर कह दिया, 'मुझे जाने दीजिये!' जरा भागकर देख कि पुलिस क्या करती है? मेरा बेटा मजिस्ट्रेट है। उसके कहे भर से कितनों को फांसी हो चुकी है। तुम हम लोगों से मनमानी नहीं कर सकती।"

कमला को कोई उपाय न सूझा। जब आजीवन आनन्द उसे अपनी पहुँच तक, जान पड़ा, तभी उसके हाथ बँधे थे। भाग्य ने उसके साथ कैसा उपहास किया। चार दीवालों में आबद्ध अपनी गुलामी की जिंदगी उसे असह्य हो उठी। दिन भर का काम-काज खत्म करते ही वह शाल ओढ़कर बगीचे की ठंडी हवा में घूमती, चारदिवारी के करीब

खड़े होकर शहर जाने वाले रास्ते पर टकटकी लगाकर देखती, भक्ति की आकुल-कामना से प्रेरित वह कल्पना के सहारे उस घर की खोज में निकल जाती, जिसे उसने कभी देखा नहीं था। वह घंटों इस तरह अचल खड़ी रहती। फिर गम्भीर आराधना के भाव में वह धरती पर नमन करती और अपने शयन-कक्ष में लौट आती।

लेकिन जल्दी ही उसका इतना संतोष, उसकी इतनी स्वच्छंदता उससे छीन ली गई। एक साँझ दिन का काम हो जाने के बाद नवीनकाली ने कमला को बुलवाया। नौकर कहता आया कि महराजिन का पता नहीं है।

नवीनकाली ने लेम्प उठाया और सारा घर, ऊपर-नीचे ढूँढ डाला, लेकिन कमला का कहीं पता न चला। वह अपने पति मुकुंद बाबू के पास गई और बोली कि जान पड़ता है, कमला भाग गई। नयन आधे मूँदे, हुक्के के कश लेते हुये मुकुन्द बाबू ने समाचार शांत मन से ग्रहण किया, और ऊँघते हुये कहा, "बड़ी नासमझ औरत है। कुछ साथ तो नहीं ले गई?"

"जो शाल उसे ठंड से बचाव के लिये दिया गया था, वह उसके कमरे में नहीं है और क्या चीज़ गई है, मैंने देखा नहीं।"

उसके पति के कहे मुताबिक एक नौकर लालटेन लेकर पुलिस को खबर देने गया। इस बीच कमला शयन-कक्ष में आई, तो नवीनकाली कमरे की चीजों को यह देखने के लिये उलट-पुलट रही थी कि और क्या क्या चोरी गया है?

कमला को देखते ही वह चिल्लाई, "आखिर क्या करने पर तुली है? अभी कहाँ गई थी?"

"काम खत्म करके जरा बगीचे में गई थी।"

नवीनकाली के क्रोध का पारा चढ़ गया। जो मन में आया, वह कह गई। दरवाज़े के पास नौकर इकट्ठे होकर सुन रहे थे।

नवीनकाली कितना ही तूफान मचाये, कमला कभी आँख में आँसू न आने देती थी। इस बार भी वह मूरत की तरह शांत रही, कुछ न बोली। जब नवीनकाला का क्रोध जरा ठंडा पड़ा, तभी उसने कहा, "शायद आप मुझसे असंतुष्ट है, तब मुझे चले जाने दीजिये।"

"जाने जरूर दूँगी। तू यह न समझे कि तुझ जैसे कृतघ्न जीव को अब आगे खाने-पहिनने दूँगी। लेकिन जाने के पहले तुझे बता दूँगी कि किससे पाला पड़ा है।"

कमला ने फिर कमरे के बाहर रहने का साहस नहीं किया। वह कमरे में बंद मन को यही धीरज देती कि उसके दुख-दर्द चरम सीमा पर पहुँच गये हैं और भगवान उसे अब अवश्य छुटकारा देंगे।

अगले दिन दो नौकरों के साथ मुकुंद बाबू घूमने निकल गये। भीतर से दरवाज़ा बंद था। साँझ हो चली थी कि बाहर से किसी ने मुकुन्द बाबू के घर पर आवाज़ दी।

नवीनकाली चौंक पड़ी।

"देख तो बुधिया, डाक्टर नलिनाच आये हैं।" बुधिया का कहीं पता नहीं था, इसलिये उसने कमला से कहा।

"जल्दी जाकर दरवाजा तो खोल दे। डाक्टर से कह कि मालिक घूमने गये हैं, आते ही होंगे। कहना कि दो घड़ी ठहर जायँ।"

लालटेन लेकर कमला नीचे गई। उसके अंग काँपने लगे। हृदय धड़कने लगा, उसके हाथ ठंडे पड़ गये थे। उसे डर लगा कि घबराहट में दृष्टि धुँधली न पड़ जाय।

उसने साँकल खोली, घूँघट नीचा किया, द्वार खोला और नलिनाच के सामने देहली पर खड़ी हो गई।

"मुकुंद बाबू घर पर हैं?" नलिनाच ने पूछा।

"नहीं, भीतर बैठिये," कमला ने कहा।

नलिनाक्ष कमरे में आकर कुर्सी पर बैठे ही थे कि बुधिया ने आकर वही बात कही, जो कमला कह चुकी थी।

कमला के आनन्द का पारावार नहीं था। वह दालान में ऐसी जगह पहुँची, जहाँ से उसे नलिनाक्ष का स्पष्ट दर्शन होता था, और बैठ गई कि हृदय का तूफ़ान शांत हो पाए। धड़कते हृदय और तीखी ठंड ने उसके सारे शरीर में कँपकँपी भर दी।

एकाकी तैल-दीप की आवर्त रोशनी में नलिनाक्ष चिंतामग्न बैठे थे और दालान के अँधेरे में बैठी कमला उन्हें इकटक निहार रही थी। आँसू लगातार उमड़ रहे थे। उसकी दीठ धुँधली हो रही थी, लेकिन उसने एकदम आँसू पोंछ लिये। उसने आत्मा की समस्त एकाग्रता निगाह में ऐसे उँडेल दी कि उसे लगा, मानो नलिनाक्ष उसकी चुम्बक शक्ति से खिंचकर उसके अस्तित्व का केन्द्र बन गये हों। उनकी प्रशस्त भौंहों और प्रशान्त मुख पर प्रकाश पड़ रहा था। उनकी मुद्रा-रेखा कमला के हृदय पर ऐसे प्रभाव डाल रही थी कि धीरे धीरे उसका सारा शरीर अचेतन होकर मानों आसपास के वातावरण में घुल गया। आवर्त प्रकाश में दीप्त उनके मुख के सिवा उसकी आँखों के आगे कुछ नहीं था। शेष सभी असत्य था, उसके आसपास की प्रत्येक चीज़ मिटकर उसी एकभाव में अंतर्निहित हो रही थी।

कमला अर्धचेतन हो गई। जब चेतना लौटी, तो उसने देखा कि नलिनाक्ष खड़े होकर मुकुन्द बाबू से बात कर रहे हैं। किसी भी घड़ी दालान में आकर वे उसे झाँकते देख सकते हैं, यह सोचकर कमला भागी और चौके में जा पहुँची। चौके का दरवाज़ा आँगन में खुलता था, जहाँ से बाहर जाने वाले को निकलना होता था।

जलता तन-मन लिये कमला इंतज़ार में खड़ी रही। सीढ़ियों पर उतरते पैरों की आवाज सुनाई दी। कमला दौड़कर अँधेरे दरवाजे पर खड़ी हो गई। बुधिया लेम्प लिये नलिनाक्ष के आगे आगे निकली। कमला ने कवियों की भाषा में मन ही मन कहा :

"स्वामी, आपकी दासी दूसरे के घर में गुलाम है, आप उसका ख्याल किये बिना जा रहे हैं।"

मुकुन्द बाबू ब्यालू की तलाश में बैठकखाने से निकले और कमला कमरे में दाखिल हुई। नलिनाच की कुर्सी के सामने गिरकर उसने चरण-रज मस्तक पर ली और चूमी! आह, उसे उनकी सेवा करने का अवसर नहीं था। असीम भक्ति के वश में उसका हृदय बेचैन था।

अगले दिन कमला को मालूम हुआ कि डाक्टर ने मुकुन्द बाबू को पश्चिम की किसी ठंडी जगह में जाने की सलाह दी है। यात्रा की तैयारियाँ शुरु हो गई थीं।

कमला सीधी मालकिन के पास गई।

"मैं बनारस न छोड़ सकूँगी," उसने कहा; लेकिन उसका आग्रह व्यर्थ गया। वह कमरे में बन्द होकर रोती रही और प्रार्थना करती रही।

४६

बेटी से बात करने के बाद की रात अन्नदा बाबू को फिर वैसा दर्द शुरू हुआ, जैसा कलकत्ते में हुआ था। रात बड़ी वेदना में कटी और भोर में जब थोड़ा आराम मिला, तो वे सड़क की ओर देखते हुये बगीचे की हेमन्ती धूप में कुर्सी डालकर बैठ गये और हेमनलिनी चाय बनाने में लग गई। उनके चेहरे पर व्यथा की शिकनें और पीलापन था, आँखों के नीचे काली लकीरें थीं और रात ही भर में जैसे उन पर बुढ़ापा छा गया था।

जितनी बार हेमनलिनी की आँख पिता के जर्जर चेहरे पर पड़ती, उसे पश्चाताप का आघात लगता। पिता की व्यथा का कारण वह उनके शादी के प्रस्ताव को, अपनी इन्कारी मानती थी और उसकी आत्मा दुखी होती थी कि वृद्ध महाशय की शारीरिक कमजोरी उनकी मानसिक पीड़ा के कारण है। उसका समस्त ध्यान पिता का दुख दूर करने का कोई उपाय सोचने में लगा था, लेकिन वह समस्या तनिक भी सुलझा नहीं पाती थी।

अक्षय और चाचा के अचानक आने से वह चकित रह गई और वहाँ से भाग जाने को थी कि अक्षय ने रोका :

"जाओ मत। ये अपने देश के सज्जन हैं—गाजीपुर वाले चक्रवर्ती, जिनका इस तरफ बड़ा नाम है। ये तुमसे कुछ विशेष बात कहने आये हैं।"

आगन्तुक अन्नदा बाबू की कुर्सी के पास पत्थर के चबूतरे पर बैठ गये, और चाचा ने अपना मतलब बताना शुरू किया।

"मुझे मालूम हुआ है" उन्होंने कहना शुरु किया, "कि आप रमेश बाबू के पुराने मित्र हैं, इसलिये मैं आया हूँ कि उनकी पत्नी की कुछ खोज-खबर आप दे सकें।"

अन्नदा बाबू इस बात से आश्चर्य-चकित रह, गये। "रमेश की पत्नी!" जब वे अपने को सँभाल पाये, तो बोले।

हेमनलिनी की पलकें झुक गईं और चक्रवर्ती ने स्टीमर पर मुलाक़ात से लेकर अदृश्य होने तक का रमेश का सारा हाल कह सुनाया। अंत में वे कहने लगे, "मैं अब तक समझ नहीं पाया हूँ कि प्यारी बेटी को हमारा दिल तोड़कर जाने की क्या जरूरत पड़ी? उसके जाने के बाद से मेरी शैल की आँखें कभी नहीं सूखी।" और स्मरण करके चाचा अधीर हो उठे।

"उसे क्या हुआ! वह कहाँ गई?" अन्नदा बाबू ने व्यग्रता से पूछा।

"अक्षय बाबू," चाचा ने कहा, "तुमने सब सुन लिया है। तुम्ही बता दो। मेरा तो ख़्याल करने मात्र से हृदय टूटता है।"

अक्षय ने सारी कहानी विस्तार से दुहराई। अपनी तरफ़ से बिना कुछ जोड़े उसने सफलतापूर्वक रमेश की काली तसवीर खींच दी।

सुनने के बाद अन्नदा बाबू ने दृढ़ता से कहा, "यह बात सत्य हो हमारे लिये नई है। कलकत्ता छोड़ने के बाद रमेश ने कभी एक पंक्ति भी हमें नहीं लिखी।"

"जी हाँ," अक्षय बोला, "हमें तो अभी तक पता भी न था कि रमेश ने कमला से ब्याह कर लिया। एक बात आपसे पूछूँ? क्या आप निश्चित जानते हैं कि कमला रमेश की पत्नी है, उसकी बहिन या और कोई रिश्तेदार नहीं।"

"आपका क्या मतलब है, अक्षय बाबू?" चाचा ने कहा, "अवश्य ही वह उसकी पत्नी थी, और श्रेष्ठ पत्नी।"

"अचरज है कि पत्नी जितनी गुणशालिनी हो, उसके साथ उतना ही बुरा बर्ताव हो।" अक्षय ने कहा, और अर्थपूर्ण निश्वास ली।

"सत्य ही बड़ी करुण कथा है," सिर पर हाथ फेरते हुए अन्नदा बाबू ने कहा, "लेकिन अब हो क्या सकता है, इसलिये रोने से क्या फायदा?"

"देखिये बात यह है," अक्षय ने कहा, "मुझे विश्वास है कि कमला ने आत्म-हत्या नहीं की। मुझे लगता है कि वह केवल घर से भाग गई है। तभी ये सज्जन और मैं खोजने के लिए बनारस आये हैं। आप कुछ नहीं बता सके रहे। फिर भी हम लोग कुछ दिन ठहरकर यहाँ पूछ-ताछ करेंगे।"

"रमेश कहाँ है?" अन्नदा बाबू ने पूछा।

"वह हमें बिना पता दिये चला गया।" चाचा ने उत्तर दिया, और अक्षय ने कहा, "मैंने उसे देखा नहीं है, लेकिन मुझे मालूम हुआ है कि वह अलीपुर में वकालत करेगा। रमेश की उम्र का आदमी वियोग को लेकर कब तक बैठा रहेगा। (चक्रवर्ती से) चलिये महाशय, हम शहर में पूछताछ कर डालें।"

'तुम हमारे साथ नहीं ठहरोगे, अक्षय?" अन्नदा बाबू ने पूछा।

"निश्चित कुछ नहीं कह सकता।" अक्षय ने जवाब दिया, "मुझे यह काम पूरा करना है, अन्नदा बाबू।"

अक्षय और चाचा चले गये। अन्नदा बाबू पुत्री के चेहरे का भाव पढ़ने की कोशिश बेचैनी से करने लगे। अपने प्रति पिता की चिन्ता जानने के कारण हेमनलिनी ने अपने को सँभालने की बड़ी कोशिश की।

अन्नदा बाबू ने रमेश के विषय में हेमनलिनी से बात करना चाहा, लेकिन हेमनलिनी उनकी बात काटकर बोल उठी, "धूप तेज हो रही है, आप भीतर आ जाइये।" और उन्हें विरोध का मौका दिये बिना भीतर ले आई। "अब आप अखबार पढ़िये, मैं थोड़ी देर में आई।" हेम की इच्छानुसार अन्नदा बाबू ने अखबार पढ़ने की बड़ी कोशिश की, लेकिन उनके विचार समाचार पत्र पर न जम सके। अंत में वे पुत्री की खोज में निकले। समय अधिक नहीं हुआ था, लेकिन हेमनलिनी के कमरे का द्वार बंद था। इसलिये वे चुपचाप दालान में आकर टहलते रहे। उन्होंने फिर कोशिश की, लेकिन द्वार बंद था। दालान में आकर वे थके से कुर्सी पर बैठकर नलिनाच के आने तक सिर सहलाते रहे।

अन्नदा बाबू की जाँच करके और दवा बताकर डाक्टर ने हेम से पूछा कि क्या रोगी को कोई मानसिक चिंता है?

हेम ने स्वीकारात्मक सा उत्तर दिया।

"जहाँ तक हो," नलिनाच ने कहा, "इन्हें चिंता से दूर रहने की जरूरत है। मेरी मा के साथ भी यही अड़चन है। कल दिन में कोई बात हो गई और वे सारी रात जागती रहीं।"

'आप भी कुछ सुस्त नजर आते हैं।" हेमनलिनी ने कहा।

'मैं तो भला-चंगा हूँ। मुझे कभ कुछ नहीं होता। कल सारी रात जागना पड़ा, इसलिये सुस्ती जान पड़ती होगी।"

हेम: अच्छा होता कि आपकी मा की सतत सेवा के लिये कोई स्त्री होती।

हेमनलिनी नें यह बात अपने बारे में सोचे बिना कह दी थी और उसके कथन में कोई गलती न थी, लेकिन कहते साथ ही उसका चेहरा लज्जा से आरक्त हो गया, क्योंकि उसे ख्याल आया कि कहीं नलिनाक्ष इस कथन का कोई अर्थ न लगा ले। हेम की घबराहट देखकर स्वयं नलिनाक्ष को बरबस अपनी मा के प्रस्ताव की याद हो आई।

अपने अनिश्चित कथन को छिपाने के लिये हेमनलिनी ने एकदम कहा, "उनकी सेवा के लिये क्या एक दासी की आवश्यकता नहीं है ?"

"मैंने कितनी बार कहा, लेकिन वे सुनती ही नहीं," नलिनाक्ष बोला, "धार्मिक पवित्रता का वे बड़ा ध्यान रखती हैं और इस विषय में नौकर पर उन्हें विश्वास नहीं रहता।"

विषय का अधिक न बढ़ाकर हेमनलिनी ने नलिनाक्ष से जाते जाते कहा, "क्या आप कल सुबह आ सकेंगे ? आप मेरी मदद करते हैं, यह ज्ञान मुझे अतिरिक्त बल देता है।"

नलिनाक्ष के स्वर और कथन के प्रशान्त बल में हेमनलिनी ने आवश्यक शांतिदा प्रभाव पाया। उनके जाने के बाद भी उनका प्रभाव उस पर बना रहा।

हेमनलिनी के विचार अब नलिनाक्ष की मा की ओर गये। वृद्धा की बेचैनी और अनिद्रा का उसे ध्यान था। प्रस्तावित विवाह के समाचार का आघात बीत चुका था और इस विचार से सकुचने की प्रवृत्ति हेमनलिनी में अब न थी। उसे लगा कि वह नलिनाक्ष पर आश्रित है, उनमें अनुरक्त है। केवल प्रेम-सूचक बेचैन व्यथा का उसमें अभाव है।

रमेश के इतिहास का जो अध्याय उसे सबेरे सुनाया गया था, उसका आघात इतना तीव्र था कि हेमनलिनी को उससे बचने के लिये तमाम शक्ति का आह्वान करना पड़ा था। अपनी वर्तमान मन:स्थिति में उसे रमेश

के प्रति दुखी होना गलत जान पड़ा। उसकी प्रवृत्ति रमेश का न्याय करके उसे दंडित करने की नहीं थी। उसकी मन-प्रेरणा रमेश का ख्याल मन से निकाल देने की थी। जब उसे कमला के भाग्य का ख्याल आया, तो वह काँप उठी, लेकिन फिर उसने सोचा कि इस दुर्भागी आत्महत्या से उसका क्या सम्बंध ? फिर शर्म, पश्चाताप और करुणा उस पर छा गये और उसने प्रार्थना की : हे प्रभु, जब मैंने कोई पाप नहीं किया, तो ये विचार क्यों मुझे परेशान करते हैं ? मुझे इन सांसारिक बंधनों से मुक्त कर दो। मैं और कुछ नहीं चाहती।"

यद्यपि अन्नदा जानना चाहते थे कि रमेश और कमला की कहानी का हेमनलिनी पर क्या असर हुआ, लेकिन इस विषय पर उससे बात करने का उन्हें साहस न हुआ। दालान में जब वह सीने-पिरोने में लगी हुई विचारों में मग्न बैठी थी, तब वे उसके पास पहुँचे, लेकिन उसके अनमनेपन ने उन्हें फिर लौटा दिया। रात को डाक्टर का बताया पाउडर मिला दूध पीते हुये कहीं उन्हें कुछ कहने का मौका उसके बाजू में बैठकर मिला। उन्होंने कमरे को बंद कराके साधारण तौर से कहा: "वे महाशय, जो सुबह मिलने आये थे, अच्छे तो हैं।" हेमनलिनी ने कोई बात नहीं कही, और बात शुरू करने का अन्य तरीका न पा कर उन्होंने सीधे कहा:

"मुझे रमेश के आचरण पर सत्य ही दुख हुआ। उसके बारे में हजार बातें सुनी थीं, लेकिन मुझे विश्वास कभी नहीं हुआ था, फिर भी... ..."

"इस विषय में बात न कीजिये, पिताजी," हेमनलिनी ने आग्रह किया।

पिता ने कहा, "देखो बेटी। एक तीव्र निराशा हो जाने से हमें जीवन की अन्य बहुमूल्य चीजों को फेंक नहीं देना चाहिये। हो सकता है कि दुख के बीच जीवन को सुखी और उपयोगी बनाने के तरीके से तुम वाकिफ़

रह जाओ, लेकिन याद रखो, तुम्हारे भले को इच्छा के सिवाय मेरी और कोई इच्छा नहीं है। मैं जानता हूँ कि तुम्हारा सुख, तुम्हारा भला कहाँ है, इसलिये मैं कहता हूँ कि मेरे आये प्रस्ताव को अस्वीकार न करो।"

हेमनलिनी की पलकें चंचल हुईं और वह बोली: "ऐसा न कहिये, पिताजी। आपका कोई प्रस्ताव मैं अस्वीकार न करूँगी। आप आज्ञा दीजिये, मैं पालन करूँ। इतना ही चाहती हूँ कि आप मुझे हृदय को शंका-मुक्त करके अपने को तैयार कर लेने का मौका दीजिये।"

अन्नदा बाबू कमरे से बाहर निकले। बेटी के कपोल आँसू से भीगे थे। उन्होंने हलके अपना हाथ उसके सिर पर रखा; कहा उन्होंने कुछ भी नहीं।

अगली सुबह छाया में बैठे पिता-पुत्री चाय पी रहे थे कि अक्षय आया।

अन्नदा बाबू की आँखों के अनकहे प्रश्न के उत्तर में उसने कहा, "उसका कोई पता अभी तक नहीं चला।" और चाय का एक प्याला स्वीकार करते हुये अपने स्थान पर बैठ गया। फिर वह कहता गया, "रमेश बाबू और कमला की कुछ चीजें अभी तक चक्रवर्ती के यहाँ हैं। और वे समझ नहीं पाते कि उन्हें कहाँ भेजें? अगर रमेश बाबू को आपके मौजूदा निवास का पता चला, तो वह सीधा यहीं आयेगा। इसलिये अगर... ... ..."

"मैं समझता था कि तुम बुद्धिमान हो, अक्षय!" अन्नदा बाबू ताव में भड़क उठे, "रमेश यहाँ क्यों आवेगा और मैं उसके सामान की जिम्मेदारी क्यों लूँगा?"

"देखिये, रमेश बाबू ने जो भी किया हो, वह अब सच्चे हृदय से अनुतप्त है और उसके पुराने दोस्तों का यह फ़र्ज है कि वे उसके साथ सहानुभूति जतायें। क्या आप सोचते हैं कि उसे एकदम अलग ही कर देना चाहिये।"

"इस बात का जिक्र करते हुये तुम हमें नाराज़ कर रहे हो, अक्षय ! मैं चाहता हूँ कि फिर कभी तुम इस विषय को मेरे सामने न कहना ।"

"आपको नाराज़ नहीं होना चाहिये, पिताजी !" हेमनलिनी ने समझाते हुये कहा, "आप तबियत खराब करेंगे । अक्षय बाबू को, जो वे कहना चाहें, कहने दीजिये । वे कोई गलती नहीं कर रहे ।"

"कभी न कहूँगा ! अक्षय बोला, "मैं क्षमा चाहता हूँ । मैं समझा नहीं था ।"

● ५०

मुकुन्द बाबू के मेरठ जाने की घड़ी आ पहुँची । सारा घर साथ जाने को था और सारा सामान बाँध-बूँध कर तैयार था । कमला मना रही थी कि किसी योगायोग से यात्रा रुक जाय और चाह रही थी कि डाक्टर नलिनाक्ष अपने रोगी को देखने अंतिम बार आ जाँय, लेकिन उसकी दोनों उम्मीदें निराशा रह गईं ।

नवीनकाली को डर था कि यात्रा की तैयारी की गड़बड़ी में महराजिन का भाग निकलने का मौका न मिल जाय, इसलिये कुछ दिन से उसने उसे आँखों से ओझल नहीं होने दिया था और उसे पेटियाँ बाँधने में बड़ा व्यस्त रखा था ।

नितान्त निराशा के बीच उसे एक ही आशा थी कि वह बहुत अधिक बीमार हो जाय, जिससे नवीनकाली को उसे पीछे छोड़ने के लिये मजबूर होना पड़े । उसे तब किसी डाक्टर विशेष के बुलाये जाने संभावना थी । बीमारी का अंत संभवतः घातक हो, लेकिन उसने आँखें मूँद कर अपने मरण की कल्पना की कि, वह अपने उपचारक के चरणों में श्रद्धापूर्वक गिर कर संतोषपूर्वक मर रही है ।

उस रात नवीनकाली ने कमला को अपने पास बुलाया। वह सुबह उसे अपनी गाड़ी में स्टेशन ले गई। मुकुन्द बाबू दूसरे दर्जे में बैठने वाले थे और नवीनकाली और कमला जनाने इंटर डब्बे में बिठाली गईं।

यथा-समय गाड़ी बनारस से छूटी। सकी आवाज संहार पर तुले हुये पागल हाथी की उच्छ्वास जैसी थी और कमला को लगा कि मानो क्रुद्ध जानवर के दाँत उसके प्राणों को छेद रहे हों।

रेल जब पुल पर से गुजरी, तो कमला खिड़की में से झुककर गंगा किनारे फैले हुए पवित्र नगर के अंतिम दर्शन करने लगी।

बनारस आँखों से ओझल हो गया। कमला अपनी जगह पर बैठ गई और शून्य में चुपचाप निहारने लगी।

अंत में मुगलसराय आया, लेकिन जंक्शन और विशाल भीड़ की हलचल कमला को सपने के समान झूठी जान पड़ी। वह मशीन की तरह एक गाड़ी से उतर दूसरी गाड़ी में जा बैठी।

मेरठ की गाड़ी जानेवाली ही थी कि कमला को अचरज में डालते हुए एक परिचित आवाज में किसी ने कहा, "मा!" उसने मुड़कर प्लेटफार्म की ओर देखा, तो उमेश खड़ा था। उसका मुख आनन्द से प्रकाशित हो गया।

"तुम हो, उमेश," वह चिल्ला उठी।

उमेश ने गाड़ी का दरवाजा खोला और चण भर में कमला प्लेट-फार्म पर आ गई। अगाध श्रद्धा के भाव से वह उसके चरणों में गिर पड़ा और उसने उसकी चरण-रज अपने मस्तक पर ली। वह आनन्द में फूला न समाता था।

अगले चण गार्ड ने दरवाजा बंद कर दिया।

"क्या कर रही है?" नवीनकाली कमला से चिल्लाई, "गाड़ी चली, भीतर आजा!" लेकिन बात कमला के वधिर कानों पर पड़ी।

और गाड़ी धीरे धीरे स्टेशन के बाहर हो गई।

उमेश गाजीपुर से आ रहा था, उसने गाजीपुर के सब हाल कमला को सुनाये। कमला की इच्छा से उमेश अपने बचा रखे पाँच रुपयों से बनारस के दो टिकिट ले आया।

बनारस की गाड़ी खड़ी थी। कमला को अपनी जगह बिठाकर वह बगल के डिब्बे में बैठ गया। बनारस पहुँचकर उमेश ने कमला को चक्रवर्ती चाचा के घर उतारा और चाचा को आवाज दी।

"क्या उमेश है? तू कहाँ से आ गया रे?" कहते हुए अगले क्षण हाथ में हुक्का लिये हुए चाचा बाहर आये।

अत्यंत चकित होकर कमला ने चक्रवर्ती को हार्दिक अभिवादन किया। दो-एक क्षण चाचा स्तम्भित रह गये। क्या कहा, हुक्का कहाँ रख दिया, इसकी सुध उन्हें न रही।

अंत में ठोडी पकड़कर कमला के शर्माते मुख को ऊपर उठाते हुए, उन्होंने कहा, "मेरी प्यारी बेटी, मेरे पास वापिस आ गई है। ऊपर आओ, बेटी!" और उन्होंने शैल को आवाज दी, "देख तो शैल, यह कौन आया है!"

शैलजा कमरे से दौड़कर छत पर आई और जीने पर आ खड़ी हुई। कमला ने गिरकर उसके पैर छुये। शैलजा ने उसे हृदय से चिपटा लिया और उसके मस्तक को चूम लिया। उसकी आँखों से आँसू की धार लग गई। उसने कहा, "मेरी प्यारी, हमें छोड़कर इस तरह भाग गई। क्या यह न जानती थी कि हमारा दिल टूट जायगा।"

"यह बात भूल जाओ, शैल," "चाचा ने कहा, "जरा कमला के नाश्ते का इन्तजाम करो।"

इसी क्षण बाँहें फैलाये और आनन्द में चीखती 'मौसी, मौसी' कहती हुई उमी आ गई।

कमला ने उसे अपनी बाँहों में खींच लिया, अपने वक्ष से लगा लिया और उसपर चुम्बन आँक दिये। कमला की अस्त-व्यस्त केश-राशि और गंदी

वेष-भूषा मे शैलजा को बड़ी व्यथा हुई। उसने उसे नहलाया और अपने उत्तम वस्त्र पहिनाये।

बात यह थी कि जब चाचा ने अक्षय की सलाह मानकर बनारस जाने की तैयारी की, तो शैलजा ने साथ चलने का आग्रह किया। चाचा को अनुमति देना पड़ी, और उनकी पुत्री यात्रा में उनके साथ रही। बनारस उतरकर उन्होंने देखा कि उसी गाड़ी से उमेश उतरा है। दोनों ने उसके आने का मतलब पूछा। जान पड़ा कि उसका भी यही इरादा था, जो इन दोनों का। लेकिन उमेश अब गाजीपुर के मकान के लिये बड़ा आवश्यक हो गया था। पिता-पुत्री ने इसलिये उसे लौट जाने के लिये तैयार कर लिया। बाद की बात पाठक जानते हैं। कमला के बिना गाजीपुर की जिंदगी असह्य पाकर उमेश को एक दिन भाग निकलने का मौका मिला, जब वह बाजार सौदे के लिये भेजा गया। जो सौदे के लिये पैसे मिले थे, उन्हें लेकर उसने गंगा पार की और और रेलवे स्टेशन पर पहुँचा। खबर सुनकर चाचा को बड़ा क्रोध आया था, लेकिन बाद की घटनाओं को देखते हुये वह क्रोध का पात्र नहीं था।

● ५१

दिन में अक्षय चक्रवर्ती के पास आया, लेकिन कमला के प्रत्यागमन के बारे में उससे कुछ नहीं कहा गया, क्योंकि अब तक चाचा जान चुके थे कि रमेश को अक्षय के प्रति कोई प्यार न था।

किसीने कमला के भाग जाने के बारे में कोई बात न की। रात कमला शैलजा के पास सोई। शैल ने उसकी गर्दन में हाथ डाला, उसे अपने वक्ष पर खींचा और दूसरे हाथ से सहलाया। यह प्यारभरा स्पर्श मानों अपनी कथा कहने के लिये कमला को निमंत्रण था।

कमला और शैल दोनों उठ बैठीं और कमला ने शादी के बाद से आगे का सारा किस्सा कह सुनाया।

जब उसने कहा कि शादी के पहले या शादी के बाद उसने कभी पति को नहीं देखा, तो शैल उसे रोककर बोली :

"तुम जैसी मूर्ख लड़की मैंने नहीं देखी। जब मेरी शादी हुई, मैं तुमसे छोटी थी, लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि मैंने उन्हें देखा न हो।"

"यह लज्जा नहीं थी, दीदी!" कमला कहती गई, "देखो, मेरी शादी की उम्र बीत चुकी थी, कि अचानक मेरी शादी तय हो गई और मेरी सहेलियों ने मुझे खिझाना शुरू किया। इसलिये यह दिखाने के लिये कि इस उम्र में पति पाकर मैं अपने को भाग्यशालिनी नहीं मानती, मैंने उनकी तरफ आँख भी नही उठाई। मुझे तो उनके बारे में सोचना भी निर्लज्जता जान पड़ी। उसी का दंड अब भोग रही हूँ।"

कमला कुछ मिनट चुप रही, फिर उसने कहना शुरू किया, "मैं तुम्हें बता चुकी हूँ, कि शादी के बाद जब नावें डूबीं, तो हम लोग किस प्रकार बचे, लेकिन तब मैं यह नहीं जानती थी कि बचाने वाला, जिसके हाथों में मैं पति समझकर पड़ी थी, मेरा पति नहीं था।"

शैलजा चकित होकर चौंक उठी। वह एकदम कमला के बाजू में गई और उसकी गर्दन में हाथ डालकर बोली, "हाय, बेचारी! मैं अब समझी। कैसी डरावनी बात हो गई।"

"हाँ दीदी," कमला ने कहा, "डरावनी तो थी! सोचती हूँ कि डूब गई होती, तो इस सब से बच जाती!"

"रमेश बाबू को भी सचाई का पता नहीं लगा," शैलजा ने पूछा।

"शादी के बाद एक दिन उन्होंने मुझे 'सुशीला' कहकर पुकारा। मैंने कहा: जब मेरा नाम 'कमला' है तो आप सुशीला कहकर क्यों पुकारते हैं? मैं समझती हूँ कि उन्हें अपनी गलती महसूस हुई होगी। लेकिन उन दिनों का ख़्याल करके मैं किसी को आँखों में देख नहीं सकती।" और कमला फिर चुप हो गई।

धीरे-धीरे शैलजा ने उससे सारी कथा जान ली।

जब वह सब जान चुकी, तो उसने कमला से कहा, "तुम्हें यह भयानक जान पड़ता है, लेकिन मैं समझती हूँ कि तुम्हारा सौभाग्य था, जो तुम रमेश बाबू के हाथों पड़ीं। तुम कुछ भी कहो, रमेश बाबू के लिये मुझे दुख है।"

हेमनलिनी को लिखा रमेश का पत्र कमला के पास था। दूसरे दिन सुबह शैलजा ने अपने पिता से बात की और पत्र उन्हें दे दिया। पत्र पढ़कर वे बोले कि अब क्या करना चाहिये।

उमी को कुछ दिन से खाँसी, सर्दी है, पिताजी," शैल बोली, "मैं चाहती हूँ कि डॉ. नलिनाक्ष को बुला लिया जाये। उनके और उनकी मा के बारे में सुना बहुत है, लेकिन उन्हें देखा नहीं हैं।"

डाक्टर रोगी को देखने आये, तो शैल ने डाक्टर के दर्शन की बड़ी उत्सुकता जताई।

"आओ कमला," उसने कहा। लेकिन जो कमला नवीनकाली के घर में नलिनाक्ष के दर्शन की लालसा कठिनाई से दबा पाई थी, अब अपने पैर उठाने में भी शर्मा रही थी।

"कमला, मूर्ख" शैल चिल्लाई, "तुम्हारे लिये मैं वक्त बरबाद न करूँगी। उमी को अधिक तकलीफ़ नहीं है और डाक्टर अधिक देर न ठहरेंगे। तुम्हें मनाते बैठूँगी, तो मैं उन्हें न देख सकूँगी।" और वह प्रायः खींचती हुई कमला को दरवाजे तक ले गई।

नलिनाक्ष उमी के फेफड़े देखकर, दवा लिखकर चले गये।

"इतने दुर्भाग्य के बीच अब तुम्हारा भाग्योदय होने को है," शैल ने कहा, "धीरज से दो एक दिन और ठहरने की जरूरत है। हम सब प्रबंध कर रहे हैं। इस बीच डाक्टर उमी के लिये आते रहेंगे।"

इस बीच चक्रवर्ती ने क्षेमांकरी से इतना परिचय प्राप्त कर लिया कि एक दिन बेटे को बुलाकर क्षेमांकरी ने कहा, "नलिन, अपने मित्र चक्रवर्ती से फीस न लेना।"

चाचा हँस पड़े, "आज्ञा पानेके पहले ही वे अपनी मा के मन की बात कर देते हैं। उन्होंने मुझसे कुछ नहीं लिया। दाता में गरीब को परखने की क्षमता रहती है।"

पिता-बेटी अपनी योजना साधने में कुछ दिन और प्रयत्नशील रहे। फिर एक दिन चाचा ने कमला से कहा, "चलो बेटी, हम नहा आयें; आज दशाश्वमेध त्योहार है," शैल ने कारणवश साथ न दिया।

चाचा कमला को नहलाकर दूसरे रास्ते लौटे। रास्ते में उन्होंने सिल्क पहने, गंगाजल का घट लिये एक वृद्धा को जा मिलाया। चाचा ने कमला को उनके रास्ते में खड़ा करके कहा, "ये हैं डाक्टर बाबू की मा, इनके पैर छुओ।" कमला चकित रह गई, लेकिन दूसरे ही छिन उसने क्षेमांकरी के आगे गिरकर उनकी चरण-रज ली।

"अरे, यह कौन है?" क्षेमांकरी बोलीं, "ऐसी सुन्दर, मानों लक्ष्मी हो। और उन्होंने कमला का घूँघट उघारकर उसका विनत मुख देखा। "बेटी, तुम्हारा क्या नाम है?"

कमला के बोलने के पहले ही चाचा कह उठे, "हरिदासी। मेरे दूर के भाई की बेटी है। मामा-पिता इसके नहीं है और यह मुझ पर आश्रित है।"

"चलिये न, आप दोनों मेरे साथ घर चलिये;" क्षेमांकरी ने कहा।

घर में नलिनाक्ष नहीं थे। चक्रवर्ती कुर्सी पर बैठ गये और कमला पास ही नीचे। चक्रवर्ती ने कहना शुरू किया :

मेरी यह भतीजी बड़ी अभागनि रही है। शादी के दूसरे दिन इसके पति सन्यास लेकर चले गये और तब से इसने उन्हें नहीं देखा।

यह धर्म-कर्म की जिंदगी बिताना चाहती है, लेकिन मैं गाजीपुर में रहता हूँ इसलिये मैं आपकी मदद चाहता हूँ। अगर यह आपके यहाँ रह पाये, तो मेरे मन का भार उतर जायेगा और यह आपके लिये पुत्री जैसी रहेगी। अगर कभी आप उसे न रखना चाहें, तो मेरे पास गाजीपुर भेज सकती हैं। लेकिन मैं विश्वास दिलाता हूँ कि ऐसा मौका न आयेगा।"

"आपका प्रस्ताव ठीक है," क्षेमांकरी ने कहा, "इस जैसी लड़की का अपने पास रखना अच्छा होगा। आपने हरिदासी को मुझे सौंप दिया है और अब आपको किसी चिंता की जरूरत नहीं है।"

"फिर आप आज्ञा दें," चाचा बोले, "तो मैं हरिदासी को आपके पास छोड़ जाऊँ। लेकिन मैं जब-तब इसे देख जाया करूँगा। इसकी बड़ी बहिन भी है, जो आपसे मिलेगी।"

चाचा के जाते ही क्षेमांकरी ने कमला को करीब खींचा और कहा, "आओ बेटी, तुम्हें अच्छी तरह देख तो लूँ। अभी तो निरी बच्ची हो। तुम्हें छोड़कर चले जाना कैसा अन्याय है। सोचो तो कि दुनिया में ऐसे भी लोग हैं। मेरा विश्वास है कि वह लौटकर आवेगा।" फिर उसकी ठोड़ी पकड़कर बोलीं, "मुझे यही चिन्ता है कि तुम दिन भर कौन सा काम करोगी?"

"आपका सारा काम।"

"मूरख बच्ची! तू भी मेरे बेटे जैसी है, लेकिन एक बात बता कि जब तू मेरे साथ चौबीसों घंटे रहेगी, तो खीझना मत कि मैं सदा अपने बेटे की तारीफ़ करती रहती हूँ।"

कमला गम्भीर बनी रही, लेकिन उसका हृदय आनंद से विभोर था।

"सोच रही हूँ कि तुम्हें क्या काम करने दूँ।" क्षेमांकरी कहती गई, "सिलाई कर सकती हो?"

"बहुत नहीं।"

"मैं तुम्हें सिखाऊँगी, पढ़ सकती हो?"

"हाँ पढ़ तो सकती हूँ।"

"अच्छा" क्षेमांकरी ने कहा, "मैं अब चश्मे बिना देख नहीं सकती। तुम मेरे लिये पढ़ दिया करोगी?"

"मैंने रसोई और घर का काम सीखा है।"

"क्यों नहीं? आज से नलिन को मैं खाना न बनाने दूँगी और अपना प्रबंध न कर पाई, तो अपना सीधा-सादा खाना भी तुम्हीं से बनवा लिया करूँगी। आओ बेटी, तुम्हें भंडार-गृह और चौका दिखा दूँ।" और वे कमला को अपने साथ ले गईं।

कमला को अपने मन की बात कहने का मौका मिला। उसने धीमे से कहा, "आज मुझे खाना बनाने दो, मा।"

क्षेमांकरी मुसकराईं। "भंडार और भोजनालय गृहणी का राज्य है। दुनिया में मैंने बहुत कुछ छोड़ दिया। लेकिन ये दोनों मेरी प्रतिदिन की जिंदगी से बँधी हैं। अच्छी बात है, आज तुम्हीं खाना बनाओ। चाहो, तो दो तीन दिन और बनाना। मुझे विश्वास है, धीरे धीरे तुम घर का सारा काम करने लगोगी, तब मुझे पूजापाठ के लिये अधिक वक्त मिलेगा।"

भोजन-भंडार की समस्त व्यवस्था समझाकर क्षेमांकरी अपने पूजन-गृह में चली गईं और लड़की को अपने गृहकार्य की योग्यता का सुबूत देने के लिये छोड़ गईं।

अभ्यस्त तरीके से रसोई के सारे इंतज़ाम करके कमला ने कछोटा मारा, बालों का जूड़ा बाँधा और काम में लग गई।

नलिनाक्ष की आदत थी कि घर आकर कुछ और करने के पहिले मा को जरूर देखता था, क्योंकि मा के स्वास्थ्य की उसे सदा चिंता बनी रहती थी। उस सुबह चौके की खुशबू से उसने अंदाज लगाया कि मा रसोई में गी और वह जाकर दरवाजे पर खड़ा हो गया।

बादले आसमान और रात की अस्थिरता पर टकटकी बाँधे कमला की छाती में कैसी हलचल जाग उठी था, वह समझ न पाई। हो सकता है, भय हो; हो सकता है, उल्लास हो।

प्रकृति के कोप में कोई ऐसी दुर्दम शक्ति, निर्बंध आजादी थी, जिसने उसके प्राणों के सोये तार जगा दिये। प्रकृति के विद्रोह की उग्रता ने उसे मोह लिया था। लेकिन किसके खिलाफ़ यह विद्रोह था, कमला जान नहीं पाई। उत्तर अव्यक्त था, वैसे ही जैसे उसके वक्ष में उठा तूफान।

२७

दूसरे दिन तूफान थम चला था, लेकिन उसमें ज़ोर बाकी था। कप्तान बेचैनी से आसमान की तरफ़ देख रहा था कि लंगर गिराया जाय, या नहीं।

चक्रवर्ती बड़े सुबह रमेश के केबिन में पहुँचे। रमेश अपने बिस्तर पर था, चक्रवर्ती को देखकर उठ बैठा। यह देखकर कि रमेश इस कमरे में सोया है, और रात की घटना का ख्याल करके वृद्ध महाशय ने मन ही मन सब समझ लिया। "शायद रात तुम नहीं सोये थे?" उन्होंने प्रश्न किया।

रमेश ने प्रश्न बरकाना चाहा। "कैसी बुरी सुबह है," उसने कहा. "आपकी रात कैसी कटी, चाचा?"

"रमेश बाबू," चक्रवर्ती ने प्रत्युत्तर दिया, "तुम मुझे मूर्ख समझते होगे। जिंदगी के इतने साल कुछ बिना उलझाने सुलझाने नहीं काटे हैं, लेकिन तुम एक ऐसी उलझन जान पड़ते हो, जिसे सुलझा नहीं पाता।"

रमेश अनजाने शरमा गया, लेकिन अपने भावों को छिपाकर हँसते हुये बोला, "उलझन बन जाना अपराध तो नहीं है, चाचा।"

अगले दिन कमला ने गृहस्थी का सारा काम अपने हाथ में ले लिया। जब नलिनाक्ष सुबह अपने कमरे में आये, तो उन्हें वह साफ-सुथरा मिला; धूपदानी सोने जैसी चमक रही थी, अलमारी की किताबों की धूल झाड़ दी गई थी और वे जमा दी गई थीं। खुले दरवाजे से आने वाली सूरज की किरनों में नन्हें कमरे की बेदाग सफ़ाई झलक रही थी। और नहाकर लौटे, तो यह सब चमक-दमक देखकर नलिनाक्ष को अचरज और आनन्द हुआ।

कमला ने सुबह ही लाकर गंगाजल क्षेमांकरी के बिस्तर के करीब रख दिया। वृद्धा ने कमला का सद्य-स्नात निर्मल मुख देखा, तो बोली, "मैं सोच रही थी कि मैं तो बीमार हूँ, फिर तुम किसके साथ घाट गई होगी?"

"मां", कमला ने कहा, "कल रात चाचा का एक नौकर आ गया था; वही सुबह मुझे नदी ले गया।"

क्षेमांकरी ने नौकर को बुलवाया, तो कमला उमेश को लेकर हाजिर हो गई।

उमेश को देखकर क्षेमांकरी ने मुसकराते हुये पूछा, "इतनी अच्छी धोती कहाँ से लाया?" तो हँसते उमेश ने कहा, "मां ने दी थी।" क्षेमांकरी ने कमला की तरफ देखा और मुसकाकर कहा, "मैं तो समझती हूँ कि सास ने दी है।"

इस प्रकार उमेश क्षेमांकरी का कृपा-पात्र और घर का एक सदस्य बन गया।

उसकी मदद से कमला ने घर का काम खतम किया। क्षेमांकरी का शयनागृह बुहारा, उनके बिस्तर धूप में निकाले, कोने में पड़े मैले कपड़े धोये-सुखाये, तह किये और खूँटी पर टाँग दिये। सिरहाने दीवाल से लगी कपड़ों की अलमारी थी। नीचे के खाने में नलिनाक्ष की खड़ाऊँ के सिवा वह खाली थी। कमला ने उन्हें खींच लिया और मस्तक से लगा लिया; उन्हें बच्चों जैसा प्यार किया और आँचल के छोर से उनकी धूल झाड़ी।

तीसरे पहर कमला क्षेमांकरी के पैरों में मालिश करती बैठी थी कि फूलों का गुच्छा लिये हेमनलिनी आई और क्षेमांकरी के चरणों में झुक गई।

"आओ हेम" उठकर बैठते हुये वृद्धा ने कहा, "आओ बैठो। अन्नदा बाबू तो अच्छे हैं।"

"कल अच्छे नहीं थे, इसलिये आ नहीं सके। आज ठीक हैं।"

फिर क्षेमांकरी ने कमला का परिचय कराया। कमला लज्जा से सिर झुकाये बैठी रही।

हेमनलिनी ने क्षेमांकरी के स्वास्थ्य के बारे में पूछा, तो वे बोली, "बूढ़ों के स्वास्थ्य के बारे में क्या पूछना? जो रही हूँ, यही मुझे संतोष है। लेकिन वक्त को कब तक छल सकूँगी। तुमने बात निकाली, तो एक बात तुमसे कहना है। कहो तो बेटी, क्या तुम्हारे पिता ने तुमसे मेरे प्रस्ताव के विषय में बात की?"

"हाँ, कहा तो था;" निगाहें झुका हेमनलिनी ने उत्तर दिया।

"लेकिन शायद तुम्हें स्वीकार नहीं है। अगर होता, तो अन्नदा बाबू मुझसे अवश्य कहते। तुमने नलिन को सन्यासी समझ लिया और तुम्हें लगा होगा कि तुम नलिन के साथ कभी शादी न कर सकोगी। बाहर से देखने पर ऐसा लगेगा कि वह प्रेम के अयोग्य है। लेकिन उसके वैराग्य की तह खोलकर कोई देखे, तो उसे उसकी सहृदयता का अंदाज लग जायेगा। हेम बेटी, तुम बच्ची नहीं हो, तुम पढ़ी लिखी हो, और नलिन के पास सलाह लेने गई हो। मुझे बड़ा संतोष होगा, अगर तुम्हें इस घर में ला पाऊँ। तुम लोगों की शादी अभी हो जाना इसलिये चाहती हूँ कि मेरे बाद नलिन कभी शादी न करेगा। तुम नलिन की इज्जत करती हो, फिर बेटी, तुम्हें क्या एतराज है?"

"मुझे कोई एतराज नहीं है, मा! अगर आप मुझे उनके लिये उपयुक्त वधू समझती हैं।" निगाहें नीची किये हेमनलिनी ने जवाब दिया।

ईर्षा करेंगे।" कमला ने मात्र यह दुहराया, "मैं गाजीपुर जाऊँगी"। उसके स्वर से जान पड़ा कि वह मनमानी करने के लिये अपने को स्वतंत्र समझती है।

रमेश ने कहा, "अच्छी बात है, गाजीपुर ही सही।"

बरसात के बाद साँझ में आसमान साफ हो गया और रमेश चाँदनी में देर तक सोचता हुआ बैठा रहा। "इस प्रकार काम कैसे चलेगा?" उसने अपने आपसे कहा, "अगर कमला ऐसा ही करने लगी, तो हालत नाजुक हो जायगी। मैं समझ नहीं पाता कि उसके साथ रहते हुये दूरी कैसे बरत सकूँ? अब ऐसे नहीं चल सकेगा। आखिर कमला मेरी पत्नी तो है। मैंने शुरू से उसे अपनी पत्नी माना। अगर बाकायदा मंत्रोच्चारण नहीं हुआ, तो क्या? मृत्यु ने स्वयं उसे मेरे हाथ सौंपा है और उस रात हमें एक सूत्र में बाँध दिया है। मौत से बढ़कर और कौन पुजारी होगा!"

उसके और हेमनलिनी के बीच गहरा मोर्चा कायम था। उसे सिर ऊँचा किये बाधा, संदेह, अपमान के बीच से अपना रास्ता बनाना था और वह तो मोर्चे के ख्याल में सकुचा रहा था। उसे जीत की उम्मीद नहीं थी? वह अपने को निर्दोष कैसे साबित करे: और अगर वह निर्दोष साबित कर भी सके, तो समाज अपने आँचल का छोर उससे ऐसे दूर रखेगा कि नतीजा कमला के लिये भयंकर होगा; यह तरीका ठीक न होगा। उसे यह कमजोरी, यह अस्थिरता झटकार फेरना होगा। उसके लिये यही एक रास्ता बाकी था कि कमला को पत्नी रूप में स्वीकार करले। हेमनलिनी को उसके प्रति अरुचि होना चाहिये, ऐसी कि वह रमेश को भूलकर किसी दूसरे के प्रति झुक जाये। रमेश ने उसाँस भरी और हेमनलिनी को पाने की उम्मीद छोड़ दी।

● २८

रमेश यह स्पष्ट जान गया कि अपने दल के संयोजन और गंतव्य का सारा अधिकार और सारी जिम्मेदारी कमला ने ले ली है। वह अध्यास,

अचानक दरवाजे पर आते पैरों की आवाज से वह चौंक उठी। उसने फुर्ती से अलमारी को दरवाजा बन्द किया और फिरकर देखा, तो नलिनाक्ष! भागने का मौका नहीं था और घबराहट में उसे लगा कि साँझ की झुटपुटी में वह पिघलकर अनस्तित्व हो जाय। कमला को देखकर नलिन कमरे से एकदम चले गये।

कमला मौका पाकर कमरे से निकल गई और नलिनाक्ष लौट आये। उत्सुकतावश उन्होंने अलमारी खोली, तो खड़ाऊँ पर ताजे फूल चढ़े देखे। उन्होंने अलमारी बन्द कर दी और खिड़की पर आ खड़े हुये। बाहर अँधेरा घिर आया था, जिसने सूरज की आखिरी किरणों को निगल लिया।

५२

हेमनलिनी ने नलिनाक्ष से विवाह करने की अनुमति देकर यह संतोष करने की कोशिश की कि वह भाग्यशालिनी है। "मैं पुराने संबंध से अब बँधी नहीं हूँ। मेरे आसमान पर घिरे बादल अब चले गये हैं। अब मैं स्वतंत्र हूँ और मुझे अतीत को लेकर पछताने का कोई बंधन नहीं है," और बार बार के इस विचार से उसे पूर्ण विराग के आनन्द का अनुभव होने लगा। उसे वैसी शान्ति मिली, जैसी जीवन के एक अध्याय की समाप्ति पर होती है।

वह जब साँझ घर पहुँची, तो उसने मन ही मन कहा, "अगर आज माँ होतीं, तो सुनकर कैसी प्रसन्न होतीं। समझ नहीं आता कि पिताजी को यह समाचार कैसे दूँ।"

थकावट के कारण अन्नदा बाबू जल्दी सो चुके थे, और हेमनलिनी अपने कमरे में चली गई। बड़ी रात तक उसने अपनी डायरी लिखी और बगीचे में टहलने चली गई। अनन्त आकाश उसके अथिर प्राणों को शांति का संदेसा देता रहा।

दूसरे दिन दोपहर में अन्नदा बाबू और हेमनलिनी नलिनाक्ष के घर जाने की तैयारी कर ही रहे थे कि क्षेमांकरी की गाड़ी दरवाजे पर आ खड़ी हुई। अन्नदा बाबू स्वागत को बढ़े। क्षेमांकरी गाड़ी से उतरी, तो अन्नदा बाबू ने कहा "यह हमारा सौभाग्य है।"

घर में प्रवेश करते करते वृद्धा ने कहा कि, मैं आपकी बेटी को आसीस देने आई हूँ। अन्नदा उन्हें बैठकखाने में ले गये और सोफा पर बिठाकर हेमनलिनी को बुलाने चले गये।

हेमनलिनी शृंगार कर रही थी। क्षेमांकरी का आना सुनकर पैर छूने दौड़ी आई।

"तुम्हारे दिन दीर्घ और सुखी हों," क्षेमांकरी ने कहा, "जरा अपने हाथ तो बढ़ाओ, बेटी!" और उन्होंने हेमनलिनी की कलाइयों में सोने के ब्रेसलेट पहिना दिये।

हेमनलिनी फिर क्षेमांकरी के चरणों पर गिर गई। क्षेमांकरी ने उठाकर उसे चूम लिया। आसीस और प्यार से हेमनलिनी का आनन्द छलछला पड़ा।

"देखिये समधीजी!" क्षेमांकरी ने अन्नदा बाबू से कहा, "आपको कल नाश्ता करने आना होगा।

अगली सुबह पिता-पुत्री ने अभ्यास के मुताबिक बगीचे में चा पी। हेमनलिनी के विवाह की कल्पना से अन्नदा बाबू का जीर्ण मुख चमकने लगा।

अन्नदा बाबू यही सोच रहे थे कि क्षेमांकरी के यहाँ जाने का वक्त हो गया, ठहरने से उन्हें देर हो जायगी कि छप्पर पर सामान रखे एक गाड़ी दरवाजे पर आ खड़ी हुई। "जोगेन है," हेमनलिनी ने कहा और दरवाजे तक दौड़ी गई। जोगेन के मुख का भाव बड़ा प्रसन्न था और बहिन से वह बड़े प्रेम से मिला।

"तुम्हारे साथ और कोई भी है?"

रमेश अब तक गाड़ी में से उतर आया था, लेकिन उसे देखते ही हेमनलिनी भाग गई।

"जाओ मत हेम, मुझे तुमसे कुछ कहना है।" जोगेन्द्र ने पीछे जाते हुये कहा। उसने सुना नहीं और मानो अपने आँसुओं के लिये ऐसे भागी, जैसे कोई भयावनी छाया से भागे।

रमेश घबराया सा एक घड़ी खड़ा रहा। "आओ रमेश," जोगेन्द्र ने बुलाया, "पिताजी यहाँ बैठे हैं," और वह खींचता हुआ रमेश को अन्नदा बाबू के पास ले गया।

अन्नदा ने रमेश को आते हुये देख लिया था और उन्हें अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। वे सिर खुजलाते हुये बोले, "लो, शादी में नई बाधा पैदा हो गई।"

रमेश ने उन्हें झुककर नमन किया। उसे कुर्सी पर बैठने का इशारा करके अन्नदा बाबू ने जोगेन्द्र से कहा, "अच्छा हुआ जोगेन, जो वक्त पर आ गये, नहीं तो तार भेजना पड़ता।"

"किसलिये?" जोगेन ने पूछा।

"हेमनलिनी और नलिनाक्ष की शादी ते हो गई है। कल उनकी मा आकर बेटी को आसीस दे गई हैं।"

जो०—तो क्या बात एकदम पक्की हो गई है, पिताजी? मुझसे पूछने की जरूरत नहीं थी क्या?"

अन्न०—कोई नहीं जानता कि तुम क्या कहोगे। मैंने जब नलिनाक्ष को देखा भी न था, तब तुम इस विवाह के लिये उत्सुक थे।"

जो०—मैं मानता हूँ कि मैं था; लेकिन उस बात को जाने दीजिये। अभी देर नहीं हुई है। मुझे आपसे बहुत सी बातें करनी हैं। पहले आप सुन अवश्य लीजिये, फिर जो उचित समझें, कीजिये।"

अन्न०—कभी फुरसत में सुन लूँगा। आज समय नहीं है। अभी मुझे जाना है।

जो०—कहाँ जा रहे हैं?

अन्न०—नलिनाक्ष की मा ने मुझे और हेम को भोजन के लिये बुलाया है। तुम लोग यहाँ नास्ता करो, फिर ... ...

जो०—हमारी चिन्ता न कीजिये। हम होटल में खा लेंगे। आप लोग तो शाम तक आयेंगे। तभी हम आ जायेंगे।

अन्नदा बाबू रमेश से आँख न मिला सके, कुछ कहने की बात दूर रही।

रमेश ने भी कोई बात नहीं कही। जाने तक वह चुपचाप रहा। फिर अन्नदा बाबू को नमन करके चला गया।

● ५३

पिछले दिन क्षेमांकरी ने कमला से कहा था, "बेटी, मैंने हेमनलिनी और उसके पिता से कल यहीं भोजन करने कहा है। उनके लिये क्या बनाओगी? तुम्हारे रहते मैं क्यों चिन्ता करूँ? लेकिन आज तुम खुश नजर नहीं आतीं। क्या तबियत ठीक नहीं है?"

"मैं बिलकुल ठीक हूँ, मा," बनावटी हँसी हँसते हुए कमला ने कहा।

क्षेमांकरी ने अपना सिर हिलाया, "मुझे डर है कि तुम्हें कोई चिंता सता रही है। मुझे अपना समझकर बता दो, बेटी! मैं तुम्हें अपनी पुत्री जैसा मानती हूँ। क्या बात है, मुझसे कहो?"

"मैं आपकी सेवा करने के सिवा कुछ नहीं चाहती।" कमला ने उत्सुकता से कहा।

इस कहे का कोई ख्याल किये बिना क्षेमांकरी कहती गई, "अच्छा हो, तुम कुछ दिनों के लिये अपने चाचा के यहाँ हो आओ। फिर जब आने की इच्छा हो, लौट आना।"

"मा", कमला व्यथापूर्ण होकर बोली, "जब तक मैं तुम्हारे साथ हूँ, दुनिया में किसी और को देखने की इच्छा नहीं है। अगर मुझसे कोई गलती हो, तो मुझे दंड दीजिये, लेकिन मुझे एक दिन के लिये भी न भेजिये।"

क्षेमांकरी ने लड़की के गाल थपथपाकर जवाब दिया, "तभी तो मैं कहती हूँ कि तुम मेरे किसी पिछले जन्म की मा हो, नहीं तो इतनी जल्दी हम एक दूसरे के करीब कैसे आ जाते? अब जाओ, सो रहो। दिन भर तो तुम आराम जानतीं ही नहीं।"

कमला अपने शयन-कक्ष में गई और दरवाजा लगाकर; बत्ती बुझाकर अँधेरे में बैठी सोचती रही : जब ईश्वर ही ने मुझसे यह अधिकार छीन लिया, तो कब तक उनकी देख-रेख कर सकूँगी? मुझे उनकी उम्मीद छोड़ देना चाहिये। जब-तब उनकी सेवा के अवसर ही मेरे लिये शेष हैं, और मैं उन्हें न जाने दूँगी। प्रभु मुझे शक्ति दें कि हँसते हँसते अपना कर्तव्य करती चलूँ। मुझे और कुछ नहीं चाहिये।

सारी परिस्थिति को इस प्रकार समझकर उसने इस निश्चय पर अपने को दृढ़ किया: कल से मुझे कोई पछतावा न होगा, मैं दुखी नजर न आऊँगी। मैं कभी आनन्द की इच्छा न करूँगी। मैं सारी जिंदगी सेवा में गुजार दूँगी। मैं कभी भी कुछ और न माँगूँगी।

वह बिस्तर पर लेट रही और थोड़ी देर में सो गई। रात में दो एक बार जागी, तो यही दुहराती रही, "मैं कभी कुछ और न माँगूँगी।" और जब सुबह जागी, तो हाथ जोड़कर अपनी समस्त चेतना को केन्द्रित करके मन ही मन बोली, "मैं आजीवन तुम्हारी सेवा करूँगी और कभी कुछ और न माँगूँगी।"

उसने फुर्ती से मुँह-हाथ धोया और नलिनाक्ष का कमरा साफ करके नहाने चली गई। क्षेमांकरी का सूर्योदय के पहले गंगा-स्नान

नलिनाक्ष ने बंद करा दिया था, इसलिये उमेश को लेकर कमला भोर की तीखी ठंड में नदी नहाने गई। लौटकर उसने मुसकाते हुए क्षेमांकरी को नमन किया।

वृद्धा स्वयं नदी जाने के लिये तैयार थीं कि नलिनाक्ष आ पहुँचा। कमला गीले बालों पर घूँघट सरका भीतर चली गई।

"फिर नदी नहाने जाने लगीं, मा," नलिनाक्ष ने कहा, "अच्छा होता कि थोड़ी ताकत आने तक ठहर जातीं।"

"यह भूल जाओ कि तुम डाक्टर हो, नलिन," क्षेमांकरी ने व्यंग किया, "अमरता की एक ही औषध है-प्रात:काल का गंगा-स्नान। तुम क्या कहीं बाहर जा रहे हो? जल्दी लौटना।"

"क्यों मा?"

क्षे०—कल मैं तुमसे कहना भूल गई। आज अन्नदा बाबू तुम्हें आसीस देने आनेवाले हैं।

न०—मुझे आसीस देने! अचानक ऐसे उदार क्यों बन गये? मैं तो उनसे रोज मिल लेता हूँ।

क्षे:—मैं कल गई थी और कंगन पहिनाकर हेमनलिनी को आसीस दे आई हूँ। अब अन्नदा बाबू तुझे असीस देने आयेंगे। देर न करना, वे भोजन के लिये यहाँ आने वाले है।" और वृद्धा नहाने चली गई।

नलिनाक्ष सिर झुकाये सोचता हुआ चला गया।

५४

रमेश के सामने से भागकर हेमनलिनी ने अपने कमरे के द्वार बन्द कर लिये और वह अपने को सँभालने में लग गई। प्रारम्भिक उत्तेजना खतम हुई कि लज्जा ने आ दबाया। "आत्म-दृढ़ता खोये बिना मैं रमेश से क्यों न मिल सकी?" उसने सोचा, "जब अघट घट गया, तब मैंने अपने

आप का ऐसा अभद्र प्रदर्शन क्यों किया? मुझे ऐसी चंचलता फिर नहीं बरतना चाहिये।" अपने को सँभालकर वह उठी और रमेश का सामना करने के लिये यह सोचती हुई तैयार हुई, "इस बार मैं भागूँगी नहीं, अपनी भावुकता पर काबू रखूँगी।"

फिर अचानक कुछ याद करते हुये वह अपने कमरे में लौट गई। उसने बॉक्स में से क्षेमांकरी के दिये हुये कंगन निकाले और पहिन लिये। इस प्रकार रक्षित होकर उसने सामना करने का साहस किया और सिर ऊँचा करके बगीचे की ओर गई।

सबसे पहले पिता से उसकी मुलाकात हुई। "कहाँ जा रही हो, हेमनलिनी?" उन्होंने पूछा।

"क्यों, रमेश बाबू और जोगेन यहाँ नहीं है?" उसने पूछा।

"नहीं, वे दोनों चले गये हैं।"

हेमनलिनी को धीरज हुआ कि उसके आत्मनिरोध की परीक्षा का मौका नहीं आया।

'फिर अब—" अन्नदा बाबू कहते गये।

"हाँ, नहाने में मुझे देर न लगेगी। आप गाड़ी बुलवा लीजिये।"

हेमनलिनी का बदला हुआ हुआ रुख और क्षेमांकरी के यहाँ जाने की उसकी अस्वाभाविक उत्सुकता अन्नदा बाबू से छिप नहीं सकी। इनसे उनकी बेचैनी और बढ़ गई।

हेमनलिनी ने फुर्ती से नहाया, कपड़े पहिने और पता लगाया कि गाड़ी आई या नहीं।

साढ़े दस बजे के करीब ये नलिनाक्ष के घर पहुँचे,। डाक्टर रोगियों को देखकर लौटे नहीं थे, इसलिये मेहमानों के स्वागत का भार क्षेमांकरी पर पड़ा। उन्होंने अन्नदा बाबू से उनके स्वास्थ और कुटुम्ब के संबंध में लम्बी बातें कीं। बीच बीच में वे कनखियों से हेमनलिनी की ओर देखती

जाती थीं। उन्हें अचरज हुआ कि लड़की को विशेष आनन्द नहीं है। इतने शुभ अवसर की कल्पना में जहाँ उसके मुख पर भोर की अरुणिमा का गुलाबीपन होना था, वहाँ वास्तव में चिन्ता के बादलों की कालिख थी।

क्षेमांकरी भावुक थीं और हेमनलिनी के निरानन्द भाव ने उनका उत्साह ठंडा कर दिया। वे मन ही मन सोचती रहीं और अन्त में बोली, "शादी की ऐसी जल्दी क्या है? लड़का-लड़की दोनों सयाने हैं और उनमें अपना फैसला खुद करने की क्षमता है। हमें उन पर दवाब नहीं डालना चाहिये। मैं हेमनलिनी का मन नहीं जानती, लेकिन नलिन के बारे में कह सकती हूँ कि इस प्रस्ताव के विषय में वह अपना मन स्थिर नहीं कर सका है।" उनका इशारा हेमनलिनी की तरफ था। लड़की का मन अनिश्चित था और क्षेमांकरी अपने मेहमानों को यह ख्याल लेकर न जाने देना चाहती थीं कि शादी की बात से नलिन को बड़ा आनन्द है।

सुबह से हेमनलिनी ने प्रसन्न रहने की बड़ी कोशिश की थी और नतीजा उलटा हुआ। उसका क्षणिक उल्लास पूर्ण निरालसता में तब्दील हो गया था। क्षेमांकरी के घर में पहुँचते ही अचानक उसे भय ने घेर लिया और नया रास्ता, जो अब जीवन में उसे अख़्तियार करना था, उसकी आँखों के सामने, अगम्य, ऊँचा और अनन्त जान पड़ा। जब बूढ़े बातें कर रहे थे, तब वह स्वयं अपनी स्थिरता के अविश्वास का शिकार हो गई थी और नतीजा यह हुआ कि जब क्षेमांकरी ने शादी के प्रस्ताव के सम्बध में उत्साह की कम जताई, तो उसके हृदय में दो भिन्न भावनायें उठीं, एक ओर शादी जल्दी हो जाने से वह नीरसता और अस्थिरता की परिस्थिति से मुक्ति पा जायेगी, लेकिन फिर भी प्रस्ताव को छोड़ देने की बात से उसे क्षणिक संतोष हुआ।

अपना गम्भीर वक्तव्य देने के बाद क्षेमांकरी ने हेमनलिनी की तरफ देखकर उसकी प्रतिक्रिया जानना चाही। उन्हें लगा कि लड़की की

भावना शान्त है और एक क्षण में उनका हृदय हेमनलिनी के प्रति कड़ा हो गया। "नलिन को बड़ा सस्ता देखने के लिये मैं तैयार हो रही थी।" उन्होंने सोचा और नलिनाक्ष के आने में देर करने से उन्हें आश्चर्य हुआ।

"नलिनाक्ष की आदत है," हेमनलिनी की तरफ़ देखकर वे कहती गई, "वह जानता था कि आप लोग आ रहे हैं और वह जल्दी अपना काम निपटाकर आ सकता था।"

इसके बाद भोजन की तैयारी देखने के बहाने से वे भीतर चली गईं। उनकी इच्छा थी कि हेमनलिनी को कमला के सुपुर्द कर दें और खुद वृद्ध महाशय से खास बात कर सकें।

खाना तैयार था और भीमी आग पर चढ़ा था। कमला चौके के कोने में ऐसी ध्यानमग्न बैठी थी कि क्षेमंकरी के अचानक आगमन से चौंक पड़ी और झूठी मुस्कराहट दिखाती हुई खड़ी हो गई।

"अच्छा, खाना बनाने में ऐसी मग्न हो बेटी!" वृद्धा ने कहा।

"सब कुछ तैयार हो गया है, मा।" कमला ने जवाब दिया।

"फिर यहाँ चुपचाप क्यों बैठी हो? अन्नदा बाबू से क्या शर्म? फिर हेम यहाँ है। मैं समझती हूँ कि हेम को तुम अपने कमरे में ले जाकर बातचीत करो।"

हेमनलिनी की उत्साहहीनता से क्षेमांकरी का स्नेह कमला के प्रति अधिक हो गया था।

क्षेमांकरी हेमनलिनी के ढलते रूप की तुलना इस अपढ़ लड़की के लाखे सौंदर्य से करना चाहती थीं। वे हर प्रकार से हेमनलिनी का गर्व चूर कर देना चाहती थीं।

कमला को विरोध करने का समय नहीं दिया गया। क्षेमांकरी ने उसे सफ़ेद रेशम की साड़ी पहिनाई और नये तरीके से उसके बाल सजा दिये। फिर उसे चूमकर उन्होंने कहा, "तुम किसी राजमहल के योग्य हो।"

जब कमला का सिंगार खत्म हुआ, तो क्षेमांकरी ने कहा, "आओ बेटी, शर्माओ मत। वह कालेज की पढ़ी लड़की तुम्हें देखेगी, तो शर्मा जायगी।" और वह कमला को खींचती हुई मेहमानों वाले कमरे में ले आई। नलिनाक्ष अब तक आ गया था और उन लोगों से बातचीत कर रहा था।

नलिनाक्ष को देखकर कमला ने फिरकर भाग जाना चाहा, लेकिन क्षेमांकरी उसे दृढ़ता से पकड़े रही।

"शर्म की कौन बात है, बेटी?" उन्होंने कहा, "सब अपने लोग हैं।"

क्षेमांकरी को लड़की की सुंदरता पर अभिमान था, और वह दूसरों को चकित करना चाहती थीं। अपने नलिनाक्ष के प्रति हेमनलिनी की बेरुखाई से उनकी मातृत्व भावना जाग उठी थी और उन्हें इस प्रकार की तुलना में बड़ा संतोष मिला।

कमला के आगमन से अन्य सभी को अचम्भा था। जब हेमनलिनी क्षेमांकरी के शयागृह में कमला से मिली थी, तब वह ऐसा सिंगार नहीं किये थी। वह दबी-छिपी बैठी थी, शर्मीली और अनजानी सी, और जब तक हेमनलिनी उसे भली भाँति देख भी पाये कि वह चली गई थी। अब एक घड़ी की अस्थिरता के बाद उसने सकुचाती कमला को हाथ का सहारा दे अपने बगल में बिठाया।

क्षेमांकरी ने विजय अनुभव की; जिसने भी क्षेमांकरी को देखा, यह अनुभव किया, यह सौंदर्य देवताओं की अनमोल नियामत है। उन्होंने कमला से कहा, "हेम को अपने कमरे में ले जाओ बेटी, और वहाँ बातचीत करो। भोजन की देखभाल मैं कर लूँगी।"

कमला को अचरज हुआ कि हेमनलिनी उसके बारे में क्या ख़याल करेगी। जल्दी ही वह इस घर में नलिनाक्ष की वधू के रूप में आकर घर की

मालकिन बनेगी और कमला उसके मत को उपेक्षा नहीं कर सकती। उसे यह स्वीकार करने से इन्कार था कि वह अधिकार से उस घर की गृहिणी है। वह अपने हृदय में कोई ईर्षा को जगह न देगी, अधिकार रूप में कोई चीज न चाहेगी।

कमरा छोड़ते उसके अंग काँपने लगे। "तुम्हारे बारे में मैंने मा से सब सुन लिया है," हेमनलिनी ने विनीत भाव से कहा, "मुझे अपनी बहिन समझना। तुम्हारी कोई सगी बहिन भी है?"

"अपनी कोई नहीं है—दूर के रिश्ते की है?" कमला ने हेमनलिनी की आत्मीयता से उत्साहित होकर कहा।

"मेरी भी कोई बहिन नहीं है।" हेम ने कहा, "बचपन में मेरी मा नहीं रहीं। अक्सर मैं इच्छा करती हूँ कि काश मेरे कोई बहिन होती! मैं सुखी रहूँ या दुखी, यह इच्छा सदा बनी रहती है।"

कमला का संकोच एकदम टूट गया। "तुम मुझे पसन्द करोगी, दीदी? मैं बड़ी मूर्ख हूँ।"

हेमनलिनी मुसकराई, "मुझे और पहिचानोगी, तो मैं भी मूर्ख लगूँगी। जो थोड़ा बहुत किताबों से पढ़ा है, उसके सिवा मैं और कुछ अधिक नहीं जानती। मुझे तो घर सँभालने की कल्पना से भय लगता है।"

"वह काम मुझे छोड़ दो," कमला ने शिशुवत् सरलता से कहा, "मैं बचपन से यह काम करती आई हूँ। हम दोनों बहिनों जैसे सारा घर सँभाल लेंगे। तुम उनकी फिकर करना और मैं तुम दोनों की।

"कहो तो बहिन," इसके बाद हेमनलिनी ने पूछा," क्या तुम कभी अपने पति को नहीं देख पाईं? कैसे थे वे?"

कमला ने उत्तर दिया, "कहने के लिये मैंने कभी अपने पति को नहीं देखा, लेकिन किसी प्रकार मैं अपने सम्पूर्ण हृदय से उनकी आराधना करने लगी हूँ। प्रभु ने मेरी आराधना का पारितोषक दिया है कि अब मेरे

सामने मेरे पति का स्पष्ट चित्र है। वे मुझे पत्नी रूप में न पा सके, किन्तु मैंने अपने पति पा लिये।"

कमला की भक्ति का हेमनलिनी पर असर पड़ा। "मैं तुम्हारा मतलब समझी।" कुछ देर के चुप के बाद हेमनलिनी ने कहा, "यही पाना तो सच्चा पाना है।"

कमला इस बात का मतलब समझी कि नहीं, कहना कठिन है। वह एक दो मिनट हेमनलिनी की ओर ताकती रही और फिर बोली, "जब तुम कहती हो, तो यह बात सच होगी। मैं सुखी हूँ। मैंने अपना पाना पा लिया।"

हेमनलिनी ने कहा: जानती हो बहिन, आज मेरे हृदय पर भार था, लेकिन तुमसे मिलने के बाद मुझे ताकत का अनुभव हो रहा है। तभी मैं इतनी बात कर पाई। नहीं तो बात करने की मेरी आदत नहीं है।"

● ५५

हेमनलिनी क्षेमांकरी के यहाँ से लौटी, तो अपने बैठकखाने की टेबल पर उसे अपने नाम लिखा रमेश के हस्ताक्षर में एक बड़ा लिफ़ाफ़ा मिला। वह उसे लेकर अपने शयन कक्ष में गई और दरवाजा बन्द करके धड़कते हृदय से उसे पढ़ने लगी।

रमेश ने कमला के साथ अपने सम्बन्ध की सारी कहानी लिखी थी, कोई बात छिपाई नहीं थी। अन्त में उसने लिखा था:

"विधि ने हमारे जीवन को जिस बंधन में बाँध दिया था, परिस्थितियों ने उसे तोड़ दिया है। इसके लिये हम एक दूसरे को दोष न दें। यद्यपि मैं और कमला पति-पत्नी के रूप में एक दिन भी साथ नहीं रहे, फिर भी समय बीतते मैं उसकी तरफ़ अधिकाधिक आकृष्ट होता रहा हूँ। मैं आज अपने मन की भावना नहीं जानता। अगर तुमने मुझे त्याग नहीं दिया होता, तो मेरा हृदय तुम्हारे प्यार में शान्ति पाता। इसी उम्मीद

से अपनी भरमाई हालत में मैं तुम्हारे पास दौड़ा आया। लेकिन जब तुमने स्पष्ट रूप से मुझ से किनारा काटा और जब मेंने सुना कि तुमने किसी अन्य के साथ शादी करना तै कर लिया है, तो मेरे सारे संशय, मेरा सारा अनमनापन फिर लौट आया है।

"लेकिन थिर और प्रसन्न मन से, भरे हृदय से मैं तुमसे विदा लेता हूँ। तुम दानों को धन्यवाद, कि विदा को वेला में मुझे कोई पीड़ा नहीं है। मैं तुम्हारे सुख-वैभव की कामना करता हूँ। मुझे गलत न समझना, क्योंकि मैंने ऐसा करने का तुम्हें कोई मौका नहीं दिया है।"

अन्नदा कुछ पढ़ रहे थे कि हेमनलिनी अचानक पहुँची, और पत्र पिताजी को देकर, पढ़कर लौटा देने के लिये कहती हुई चली आई।

अन्नदा बाबू ने चश्मा चढ़ाया और दो मर्तबा पत्र पढ़ा। पढ़कर नौकर से उसे हेमनलिनी को लौटा दिया और सोचते हुये बैठ गये। उनका अंतिम मत था: "एक तरह से बुरा नहीं हुआ। नलिनाच रमेश से अच्छा वर है। अच्छा हुआ कि रमेश रास्ते से अलग हो गया।"

अगले चण नलिनाच आये। उन्हें देखकर अन्नदा बाबू जरा चौंके, क्योंकि कुछ घंटे पहिले ही दानों मिले थे। उन्हें लगा कि नलिनाच हेमनलिनी को प्यार करते हैं और यह सोचकर उन्हें मन ही मन हँसी आ गई।

वे दोनों को मिलाकर किसी बहाने से चले जाने के बारे में सोच ही रहे थे कि नलिनाच ने सीधे अपना मतलब कहा : "आपकी पुत्री से मेरे विवाह का प्रस्ताव चल रहा है। लेकिन शायद आप नहीं जानते कि मैं शादीशुदा हूँ।"

"मैं जानता हूँ, लेकिन —"

नलि० – मुझे अचरज है कि आप लोगों का अनुमान है कि मेरी पहली पत्नी मर चुकी है, लेकिन इसका कोई निश्चय नहीं है। सच तो यह है कि मैं उसे जीवित समझता हूँ।

"भगवान ऐसा ही करें। हेम, हेम।"

"आई पिताजी," कहती हुई हेमनलिनी कमरे में आई।

अन्न०—रमेश के लिखे पत्र में कोई ऐसी बात है... ... ...

हेमनलिनी ने पत्र नलिनाक्ष को दे दिया। "इन्हें सब जान लेना चाहिये।" उसने कहा और कमरे से चली गई।

नलिनाक्ष ने सारा पत्र पढ़ा। वे आश्चर्यवश कुछ न कह सके, चुप रहे।

"बड़ी करुण कहानी है," अन्नदा बाबू बोले, "तुम्हें पढ़कर पीड़ा हुई होगी। लेकिन यह पत्र तुम्हें न बताना ठीक न होता।"

एक क्षण के मौन के बाद नलिनाक्ष ने उठकर अन्नदा बाबू से विदा ली। बाहर जाते जाते उन्होंने हेमनलिनी को दालान में थोड़ी दूरी पर खड़े पाया। देखकर उन्हें धक्का सा लगा। उसके चेहरे के भाव से उसके मन की गति का पता लगता था। उन्हें अचरज हुआ कि वह ऐसी अचंचल और शांत कैसे खड़ी है, जब उसके हृदय में तूफ़ान उमड़ रहा है। नलिनाक्ष ने उसके पास जाना चाहा, तो वह भीतर भाग गई। भारी मन से वे अपनी गाड़ी की तरफ चले गये।

नलिनाक्ष को गये ज्यादा देर नहीं हुई थी कि जोगेन अकेले आ पहुँचा। उसने बताया कि एक कागज पर 'मैं जा रहा हूँ।" लिखकर रमेश न जाने कहा चला गया है और ऐसे वातावरण में मैं भी नौकरी पर लौट जाऊँगा। अपनी बात कहकर जोगेन्द्र अचानक कमरे से चला गया।

अन्नदा बाबू सिर थपथपाते बैठे रहे। संसार फिर उन्हें एक पहेली जैसा लगा, जिसे वे सुलझा नहीं सके।

● ५६

एक दो दिन बाद शैलजा और उसके पिता नलिनाक्ष के घर पहुँचे। शैल और कमला बगल के एक कमरे में धीरे धीरे बातों में लग गये और चक्रवर्ती ने क्षेमांकरी से बातें शुरू कीं।

यहाँ चक्रवर्ती ने बातों के सिलसिले ने जान लिया कि हेम के साथ नलिनाक्ष की शादी टूट गई है और क्षेमांकरी चिंतित हैं। नलिनाक्ष की शादी ठीक करने का आश्वासन देकर चक्रवर्ती शैल और कमला के पास पहुँचे।

शैल सारी कहानी नलिनाक्ष को बता देने के लिये कमला को मना रही थी। कमला की आँखों में आँसू छलक आये थे। अन्नदा बाबू ने आकर कुछ कहा नहीं, लेकिन कमला की तरफ एक नजर फेंककर अपनी पुत्री के बगल में बैठ गये।

शैल ने कहा, "पिताजी मैं कमला से कह रही हूँ कि नलिनाक्ष को सब कुछ बता देने का समय अब आ गया है और आपकी यह मूर्ख हरिदासी इस बात को लेकर मुझसे झगड़ रही है।"

"न दीदी," कमला बोली "मैं पैर पड़ती हूँ, ऐसी बात न कहना। यह एकदम असंभव है।"

"कैसी मूर्ख हो!" शैल बोली, "नलिनाक्ष बाबू का ब्याह हेमनलिनी के साथ हो जाय और तुम चुप रहो, कुछ न बोलो। अपने शादी के दिन से तुम्हें मौत जैसे भयंकर अनुभव हो रहे हैं। लेकिन अभी तुम और भी संकट पाना चाहती हो।"

"मेरी कहानी किसी को न बताना, दीदी। मैं सब सह सकती हूँ, लेकिन यह लज्जा नहीं। मैं जैसी हूँ, अच्छी हूँ। मैं अब सुखी हूँ। लेकिन कहीं तुम मेरी कहानी प्रकाशित कर दोगी, तो इस घर में मैं मुँह दिखाने के काबिल भी न रहूँगी। यह लज्जा मैं सह न पाऊँगी।"

शैल बात का विरोध न कर सकी, लेकिन यह उसे असह्य जान पड़ा कि नलिनाक्ष हेमनलिनी से ब्याह कर ले, और वह चुप देखता रहे।

"क्या यह शादी सचमुच होने वाली है?" चक्रवर्ती ने पूछा।

शैल: क्यों नहीं ? नलिनाक्ष बाबू की मा बधू को आशीर्वाद दे आई हैं"।

चक्र०—भगवान को धन्यवाद दो, कि आसीस सार्थक न होगा। कमला बेटी, तुम्हें डर की बात नहीं है सत्य विजयी हुआ है।

कमला मतलब समझ नहीं सकी, और विस्फारित नेत्रों से चाचा की ओर देखने लगी।

"शादी टूट गई है," उन्होंने समझाया, "न केवल नलिनाक्ष को यह नामंजूर थी, बल्कि उसकी मा को भी बुद्धि आ गई है।"

शैलजा आत्मविस्मृत हो गई। "हम बच गये।" उसने कहा, "शादी की बात सुनकर कल सारी रात मुझे नींद नहीं आई। लेकिन जो घर अधिकार से उसका है, क्या कमला उसमें परदेसी जैसी रहेगी? कब हम इस गुत्थी को सुलझा सकेंगे?

चक्र०—जल्दी न करो, शैल; समय आने पर सब ठीक हो जायेगा।

कमला: लेकिन बात जैसी है, ठीक है। मैं बहुत सुखी हूँ। अधिक सुखी बनाने की कोशिश में आप लोग मुझे और दुखी बना देंगे। चाचा, आप किसी से कुछ न कहिये। और उसकी आँखों से आँसुओं की धार लग गई।

चक्रवर्ती ने उसे बड़ा धीरज बँधाया। तभी युक्त हँसी हँसता रमेश आ हाजिर हुआ।

"रमेश बाबू नीचे खड़े डाक्टर बाबू को पूछ रहे हैं।" उमेश ने कहा।

कमला के चेहरे का रंग उड़ गया। चाचा अचरज से झूम पड़े, "डरो मत, बेटी, मैं सब देख लूँगा।" उन्होंने नीचे जाकर रमेश को एक हाथ से थाम लिया। वे बोले, "चलो रमेश थोड़ा घूम आयें। तुमसे कुछ बातें करना है।"

"आप कहाँ से आ पहुँचे, चाचा ?" रमेश ने अचरज में पूछा ।

"तुम्हारी वजह से आना पड़ा । तुम्हें पाकर मुझे बड़ी खुशी हुई । लेकिन यहाँ तुम किस कारण आये हो ?" चक्रवर्ती ने पूछा ।

"मैं नलिनाक्ष बाबू से मिलने आया हूँ । मैं कमला के बारे में उन्हें सब कुछ बता देना चाहता हूँ । मेरा अनुमान है कि वह जीवित है ।"

"मान लो वह जीवित है और नलिनाक्ष उससे मिलें, तो तुम्हारे मुँह से सारा किस्सा सुनना क्या उनके लिये उचित होगा ?"

"मैं नहीं जानता कि उनकी सामाजिक जीवन स्थिति में क्या फ़र्क आयेगा, लेकिन मैं नलिनाक्ष को बता देना चाहता हूँ कि कमला सर्वथा निर्दोष है । अगर कमला मर चुकी है, तो किस्सा सुनकर नलिनाक्ष उसके नाम की इज्ज़त करेंगे ।"

"मैं तुम्हारी बात समझ नहीं पाता । देखो, वह सामने रहा मेरा मकान । कल सुबह आओ, तो मैं तुम्हें सारी बात बता दूँ । तब तक मेरी इच्छा है कि तुम नलिनाक्ष से न मिलना ।"

रमेश मान गया और चाचा लौट आये । वे कमला से बोले, "मैं चाहता हूँ, बेटी, कि तुम कल सुबह हमारे घर आ जाना । तुम्हीं स्वयं रमेश बाबू को सब समझा देना ।"

कमला ने कुछ नहीं कहा, मात्र आँखें झुका लीं ।

इसी समय कमला ने पैरों की आवाज़ सुनी और देखा, तो दरवाजे पर नलिनाक्ष खड़े थे । दोनों की आँखें मिलीं, लेकिन इस बार सदा जैसे नलिनाक्ष ने एकदम आँखें हटा नहीं लीं । एक घड़ी वे कमला की तरफ़ देखते रहे । अगले क्षण उन्होंने शैलजा को देखा और लौट जाना चाहा कि

चाचा ने रोका, "जाइये मत, नलिनाक्ष बाबू, आप तो हमारे अपने हैं। यह मेरी बेटी शैल है, जिसकी बीमार बच्ची का आपने इलाज किया था।"

शैलजा ने नलिनाक्ष को नमन किया। "बच्ची अब कैसी है?" अभिवादन का प्रत्युत्तर देते हुये उन्होंने पूछा।

"अब बिलकुल ठीक है।" शैल ने जवाब दिया।

चाचा ने उन्हें बिठाला। तब तक कमला जा चुकी थी। नलिनाक्ष के नयनों का भाव परखकर उसका अचरज और आनन्द इतना बढ़ गया कि वह अपने को सँभालने अपने कमरे में चली गई

इसी समय चेमांकरी ने आकर जलपान के लिये कहा।

जलपान के बाद कमला को चेमांकरी और नलिनाक्ष के सामने खड़ा करके चाचा ने कहा: "नलिनाक्ष बाबू, हरिदासी को पराया न समझना। इसे अपनी और मा की सेवा करने का अवसर देना। जानकर वह कभी गलती न करेगी, इस का अश्वासन मैं देता हूँ।"

"देखिये," चेमांकरी बोली, "आपको चिन्ता करने का कोई कारण नहीं है। हरिदासी इस घर की बेटी के समान है। आते ही उसने घर का सारा काम अपने हाथ में ले लिया है, यहाँ तक कि घर की चाबियाँ भी अब उसीके पास हैं।"

नलिनाक्ष चुपचाप मंत्र-मुग्धसे सुनते रहे।

जब बातें खतम हुईं, तो वे अपने कमरे में चले गये। डूबते हुये हेमंती सूरज की वधू की लज्जा जैसी सुर्ख प्रकाश धारा कमरे में फैल गई। आरक्त प्रकाश उसके अंग अंग में व्याप्त हो गया।

उनके किसी हिन्दुस्तानी मित्र ने गुलाब भेजे थे और चेमांकरी के आदेश से कमला ने उन्हें फूलदान में रखकर नलिनाक्ष के कमरे में सजा दिया था। साँझ के सुनसान में सुर्ख प्रकाश और गुलाबों की खुशबू से वे बेचैन हो उठे।

नलिनाथ ने खिड़की पर से निगाह फिराई, तो शैया के सिरहाने गुलाब रखे पाये। उन्होंने एक फूल उठा लिया—सोने के रंग की अधखिली कली, लेकिन अशेष गंधपूर्ण, और उन्हें लगा कि जैसे किसी की अँगुलियों का परस हो। उनके सारे शरीर में बिजली दौड़ गई। उन्होंने कली को पहले अधरों से लगाया, फिर पलकों से।

डूबते सूरज की आखिरी किरनें साँझ के आकाश को प्रकाशित किये थीं। जैसे ही नलिनाथ कमरे से जाने लगे, उनकी निगाह पलंग के छोर पर सिकुड़ी बैठी कमला पर पड़ी। उसने मुख घूँघट में छिपा लिया था और शर्म से धरती में गड़ जाने को तैयार थी, लेकिन शर्म का वक्त बीत चुका था।

बिस्तर बिछाकर और फूलदान रखकर वह जाने को थी, जब उसे पैरों की आहट मिली और वह छिप गई। लेकिन इस समय भागना और छिपना दोनों असंभव थे।

उसकी उलझन बचाने के लिये नलिनाथ दरवाजे तक गये कि उन्हें कुछ ख्याल आया। एक क्षण के अनिश्चय के बाद वे धीरे धीरे लौटे और कमला की ओर देखकर बोले, "उठो, तुम्हें मुझसे शरमाना नहीं चाहिये।"

● ५७

अगली सुबह कमला चाचा के घर आई। मौका पाते ही वह शैल से अकेले में मिली और उसने उसे अपने आलिंगन में भर लिया।

"आज इतनी खुश क्यों हो, बहिन?" उसे प्यार करते हुये शैल ने पूछा।

"मैं नहीं जानती, दीदी; लेकिन लगता है, मेरे दुखों का अन्त हो गया।"

शैल : देखो, अब मुझे सब बता दो। कल शाम मेरे चले आने के क्या हुआ ?

कमला : कहने लायक तो कुछ भी नहीं, लेकिन मुझे लगता है कि अब सचमुच वे मेरे हो गये। प्रभु ने मुझ पर सचमुच दया दिखाई है।

शैल : अच्छा है बहिन, लेकिन मुझ से छिपाना कुछ मत।

कमला : छिपाऊँगी कुछ नहीं, दीदी; बात यह है कि कहने के लिये शब्द नहीं पा रही। आज सुबह उठी, तो जैसे जीवन सार्थक हो उठा। मुझे सुख का अनुभव हुआ और काम हलका लगा। मुझे अधिक क्या चाहिये ? डर इतना है कि जो पाया है, उसे खो न बैठूँ। विश्वास नहीं होता कि भाग्य मुझ पर इतना दयालु होगा।

शैल : मैं सोचती हूँ कि तुम्हारा भाग्य बदल गया, और अब वह तुम्हें धोखा न देगा। तुम्हें तुम्हारा सुख ब्याज के साथ प्राप्त होगा।

कमला : ऐसा न कहो, दीदी, ब्याज मुझे पहले ही मिल गया है और भाग्य से मुझे कोई शिकायत नहीं है। मुझे और क्या चाहिये ?

इसी समय चाचा आ पहुँचे।

"घड़ी भर के लिये सुनो, बेटी," उन्होंने कहा, "रमेश बाबू आ गये हैं।"

यहाँ आने के पहले चाचा और रमेश की बातें हो चुकी थीं और रमेश ने कहा था :

"कमला को सदा के लिये अपने जीवन से अलग करने के पहले मैं नलिनाक्ष को सारी बात बता देना चाहता हूँ, नहीं तो मेरी आत्मा को शांति न मिलेगी। आगे कमला के बारे में चर्चा करने की आवश्यकता पड़े, न पड़े। लेकिन न भी पड़े, तब भी कहे बिना मुझे शांति न मिलेगी।"

"अच्छी बात है, ठहरो, मैं अभी आया," कहकर चाचा भीतर चले गये।

रमेश खिड़की की तरफ मुड़कर निरालस भाव से आने-जाने वालों को देखता रहा, कि उसे पैरों की आवाज सुनाई दी और उसने मुड़कर देखा कि कोई बाला उसके चरणों पर झुकी है। बाला ने सिर उठाया तो चकित होकर रमेश चिल्ला उठा, "कमला।"

कमला चुप और अचल भाव से उसके सामने खड़ी थी।

"प्रभु की कृपा है," चाचा ने कहा, "कमला के कष्टों का अन्त हो गया। उसके सामने निरभ्र आकाश है। तुमने उसे भयंकर संकट से मुक्त करके स्वयं संकट पाये हैं। आज जब तुम्हारी विदा का समय आ गया है, तब वह तुम्हारे ऋण को मौन कैसे स्वीकारे। आज वह तुम्हें विदा देने और तुम्हारा आसीस ग्रहण करने आई है।"

क्षण भर के असमंजस के बाद रमेश ने कहा, "प्रभु तुम्हारा भला करें, कमला। जाने-अनजाने में हो गई मेरी गलतियों को माफ करो।"

कमला कुछ न कह सकी और दीवाल से टिककर खड़ी रह गई।

थोड़ा ठहरकर रमेश ने फिर कहा, "मेरे द्वारा यदि किसी तक कोई सँदेसा भेजना हो, या कोई गलतफ़हमी दूर करना हो, तो कहो।"

कमला ने दोनों हाथ जोड़कर कहा, "देखिये, किसी से कुछ न कहिये।"

"मैंने इतने दिनों किसी से कुछ नहीं कहा। चुप रहकर संकट झेले, लेकिन कहा नहीं। अभी कुछ दिन पहले जब मुझे विश्वास हो गया कि तुम संकट से मुक्त हो गई हो, तब मैंने मात्र एक कुटुम्ब में सारी बात कही है। वहाँ बता देने से तुम्हारा लाभ ही होगा, नुकसान नहीं। इसके सिवाय मेरे करने योग्य कुछ और हो, तो कहो।"

चाचा ने रमेश को हृदय से लगा लिया।

"नहीं रमेश बाबू, अब आपको कुछ नहीं करना है। प्रभु से विनय यही है कि तुम्हारा जीवन मुक्त, सुखी और निष्कंटक हो।"

"मैं अब विदा लूँ", कमला की ओर मुड़कर रमेश ने कहा। कमला ने कुछ नहीं कहा, केवल झुककर फिर नमन किया।

रमेश जैसे सपने में भूला रास्ते पर चला जा रहा था। वह मन ही मन कह रहा था, "मुझे आनन्द है कि कमला से मुलाकात हो गई। इस घटना से इतना स्पष्ट है कि मेरे अपने सिवा संसार में किसी और को मेरी जरूरत नहीं है। मैं पीछे मुड़कर क्यों देखूँ? विस्तृत संसार में कहीं और अपना घर बसाऊँ।"

● ५८

कमला घर पहुँची, तो अन्नदा बाबू और हेमनलिनी क्षेमांकरी के साथ बैठे थे।

हरिदासी को देखकर क्षेमांकरी ने कहा, "यह रही हरिदासी! बेटी, अपनी सखी को अपने कमरे में ले जाओ। मैं यहाँ अन्नदा बाबू को चा दे रही हूँ।"

कमरे में पहुँचते ही हेमनलिनी ने कमला के गले में बाँहें डालकर कहा, "कमला"

बिना कोई अचरज जताये कमला ने पूछा, "तुम्हें मेरा नाम कैसे मालूम हुआ?"

"किसी ने तुम्हारी सारी कहानी बता दी। और सुनते ही जाने कैसे मुझे विश्वास हो गया कि कमला तुम्हीं हो।"

"मैं नहीं चाहती कि कोई मेरा नाम जाने," कमला ने कहा, "मेरा सच्चा नाम मेरे लिये कलंक बन गया है।"

"लेकिन इससे तुम अपना अधिकार सिद्ध कर सकोगी।"

कमला ने सिर झुका लिया।

"मेरे कोई अधिकार नहीं हैं और मैं कोई अधिकार सिद्ध नहीं करना चाहती।"

"लेकिन अपने पति को अनजान रखने का क्या कारण है? अच्छा या बुरा, जो भी हो, क्यों नहीं अपने आपको उन्हें सौंप देतीं? उनसे तुम्हें कुछ न छिपाना चाहिये।"

एकाएक कमला का मुख निस्तेज हो गया। वह असहाय सी हेमनलिनी की ओर देखती रही, और फिर बिस्तर पर जा पड़ी।

"भगवान ही जाने कि जब मैंने कोई गलती नहीं की, तब क्यों इतनी लज्जा अनुभव करती हूँ? मैं निर्दोष हूँ, फिर भी मुझे दंड दिया जा रहा है। मैं कैसे उन्हें सारी कथा समझाऊँ?"

हेमनलिनी ने उसे अपनी ओर खींच लिया।

"फिर क्या चाहती हो?" हेमनलिनी ने प्यार से पूछा, "तुम्हारे बदले कोई और कह दे।"

कमला ने दृढ़ता से इन्कार किया, "न, मैं स्वयं ही कहूँगी। यह न सोचो कि मुझमें बल नहीं है।"

"यही ठीक होगा," हेमनलिनी ने कहा, "अब जाने कब हमारी मुलाकात हो? हम आज जा रहे हैं!"

"कहाँ?"

"कलकत्ते। मैं चलूँ। देखो, इस बहिन को भूल न जाना।"

उसका हाथ पकड़कर कमला ने कहा, "मुझे पत्र लिखोगी न!" हेमनलिनी ने 'हाँ' कहा।

"तुम्हारे पत्रों से मुझे बल मिलेगा।" हेमनलिनी मुसकराई।

यद्यपि कमला ने अपना समस्त हृदय हेमनलिनी को अगोपन कर दिया था, हेमनलिनी अपना रहस्य छिपाये ही चली गई। उसके मुख पर गहरी व्यथा और निर्मोह का भाव था।

सारे दिन जब भी कमला को काम से छुट्टी मिलती, हेमनलिनी के शब्द उसके उसके कानों में गूँजते रहते।

हेमनलिनी अपने साथ फूलों की डाली लाई थी, और दोपहर में कमला उनका हार बनाने बैठी। उसके काम में हाथ बटाते हुये क्षेमांकरी ने हेमनलिनी की बड़ी तारीफ की। इसी समय नलिन के पैरों की आहट सुनकर कमला ने फूलों को आँचल में छिपाकर घूँघट सरका लिया।

नलिनाक्ष कमरे में आया, तो मा ने पूछा, कि हेम और उसके पिता अभी गये हैं; तुमसे मुलाकात हुई?

"हाँ, मैं उन्हें गाड़ी में घर तक पहुँचाने गया था।"

"कुछ भी कहो, बेटा," मा कहती गई, "लेकिन हेम लड़की एक ही है।" नलिनाक्ष ने केवल हँस दिया, कहा कुछ नहीं।

"तुम हँस रहे हो;" मा ने कहा, "मैंने हेम से तुम्हारी शादी तै की, उसे आसीस दिया और तुम्हें क्या सूझी कि तुमने सारा काम बिगाड़ दिया? इसका क्या तुम्हें दुख नहीं है?"

नलिनाक्ष जाने लगा; उसने कमला की तरफ एक निगाह डाली और देखा कि वह एकटक उसकी ओर निहार रही है। दोनों की आँखें मिलीं, तो कमला लाज से गड़ गई।

"क्यों मा," नलिनाक्ष ने कहा, "अपने बेटे को ऐसा योग्य वर क्यों समझती हो कि शादी तय करने में कोई दिक्कत ही न हो? मुझ जैसे नीरस आदमी से लोग जल्दी शादी करने तैयार नहीं होते।"

कमला की आँखें फिर उठीं और नलिनाक्ष की उल्हासपूर्ण दृष्टि से फिर मिली। वह फिर लजा गई।

क्षेमंकरी ने पुत्र से कहा, "तुम जाओ। मुझे और नाराज़ मत करो।"

कमला अकेली रह गई, तो उसने फूलों का बड़ा हार बनाया और डाली में रखकर उसे पानी से तर कर दिया। यह सोचकर कि यह गजरा नलिनाक्ष के लिये हेमनलिनी का विदा-उपहार है, कमला की आँखें भर आईं।

अपने कमरे में लौटकर कमला विचारमग्न हो गई। सोचने लगी कि नलिनाक्ष की आँखों के इस भाव का क्या अर्थ है? नलिनाक्ष का उसके बारे में क्या ख्याल है? उसने मन ही मन कहा, 'नलिनाक्ष सोच रहे होंगे: मा कहाँ से इस लड़की, हरिदासी को ले आईं! ऐसी अविनीत लड़की तो मैंने नहीं देखी;' लेकिन मैं कल्पना नहीं कर सकती कि वे ऐसा सोचेंगे।"

वह रात इस निश्चय के साथ सोई, कि भोर में मौका पाते ही सारा रहस्य बता देगी और अंजाम के लिये तैयार रहेगी।

सुबह जल्दी उठकर उसने नहाया, गंगा से जल ले आई कि सदा जैसे नलिनाक्ष का कमरा साफ कर दे, लेकिन उस सुबह में उसने सदा के प्रतिकूल उन्हें कमरे में बैठे पाया।

अपना कर्तव्य न पाल सकने की व्यथा लेकर कमला लौटने लगी कि उसे कोई विचार आया; वह रुकी और खड़ी रह गई।

वह जाकर दरवाज़े के करीब खड़ी हो गई। न जाने वह किस भावना से भर गई। सारा संसार उसके सामने धुँधला हो गया। उसे वक्त का कोई अंदाज़ नहीं रहा।

अचानक उसे लगा कि कमरे से निकलकर नलिनाक्ष उसके सामने खड़े हैं। क्षण भर में सचेष्ट होकर वह उनके पैरों पर गिर पड़ी। उसके खुले भीगे केश उनके चरणों पर बिखर गये। फिर वह उठी और उनके सामने मूर्तिवत् खड़ी रह गई। वह भूल गई कि उसका घूँघट खुल गया है, और न वह यही देख पाई कि नलिनाक्ष उसकी ओर एकटक ताक रहे हैं। वह

वाह्य जगत के प्रति पूर्ण अचेतन थी कि अचानक किसी दुर्दम प्रेरणा के वशीभूत दृढ़ स्वर से उसने कहा, "मैं कमला हूँ।"

उसने ये शब्द कहे नहीं कि स्वर से उसकी अर्धचेतनता भंग हुई और एकाग्रता बिखर गई। उसका अंग-अंग काँपने लगा और सिर नत हो गया। वह न हिल-डुल सकी, न भाग सकी। उसने अपनी तमाम ताकत इन तीन शब्दों को कहने में, नलिनाथ के सामने साष्टाँग करने में खर्च कर दी थी। अपनी लज्जा छिपाने के लिये अब उसके पास कुछ नहीं था। उसने नलिनाथ की दया पर अपने को छोड़ दिया था।

धीरे धीरे नलिनाथ अपना हाथ होठों तक ले जाकर धीमे स्वर में बोले, "मैं जानता हूँ। तुम मेरी कमला हो। मेरे साथ आओ।"

वह उसे अपने कमरे ले गया और उसकी गूँथी हुई माला उसने उसके गले में डाल दी।

"चलो हम प्रभु के चरणों में सिर नवायें।" और यहाँ दोनों ने संगमर्मर के फर्श की सफेदी पर अपना सिर झुकाया, वहाँ प्रभात के सूरज की किरणें खिड़की से आकर उन पर पड़ीं।

खड़े होकर कमला एक बार फिर भक्ति के आवेश में नलिनाथ के चरणों पर गिर पड़ी। जब उठी, तो कष्टप्रद लज्जा बाकी नहीं थी। आनन्द का आवेग तो नहीं था, लेकिन मुक्ति की थिर शान्ति सुबह की रोशनी के समान उसके समस्त अंगों में व्याप्त थी।

बरबस न जाने कहाँ से आँसू उसकी आँखों में उमड़ पड़े और कपोलों पर निर्बाध बह चले। वे आनन्द के आँसू थे, जिन्होंने उसके जीवन-वैधव्य पर घिरे दुख के बादलों को हटा दिया।

नलिनाथ ने फिर उससे कुछ न कहा। उसकी आँखों पर आ गईं लटों को अलग करके वह कमरे के बाहर हो गया।

कमला की भक्ति अभी समाप्त नहीं हुई थी। वह उसके हृदय में उमड़ रही थी और कहीं बरसना चाहती थी। वह नलिनाक्ष के शयन-कक्ष में गई और उसने खड़ाउओं पर अपने गले से उतारकर माला चढ़ा दी। तब उन्हें अपने हृदय से लगाकर जहाँ का तहाँ रख दिया।

देवदूत की भाँति घर का काम पूरा करके कमला ने सिलाई का काम वैसा ही छोड़ दिया और वह कमरे के एकान्त में जा पहुँची। कमला को खोजता नलिनाक्ष भी वहीं आया। उसने कुछ फूल कमला को सौंपते हुये कहा :

"कमला इन्हें ताजा रखने के लिये पानी में डाल दो। साँझ हम दोनों मा का आसीस लेने चलेंगे।"

"लेकिन आपने मेरी पूरी कहानी कहाँ सुनी है?" कमला ने सलज्ज भाव से कहा।

"तुम्हारे बताने के लिये कुछ बाकी नहीं है। मैं सब जानता हूं।" नलिनाक्ष ने कहा।

कमला ने घूँघट डाल लिया, "लेकिन मा ने—" उसने कहना चाहा, किन्तु कह नहीं पाई।

नलिनाक्ष ने घूँघट हटा दिया। "अपने जीवन में मा ने मेरे अनेक अपराध क्षमा किये हैं, फिर वे तुम निरपराध को अवश्य क्षमा करेंगी।"